भूगोल हस्तामलक

OR

THE EARTH AS [A DROP OF] CLEAR WATER IN HAND

IN THREE VOLUMES

तीन जिल्दों में

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत
नव्वाब लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार

राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्द (३) ने बनाया

BY

RAJA SIVAPRASAD, C.S.I.

।। मस्त ।।

बैठकर सैर मुल्क की करनी यह तमाशा किताब में देखा

VOLUME I.

पहली जिल्द

PART I.

पहला हिस्सा

इलाहाबाद गवर्नमेंट के छापेख़ाने में छापा गया

विद्यार्थियों के लाभ के लिये

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपा

एप्रिल सन् १८९७ ई०

20.00

उपोद्घात

प्रकट हो कि जब हमने इस ग्रंथको आरंभ करनेकेलिये लेखनी उठाई तो मनका यह संकल्प था कि एक छोटीसी पुस्तक ऐसी रचें, जिससे बालकोंको यह सारा भूगोल हस्तामलक हो जाय; पर होते होते विस्तार बहुत बढ़ गया, चार सौ पृष्ठकी इतनी बड़ी पुस्तक में भी पूरा न पड़ा, और केवल एशिया का वर्णन होने पाया. यदि शरीर वर्त्तमान है, और ईश्वरेच्छा अनुकूल, तो दूसरा भागभी शीघ्र बनकर छपजायगा, और फ़रंगिस्तान अफ़रीका अमरिका और टापुओंका जो शेष रहगए हैं उसमें वर्णन होगा. यदि बालक भिन्न युवा और वृद्ध भी इस ग्रंथको पढ़ेंगे तो निश्चय है कि उनका परिश्रम व्यर्थ न जायगा; बरन हमारे देशके राजा बाबू और महाजनों को, जो हिंदी छोड़कर और कुछ भी नहीं जानते, और न उनकी ऐसी अवस्था है कि पाठशालामें जाके अब अंगरेज़ी और पारसी सीखें, यह ग्रंथ बड़ाही उपकारी होगा; परंतु जहां कहीं इसमें कोई बात लड़कपन की देखने में आवे तो ग्रंथकर्त्ता को न हँसें, क्योंकि वास्तव में यह पुस्तक लड़कोंही के लिये लिखी गई·—हमने इस ग्रंथमें कवियों की नाईं बढ़ावा अथवा

अत्युक्ति अरु वाक्यबाहुल्य कहीं नहीं किया, जैसी जो बात है वैसा ही लिख दिया, यहां तक कि जो कहीं लिखा देखो कि ऐसी जगह सारे संसार में नहीं है तो निश्चय जानना कि दूसरी नहीं है, अत्युक्ति और बढ़ावा कभी मत समझना,—मानचित्रों में हमने उतनेही नाम लिखे जो ग्रंथमें हैं, अधिक नहीं लिखे, परन्तु ग्रंथमें जितने नाम हैं, वह मानचित्र में सब आगए कुछ भी शेष नहीं छोड़े; ऐसा न होने से पुस्तक के लिखे हुए नाम चित्रोंमें ढूंढ़ने के समय बड़ा कष्ट पड़ता है·— ग्रंथके अन्त में वर्णमाला के क्रमसे भी सब नाम लिखदिए हैं, और जिस जिस पृष्ठ में उनका वर्णन आया है उसका अङ्क भी लिख दिया है; जिस नामके पहले दो लकीरें खिची हैं जानो कि उस स्थान को हमने अपनी आंखों से देखा है जिस पृष्ठांक के पीछे दो लकीरें लिखी हैं जानो कि उस पृष्ठ में उस नामका पूरा वर्णन है और दूसरी पृष्ठों में केवल किसी कारणसे नाम मात्र आगया है; जिस नदी पहाड़ झील नगर गांव घर राजा इत्यादि का कुछ विवरण देखना हो, कोश की रीति वर्णमालाके क्रमसे इस अनुक्रमणिका में उसका नाम निकालकर उसके साम्हने लिखेहुए पृष्ठांकों के अनुसार समुदित वृत्तान्त देख लो लड़कों की परीक्षालेने में परीक्षकों को इस अनुक्रमणिका से बड़ा सुभीता पड़ेगा॥

कितने मित्रोंकी सम्मति थी, कि यह पुस्तक छुट हिन्दी बोली में लिखी जावे, फ़ारसी का कुछ भी पुट न आने पावे, परन्तु हमने जहां तक बन पड़ा बैतालपचीसी की चाल पर रखा, और इसमें यह लाभ देखा, कि फ़ारसी शब्दों के जानने से लड़कों की बोल चाल सुधर जावेगी, और उर्दू भी जो अब इस देशकी मुख्य भाषा है सीखनी सुगम पड़ेगी,॥

एशियाटिकजर्नल और सैक्लोपीडिया के व्यतिरिक्त जिन ग्रन्थकारों के ग्रंथों से इस पुस्तक में बहुत बातें ली गई हैं उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं ॥

हमिल्टन । रीनोल्ड । थारंटन । मीयर । टाड । टर्नर । मालकाम । मकफ़र्सन । मकफ़ार्लेन । हम्बोल्ट । मालब्रन । बाल्बी । ईवार्ट । निकलस ह्यूजल । वाइन । मूर्क्राफ़्ट । जिरार्ड । टेवर्नियर । एलियट । प्रिंसिप । कनिङ्गहम् । हीबर । मरे । मार्शमेन । वालेंशिया । इत्यादि ॥

सोरठा

जे जन होहु सुजान । लीजो चूक सुधार धरि ॥
बालक अति अज्ञान । हौं अजान जानत न कछु ॥

शि०

CONTENTS
OF THE
FIRST VOLUME.

page.

INTRODUCTION.

ASIA.

Page

HINDUSTAN.

भूगोल हस्तामलक

जो कभी कोई आदमी किसी बड़े आलीशान मकान के दर्मियान जा निकले, तो क्या उसका दिल इस बात को न चाहेगा, कि उस मकान के एक एक कमरे और कोठरी को घूम घूम कर देखे, और उन में जो वस्तु अद्भुत और अपूर्व रक्खी हों सब को अच्छी तरह ध्यान करे ? लेकिन सोचो कि यदि उस मकान में बहुत से कमरे ऐसे हों, जिन में अजनबी आदमियों के जाने की रोक टोक और मनाही रहे, या इसी सैर करनेवाले को बिलकुल कमरों में जाकर हरएक चीज़ देखने की फुर्सत न हो, और कोई आदमी उस मकान की बातों से जानकार इस सैरकरनेवाले को उन सब कमरों का हाल ब्योरेवार बतला देना कबूल करे, तो क्या यह सैरकरनेवाला खुश होकर इस बात को ग़नीमत न समझेगा ? निदान जब लोगों को मकानों के कमरों का हाल मालूम होने से उनका दिल इतना खुश होता है, जो हम उनको इस दुनिया के सब मुल्क पहाड़

नदी झील और शहर और उन मुल्कों में जो पदार्थ उत्पन्न होते हैं, या जो जो बातें ऐसी अनोखी और चमत्कारी हैं, कि न कभी कानों सुनी न आंखों देखीं, सारे उनके समाचार और वहां के लोगों की भाषा चाल चलन और व्यवहार पतेवार बतला देवें तो क्या उनका मन प्रसन्न न होवेगा ? ऐसा तो कोई बिरला ही सुस्त और अल्पबुद्धी आदमी होगा जिसका दिल ऐसी बातों की खोज करने को न चाहे, या जो कोई पुरुष उसको उन्हें बतला दे तो वह उसका उपकार न माने। मतलब हमारा इस भूमिका के बांधने से यह है, कि अब हम इस ग्रन्थ में कुछ वर्णन भूगोल का करते हैं, परन्तु जैसे उस मकान के कमरों का हाल सुनने से पहले सैर करनेवाले को मकान के हिस्सों के नाम और उनकी सूरत जान लेनी बहुत अवश्य है, कि दर्वाज़ा कैसा होता है, और खंभा किसको कहते हैं, और दालान क्या है, और कोठरी किसका नाम है, निदान जब तक वह सैर करनेवाला इन बातों से बेख़बर रहेगा, उस मकान के कमरों का हाल किसी के समझाने से भी न समझ सकेगा, इस वास्ते पहले हम ज़मीन के हिस्सों के नाम लिखते हैं जिनको याद रखने से इस भूगोल का सारा हाल ध्यान में आ जावे ॥

जानना चाहिये कि यह भूगोल जो नारंगी सा गोल है, और विना किसी आधार के अधर में सूर्य के गिर्द घूमता (१) है, दो तिहाई से अधिक अर्थात् १००० में ७३४ हिस्से पानी से ढपा हुआ है। अनाड़ियों को इस बात के सुनने से बड़ा आश्चर्य होगा, कि

---

(१) पृथ्वी का घूमना ऋतु का बदलना और दिन रात का घटना बढ़ना यह इस किताब के अंत में वर्णन होगा ॥

पृथ्वी विना किसी आधार के अधर में किस तरह रह सकती है, उनको इस बात पर अच्छी तरह ध्यान करना चाहिये, कि जो वे किसी चीज़ को पृथ्वी का आधार मानेंगे तो फिर उस आधार के ठहराव के लिये भी कोई दूसरा आधार अवश्य मानना होगा, और फिर इसी तरह एक के लिये दूसरे का आधार बराबर ठहराते चले जाना पड़ेगा, यहां तक कि आख़िर थककर यही कहेंगे कि सब से पिछले आधार का कोई भी दूसरा आधार नहीं है, वह ईश्वर की शक्ति से आपही अधर में ठहर रहा है । निदान जब यही बात है तो इतना बखेड़ा न करके पहले ही से यह बात क्यों न कह देवें, कि जैसे सूर्य चन्द्र और तारे अधर में हैं, उसी तरह पृथ्वी भी ईश्वर की शक्ति से बिना आधार अधर में ठहर रही है, और यही बात हिन्दुओं के ज्योतिष शास्त्र में लिखी है, अंगरेज़ों ने विद्या और दूरबीन इत्यादि यंत्रों के बल से प्रत्यक्ष साबित कर दिखाई । ये पहाड़ जो देखने में बहुत बड़े मालूम पड़ते हैं, जब पृथ्वी के डील डौल पर ध्यान करो, कि जिसका घेरा पच्चीस हज़ार बीस मील (१)

---

(१) दो मील का एक पक्का कोस होता है, सड़क पर जहां पत्थर गड़े हैं, वे मील ही के हिसाब से गड़े हैं हमने इस पोथी में कोस का हिसाब इस वास्ते नहीं लिखा, कि वे किसी ज़िले में छोटे और किसी ज़िले में बड़े होते हैं, वरन पहाड़ी लोग बोझ पर और चलनेवाले की ताक़त देखकर कोसों का हिसाब करते हैं, वही मंज़िल जो बोझेवाले को वे दस कोस की बतलावेंगे खाली आदमी के लिये पांच कोस की कहेंगे, और जो कभी वह आदमी घोड़े पर सवार होजावे तो फिर वे उस मंज़िल को दो ही कोस की गिनेंगे॥

का है तो ऐसे जान पड़ेंगे जैसे नारंगी के छिलके पर कहीं कहीं रवे अथवा दाने दाने से रहा करते हैं। यद्यपि हिन्दुओं के ज्योतिष शास्त्र में भी पृथ्वी को गोल ही बतलाया है, पर अब अंगरेज़ी जहाज़ों के समुद्र में चारों तरफ़ घूम आने से इस बात में कुछ भी सन्देह बाक़ी न रहा, क्योंकि जब वह जहाज़ जो बराबर सीधा एक ही दिशा को मुंह किये चला जाता है, चलते चलते कुछ दिनों पीछे विना दहने बाएं मुड़े फिर उसी स्थान पर आजाता है, जहां से चला था, तो इस हालत में पृथ्वी का आकार सिवाय गोल के और किसी प्रकार का भी नहीं ठहर सकता, और सच है जो पृथ्वी गोल न होती तो हिमालय पहाड़ के ऊंचे ऊंचे शृङ्ग हिन्दुस्तान के सारे शहरों से क्यों न दिखलाई देते, अथवा उन शृङ्गों पर से दूरबीन लगाकर, कि जिससे लाखों कोस के तारों की सूरतें दिखलाई देती हैं, शरद ऋतु के निर्मल आकाश में सारा हिन्दुस्तान क्यों न देखलेते, वरन समुद्र के तट पर खड़े होकर जो किसी आते हुए जहाज़ को देखने लगो तो पहले उसका मस्तूल अर्थात् ऊर्धभाग और फिर पीछे से जब जहाज़ कुछ समीप आजायगा तो पतवार अथवा अधोभाग दिखलाई देवेगा, क्योंकि जब तक जहाज़ समीप नहीं आता, पृथ्वी की गुलाई के कारण उसका अधोभाग जलकी ओट में छिपा रहताहै यह पानी जिस्से दो तिहाई से अधिक पृथ्वी ढकी हुई है, समुद्र अथवा सागर कहलाता है खारा सब जगह है लेकिन कहीं कम कहीं ज़ियादः थाह उसकी सवापांच मील तक तो मालूम होसक्ती है परन्तु गहरा वह कहीं कहीं इस्से भी अधिक है। लहरें उसकी बाईस फ़ुट तक ऊंची नापी गई हैं। यद्यपि समुद्र इस भूमंडल पर एकही है, पर जैसे हवेलियों का ठिकाना मिलने के लिये शहर को मुहल्लोंमें बांट देतेहैं,

वैसेही समुद्र में द्वीप और जहाज़ों का सहजसे पता लगजाने के वा-
स्ते उसके पांच हिस्से करके पांच नाम रखदिये हैं। पहले हिस्से को
जो अमेरिका के महाद्वीपसे फ़रंगिस्तान और अफ़रीका के मुल्क तक
फैला हुआ है, अटलांटिक समुद्र कहते हैं। दूसरे हिस्से को जो अमे-
रिका महाद्वीप और एशियाके मुल्क के बीचमें है, पासिफ़िक समुद्र
बोलते हैं। तीसरा हिस्सा जिसकी हद अफ़रीक़ा के मुल्क से लेकर
हिन्दुस्तान और आस्ट्रेलिया के टापू तक है· उसका नाम हिन्द का
समुद्र रक्खा गया है, और चौथे और पांचवें हिस्सों को जो उत्तर
और दक्षिण ध्रुवके गिर्द हैं, उत्तर समुद्र और दक्षिण समुद्र पुकारते
हैं। इन पिछले दो समुद्रोंका जल शीतकी अधिकाई से जमकर सदा
यख़ अर्थात् पाला बना रहता है, जो ध्रुव के समीप है वह तो कभी
नहीं गलता, और बाक़ी गर्मियों के मौसिम में जहां कहीं गलता है
तो यख़के टुकड़े पहाड़ोंकी तरह वहां जलमें तिरने लगते हैं। जहाज़ों
को इन समुद्र में बड़ा डर है, जो कभी यख़के टुकड़ोंके बीच में फस
जावें, तो फिर उस जगह से उनका निकलना बहुत कठिन है। ह्वेल
मछली जो समुद्र के सब जीवोंसे बड़ी, प्रायःसाठ हाथ लम्बी होती
है बहुधा इन्ही में रहती है। इन पांचों समुद्र के जो छोटे टुकड़े दूर
तक थल के भीतर आगये हैं, वे खाड़ी कहलाते हैं। और खाड़ियों के
नाम अकसर उन शहर अथवा मुल्कों के नाम पर बोले जाते हैं, जो
उनके समीप अथवा किनारे पर होते हैं। बन्दर वह स्थान है, जहां
जहाज समुद्रकी कोल में आकर लंगर डालते हैं। इस भूगोल का एक
तिहाई जो जल से बाहर थल अर्थात् सूखा है, कुछ एकही ठौर नहीं,
बरन कई जगह टुकड़ा टुकड़ा समुद्रके बीच बीच में प्रगटहो रहाहै जैसे
निर्मल नीले आकाश में मेह बरस जाने के बाद बादल के टुकड़े दि-

खलाई देते हैं। इन ज़मीन के टुकड़ों में दो टुकड़े बहुत बड़े हैं, और इसी वास्ते वे महाद्वीप कहलाते हैं, बाक़ी छोटे छोटे टुकड़े द्वीप अथवा टापू कहे जाते हैं। ज़मीन के हिस्से जो दूर तक समुद्र में निकलगये हैं, अर्थात् तीन तरफ़ उनके पानी है और एक तरफ़ महाद्वीप से मिलेहुए हैं, उनको मायद्वीप बोलते हैं, और उसी मायद्वीप का सिरा अर्थात् अग्र भाग अन्तरीप है, और पिछला भाग जहां वह महाद्वीप से मिलता है, जो तंग और छोटा हो तो डमरूमध्य कहा जायगा, क्योंकि जैसे डमरू का मध्य उसके एक हिस्से को दूसरे से जोड़ता है, उसी तरह यह भी ज़मीन के एक हिस्से को दूसरे से मिलाता है। यह भी जानना अवश्य है, कि ज़मीन अर्थात् थल सभी जगह बराबर एक सी वट्टा ढाल मैदान नहीं है, किसी जगह बहुत ऊंची होगई है। ऊंची ज़मीन का नाम पहाड़ है और जिन पहाड़ों के अन्दर से आग निकलती है वे ज्वालामुखी कहलाते हैं। पहाड़ों के झरने और मेह का पानी जो इकट्ठा होकर मैदान में बहता हुआ समुद्र को जाता है, उसे नदी कहते हैं, पर जो नदी बहुत बड़ी होती है उस को दर्या भी पुकारते हैं, और जो बहुत ही छोटी होती है वह नाला कहलाती है, और जो नदी से काटकर किसी दूसरी जगह पानी ले जावें, तो उसे नहर बोलते हैं। जब कभी इस मेह के पानी को बहने की राह नहीं मिलती और किसी नीची ज़मीन में इकट्ठा होजाता है तो वही ताल और झील है। जिस तरह पर कोई माली या ज़मींदार किसी बड़े बाग़ या खेत को जुदा जुदा क़िस्म के फूल वा अन्न बोने के लिये तख़्ते चमन और क्यारियों में हिस्से करता है उसी तरह यह पृथ्वी भी जुदा जुदा क़ौम के आदमी और जुदा जुदा बादशाह राजे और कादीरों की बादशाहत राज और कादीरी के कारन जुदा जुदा हिस्सों

में बटी हुई है। मुल्क अथवा देश छोटे और बड़े सब हिस्सों को कह सकते हैं, पर विलायत उसी बड़े हिस्से को कहेंगे, जिस में निराली क़ौम बसती हो, और जहां का चाल चलन और व्यवहार जुदा ही बरता जाता हो। यह विलायतें बमूजिब अपनी लंबान चौड़ान के सूबों में और सूबे ज़िलों में और ज़िले परगनों में बटे रहते हैं, और फिर हरएक परगने में कई एक मौज़े अर्थात् गांव बसा करते हैं। जो बस्ती बहुत बड़ी होती है अर्थात् जिस में हज़ारों आदमी बसते हैं, और पक्के संगीन बड़े बड़े मकान बने होते हैं, उसको शहर और नगर कहते हैं। शहर से छोटा और गांव से बड़ा क़सबा कहलाता है।

अब यहां इस किताब के पढ़नेवालों को यह भी सोचना चाहिये, कि यद्यपि उस आलीशान मकान के सब कमरों का हाल जिस को सैर करनेवाला आप नहीं देख सकता, किसी जानकार आदमी से सुनकर अवश्य उसके दिल को खुशी हासिल होवेगी, लेकिन जो वह आदमी उसको उन कमरों का नमूना या तसवीर भी दिखला-देवे तो फिर उस सैर करनेवाले को कैसा मज़ा मिलेगा, और कि-तना आनन्द हाथ लगेगा। निदान इसी तरह जानकार आदमियों ने भूगोल विद्यार्थियों के देखने के वास्ते ज़मीन का नमूना और उसकी तसवीर भी बना दी है। भूगोल के नमूने को भी भूगोल ही कहते हैं और ठीक भूगोल के डौल पर गोल बनाते हैं, और तसवीर वह है कि जिस को नक़शा कहते हैं, पर इस तसवीर में भेद है, हम उसी एक मकान की तसवीर कई तरह से खींच सकते हैं, जो किसी छोटे से काग़ज़ पर खींचें, तो उस मकान का डौल तो निस्सन्देह मालूम हो जावेगा, लेकिन उसके दर दीवार अच्छी तरह न ज़ाहिर हो सकेंगे, और जो बड़े काग़ज़ पर बनावें तो दर दीवार अवश्य

मालूम हो जावेंगे, पर फिर भी उनकी नक़ाशी और बारीकी तभी भले प्रकार प्रकट होवेगी, कि जब उनके जुदा जुदा हिस्सों की जुदा जुदा तसवीर खींची जावे, इसीतरह भूगोल का नक़शा भी जो छोटा होता है, उस्से उसका डौल मात्र, और जो ज़रा बड़ा रहता है उस्से केवल इतना कि कौन मुल्क किस तरफ़ है मालूम होसकता है, लेकिन गांव और शहर और पहाड़ और नदी और सड़कोंका ब्योरा पतेवार तभी जाना जायगा, कि जब जुदा जुदा विलायत बरन जुदा जुदा परगनों का जुदा जुदा नक़शा खींचा जावे। जानना चाहिये कि ज़मीन नारंगी की तरह गोल है, और समुद्र और टापू उसकी चारों अलंग पड़े हैं और तसवीर में हर एक चीज़ की एकही अलंग दिखलाई देती है, दोनों अलंग कदापि दिखलाई नहीं दे सकती, इसवास्ते भूगोल के नक़शे में उसकी दोनों अलंगों की दो तसवीरें लिखी हैं, जैसे आदमी के चिहरे की कोई तसवीर खैंचकर उसकी सब अलंगों को दिखलाना चाहे, तो अवश्य उसको दो तसवीरें लिखनी पड़ेंगी, एक में तो आंख नाक कान और मुंह इत्यादि नज़र पड़ेंगे, और दूसरी में चिहरे की पिछाड़ी, अर्थात् गुद्दी और सिरके बाल दृष्टि में आवेंगे, लेकिन भूगोल की तसवीर देखकर कोई ऐसा न समझे कि वह चक्कीके पाटों की तरह चिपटा है, वह तसवीर में चिपटा इस कारण मालूम होता है कि तसवीर में किसी चीज़ की भी उंचाई प्रत्यक्ष प्रकट नहीं होसकती। यह भी बखूबी समझ लेना चाहिये, कि सहज में गांव और शहर इत्यादि का पता लगने के वास्ते, और इस बात के लिये कि जो किसी विलायत का जुदा नक़शा खिंचा हो, तो तुरंत यह जान सकें, कि वह विलायत भूमण्डल के किस खण्ड में कौन कौन सी विलायत से किस किस तरफ़ को पड़ती है, भूगोल के नक़शेमें ठीक

बीचों बीच पूर्व से पश्चिम को एक लकीर, जिसका नाम विषुवत् रेखा है, खींचकर भूगोल को बराबर दो हिस्सों में अर्थात् उत्तर और दक्षिण बांट दिया है (१) और उस विषुवत् रेखाको ३६० अंशों में, जिसे अरबी में दर्जा कहते हैं, भाग करके प्रत्येक अंश से एक एक लकीर उत्तर और दक्षिणकी तरफ़ खींच दी है, और फिर उन लकीरों को ३६० अंशों में भाग देकर हर एक अंशमें पूर्व से पश्चिम को लकीरें खींच दी हैं, (२) निदान इन लकीरों से तमाम भूगोल के नक़शे पर इस तरह के खाने बनगये हैं, कि जैसे चौपड़ और शतरंज में घर बने रहते हैं, और इन्हीं घर अर्थात् लकीरों के अंशों की गिनती से भूगोल के सब स्थानों का पता लग जाता है, और एक जगह का दूसरी जगह से फ़ासिला (३) भी मालूम होजाता है। जो लकीरें पूर्व से पश्चिम को खिंची हैं उन्हें अक्षांश और जो उत्तर से दक्षिण को उन्हें देशान्तर कहते हैं। अक्षांश की गिनती विषुवत् रेखा से करते हैं, और देशान्तर उस लकीर से गिनते हैं जो नक़शे में इंगलिस्तान के दर्मियान ग्रीनिच नगर परसे खींची गई है। जैसे चौपड़ और शतरंज में घर की गिनती बोलने में उस स्थान का अ-

---

(१) भूगोल का नक़शा देखो ॥

(२) नक़शा छोटा होने के कारन प्रत्येक अंशसे लकीर न खींच कर दस दस अंश के बाद लकीर खींची है ॥

(३) पृथ्वी के घेरे को, जो २५०२० मील किसी जगहमें लिख आये हैं, ३६० दर्जों में बाटने से एक एक दर्जा ६९ ॥ मीलका पड़ेगा जब किसी जगह से फ़ासिला जानना मंजूरहो फ़ौरन् पर्कार से नाप कर देख लेवें कि उन दोनों के बीच कितने दर्जे का तफ़ावत् है ॥

नुभव होता है, उसी तरह अक्षांश और देशान्तर के अंश की गिनती कहने से नक़शे में उस जगह के गांव शहर इत्यादि का ज्ञान हो जाता है। गिनती अंशों की नक़शे में उन्हीं अंशों पर लिखी रहती है, और अंश के साठवें हिस्से को कला, और कला के साठवें हिस्से को बिकला कहते हैं। ध्रुव भूगोल में विषुवत् रेखा से उत्तर और दक्षिण उन दो स्थानों का नाम है, जहां देशान्तर की सारी लकीरें इकट्ठी होकर आपस में मिल जाती हैं। भूगोल के नक़शे में सिवाय ऊपर लिखी हुई लकीरों के और भी चार लकीर के निशान बिन्दी बिन्दी देकर पूर्व से पश्चिम को बने रहते हैं, प्रयोजन उससे इस बात का बतलाना है, कि इन बिन्दी की पहली दोनों लकीरें, जो विषुवत् रेखा से २३॥ अंश के तफ़ावत पर उत्तर और दक्षिण की तरफ़ खिचीं है, उनके दर्मियान के मुल्क में, सदा सूर्य के साम्हने रहने से, निहायत गर्मी होती है इसी वास्ते वह मुल्क गर्म सेर अथवा ग्रीष्म प्रधानक कहलाता है, और बाक़ी बिन्दी की दो लकीरें जो दोनों ध्रुवों से २३॥ अंश के फ़ासले पर दोनों तरफ़ खिंची हुई हैं, उनके अन्दर सर्दसेर मुल्क अथवा शीतप्रधानक देश है, क्योंकि उस पर सूर्य की किरनें सदा तिरछी पड़ती हैं। इन सर्द सेर और गर्म सेर मुल्क के दर्मियान मोतदल अथवा अनुष्णाशीत मुल्क बसा है अर्थात् जो न बहुत गर्म है न सर्द ॥

हम अभी ऊपर लिख आये हैं कि जिस तरह मकानों की तसवीर बन्ती है उसी तरह बुद्धिमानों ने भूगोल का नक़शा भी रचा है, परंतु मकान इत्यादि के चित्रों में तो उनके अवयव ज्यों के ज्यों उतार देते हैं, अर्थात् द्वार की जगह द्वार का आकार बनाते हैं, और दीवार की जगह दीवार का और भूगोल के नक़शों में उन नक़शों

का बिस्तार बहुत बढ़जाने के भय से शहर नदी पहाड़ सड़क झील इत्यादि की जगह नीचे लिखे हुए चिन्ह लिख देते हैं, उनका पूरा आकार नहीं बनाते, नक़शे में इन्हीं चिन्हों को देखकर उनका अनुभव कर लेना चाहिये ॥

गांव
शहर
बड़ा शहर
क़िला
नदी
झील
पहाड़
कच्चीसड़क
पक्कीसड़क
देशसीमा
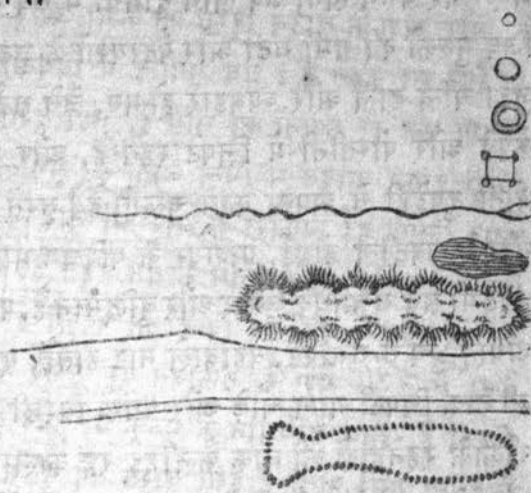
यह भी बात याद रखने की है कि किसी समय में इस सारी पृथ्वी पर ईश्वर की इच्छा से समुद्र का पानी छागया था, और ऊंचे से ऊंचे पहाड़ उस से डूब गए थे, इस बात को सारे मज़हब और सब मुल्क के आदमी मानते हैं कोई उसका नाम तूफ़ान बतलाता है, कोई प्रलय कहता है, पर समय में उसके तकरार है, जुदा जुदा मुल्क के आदमी जुदा जुदा काल उसके वास्ते ठहराते हैं, अब तक भी पहाड़ों पर समुद्र की मछलियों का हाड़ और सीप और शंख और घोंघे जो मिलते हैं, किसी काल में इस तूफ़ान के आने की गवाही देनेकेवास्ते बहुत हैं। यह भी किताब और पोथियों के देखने से मालूम होताहै कि एक

ही स्त्री पुरुष से हम सब पैदा हुए हैं मुसलमान और अंगरेज़ उस पहले पुरुष को नूह और हिन्दू वैवस्वत-मनु कहते हैं। ज्यों ज्यों औलाद बढ़ती गई मनुष्य संसार में फैलते गये, और नए नए गांव और नए नए नगर बसने लगे, जब लोग दुनिया में सब तरफ़ बसगये तो बमूजिब मुल्कों की गर्मी सर्दी और पैदायशों के जुदा जुदा क़ौमों के जुदा जुदा चाल ढाल और व्यवहार हो गए, जैसे सर्दमुल्कवाले सदा ऊनी कपड़े और पोस्तीनों में लिपटे रहते हैं, और गर्म मुल्कवाले केवल धोती दुपट्टेही से अपना काम चलाते हैं। सूरतें भी आब हवाकी तासीर से तबदील होगई, एशिया के पश्चिम भाग और फ़रंगिस्तान के आदमी सब से अधिक सुन्दर और बुद्धिमान हैं, पर जो देश उत्तर अलंग अर्थात् ध्रुव से समीपहै, वहांवाले नाटे होतेहैं, एशिया के पूर्व भागियों की नाक चिपटी गाल चौड़े और आंखें तिरछी और छोटी और अफ़रीकाके रहनेहारों की नाक फैलीहुई रङ्ग काला बाल घूंघरवाले और होंठ मोटे रहते हैं, और अमेरिका के असली बाशन्दों का रंग तांबे का सा लाल है। मज़हब भी इस अर्से में कई तरहके हो गए, और राजे भी हर एक क़ौम ने दूसरी क़ौमों के ज़ोर ज़ुलम से बचने के लिये अपने अपने जुदा बना लिये। निदान अब हम एकएक मुल्क का हाल जुदा जुदा पतेवार पढ़नेवालों का चित्त प्रसन्न करने के लिये इस ग्रन्थ में लिखते हैं। थल अर्थात् ज़मीन के उन दो बड़े टुकड़ों से, जो महाद्वीप कहलाते हैं, एक का नाम तो अमेरिका है, जिसे बहुधा नई दुनिया और नया महाद्वीप भी बोलते हैं, और दूसरे अथवा पुराने महाद्वीप के तीन खण्ड तीन नाम से पुकारे जाते हैं, पूर्व का खण्ड एशिया, पश्चिम का यूरुप अथवा फ़रंगिस्तान और दाक्षिण का अफ़रीका। इन सबमें टापुओं समेत अटकल से प्राय: नव्वे करोड़ आदमी बसते हैं. और

उनकी भाषा भिन्न भिन्न प्रकार की कुछ न्यूनाधिक दो सहस्र होवेंगी। इन नव्वे करोड़ आदमी में से प्राय: पच्चीस करोड़ तो ईसाई मजहब रखते हैं, अर्थात् क्रिस्तान हैं, पैंतीस करोड़ बुद्धका मत मानते हैं, दस करोड़ मुसलमान हैं, और दसही करोड़ के लगभग हिन्दू होवेंगे' बाक़ी दस करोड़ में और सब मजहब के आदमी सोच लेने चाहिये॥

एशिया

यह नाम यूनानी है, संस्कृत नाम हम लोगों को पृथ्वी के इन विभाग और मुल्क और नदी पहाड़ों के नहीं मिलते, इसी वास्ते नाचार अंगरेज़ी और फ़ारसी काम में लाने पड़े और प्लक्ष शाल्मलीक कुश क्रौञ्च शाक पुष्कर ये द्वीप, और दही दूध मधु मदिरा और इक्षु रस के समुद्र और सोने चांदी के पहाड़, जो संस्कृत ग्रन्थों में लिखे भी हैं तो अब उनका कहीं पता नहीं लगता, न जाने इन लिखने वालों ने क्या समझ के ऐसा लिखा था, पण्डित लोग कहते हैं कि बातें तो ग्रन्थों में सब सत्य लिखीं हैं, पर अब उनके ठीक अर्थ का समझानेवाला नहीं मिलता। जो कुछ हो, लेकिन हम तो वही लिखते हैं जो जब जिसका दिल चाहे अपनी आंखों से देखलेवे। जिस तरह खेत और गांव का सर्हद-सिवाना है उसी तरह बड़े मुल्कों की भी सीमा होती है। इस एशिया की सीमा उत्तर तरफ़ उत्तर समुद्र, और दक्षिण तरफ़ हिन्द का समुद्र, और पूर्व तरफ़ पासिफ़िक समुद्र. और पश्चिम तरफ़ रेडसी नामक समुद्र की खाड़ी और स्वीज़ का डमरूमध्य अफ़रीका से, और मेडिटरेनियन और बलाकसी-नामक समुद्र की खाड़ी और डन और बलगा नदी और यूरल पहाड़ यूरुप से उसे जुदा करते हैं, और २ से लेकर ७७ उत्तर अक्षांश और २६

पूर्व देशान्तर से लेकर १७० पश्चिम देशान्तर तक विस्तृत है। इस का लम्बान पूर्व से पश्चिम को अधिक से अधिक प्राय: ७५०० मील और चौड़ान उत्तर से दक्षिण को प्राय: ५००० मील और बिस्तार एक करोड़ पछहत्तर लाख मील मुरब्बा अर्थात् वर्गात्मक (१)

---

(१) वर्गात्मक उसे कहते हैं जो चारों तरफ़ बराबर हों, अर्थात् जितना चौड़ा हो उतनाही लम्बा, इसलिये जब हम किसी देश का बिस्तार वर्गात्मक मीलों में बतलावें, तो समझलो कि जितने वर्गात्मक मील हमने लिखे उतने ही टुकड़े एक एक मील के लम्बे और एक एक मील के चौड़े उस देश के हो सकते हैं जैसे कोई कपड़ा सोलह गिरह लम्बा और चार गिरह चौड़ा हो, तो हम उस कपड़े का बिस्तार चौंसठ गिरह वर्गात्मक बतलावेंगे, और फिर जो तुम उस कपड़े से गिरह गिरह भर लम्बे और गिरह गिरह भर चौड़े टुकड़े काटने लगो तो चौंसठ ही टुकड़े काटे जावेंगे, देश की धरती का प्रमाण जानने के लिये यह हिसाब बहुत अच्छा है, नहीं तो एक एक जगह की लम्बान चौड़ान बतला देने से उन के बिस्तार का कदापि ठीक अनुमान न हो सकेगा, क्योंकि देश किसी जगह में कम लम्बे चौड़े रहते हैं और किसी जगह में अधिक, कुछ पोथी के पत्र की तरह सब तरफ़ बराबर नहीं होते। निदान जिस तरह गांव को बीघे से नापते हैं, उसी तरह देशों को वर्गात्मक मीलों से नापते हैं। अस्सी हाथ लम्बा और अस्सी हाथ चौड़ा बङ्गाली बीघा होता है, एक मील लम्बा और एकही मील चौड़ा, अर्थात् ३५२० हाथ लम्बा और ३५२० हाथ चौड़ा, एक वर्गात्मक मील होता है, इसी वर्गात्मक को अरबी में मुरब्बा कहते हैं॥

मील है। आदमी उस में अटकल से सवा चव्वन करोड़ बसते हैं। आबादी उसकी इस हिसाब से फ़ी मील मुरब्बा ३१ आदमी की पड़ती (१) है और एक सौ तेतालीस से अधिक भाषा बोली जाती हैं। पृथ्वी के इस भाग में ऐसे सर्द मुल्कों से लेकर जहां समुद्र भी जम जाता है, इतने गर्म सेर तक बसे हैं, कि जिस में आदमी सूर्य के तेज से काले हो जाते हैं। मुसलमानों का मज़हब बहुत दूर दूर

---

(१) यह पड़ता फैलाने की तर्कीब मुल्क की आबादी जानने के लिये बहुत अच्छी है, मिरज़ापुर के ज़िले में सन् १८४८ के बीच खानःशुमारी के समय ८३१३८८ आदमी गिने गये थे, और बनारस के ज़िले में कुल्ल ७४१४२६। अब अनाड़ी लोग इस बात के सुनने से यही समझेंगे कि मिरज़ापुर बनारस से अधिक आबाद है, पर विद्वान लोग दोनों ज़िलों का बिस्तार देख फ़ी मील मुरब्बा पड़ता फैला लेते हैं, और इस हिकमत से सहज में जानलेते हैं, कि बनारस मिरज़ापुर से कुछ कम पचगुना अधिक आबाद है, क्योंकि मिरज़ापुर का विस्तार ५२८४ मील मुरब्बा है, और बनारस का कुल ०९५ मील मुरब्बा पड़ता फैलाने से मिरज़ापुर में फ़ी मील मुरब्बा १५८ आदमी पड़ते हैं, और बनारस में ७४५ आदमी यह वही हिसाब है कि जैसे एक के खेत में ४ मन गेहूं पैदा हुआ और दूसरे के में १० मन, पर जब मालूम हुआ कि दस मनवाले खेत में बीस बीघे धरती है, और चारमनवाले में दो ही बीघे तो साफ़ प्रकट होगया, कि चार मनवाले की धरती अधिक उपजाऊ है क्योंकि उसको फ़ी बीघे दो मन गेहूं पड़े और दस मनवाले को फ़ी बीघे कुल आध मन अर्थात् बीस सेर॥

तक फैला है, पर गिन्ती में बुद्ध के माननेवाले अधिक हैं। हिन्दुस्तानवाले वैदिक धर्म रखते हैं, और ईसा का मत अब तक पृथ्वी के इस विभाग में बहुत नहीं चला। एशिया का मुल्क अगली तवारीख और इतिहासों में बड़ा प्रसिद्ध है, क्योंकि पहला आदमी जिससे हम सब मनुष्य उत्पन्न हुए, पृथ्वी के इसी भाग में पैदा हुआ था, और पृथ्वी के इसी भाग से सारी बातें बुद्ध विवेक और सुख की निकलनी शुरू हुई। पहले ही पहल पृथ्वी के इसी भाग में प्रतापी और बलवान राजे हुए, और सब से पूर्व पृथ्वी के इसी भाग में लक्ष्मी और विद्या का पैर आया। सिवाय इसके जैसे नदी पहाड़ जंगल और मैदान पृथ्वी के इस भाग में पड़े हैं, और जैसे फल फूल औषधि अन्न पशु पक्षी धातु रत्न इत्यादि इस में पैदा होते हैं, ऐसे कदापि दूसरे खंडों में नहीं मिलेंगे। एशिया में नीचे लिखी हुई विलायतें बसी हैं। आदौ हिन्दुस्तान, उसके पूर्व बर्म्हा, उसके दक्षिण स्याम, उसके दक्षिण मलाका, स्याम के पूर्व कोचीन, बर्म्हा के पूर्व और उत्तर चीन, उसके उत्तर एशियाईरूस, चीन के पूर्व जापान के टापू, हिन्दुस्तान के पश्चिम अफ़ग़ानिस्तान, उसके पश्चिम ईरान, चीन के पश्चिम तूरान, ईरान के पश्चिम अरब उसके उत्तर एशियाईरूम। बादशाहत इन सब विलायतों में स्वाधीन स्वेच्छाचारी हैं, और सदा से ऐसी ही चली आई, अर्थात् बादशाह जो चाहे सो करे, कोई उसको रोक नहीं सकता, बादशाह के मुंह से निकला वही आईन है, मुल्क चाहे बर्बाद हो चाहे आबाद, प्रजा की सामर्थ्य नहीं कि उसकी आज्ञा टाल सके। इस ढब के राज्य में जब राजा धार्मिक और नैयायिक होता है, तब तो प्रजा को सुख चैन मिलता है, और नहीं तो लूट मार और बे इन्तिज़ामी मची रहती है, और तैमुर

और नादिर ऐसे बादशाह एक एक दिन में लाख लाख आदमी मर्द औरत और बच्चे बेगुनाह कटवा डालते हैं। केवल एक हिन्दुस्तान के बीच हम लोगों के भाग्यबल अब कुछ दिनों से आईनी बन्दोबस्त हुआ है, अर्थात् बादशाह का मक़दूर नहीं कि आईन के बख़िलाफ़ कुछ भी काम करसके। आईन बादशाह और रैयत दोनों की सम्पति साथ बनता है, जब तक रैयत राज़ी न हो बादशाह अपनी तरफ़ से कोई भी आईन जारी नहीं कर सकता, और रैयत काहे को ऐसे किसी आईनपर राज़ी होगी, कि जिस्से उसका नुक़सान है, पस इस बन्दोबस्त से बादशाह चाहे अच्छा हो चाहे बुरा इन्तिज़ाम में ख़लल नहीं पड़ता, और मुल्क की दिन पर दिन उन्नति होती जाती है। विशेष वर्णन इस आईन और पार्लीमेण्ट का अर्थात् जहां आईन बनता है, यूरूप देश के अन्तर्गत इंगलिस्तान की विलायत के साथ होगा, क्योंकि अब हिन्दुस्तान उसी बादशाह के ताबे है। हम लोगों को इतनी बुद्धि न होने के कारण कि अपने मुल्क के लिये आप आईन बनावें वहांवाले अपनी तरफ़ से कई बड़े योग्य साहिबों को चुनकर कौंसिल के नाम से यहां मुक़र्रर करते हैं, कि जिस में वे सम्मत होकर प्रजा के हितकारी आईन बनावें। इस कौंसिल का वर्णन हिन्दुस्तान के साथ होगा॥

हिन्दुस्तान

यह मुल्क एशिया के दक्षिण भाग में ८ अंश से ३५ अंश उत्तर अक्षांश तक और ६७ अंश से ९२ अंश पूर्व देशान्तर तक चला गया

है। हिन्द और हिन्दुस्तान इस मुल्क का नाम मुसलमानों ने रक्खा, और इंडिया अङ्गरेज़ लोग पुकारते हैं, जड़ इन दोनों नाम की सिन्ध नदी मालूम पड़ती है, क्योंकि अंगरेज लोग तो अब भी उस नदी को इंडस कहते हैं। संस्कृतवालों ने उसका नाम भारतवर्ष इसलिये रक्खा कि उनके मत बमूजिब किसी समय में राजा भरत ने यहां एक छत्र राज किया था। सीमा इस देश की जुदा जुदा समय में जुदा जुदा तरह पर रही है, कभी लोगों ने ब्रह्मा स्याम मलाका और कोचीन को भी इसी में गिना, और कभी काबुल क़न्दहार और तिब्बत को इस में मिलाया, पर हम यहां वही सीमा लिखते हैं जो अब इस काल में बरती जाती है और अंगरेज़ी नक़्शों में लिखी रहती है, और इसी सीमा के अन्तर्गत देश को हिन्दुस्तान कहना चाहिये क्योंकि ब्रह्मा और काबुल इत्यादि देशवाले अपना चाल चलन मज़हब और राज्य इन दिनों हम लोगों से ऐसा जुदा रखते हैं कि अब उनको जुदा ही विलायत कहना उचित है। निदान यह हिन्दुस्तान जो पान की तरह कुछ त्रिकोणसा और नोक उसकी दक्षिण को निकली हुई नक़्शे में देख पड़ता है, दक्षिण तरफ़ समुद्र से घिरा है और उत्तर तरफ़ उसके हिमालय का पर्वत पड़ा है, पश्चिम तरफ़ सिन्धु पार जिसे अटक का दर्या भी कहते हैं सुलैमान पर्वत है और पूर्व तरफ़ उसके मनीपुर के जंगल-पहाड़ों से परे ब्रह्मा का मुल्क है। इसकी लंबान कुमारी-अन्तरीप से, जो दक्षिण में सेतुबन्धरामेश्वर के भी अगाड़ी है, कश्मीर तक प्रायः अठारह सौ मील होगी, और चौड़ान मुंज-अन्तरीप से जो करांची-बन्दर से भी बढ़ कर पश्चिम में है और जिसे वहांवाले रासमुअरीं भी कहते हैं ब्रह्मा देश की सीमा तक प्रायः सोलह सौ मील है। विस्तार इसका कुछ न्यूनाधिक बारह लाख मील मुरब्बा बत-

लाते हैं, और आदमी इसमें अटकल से चौदह करोड़ बसते हैं। पड़ता फैलाने से फ़ी मील मुरब्बा कुछ ऊपर ११६ आदमी पड़ेंगे॥

हम अभी ऊपर इस ग्रन्थ में किसी जगह एशियाकी बड़ाई लिख आये हैं पर जानना चाहिये कि एशियामें भी यह देश सबसे अधिक प्रख्यात था। यह देश किसी समय में विद्या और धनके लिये सब में शिरोमणि गिना जाता था। सारे पृथ्वी के मनुष्य इस देश के देखने की अभिलाषा रखते थे, और जो बणिक् बेवपारी यहां तक आते थे जन्मभरको रोटियों से निश्चिन्त होजाते थे। यहां के राजाओं से सारे बादशाह दबते थे और इनका वे लोग सब तरह से मन रखतेथे। देखो इन फ़रंगिस्तान वालोंने, जो अब विद्याको भी विद्या सिखाते हैं, पहले ही पहल रूमिया से पढ़ने लिखने की सुधबुध पाई, रूमी यूनानियों के चेले थे, और यूनानी और मिसरवाले हिन्दुस्तान में आकर यहां के पंडितों से विद्या उपार्ज्जन कर गये थे। केवल सिन्धु नदी के तटस्थ दो चार ज़िले इस देशके जो कुछ दिन ईरान के बड़े बादशाह दाराशाह के क़ब्ज़ेमें रहे तो कहते हैं कि जितनी आमदनी सारे ईरानके मुल्क की उसके खज़ाने में आतीथी उसकी एक तिहाई निराले इन ज़िलों से उसे हाथ लगती थी, बरन ईरानवाले सब उसे कर में चांदी देते थे और इन ज़िलों के ज़मीदार सोना पहुंचाते थे। इस टूटे हालमें भी सन् १७३९ के दर्मियान नादिरशाह यहां से सत्तर करोड़ का माल लेगया कि जिसमें केवल एक तख़्त ताऊस बादशाह के बैठने का सात करोड़ से अधिक का था। जब तक राह न मालूम थी तो फ़रंगिस्तानवाले समुद्र से इस मुल्क में जहाज़ लाने के वास्ते कैसे अधैर्य्य और व्याकुल थे, कितने जहाज उनके इस राह की खोजमें मारे गये और कितने आदमी इसी लालसा में समुद्र की

मछलियों के ग्रास हुए। सिकन्दर ऐसा महीपाल इस मुल्क लेने की कामनाही में मरा, और बाबिल के स्वामी सिल्यूकस और ईरान के अधिपति नौशेरवां जैसे बादशाहों को इस देश के राजाओं के लिये अपनी बेटियां देनी पड़ीं। सिल्यूकस की बेटी महाराज चन्द्रगुप्त को आई थी और नौशेरवां की बेटी उदयपुरके राणाने ब्याही। निदान इस देश की अभिलाषा सारे देशों के लोग रखते थे, और चारों तरफ़ से दौड़ दौड़ कर यहां आते थे, और यहांवाले और सब देशों को तुच्छ जैसा समझ कर कभी बाहर न जाते, और सदा अपनेही स्थान में स्थिर बने रहते कौन ऐसी वस्तु थी जो इस देशमें न हो और ये उसकी खोजके लिये बाहर जावे, ईश्वर की कृपा से इनको इसी जगह सब कुछ मौजूद था॥

पहाड़ इस मुल्क में कम हैं और मैदान बहुत, और उन मैदानों में नदियां इस बहुतायत से बहती हैं कि सारा मुल्क मानों बागकी तरह सिंच रहा है। हिमालय पर्वतजो इस मुल्क की उत्तर सीमा है दुनिया के सब पर्वतों से ऊंचा है। पूर्व में उस स्थान से जहां ब्रह्मपुत्र, पश्चिम से उस स्थान तक जहां सिन्धुनदी इसे काट कर तिब्बत से हिन्दुस्तान में आती है, इस पहाड़ की लम्बान प्रायः दो हज़ार मील होवेगी (१) और चौड़ान अनुमान कुछ कम चारसौ मील। हिमा-

---

(१) इस पहाड़ की अवधि इतनी ही मत समझना जितनी यहां लिखी गई। यहां उतना ही लिखना उचित है जितना हिन्दुस्तान के साथ मिला है और हिमालय के नाम से पुकारा जाता है बाक़ी का हाल दूसरी विलायतों में लिखा जावेगा यह पर्वत समुद्र तक चला गया है॥

H/915.4/Si.965/Pt.1-3
5610 dt. 19.1.62 20-00
National Library, Calcutta-27

चल और हिमाद्रि भी उसी का नामहै। हिम संस्कृत में बर्फ़ को कहते हैं। इस पहाड़ के शृंग सदा बारहों महीने बर्फ़ से ढके रहते हैं, जो कभी कहीं से कुछ बर्फ़ हट जाती या गिर पड़ती है, तो सैकड़ों हाथ ऊंचे केवल बर्फ़ के करारे दिखलाई देने लगते हैं जो कोई आदमी हिन्दुस्तान के मैदान से इस कोहिस्तान में जावे, तो पहले उसे छोटे पहाड़ों पर चढ़ना उतरना पड़ता है ज्यों ज्यों वह उत्तर को इन पहाड़ों में बढ़ता जाता है पहाड़ों की उचान भी बढ़ती जाती हैं, यहां तक कि जाते जाते दस पन्द्रह अथवा बीस दिन में वह उन पहाड़ों की जड़ में पहुंच जाता है कि जिनके शृंग सदा हिम से आच्छादित रहते हैं। इन पहाड़ों पर मनुष्य तो क्या पशु पक्षी भी नहीं पहुंच सकते, बरन बादल भी कटिमेखला से उनके अधोभागही में लटकते रहजाते हैं, शृङ्ग तक कदापि नहीं चढ़ सकते। हट्टू से पहाड़ पर, जो शिमलासे तीन मंज़िल आगे दस हज़ार फ़ुट समुद्र (१) के जल से ऊंचा है

(१) पहाड़ उचान समुद्र के जल से इस वास्ते लिखते हैं कि पृथ्वी कहीं ऊंची कहीं नीची, हिसाब सब जगह में ठीक नहीं बैठता, और समुद्र का जल सब स्थान में बराबर है। बहुत अनजन आदमी पहाड़ों की उचान चढ़ाई के हिसाब से बतलाते हैं, पर याद रखो कि इस ढब से कदापि उस्की उचान का ठीक अनुमान नहीं हो सकता क्योंकि किसी पहाड़ में ढालो थोड़ा रहता है और किसी में बहुत इस लिये हमने सब जगह पहाड़ों की खड़ी उचान का हिसाब लिखाहै, जैसे देखो कसौली के पहाड़को कालका से सड़ककी राह छकोस चढ़ाई लगती है, परजो सड़क छोड़ करकोई आदमी दूसरी तरफ़ से उस पर सीधा जा सके तो उसे अनुमान दो कोस से अधिक

किसी दिन जब आकाश निर्म्मल हो चढ़ के इन बर्फ़ीपहाड़ों की शोभा देखनी चाहिये पूर्व पश्चिम और दक्षिण को जहां तक निगाह जाती है सौ सौ दो दो सौ मील तक पहाड़ ही पहाड़ सवा सवा सौ हाथ तक ऊंचे और बीस बीस हाथ तक जड़ में मोटे पेडों के जङ्गलों से मानो हरे कपड़े पहने हुए जिन में नदियों का पानी जगह जगह पर उनकी जड़ों में सूर्य्य की आभा से चमकता हुआ कनारी गोटा लगा है समुद्र के तरङ्ग की तरह ऊंचे नींचे दिखलाई देते हैं और उत्तर दिशा में अर्द्धचन्द्राकार कोई दो सौ कोस के पल्ले तक बर्फ़ी पहाड़ नज़र पड़ते हैं ऐसे ऊंचे कि मानो ईश्वर ने आकाश के सहारे के लिये यही खम्भे रचे, धूप के तेज से ऐसे चमकते कि मानो पृथ्वी के हाथ में यह उजले हुए चांदी के कङ्कण पड़े हैं, और फिर जो अपने पैरों के नीचे निगाह करो तो बाग़ की क्यारियों की तरह सैकड़ों रंग के फूल खिल रहे हैं, बरन बाग़ों में वे फूल कहां पाइए पहाड़ों के पानी के गिरने का शोर और ठंढी ठंढी हवा की झकोर यह शोभा देखेही बन आवे लिख के कोई कहां तक बतावे। जो लोग इन पहाड़ों को पार होकर हि-

---

न चढ़ना पड़ेगा. और हिसाब से उस की खड़ी उचान समुद्र के जल से कुल कुछ ऊपर चार हज़ार हाथ अथवा छ हज़ार फ़ुट है, अर्थात् जो कसौली के शृंग पर कोई कूवा खोदना चाहे तो जब चार हज़ार हाथ गहरा खुद चुकेगा तब उसकी हाथ समुद्र के जल से बराबर गिनी जायगी, अथवा कसौली के बराबर ऊंचा कोई मनार समुद्र के ठीक तट पर बनाना चाहे तो चार हज़ार हाथ ऊंचा बनाना पड़ेगा तीन फ़ुट का एक गज़ होता है और एक गज़ में दो हाथ होते हैं ॥

न्दुस्तान से तिब्बत को जाने चाहते हैं, वे उन नदियों के किनारे किनारे, जो इन पहाड़ों को काट कर तिब्बत से हिन्दुस्तान में आई हैं, पहाड़ों की जड़ ही जड़ में चल कर, अथवा उन घाटियों पर, जो किसी किसी जगह में ऐसी ऊंची नहीं हैं जिन पर जान न बच सके, चढ़ कर पार हो जाते हैं। शृंगों पर, अर्थात् इन पहाड़ों की चोटियों पर, कदापि कोई नहीं जासकता। सब से ऊंचा शृंग उसका धवलगिरि जहां से गंडक नदी निकली है समुद्र के जल से कुछ ऊपर अठाईस हज़ार फ़ुट ऊंचा है। जमनोत्री का पहाड़ जिसके नीचे से जमना निकली है प्रायः छब्बीस हज़ार फ़ुट, और पुरगिल पहाड़, जो पित्ती और सतलज नदी के बीच में है, प्रायः तेईस हज़ार फ़ुट ऊंचा है। नीति-घाटी, जिसे लीति भी कहते हैं, बदरीनाथ से ईशान कोन की तरफ़ दौली नदी के किनारे कुछ ऊपर सोलह हज़ार फ़ुट समुद्र से बलन्द है। कमाऊं-गढ़वाल-वाले इसी घाटी से हिमालय पार होकर तिब्बत और चीन को जाते हैं। श्रेणी हिमालय पहाड़ की सिन्धु से लेकर ब्रह्मपुत्र तक एक ही चली गई है, पर उसके जुदा जुदा टुकड़े और जुदा जुदा शृंग जुदा जुदा नाम से पुकारे जाते हैं, जैसा अभी ऊपर शिमला हट्टू धवलगिरि जमनोत्री पुरगिल इत्यादि लिख आये। इन पहाड़ों में प्रायः तेरह हज़ार फ़ुट की ऊंचाई तक तो जङ्गल भी होता है और आदमी भी बस्ते और खेती बारी करते हैं। फिर तेरह हज़ार फ़ुट से ऊपर बर्फ़ ही बर्फ़ रहती है, जो पहाड़ तेरह हज़ार फ़ुट से कम और सात हज़ार से अधिक ऊंचे हैं उन पर केवल जाड़े के दिनों में थोड़ी बहुत बर्फ़ गिर जाती है। अजब महिमा है सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की, ज्यों ज्यों ऊपर चढ़ते जाओ दरख़्त झाड़ी फल फूल और खेतियों की सूरत बदलती जाती है, कहां तो

अभी उनकी जड़ में गर्म मुल्क के पेड़ आम इमली इत्यादि देखे थे, और कहां थोड़ी ही दूर बढ़ कर सर्द मुल्क की पैदाइशेंबान् बरास चील केलो देवदार इत्यादि दिखलाई देने लगे, यहां तक कि फिर बर्फ़ की हद के पास सिवाय भोजपत्र के और कुछ भी नहीं उपजता। एकही निगाह में गर्मी सर्दी बरसात तीनों मौसिम नज़र पड़जाते हैं। अधोभाग में गर्मी और गर्मी की खेतियां, जो पहाड़ी लोग सीढ़ियों की तरह पहाड़ों पर दर्जा बदर्जा बोते चले जाते हैं और झरनों के पानी से अनायास सिंचा करते हैं, मध्य में जो बादल घिर आये तो बरसात और गरजना तड़पना, और ऊपर फिर जाड़ा और बर्फ़ है। दस कोस के तफ़ावत में तीनों मौसिम की चीज़ पैदा होसकती हैं। जोरार्ड साहिब पुरगिल पहाड़ पर बीस हज़ार फ़ुट तक ऊंचे चढ़े थे, इस्से अधिक ऊंचे इन पहाड़ों पर किसी आदमी का जाना अब तक सुनने में नहीं आया। पन्द्रह हज़ार फ़ुट से आगे बढ़ने पर सांस रुकने और सिर और छाती में दर्द होने लगता है। शिमला मंसूरी इत्यादि स्थानों में जहां सर्कार ने पत्थर काटकर सड़क निकाल दी हैं वहां चढ़ाव उतराव तो अवश्य रहता है पर लोग बे खटके घोड़े दौड़ाते चले जाते हैं। बाक़ी और सब जगह में जहां सड़कें नहीं, रस्ता इन पहाड़ों में बहुत विकट है, कहीं दीवार की तरह खड़े पहाड़ों में उन की दरारों के दर्मियान खूंटियां गाड़ कर और उन खूंटियोंपर लकड़ियां रखकर उन लकड़ियों के सहारे से चलते हैं, और कहीं घास की जड़ पकड़ पकड़ कर बन्दरों की तरह हाथके बल इन पहाड़ों पर चढ़ते हैं, जो पैर के तले निगाह करो तो कई सौ हाथ नीचे दर्या का पानी इस ज़ोर के साथ पत्थरों से टकरा रहाहै कि जिसे देखकर सिर घूमे, और जो सिर पर नज़र उठाओ तो वह पहाड़ दीवार सा

इतना ऊंचा दिखलाई देवे कि जिसे देखके आंख तिरमिरा जावे, ऐसी बिकट राहों का हाल भी सुनने से रोंघटे खड़े होते हैं चलनेवालों का तो जी ही जानता होगा। हिमालय के सिवा इस मुल्क में और भी जो सब पहाड़ वर्णन योग्य हैं उनमें से विन्ध्याचल इस देश के मध्य में पड़ा है खम्भात की खाड़ी से नर्मदा नदीके उत्तर उत्तर ज़िलै भागलपुर में गंगा के किनारे तक चला आया है; पर उंचाई उस्की अनुमान दो अढ़ाई हज़ार फ़ुट से अधिक कहीं नहीं। सह्याद्रि विन्ध्य के पश्चिम सिरे से लेकर समुद्र के तट से निकट ही निकट कुमारी अन्तरीप तक चला गया है। अंगरेज़ लोग इसे पश्चिम घाट बोलते हैं। मलयागिर इसी के दक्षिण भाग का नाम है। सह्याद्रि के साम्हने बंगाले की खाड़ी के निकट कावेरी से विन्ध्यके पूर्व सिरे तक पहाड़ों की जो एक छोटी सी श्रेणी गई है उसे पूर्व्वघाट बोलते हैं। इन पश्चिम और पूर्व्वघाट के बीचमें दक्षिण तरफ़ जो पहाड़ उस्का नाम नीलगिरि है। यद्यपि इन पहाड़ों में पानी और जंगल की बहुतायत से बड़े बड़े रम्य और मनोहर स्थान हैं, पर शृंग उन के पांच छ हजार फ़ुट से अधिक ऊंचे कोई नहीं, केवल एक मूरचूर्तिबेत नीलगिरि में कुछ ऊपर आठ हजार फ़ुट ऊंचा है॥

अब उन नदियों का बयान सुनो जो इन पहाड़ों में से निकलती हैं। मुख्य उनमें गंगा जमना सरयू गण्डक शोण कोसी तिष्टा चम्बल सिन्धु झेलम चनाब रावी व्यासा सतलज ब्रह्मपुत्र नर्मदा तापी महानदी गोदावरी कृष्णा और कावेरी हैं। गंगा इस देशकी प्रधान नदी जिसे संस्कृत में भागीरथी जान्हवी इत्यादि बहुतेरे नामों से पुकारते हैं, हिमालय से निकलकर पन्द्रह सौ मील बहनेके बाद अनेक प्रवाहों से बंगाले की खाड़ी में गिरती है। जिस स्थान से यह निकली है

उसे गंगोत्री अथवा गंगावतारी और गोमुख भी कहते हैं, वहां कोई तीन सौ फुट ऊंचा एक बर्फ़ का ढेर है, उसी के नीचे एक मोखे से इस गंगा की धारा कुछ न्यूनाधिक अठारह हाथ चौड़ी और अनुमान हाथ या दोहाथ गहरी निकलती है, कि जोफिर और नदियोंका पानी लेकर पांच कोस के पाट से समुद्र में मिलती है। गंगाका उत्पत्तिस्थान अर्थात् गंगोत्री समुद्र के जल से कुछ कम चौदह हजार फुट ऊंचा है। जिस जगह में यात्रियों के दर्शन के लिये मन्दिर बना है वहां से यह स्थान ग्यारह मील आगे है। हरिद्वार से, जो समुद्र के जल से एक हज़ार फुट ऊंचा है, यह नदी पहाड़ों को छोड़ मैदान में बहती है। राजमहल से कुछ दूर आगे बढ़कर इस गंगा की कई धारा होगईं, पर जो कलकत्ते के नीचे होकर भागीरथी और हुगली के नाम से सागर के टापू के पास समुद्र से मिलती है हिन्दू उसी को असली गंगा समझते हैं, और जहां इसका समुद्र से संगम हुआ बड़ा तीर्थ मानते हैं। वहां कपिल मुनि का एक मन्दिर बना है, और जो धारा सब से बड़ी पूर्व में ब्रह्मपुत्र के साथ मिलकर दखन शहबाज़पुर नाम टापू के साम्हने समुद्र में गिरती है उसे पद्मा पद्मावती और पद्दा भी कहते हैं, और उसका माहात्म्य असली गंगा के बराबर नहीं मानते इस सौ कोस के तफ़ावत में जो इन दोनों धारा के बीच पड़ा है गंगा की और सब सैकड़ों धारा समुद्र से मिलती हैं। पानी की बहुतायत से इस जगह में बड़ा दलदल और अति सघन जंगल रहता है। इसी जंगल का नाम सुन्दर बनहै, कि जो वृक्षों की शाखा पर कलोलें करते हुए बंदर लंगूर और रंग बरंग के मधुर मंजुल शब्द करनेवाले पक्षियों की बहुतायत से पथिक जनों का जिनकी नावें उस राह से आती हैं, मन लुभाता है, और अति सुन्दर और मनोहर मालूम पड़ता है, पर जिस

में सर्प सिंह इत्यादि दुष्ट जीव जन्तु भी इतने रहते हैं कि ऐसा साहस-वाला कोई नहीं जो अपनी नौका से उतर कर इस जंगल के भीतर घुसे, बरन नौकामें भी, जो बीच धारा में लंगर पर रहती है, रात को चौकस रहना पड़ता है, नहीं तो आश्चर्य नहीं जो कोई शेर पानी में तैर कर नाव से किसी आदमी को उठा ले जावे। आबहवा भी इस जंगल की निहायत खराब है। बरसात में गंगा का पानी दस ग्यारह हाथ ऊंचा बढ़ जाता है और बंगाले के मुल्क में इस नदी के दोनों कि-नारों पर पचास पचास कोस तक जलही जल दिखलाई देने लगता है। धानों के खेत में नावें चलती हैं और गांव जगह जगह पर पानी के बीच में टापुओं की तरह देख पड़ते हैं। हिन्दुओं का यह मत है कि गंगा में नहाने से सारे पाप धो जाते हैं, और कहते हैं कि उसका पानी चाहे जितने दिन रक्खो बिगड़ता कभी नहीं, बरन उसका पीना बहुत गुण-कारी समझते हैं। अबदुल हकीम खां जो सन् १७९२ में बीजापुर के जिले के दर्मियान शाहनूर का नव्वाब था मुसलमान होकर भी सिवाय गंगा जल के कभी कोई दूसरा पानी न पीता, और पांच सौ कोस से इस नदी का पानी मंगवाता, जो कुछ हो गंगा से इस देशवालों का बड़ा उपकार होता है, लाखों बीघे खेती केवल इसी के जल से होती है, और करोड़ों काम इन लोगोंके इसमें नाव चलनेसे निकलते हैं, केवल जलंघी भागीरथी और माथाभंगा इसकी इन तीन धारा की राह में कम से कम अस्सी हजार नाव साल भरमें आती जाती हैं, बरन कलकत्ते तक तो इस नदी में समुद्र से जहाज़ भी आते हैं। जमना जिस का शुद्ध नाम यमुनाहै, और जिसे संस्कृत में कालिन्द्री इत्यादि नामों सेभी पुकारते हैं, गंगोत्री से कुछ दूर पश्चिम हिमालय में जमनोत्री के पहाड़ से निकलकर कुछ कम आठ सौ मील बहती हुई प्रयाग

के नीचे, जिसे इलाहाबाद भी कहते हैं, गंगा में मिल जाती है। इन दोनों नदियों के संगम को हिन्दू लोग त्रिवेनी कहते हैं, और बहुत ही बड़ा तीर्थ मानते हैं। अगले समय में ये लोग दूसरे जन्म में अपना मन वाञ्छित फल पाने के निश्चय पर अक्सर इस तीर्थ में अपना सिर आरे से चिरवा डालते थे, शाहजहां बादशाह ने यह काम बुरा समझकर मौकूफ़ कर दिया, और वह आरा भी तुड़वा डाला। कपतान हडसन साहिब जमनोत्री का हाल इस तरह पर लिखते हैं, कि जमनोत्री के पहाड़ की नैर्ऋत अलंग में कुछ ऊपर दस हज़ार फ़ुट समुद्र से ऊंचे एक बर्फ़ के टुकड़े के नीचे से, जो उस समय साठ गज़ चौड़ा और तेरह गज़ मोटा था, यह नदी कोई गज़ भर चौड़ी और पांच चार अंगुल गहरी निकलती है, उस बर्फ़ के टुकड़े में एक मोखा था, कपतान साहिब उस मोखे की राह उस के अंदर चले गए, तो वहां जाकर क्या देखते हैं, कि उस बर्फ़ की छत के नीचे पहाड़ के पत्थरों में बहुत से छेद हैं, और उन छेदों में से अदहन की तरह खौलता हुआ पानी निकलता है। निदान यही पानी जमना का जड़ है, पर पहाड़ छोड़ कर जब यह मैदान में पहुंचती है, तो फिर इतनी बड़ी है कि बड़े बड़े नाव बेड़े इसमें चलते हैं। सरयू जिसे शरयू सरजू घर्घरा घाघरा देविका और देवा भी कहते हैं, और गण्डक अथवा गण्डकी, और कोसी जिसका शुद्ध नाम कौशिकी है, और तिष्टा जिसे संस्कृत में तृष्णा और त्रिस्रोता भी कहते हैं, ये चारों नदियां हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ों से निकल कर पहली छपरे से कुछ दूर ऊपर, दूसरी पटने के साम्हने, तीसरी भागलपुर से कुछ दूर आगे बढ़कर, और चौथी करतोया को लेती हुई नवाबगंज के पास, गंगा से मिलती हैं। गण्डक में सालग्राम

मिलते हैं इसलिये उसे सालग्रामी भी बोलते हैं। कहते हैं कि हिमालय के उत्तर भाग में मुक्तिनाथ के पास गण्डक के किनारे जो एक पर्ब्बत है यह नदी सालग्राम को उसी में से बहालाती है। हिन्दू तो सालग्राम को साक्षात विष्णु का अवतार समझते हैं, और अंगरेज़ लोग उसे अमोनैट कहते हैं, और बतलाते हैं कि जिस को हिन्दू चक्र का चिन्ह जानते हैं वह तूफ़ान के समय में जो सब समुद्र के जीव पहाड़ों में दबगए थे उनमें से एक प्रकार के छोटे से जानवर का निशान है। इस जाति के जानवर अब तक भी समुद्र में मौजूद हैं और इस प्रकार के अङ्कित पत्थर और भी बहुत पहाड़ों में मिलते हैं। गण्डक में तैरना और करतोया में नहाना हिन्दुओं के मत बमूजिब मना है, और इसी तरह कर्मनाशा का, जो एक छोटी सी नदी बनारस और बिहार के ज़िलों के बीच बह कर गंगा में गिरती है, पानी छूने के लिये मनाही है। चम्बल जिसे संस्कृत में चर्मण्वती लिखा है, और सोन अथवा शोण, यह दोनों विंध्याचल से निकल कर पहली तो इटावे से बारह कोस नीचे जमना में गिरती है और दूसरी शरयू और गण्डक के मुहानों के बीच में छपरे के साम्हने दक्षिण से आकर गंगा में मिलती है। सिन्धु नदी, जिसे अटक का दर्या और अंगरेज़ लोग इण्डस कहते हैं, हिमालय के पार गारू-शहर के पास कैलास पर्ब्बत की उत्तर अलङ्ग से निकली है, और सत्तरह सौ मील से ऊपर बह कर कई धारा हो, कि जिस में सब से बड़ी का पाट मुहाने पर छ कोस से कम नहीं है, हिन्दुस्तान की पश्चिम दिशा में समुद्र से मिलती है। अटक के नीचे पहाड़ों में जगह की तंगी से यह दरिया बड़े ज़ोर शोर से बहता है, पाट वहां पर कुछ ऊपर पांच सौ हाथ होगा, पर पानी बहुत गहरा और नावों को उस जगह में बड़ा ही डर रहता है, जो कहीं पहाड़ से

टकर खावें तो एक दम में टुकड़े टुकड़े हो जावें। हिन्दुओं के धर्मशास्त्र में सिन्धु-पार जाना मना है, लेकिन काम पड़ने से सब जाते हैं, बरन अगले जमाने में हमारे देश के राजाओं ने सिन्धु पार उतरकर बहुत मुल्क फ़तह किये हैं। झेलम चनाब रावी व्यासा और सतलज ये पांचों नदियां हिमालय से निकलकर सब की सब इकट्ठी पञ्चनद के नाम से मिट्ठनकोट के नीचे सिन्धु में गिरती हैं, और इन्हीं पांच नदियों से सिंचा हुआ देश पंजाब अथवा पंचनद कहलाता है। इन में से एक सतलज तो हिमालय के उत्तर भाग में मानसरोवर के पास रावण ह्रद से निकली है, और बाक़ी चारों हिमालय की दक्षिण अलंग से निकलती हैं। झेलम, जिसे शास्त्र में बितस्ता लिखा है, और कुछ ऊपर चार सौ मील बहकर झंग से दस कोस नीचे चनाब में मिल जाती है, और रावी भी जिसका संस्कृत नाम ऐरावती है, कुछ ऊपर चार सौ मील बहती हुई मुलतान से बीस कोस ऊपर इसी चनाब से आमिलती है। व्यासा जिसे विपाशा भी कहते हैं, अभयकुण्ड से निकल अनुमान दो सौ मील बहकर हरीके पत्तन के पास सतलज से मिलती है, उस्की थाह में चोरवालू अकसर जगह है इस कारन जाड़ों में जब पानी घट जाता है पायाब उतरने में बहुत ख़बरदारी रखनी पड़ती है बरन किनारों पर संभल संभल के पैर धरते हैं, पगडंडी से कदापि बाहर नहीं जाते, नहीं तुरत बालू में गड़ जावें, और सतलज, जिसका शुद्ध नाम शतद्रु है, कुछ ऊपर आठ सौ मील बहकर बहावलपुर से बीस कोस नीचे चनाब से मिल पंजनद के नाम से अनुमान तीस कोस बढ़ कर मिट्ठन कोट के नीचे, जैसा कि अभी ऊपर लिख आए हैं, सिन्धु में जा गिरती है। चनाब, जिसे संस्कृत में चन्द्रभागा कहते हैं, हिमालय में अपने निकास से मिट्ठन कोट

तक कुछ ऊपर छ सौ मील लम्बी है। पहाड़ों में इन नदियों के द-र्मियान जहां पत्थर से पानी टकराने के सबब नावों का गुज़र हर्गिज़ नहीं हो सकता झूले अथवा छींके पर पार होते हैं, या मशकों पर चढ़कर उतर जाते हैं। झूला उसे कहते हैं कि जो नदी के एक किनारे से दूसरे क़िनारे तक बराबर कई रस्से बांधकर उन्हें तख्तों से पाट देते हैं, आदमी उन तख्तों पर अपने पांव से चलकर पार हो जाते हैं, यद्यपि अजनबी आदमी को इन पर से जाने में बड़ा डर लगता है, क्योंकि चौड़ान उसकी बहुधा हाथ दो हाथ से अधिक नहीं रहती, और पाट नदियों का सौ सौ दो दो सौ हाथ होता है, और सहारा हाथ से थामने को केवल उन्हीं रस्सों का मिलता है, पर छींका इस से भी बुरा है वह एक रस्सा होता है, इस पार से उस पार बंधा हुआ, और उसमें एक छींका लटका हुआ, और फिर छींके में एक रस्सी बंधी हुई आदमी उस छींके में बैठ जाता है, तब मल्लाह उसे उस रस्सी से, जिसका एक सिरा उस छींके में बंधा हुआ और दूसरा दूसरे किनारे पर उनके हाथ में, रहता है, खींच लेते हैं; जब छींका बीच में पहुँचकर रस्सी के झटकों से हि-लने लगता है और नीचे दर्या समुद्र की तरह पत्थरों से टकराता हुआ देख पड़ता है, तब अनजान आदमी का तो होश उड़ जाता है, और क्योंकर न उड़े, कि जो रस्सी टूटे, तो मीयां बीच ही में लट-कते रह जांय और जो रस्सा टूटे तो फिर दर्या में गोते खांय। मशक पर ऐसी दहशत नहीं है, जहां पानी का ज़ोर बहुत नहीं होता वहां मल्लाह, जिसे पहाड़ में दर्याई कहते हैं, अपनी मशक पर पेट के बल पड़ जाता है और पार होनेवाला उसकी पीठ पर दुज़ानू हो बैठता है वह मल्लाह अपने पैरों की तो पतवार बनाता है, और दोनों

हाथों में दो चप्पू रखता है, उन्हीं से खेकर पार पहुँच जाता है। यह मशक रोझ अथवा बैल के चमड़े की बनती है और बहुत बड़ी होती है। ब्रह्मपुत्र जिसे तिब्बतवाले सांपू कहते हैं, मानसरोवर के पास हिमालय की उत्तर अलंग से निकलकर कुछ ऊपर सोलह सौ मील बहता हुआ समुद्र के पास आकर गंगा में मिल जाता है। नर्मदा शोण के उद्गम-स्थान से पास ही निकलकर ७०० मील बहती हुई भड़ौंच के पास खम्भात की खाड़ी में जा गिरती है; और उसके मुहाने से कुछ दूर दक्षिण सूरत से दस कोस नीचे तापी भी जो बैतूल के पास पहाड़ से निकली है, साढ़े चार सौ मील बह कर समुद्र से मिल गई है। महानदी नागपुर के इलाक़े से निकल कर पांच सौ मील बहती हुई कटक के पास कई धारा होकर समुद्र में गिरी है। गोदावरी पश्चिम घाट में त्रिम्बक से निकलकर बरदा और बानगंगा को, जो दोनों नदियां गोंदवाने के इलाक़े से निकली हैं, लेती हुई नौ सौ मील बहके राजमहेन्द्री के नीचे समुद्र से मिली है। कृष्णा भी उन्हीं पहाड़ों में सितारे के नज़दीक महाबलेश्वर से निकलकर मालपर्व गतपर्व भीमा, जिसे संस्कृत में भीमरथी लिखा है, तुंगभद्रा इत्यादि नदियों को, जो उन्हीं पश्चिम घाट के पहाड़ों से निकली हैं, लेती हुई सात सौ मील बहके मछलीबन्दर के पास समुद्र से मिल गई है। जितने क़िस्म के क़ीमती पत्थर हीरा लसनिया इत्यादि इस नदी के बालू में मिलते हैं उतने और किसी में भी हाथ नहीं लगते। और कावेरी नीलगिरि में उतकमन्द अथवा उटकमण्ड से निकलकर कुछ ऊपर चार सौ मील बहती हुई तिरुच्चिनापल्ली से थोड़ीदूर आगे समुद्र में खप गई है। दक्षिण के पहाड़ों में इन कृष्णा कावेरी इत्यादि नदियों के दर्मियान जहां नाव का गुजर नहीं हो सकता, बांस की

टोकरी में, जो चमड़ों से मढ़ी रहती है, बैठकर पार उतरते हैं। निदान मुख्य नदियां तो यही हैं जिनका वर्णन हुआ, और बाक़ी छोटी छोटी तो इतनी हैं कि जिनकी गिनती बतलाना भी कठिन है, पर उन में से बहुत इन्हीं ऊपर लिखी हुई नदियों में मिल गई हैं। हिन्दुस्तान की नदियां बरसात में सब बढ़ती हैं, पर जो हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ से निकली हैं, वे गर्मी में भी बर्फ़ गलने के सबब कुछ थोड़ी बहुत बढ़ जाती हैं। नक़शे में नदियों का बहाव देखने से देश का ऊंचा नीचा होना भी बख़ूबी मालूम हो जाता है, जहां से नदियां निकलती हैं वहां अवश्य पहाड़ अथवा ऊंची धरती रहती है, और जिधर को वे बहती हैं वह उस से नीची और ढाल होती है॥

नहर बड़ी इस मुल्क में दोही हैं एक तो जमना की जो पहाड़ से काटकर दिल्ली में लाये हैं, और जिसका एक सोता पश्चिम में हरियाने तक पहुंचकर वहां रेगिस्तान में खप जाता है, और दूसरी गंगा की, जो हरिद्वार से काटकर दुआबे में लाए हैं। पहली तो फ़ीरोज़शाहतुग़लक, जो सन् १३५१ में तख़्त पर बैठा था, पहाड़ से सफ़ेदों के परगने तक जो दिल्ली से अनुमान तीस कोस होवेगा, और शाहजहां सफ़ेदों से दिल्ली तक लाया था, लेकिन फिर बहुत दिनों तक बेमरम्मत पड़ी रहने से बिलकुल ख़ुश्क होगई थी, सो अब सरकार अंगरेज़ी ने बख़ूबी मरम्मत करा दी, और पानी उसी तरह से जारी हो गया, लोगों को बड़ा आराम हुआ दिल्लीवालों के मानों सूखे खेत फिर लहलहाए और दूसरी सरकार की तरफ़ से बनकर तैयार हुई है। इस नहर के तैयार होजाने से अब दुर्भिक्ष अन्तर्वेद में कभी न पड़ेगा॥

झील हिन्दुस्तान में बड़ी कोई नहीं और छोटी छोटी भी बहुत कम हैं। चिलका कटक के पास चौंतीस मील लम्बी आठ मील चौड़ी है, पानी खारा, और कुछ न्यूनाधिक दो लाख मन नमक हर साल उस से वहां तैयार होता है पल्लीकाट अथवा पलियाकट. जिसे कोई मलयघाट भी कहता है इतनी ही बड़ी करनाटक अथवा कर्णाट देश में है कोलेरू कृष्णा और गोदावरी के बीच में छयालीस मील लम्बी और चौदह मील चौड़ी होगी। सांभर जयपुर और जोधपुर की अमलदारी के बीच में बीस मील लम्बी और दो मील चौड़ी है। सांभर नमक उसी में पैदा होता है जब गर्मी में उसका पानी सूखता है तो उसके किनारों पर यह नमक जम जाता है, लोग खोद कर उठा लाते हैं, और बहुधा उसके किनारों पर क्यारियां बनाकर उन में उसका पानी ले आते हैं वही पानी सूखकर नमक बन जाता है ऊलर कश्मीर के इलाक़े में सोलह मील लम्बी और आठ मील चौड़ी और गहरी इतनी कि अब तक किसी ने उसकी थाह नहीं पाई बितस्ता एक तरफ़ से उसका पानी लेती हुई बही है सिंघाड़े उस में बहुत होते हैं॥

अब सोचना चाहिये कि जिस देश में इतनी नदियां बहती हैं और पानी की ऐसी इफ़रात है फिर ज़मीन उपजाऊ और उर्वरा क्यों न हो, और यही कारन है कि जो इस देश की धरती शस्यजनक और बहुफला होना सारे संसार में प्रख्यात होगया, बरन और उपजाऊ देशों का इसे उपमा ठहराया यहां साल में दो फ़सल और कहीं तीन तीन फ़सल भी काटते हैं, और ऐसी बिरली वस्तु है कि जो यहां पैदा न हो। बर्फ़िस्तान और रेगिस्तान मैदान और कोहिस्तान, समुद्र से निकट, और समुद्र से दूर, गर्म और सर्द खुश्क और तर,

सब तरह के मुल्कों के अन्न फल फूल और औषधि यहां मौजूद हैं, मनुष्य की सामर्थ्य नहीं जो यहां के जंगल पहाड़ों की जड़ी बूटियों का सारा भेद जानलेवे, या जितने प्रकार के वृक्ष उनमें होते हैं सब की गिनती करे, केवल वे सब, कि जो सदा हम लोगों के काम में आते हैं उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं। खेत में यहां जव गेहूं चावल चना ज्वार बाजरा मूंग मोट मक्की उर्द मसूर मटर कोदों किराव अरहर मरुआ तिल तीसी राई सरसों ज़ीरा सौंफ़ अजवायन धनियां काहू कासिनी मेथी कंगनी सांवां चैना कोलथ बाथू फ़ाफरा रग्गी सोंठ हलदी सन तमाकू मजीठ मिरचा कुसुम कपास पोस्त नील ऊख केसर कचूर रेंडी अरवी शकरक़न्द ज़मीक़न्द रतालू वंडा खीरा ककड़ी तुरई आरिये कद्दू कोहड़ा पेठा तरबूज़ खरबूज़ा भिंडी बेड़ा सेम आलू गोभी पल-वल करेला मूली गाजर शलग़म पयाज लहसन हींग चुक़न्दर आदी-चक्र बैंगन और बाग़ और जंगल पहाड़ में सेब नाशपाती विही ग़ि-लास बादाम पिस्ता अंगूर आलूचा आलूबुख़ारा शाहदाना शफ़तालू शहतूत ज़र्दआलू अखरोट आम अमरूद अनार आमला कौला स-न्तरा जामन गुलाबजामुन लुकाट लीची फालसा खिरनी केला क-मरख अंजीर शरीफ़ा नीबू चकोतरा अनन्नास पपीता कटहल बढ़हल करौंदा हड़ बहेड़ा बेर बेल इस्टाबरी मको रसभरी कैफल ताड़ खजूर नारियल सुपारी तेजपात छोटी बड़ी इलायची जायफल जावत्री दारचीनी क़हवा सागू चन्दन रक्तचन्दन कालीमिर्च कबावचीनी कपूर जटामासी अगर गुग्गुर धूप लोबान मुखब्बर सागौन साल सीसों तुन नीम इमली महुवा कीकर पाकर खैर तीखुर चिरौंजी पलास रीठा सेमल बड़ पीपल कदम्ब कचनार कैत आमड़ा जलपाई अमलतास मौलसिरी चम्पा हारसिंगार चील चिलगोजा केलो का-

यल रौ बान बरास देवदार ककड़ महरू भोजपत्र बेदमुश्क चनार सफ़ेदा सर्व बांस बेत नर्कट कुश क़लम दूब बनफ़शा चाय मिंहदी भांग धतूरा पान टेंटी फोक करील आक झड़बेरी, फुलवारियों में गुलाब केवड़ा बेला चंबेली जाही जूही सेवती मदनवान मेगरा रायवेल नर्गिस सुगन्धरा सेवती सोसन गेंदा गुलदावदी गुलमेहंदी गुलदुपहरिया गुलअब्बास गुलखैरू लटकन झूमका इमरैलिस डेलिया, और पानी में कमल कमोदनी मखाना शोला सिंघाड़ा कसेरू इत्यादि बहुतायत से होते हैं। सिवाय इनके बहुत से फल फूल के वृक्ष अब अंगरेज़ लोगों ने दूसरे मुल्कों से लाकर इस देश में लगाए हैं, और लगाते जाते हैं, कि जिन का हिन्दी में नामही नहीं मिलता। डाकतर वालिच साहिब ने चार सौ छप्पन प्रकार की लकड़ी, जिन से यहां काठ की चीज़ें बनती हैं इकट्ठी की थीं। सहारनपुर में सर्कारी बाग़ के दर्मियान पांच हज़ार क़िस्म से ज़ियादः और कलकत्ते में सर्कारी बाग़ के दर्मियान जिसका घेरा प्रायः तीन कोस का होवेगा, दस हज़ार क़िस्म से अधिक वृक्ष विरुध लगाये हैं और डाकतर वैट साहिब केवल मन्दराज हाते से लाख क़िस्म से ऊपर पेड़ बूटे इकट्ठे करके इंगलिस्तान को ले गए। गेहूं नागपुर का प्रसिद्ध है। चावल वाड़े का सा, जो पिशौर के ज़िले में है, कहीं नहीं होता, पुलाव बहुत सुस्वाद और सौगन्ध बनता है, सेर भर चावल सेरही भर घी सोखता है, और फूल कर चार सेर के बराबर हो जाता है। चैना कोलथ बाथू फाफरा ये चारों अदना क़िस्म के अन्न केवल हिमालय के पहाड़ी-देशों में होते हैं और रग्गी दक्षिण के पहाड़ों में। तम्बाकू भिलसा सा कहीं नहीं होता, इस पेड़ का यहां पहले कोई नाम भी नहीं जानता था, जहांगीर बादशाह के इश्तिहार से जिसका ज़िकर उसने अपनी किताब में

लिखा है मालूम होता है कि यह काम की चीज़ पहले ही पहल उसके अथवा उसके बाप अकबर के समय में फ़रंगी लोग अमरिका से लाए। अब तो इतनी फैलगई कि लोगों को इस बात का निश्चय आना भी कठिन है। कपास यद्यपि अमरिका में भी होता है, परन्तु पुराने महाद्वीप के सब मुल्कों में इसी भारतवर्ष से फैली। सिकन्दर जब सतलज तक आया था तो उसके साथवालों ने कपास के पेड़ देखकर बड़ा अचरज माना, और अपनी किताब में उसका नाम ऊनका पेड़ लिखा, और उसकी यह टीका की कि यूनान में जो ऊन भेड़ियों की पीठपर जमता है वह हिन्दुस्तान में पेड़ों के बीच फलता है बेचारों ने रूई पहले कभी न देखी थी, केवल पोस्तीन और ऊनी वस्त्र पहनते थे। यहां रूई मालवे के दर्मियान बहुत पैदा होती है। पोस्त जिस्से अफ़यून निकलती है मालवे में बहुत होताहै, और वहां की अफ़यून अव्वल क़िस्म की गिनी जाती है, सिवाय इसके बनारस और पटने के आस पास भी बोया जाता है। नील तिरहुत में बहुत होती है। ऊख इसी जगह से बहुत विलायतों में फैली है। पुराने यूनानियोंने इस मुल्क की चाशनी खाकर बड़ा आश्चर्य माना, और किताबों में लिखा कि हिन्दुस्तान के आदमी भी मक्खियों की तरह पेड़ों के रस से शहद बनाते हैं। केसर की खेती कश्मीर के पामपुर परगने मात्र में होती है, और कहीं नहीं जमती, वहां केसर ऊंची ज़मीन पर बोते हैं जिस में पानी बिलकुल न ठहरे और सींचते कभी नहीं, जड़ उसकी पयाज़ के गट्ठे की तरह होती है, और वही गट्ठे बोए जाते हैं पेड़ और पत्ते उसके कुश घास से मिलते हैं, और फूल ऊदे रंग का क्वार कार्त्तिक में खिलता है, उसी फूल के भीतर पीली पीली यह केसर रहती है। कश्मीर में केसर पन्द्रह रुपये सेर मिलती है, और चालीस पचास

हज़ार रुपये की पैदा होती है। तरबूज़ मधुरता में इलाहाबाद का प्रसिद्ध है, और ख़रबूज़े जमाली आगरे के। आलू और गोभी भी हिन्दुस्तान की तरकारी नहीं हैं, तम्बाकू की तरह अमरिका से आ गई। शलग़म भुटान में बहुत बड़ा और मीठा होता है। पयाज़ बम्बई की प्रसिद्ध है। हींग का पेड़ सिन्ध और मुलतान की तरफ़ होता है। सेब नाशपाती बिही गिलास बादाम पिस्ता अंगूर आलूचा आलूबुख़ारा शाहदाना शफ़तालू शहतूत ज़र्दालू अख़रोट ये सब कश्मीर में बहुत अच्छे और कई प्रकार के होते हैं, और हिमालय के तटस्थ दूसरे ठंढे मुल्कों में भी मिलते हैं पर गिलास कश्मीर के सिवाय और कहीं नहीं होता बहुत नाज़ुक और वहां के मेवों का सर्दार है, फ़सल उसकी पन्द्रह बीस रोज़ से अधिक नहीं रहती, सावन के महीने में फलता है। अंगूर कश्मीर में किश्मिश बहुत अच्छा होता है, बीज बिलकुल नहीं गुच्छे का गुच्छा शर्बत की घूंट की तरह निगल जाओ पर कनाव़र सा इस विलायत में कहीं नहीं होता, गुच्छे और दाने भी बहुत बड़े और मीठे होते हैं और वहां सस्ते भी इतने कि चार पैसे को एक आदमी का बोझ लेलो। शफ़तालू चम्बे से बिहतर दूसरी जगह नहीं फलता। आम बम्बई के बराबर कहीं नहीं होता, पर बनारस और मालदह का भी बहुत प्रसिद्ध है, इस मुल्क का ख़ास मेवा है, दूसरी विलायत में नहीं मिलता, और दुनिया के सब मेवों का सिरताज है, इसका नाम अमृतफल लोगों ने बहुत ठीक रक्खा, अमृत भी उस से अधिक सुस्वाद न होगा, बड़े आम सेर सेर से भी ऊपर वज़न में उतरते हैं। आमला और अमरूद बनारस में बहुत तोहफ़ा होता है। कौला सिलहट सा उमदा और मीठा कहीं नहीं पाया जाता, और वहां इसके जंगल के जंगल खड़े हैं, रुपये

के हज़ार हज़ार तक बिकते हैं। कटहल इतना बड़ा होता है कि शायद ऐसे वैसे कमजोर आदमी से तो उठ भी न सके। इसटावरी मको रसभरी और काबफल उत्तराखण्ड के देशों में अच्छे होते हैं। हड़ बिलासपुर की मशहूर है, पर सूखी हुई दो तोले से भारी नहीं होती। ताड़ दक्षिण पाई-घाट में इतने बड़े होते हैं कि उसके दो तीन पत्तों से छप्पर छा जावे। नारियल और सुपारी समुद्र के तटस्थ देशों में जमते हैं दूर नहीं होते। तेजपात इलायची जायफल जावत्री दारचीनी क़हवा सागू चन्दन रक्तचन्दन और कालीमिर्च के दरख़्त दक्षिण देश में विशेष करके तुलव केरल कच्छी और त्रिवङ्कोड् के दर्मियान होते हैं। तेजपात और बड़ी इलायची नयपाल में भी इफ़रात से उगती है। सागू के दरख़्त की टहनियां काटकर उन्हें पानी में कूटते भिगाते और धोते हैं, उनका जो सत निकलता है उसी को चलनी से गर्म तवों पर चलाते हैं, वह भुनकर दाने दाने सा हो जाता है और सागूदाने के नाम से बिकता है। चन्दन और रक्तचन्दन के पेड़ वहां पश्चिमघाट में मलयागिर पर बहुत हैं, चन्दन में जो बस्तु रहे उस से कहते हैं कि कीड़ा और मोर्चा नहीं लगता, इसलिये हथियार इत्यादि चीज़ों के रखने के लिये जिस में मोर्चा अथवा कीड़ा लगने का डर है अमीर लोग चन्दन के सन्दूक बनवाते हैं। पथरैली-धरती में चन्दन के पेड़ अच्छे होते हैं, और सब से अधिक उत्तम चन्दन उन पेड़ों में उस स्थान का है जो धरती के नीचे और जड़ों से ऊपर रहता है, और जिसका रंग खूब गहरा होता है। चन्दन काटकर महीने दो महीने तक वहां मिट्टी में दाब रखते हैं। हिक्मत उस में यह है कि ऊपर का छिलका जो नाकारा होता है बिलकुल दीमक खालेती हैं, और खुशबूदार गूदा बिलकुल बाक़ी

रह जाता है। कालीमिर्च आशाम में भी बोते हैं, और कपूर का दरख़्त मनीपुर में जमता है। अगर सिलहट के जंगल में और गुग्गुर अर्थात् गूगल सिन्ध में होता है। लोबान के पेड़ त्रिवाङ्कोडू में और मुसब्बर के दरख़्त कांगड़े में बहुतायत से हैं। सागौन की लकड़ी के जहाज़ बनते हैं। इसलिये वह बड़े कामकी चीज़ है, यह वृक्ष बहुधा पश्चिम घाट पर और चित्र गांव में समुद्र के निकट होता है और साल जिसका हरिद्वार के पास पहाड़की तराई में बड़ा भारी जंगल है अक्सर इमारत के काम में आता है। खैर तीखुर चिरौंजी बहुधा विन्ध्य के पहाड़ में और चील चिलगोज़ा, अर्थात् नेवज़ा, केलो कायल रौबान बरास देवदार कक्कड़ महरू भोजपत्र हिमालय के पर्ब्बत में होते हैं। चील का गोंद बिरोज़ा और तेल तारपीन कहलाता है, पहाड़ी लोग मशाल और बत्तीकी जगह रात को उसीकी लकड़ी जलाते हैं। केलो कायल और देवदार ये तीनों सनोबर की क़िस्म हैं, और सात सौ हाथ से भी अधिक ऊंचे होते हैं। बान को अंगरेज़ी में ओक कहते हैं। बरासके फूल लाल लाल बहुत बड़े और सुहावने होते हैं। भोजपत्र उसी जगह होता है जहां से बर्फ़िस्तान का आरम्भ है, बारह हज़ार फुट से नीचे कदापि नहीं उगता। बेदमुश्क चनार और सफ़ेदा ये कश्मीर के वृक्ष हैं, बेदमुश्क से केवड़े की तरह अर्क़ निकालते हैं, वह केवड़े से भी अधिक गुण रखता है। बेत पश्चिम घाटके पहाड़ों में २२५ फुट तक लम्बा होता है। चाय के पेड़ अब सर्कार की आज्ञानुसार देहरादून और कांगड़े के पहाड़ों में लगने लगे हैं, पहले चाय चीन के सिवाय और कहीं नहीं होती थी, पर अब जान पड़ता है कि इन उत्तराखण्ड के पर्ब्बतों में भी वैसी ही हो जायगी। सर्कार ने इस बात के लिये बहुत

रुपया खर्च किया है, और उसकी तैयारी के वास्ते चीन से बुलाकर वहां के आदमी नौकर रक्खे हैं. क्योंकि जब पेड़ से पत्ते तोड़ते हैं तो उनको आग पर गर्म करके हाथों से मसलने में बड़ी चतुराई चाहिये, कई बार उनको आग पर सेकना पड़ता है और कई बार हाथों से मलना, अनाड़ी आदमी से यह काम कभी नहीं बन पड़ता, आशाम के ज़िले में भी बोई जाती है। पान इस मुल्क की तोहफ़ा चीज़ों में गिना जाता है, वरन यह भी एक रत्न कहलाता है। मखाना पुरनिया के तालाबों में फलता है। गुलाब ग़ाजीपुर और अजमेर में बहुत होता है, और चंबेली जौनपुर और बाढ़ में। पर सब से अधिक आश्चर्य का पेड़ हिन्दुस्तान में बड़ है कि जिसकी प्रशंसा दूसरी विलायत वालों ने अपनी किताबों में बहुत ही लिखी है जिस किसी स्थान में जल के समीप कोई पुराना बड़ रहता है और उस पर मोर और बन्दर नाचते कूदते हैं अतिरम्य और सुहावना होता है और उसकी बहुत सी टहनियां जो धरती में जड़ पकड़ती हैं मानो दालान और बारहदरियां बन जाती हैं, एक बड़ का पेड़ जिसे लोग तीन हज़ार बरस का पुराना बतलाते हैं, नर्मदा नदी के किनारे भड़ौंच के पास इतना बड़ा है कि जिस के नीचे सात हज़ार आदमी अच्छी तरह आराम से डेरा कर सकें, उसका घेरा प्राय चौदह सौ हाथ का होवेगा, और उसकी टहनियां जो धरती में जड़ पकड़ गई हैं तीन हज़ार से कम नहीं। नाम उसका वहांवाले कबीर बड़ कहते हैं। सिवाय इसके छपरे से पश्चिम जहां सरयू गंगासे मिलती है मांझी-नाम बस्तीके पास एक बड़का पेड़ इतना बड़ा है कि जिस की छाया गर्मियों में दो पहर के समय १२०० फ़ुट के घेरे में पड़ती है॥

जानना चाहिये जहां तृण और जलकी ऐसी बहुतायत होगी वहां

पशु पक्षी भी अधिक रहेंगे। जंगली जानवरोंमें सिंह बाघ बघेरा चीता हाथी गैंड़ा अरना रीछ सूअर भेड़िया हिरन बारहसिंहा रोझ पाढ़ा साही गीदड़ लोमड़ी खरगोश सियाहगोश बनबिलाव ऊदबिलाव तरह बतरह के बन्दर और लंगूर कस्तूरिया बरड़ ककड़ सकीन घोड़ल सुरागाय ईल गिलहरी नेवला गिरगिट, और घरेलुओं में घोड़े गधे ऊंट खच्चर गाय भैंस भेड़ी बकरी दुम्बे कुत्ते बिल्ली, और पक्षियों में मनाल जीजूराना खलीज पलास कस्तूरा ओंकार नूरी बांधनू चकोर तीतर बटेर मुर्ग़ मुर्ग़ाबी सारस बगला बतक चकवा लाल बुल्बुल लवा तोता मैना काकातूआ मोर कोकिला अगिन श्यामा कोयल पपीहा बाज़ बहरी शिकरा शाहीन गिद्ध चील कौआ हुदहुद खञ्जन बया गौरय्या पिंडकी कबूतर, इनके सिवाय चूहे छछूंदर चिमगादड़ सांप अजगर बिच्छु गोह कनखजूरा मच्छर पिस्सू मक्खी शहदकी मक्खी भिड भौंरा जुगनू तितली दीमक, और रेशम क़िर्मिज़ और लाखके कीड़े भी इस देश में बहुत होते हैं। नदी और तालाबों में मछली मेंडक जोंक और कच्छुए रहते हैं। और बड़े दर्याओं में मगर और घड़ियालों का डर है। दक्षिण में समुद्र के किनारे कौड़ी और मोतीवाले सीप भी होते हैं। हमने सिंह और बाघ भिन्न भिन्न लिखाहै, यद्यपि बहुतेरे लोग बरन कितनेही कोशकर्त्ताभी इन दोनों के बीच भेद नहीं करते पर सिंह वह है जिसे संस्कृत में केसरी और फ़ारसी में शेरबब्र और अंगरेजी में लायन कहते हैं। उसकी गर्दन पर केसर अर्थात् घोड़े की यालों के से बहुत से झबड़े झबड़े बाल रहते हैं और शेर से अत्यन्त अधिक बल पराक्रम और साहस रखता है, ये जानवर अब बहुत कम रहगए, कभी कभी हरियानेके जंगलों में मिल जाते हैं। और बाघ वह है जिसे फ़ारसी में शेर कहते हैं और जिससे

तमाम तराई और सुन्दरबन भरा पड़ा है। चीता यहां के राजा लोग हिरन मारने के लिये पालते हैं। शिकार के समय इस जानवर की आंखों में पट्टी बांध बहली पर बिठा साथ ले जाते हैं, जब किसी तरफ़ हिरनों का झुण्ड निकलता है तो तुरन्त उसकी आंखसे पट्टी हटा देते हैं, और वह बिजली की तरह लपक कर उन में से एक को जा ही दबाता है। हाथी और गैंडे रंगपुर सिलहट आशाम त्रिपुरा और चटगांव के जंगलों में बहुत हैं, पर हाथी दक्षिण के जंगल में बहुत अच्छा होता है, और हिमालय की तराई में जो पकड़ा जाता है वह ऐसा बड़ा और उसका चिहरा इतना उभरा हुआ नहीं रहता। हाथी–पकड़ने के लिये जंगलों में गढ़े खोदकर मिट्टीसे बे मालूम ढक देते हैं, जब हाथियों का झुण्ड उधर आता है तो जो उनमें गिर रहता है उसी को पकड़ लाते हैं। पर सुन्दर बनके पास ज़मीन दलदल होने के कारन गढ़ा खोदना कठिन है, इसलिये हाथी के पकड़नेवाले चालीस पचास आदमी इकट्ठे होकर पलेहुए हाथियों पर सवार बड़े बड़े मज़बूत रस्सों के फन्दे बनाकर जंगल में जाते हैं, जब जंगली हाथी इनके हाथियों के मारने के लिये हल्ला करके आते हैं तो ये उनको फन्दे में फसा लेते हैं, कोई उसकी गरदन में रस्सा डालता है और कोई उसकी सूंड़ फसाता है और कोई पैर कस लेता है, निदान उन रस्सों का एक एक सिरा उन पले हुए हाथियों की कमर में बँधे रहने के सबब फिर वे जंगली हाथी भाग नहीं सकते और चारों तरफ से जकड़ जाते हैं। पर उस काम में जानजोखों बड़ी है इसलिये अकसर हाथी पकड़ने वाले एक बड़ा बाड़ा बनाते हैं, खूब मज़बूत लकड़े गाड़ कर और उसके गिर्द खाई खोद देते हैं, अन्दर जाने को केवल एक दरवाज़ा रखते हैं, लेकिन वह भी इस ढब का कि जैसे जंगलों में जाने की राह रहती

हैं, जो हाथी को मालूम पड़जाय कि यह दरवाज़ा आदमी का बनाया है तो कदापि उसके अन्दर पैर न धरे, क्योंकि यह जानवर बड़ा होशयार होता है, और उस बाड़े से मिलाहुआ उसी तरह का एक ऐसा छोटा बाड़ा रखते हैं कि जिस में जाकर फिर हाथी घूम न सके निदान जब वह बाड़े तैयार हो जाते हैं तो बहुत से आदमी उन जंगलों को जा घेरते हैं कि जिनमें हाथी रहते हैं, और दूर दूर से इस तरह पर ढोल इत्यादि की आवाज़ें करते हैं, और आग जलाते हैं कि उन हाथियों का झुण्ड हटते हटते उसी बाड़े के दरवाज़े पर आ जाता है, और जब सारे हाथी उस बाड़े के अन्दर चले जाते हैं तो ये लोग तुरन्त उसका दरवाज़ा बड़ी मज़बूती से बन्दकर देते हैं, जब हाथी कोई राह निकलने की नहीं पाते उस वक़्त जो उनको गुस्सा होता है वह तमाशा देखने लाइक़ है, निदान कुछ दिनमें भूख प्यास और दौड़ने से वे सुस्त और काहिल होजाते हैं तब अन्दर से उस छोटे बाड़े का दरवाज़ा खोलते हैं, और ज्यों हीं एक हाथी उसके भीतर आ जाता है तुरन्त उसको बन्दकर देते हैं, इस छोटे बाड़े के गिर्द मचान बंधे रहते हैं, हाथी जगह की तंगी से घूम भी नहीं सकता बिलकुल बेक़ाबू हो जाता है ये मचानों पर चढ़कर अच्छी तरह उसे रस्सों से जकड़ लेते हैं, और उन रस्सों को अपने सधेहुए हाथियों की कमर से कसकर तब उसे बाहर निकालते हैं और किसी पेड़ से बांध देते हैं. इसी तरह एक एक करके जब सब हाथियों को निकाल चुकते हैं तब फिर धीरे धीरे उनको खिला पिलाकर आदमियों से परचा लेते हैं। आगे यहां के राजा और बादशाह लड़ाई के वक़्त दुश्मन की फ़ौज के साम्हने अपने सधाए हुए मस्त हाथियों की सूंड़ों में दुधारे खांड़े देकर हुलवा देते थे, पर अब तोप के आगे बेचारे हाथी की क्या पेश जासकती है केवल सवारी और बार-

बरदारी के काम में आते हैं। पुरु राजा ने झेलम के किनारे पर दस हज़ार जंगी हाथियों के साथ सिकंदर का मुक़ाबला किया था। आसिफ़ुद्दौला के पास सब से बड़ा हाथी जो त्रिपुरा के जंगल से पकड़ागया था साढ़े दस फ़ुट ऊंचाथा, पर स्काट साहिब के लिखनेसे मालूम हुआ कि उन्होंने उस जंगल में बारह फ़ुट दो इंच तक ऊंचा हाथी सुना था। रूस के बादशाह बड़े पीटर को ईरान के बादशाह ने जो हाथी तोहफ़ा भेजा था, और जिसकी खाल अब तक वहां के अजाइबखाने में रक्खी है, सोलह फ़ुट ऊंचा था मालूम नहीं कि इसी जगह से गया था या किसी दूसरे मुल्क से आया। गैंडे से मज़बूत दुनिया में कोई दूसरा जानवर नहीं, इसका चमड़ा ऐसा कड़ा होताहै कि उस पर सिवाय गोली के तीर तलवार और कोई भी हथियार कुछ काम नहीं करता, ढाल अच्छी उसी के चमड़े की बनती है, इस जानवर से न शेर लड़ना चाहता है और न इसको हाथी छेड़ता, इसे जंगल का चक्रवर्ती राजा कहना चाहिये, यदि डील डौल में हाथी से छोटा है, पर जब उसके पेटमें अपनी खाग मारता है तो फिर हाथी चित्त ही गिर पड़ता है और गैंडे का कुछ भी नहीं कर सकता, यह जानवर केवल घास पत्ते खाता है और जब तक कोई इसे न सतावे तो यह भी किसी जीव को कुछ दुख नहीं देता। अरना भैंसा भी बड़ा भयानक जानवर है, किसी किसी के सींग दश फ़ुट तक लम्बे होते हैं। कस्तूरिया-हिरन हिमालय के पहाड़ों में होता है, लोगों ने यह बात बहुत ग़लत मशहूर कर रक्खी है कि उसके पैर की नलीमें जोड़ नहीं होता और वह बैठ नहीं सकता, जैसे और सब जानवर चलते फिरते दौड़ते बैठते हैं इसी तरह वह भी सब काम करता है, जाड़ों में जब ऊंचे पहाड़ों पर बर्फ़ बहुत पड़ जाती है तब यह नीचे उत-

रता है, उन्हीं दिनों में इसका शिकार होता है, इस जानवर की नाभी में एक छोटी सी थैली रहती है जिसको नाफ़ा कहते हैं उसी के अन्दर कस्तूरी है, जब उसे मारकर उसके पेट से नाफ़ा निकालते हैं, तो कस्तूरी उसमें लहू मास की तरह गीली रहती है, धूपमें रखकर सुखा लेते हैं, जो कस्तूरी खाने में बहुत कड़वी और तीखी हो उसे असल और जो कसैली या दूसरे मज़े पर हो उसे बनावट समझना चाहिये, और भी इसकी बहुत परीक्षा हैं। बरड ककड़ सकीन घोड़ल सुरागाय और ईल ये सब जानवर बर्फ़ी-पहाड़ों के पास होते हैं। सकीन एक तरह का जंगली भेड़ा है, लेकिन सींग उसके ऐसे भारी होते हैं कि एक आदमी से नहीं उठ सकते। गाय को सुरा और बैलको याक कहते हैं, इनके बदन पर रीछ की तरह बड़े लंबे लंबे बाल रहते हैं और उनकी दुमका चवर बनता है, वहां के लोग इन याक-बैलों पर सवारी भी करते हैं, जिन कठिन पहाड़ों में घोड़ा टट्टू नहीं जा सकता वहां वे याक पर चढ़कर बखूबी चले जाते हैं। ईल एक प्रकार की गिलहरी है, जो चिमगादड़ की तरह उड़ती है। घोड़े यहां दक्षिण में भीमा नदी के किनारे जो तेलिये कुमैत सियाह ज़ानू होते हैं बहुत उमद: हैं और काठियावाड़ और लक्खी जंगल भी घोड़े के वास्ते प्रख्यात है, काठियावाड़ का घोड़ा कूदने फांदने में खूब चालाक होता है, कहते हैं कि उस किनारे पर कभी किसी अरबका जहाज़ ग़ारत हो गया था उसी के घोड़ों के फैलने से वहां उन की नसल दुरुस्त हुई है, और लक्खी जंगल का घोड़ा डील डौल में बहुत बड़ा रहता है, पांच पांच हज़ार तक भी उसका दाम उठता है। ऊंट जोधपुर का प्रसिद्ध है, सौ कोस तक एक दिन में जा सकता है। गाय भैंस गुजरात हरियाना सिन्ध मुलतान इत्यादि प-

श्चिम देशों की दूध बहुत देती हैं, और बैल भी वहां के प्रसिद्ध हैं। ये जानवर दक्षिण में बहुत खराब होते हैं, क़दके छोटे और दूध भी थोड़ा देते हैं। बर्फ़ी-पहाड़ोंमें भेड़ी का ऊन बहुत अच्छा और बकरी के बालके अन्दर पश्मीना होता है। दुम्बे सिन्धु के तटस्थ-देशों में होते हैं। पक्षियोंके दर्मियान मनाल जीज़ूराना खर्लीज और पलास बर्फ़िस्तान के तटस्थ पहाड़ों में, और कस्तूरा और ओंकार कश्मीर में होता है। मनाल देखनेमें मोरकी तरह खूब सूरत, पर दुम उसकी सी नहीं रखता। जीज़ूराना नूरी और बांधनू ये भी बहुत सुन्दर होते हैं। ओंकार के शिर में सियाह परों की एक अच्छी लम्बी कलग़ी रहती है कि जो इस देशके अक्सर बादशाह राजा और सर्दार अपनी टोपी और पगड़ियों में लगाते हैं। चकोर बटेर मुर्ग़ लाल बुलबुल लवा लड़ने में और तोता मैना काकातूआ आदमी की बोली-बोलने में प्रख्यात हैं, नूरी बांधनू और तोते इत्यादि सुन्दर-बन और तराई के जंगल में ज़ियाद: मिलते हैं। मोर कोकिला अगिन श्यामा कस्तूरा कोयल और पपीहे का शब्द बहुत मधुर होताहै। बाज़ बहरी शिखरा और शाहीं अमीर लोग चिड़ियोंका शिकार करने के लिये पालते हैं। बया अपना घोंसला बड़ी कारीगरी से बनाता है, चटाई की तरह बुनता है और तीन उसमें घर रखता है बाहर नरके लिये बीच का मादा के लिये और अन्दरवाला बच्चे के लिये, और पेड़ की ऐसी पतली टहलियों से बल्कि खजूर के पत्तों से उसे लटकाता है कि जिस में अण्डों तक सांप न पहुँच सके, बहुधा जुगनू कीड़े उठा लाता है कि जिस में रात को घोंसले के अन्दर उजाला रहे, सच पूछो तो पक्षियों में ऐसी होशयारी किसी में नहीं यह छोटी सी चिड़िया आदमी के सिखलाने से बड़े बड़े काम कर दिखलाती है,

तोप पर चोंच से बत्ती लगा देती है बदकार आदमी चुहल के लिये औरतों की टिकलियें दिखला कर इशारा कर देते हैं यह फौरन् उतार लाती है, धन्य है सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर जिसने ऐसी ऐसी चिड़ियों को यह समझ दी। सांप इस मुल्क में बाज़े ऐसे ज़हरीले हैं कि जिनका काटा आदमी फिर पानी न मांगे। और अजगर दक्षिण के जंगलों में चालीस फुट तक लम्बे होते हैं। मछलियों में कलकत्ते के बीच तपस्या-मछली की बड़ी तारीफ़ है, कहते हैं कि उसके स्वाद को कोई नहीं पहुँचती। मलवार में मछलियों की इतनी बहुतायत है कि बाज़े वक्त घोड़ों को दाने के बदल मछलियां खिला देते हैं। जोंक दक्षिण के घाटों में बहुत होती हैं, यहां तक कि बर्सात में मुसाफ़िर को राह चलना मुशकिल पड़ जाता है। घड़ियाल गंगा में बीस हाथ तक लम्बे होते हैं। कौड़ियां समुद्र के किनारे इस बहुतायत से मिलती हैं कि समुद्र के तटस्थ देशों में चूना भी कौड़ी जलाकर बनता है। मोतीवाले सीप दक्षिण देश के नीचे समुद्र में होते हैं, लोग ग़ोतामारकर बहुत से सीपजानवर सैकड़ों बरन हज़ारों समुद्र की थाहसे निकाल लाते हैं और गढ़े खोदकर मिट्टी से दाब देते हैं, जब थोड़ी देर बाद वे सब मर जाते हैं तब एक एक को उस गढ़े से निकाल कर चीरना शुरू करते हैं, बहुत तो ख़ाली जाते हैं किसी में मोती निकल आता है। सांप और सिंह को सब कोई बुरा कहता है, पर सोच कर देखो तो इस मनुष्य का चित्त तुष्ट करने के वास्ते कितने जीव सताए जाते हैं॥

खान इस मुल्क में लोहा तांबा सीसा सुरमा गन्धक हरिताल नमक कोयला मर्मर यशम बिल्लौर अक़ीक़ इन सब चीज़ों की मौजूद है, और हीरा भी बहुत अच्छा और बेशक़ीमत निकलता है।

महा नदी के किनारे सम्भलपुर के इलाके में बुंदेलखण्ड में पन्ने के दर्मियान दक्षिण में कृष्णा के किनारे कोलूर इत्यादि स्थानों में इस की खान हैं और वह प्रसिद्ध बड़ा हीरा कोहनूर जो सर्कार कम्पनी ने दलीपसिंह से लेकर महारानी विक्टोरिया को नज़र दिया, शाह-जहां के समय में इसी कोलूर की खान से निकला था, और मीरजुमला ने वह उस बादशाह को भेट किया था, उस समय में इसका मोल पछत्तर लाख रुपया आंका गया था। पत्थर के कोयलों की क़द्र आगे तो कोई नहीं जानता था और न यहां कभी किसी को इसकी खानका कुछ गुमान था, पर जब से अंगरेज़ोंने धूएं के जहाज़ चलाए तो यह कोयला भी अब एक बड़े काम की चीज़ ठहरा बीर-भूम के ज़िले में इसकी खान जारी है, और नर्मदा–किनारे के ज़िलों में भी इसका होना साबित है, सिवाय इन के और अनेक प्रकार के बहुतेरे रंग बरंग के पत्थर मिलते हैं कि जो अक्सर साहिब लोग अपने गहनों में लगाते हैं॥

मौसिम हिन्दुस्तान में तीन हैं जाड़ा गर्मी और बरसात, और हरएक ऋतु अपने अपने समय पर अच्छी बहार दिखलाती है, समुद्र के तटस्थ-देश में विशेष करके दक्षिण के घाटों पर बरसात बहुत होती है, यहां तक कि किसी किसी जगह में नौ नौ महीने के लिये सारा सामान गृहस्थी का घर में इकट्ठा कर रखना पड़ता है, मेह की शिद्दत से बाहर निकलना नहीं होता। और हिमालय के पहाड़ों में सर्दी अधिक रहती है, जहां बर्फ़ नहीं होती वहां भी जो पहाड़ चार पांच हज़ार हाथसे ऊंचे हैं उनपर जेठ बैसाखमें आग तापनी पड़ती है। कनावर और कश्मीर में बरसात नहीं होती, क्योंकि उन इलाक़ों के चौगिर्द ऐसे ऐसे ऊंचे पहाड़ आगये हैं कि बादल जो समुद्र की

तरफ़ से आते हैं पहाड़ों की जड़ों ही में लटकते रह जाते हैं पार होकर उन इलाक़ों में नहीं पहुँच सकते। और बाक़ी सब ज़िलों में ग्रीषम ऋतु अति कठिन होती है, लूएं चलने लगती हैं और धरती तपने, अमीर लोग तहख़ाने और ख़सख़ाने में बैठकर पंखे झलवाते हैं, और ग़रीब बेचारे सूर्य के प्रचण्ड ताप से व्याकुल होते हैं॥

आदमी हिन्दुस्तान के जवांमर्द और दयावान् होते हैं यहां तक कि बहुतेरे लोग पशु पक्षी तो क्या बरन वृक्ष को भी नहीं सताते, गर्म मुल्क के सबब मिहनत कम करते हैं, और बहुधा सुस्त और काहिल बरन आराम तलब रहते हैं, यहां तक कि अक्सर लोग इसी मसल पर चलते हैं ॥ दोहा ॥

चलिबे तें ठाढ़ो भलो बातें बैठ्यो जान।
बैठे तें सोवो भलो सोवे तें मर जान ॥१॥

पर बड़ा ऐब इन में यह है कि सर्वजन हितैषी और सर्व मंगलेच्छक नहीं होते, अपना नाम बढ़ाने के लिये अवश्य कूए तालाब और पुल इत्यादि बनवाते हैं, पर जो काम ऐसा हो कि इन से अकेले न बन सके और दस पांच आदमी मिलकर उसे चन्दे के तौर पर बनवाना चाहें तो उसमें उनको एक पैसा भी देना भारी पड़ जाता है, निदान यहां के आदमी जो काम करते हैं सो केवल अपने नाम के लिये, यदि उसमें दूसरों का भी भला हो जावे तो आश्चर्य नहीं, पर केवल दूसरे आदमियों के भले के लिये ये कदापि कोई काम न करेंगे, चिहरा इनका बादामी आंखें लम्बी पुतलियां काली, नाक तीखी, क़द मयाना, कमर पतली, और बाल लम्बे और काले रहते हैं। इस मुल्क में कुल को बहुत बचाते हैं, बहुधा जैसे कुल के आदमी होते हैं वैसा ही रूप और स्वभाव रखते हैं, उच्च कुल के आदमी सुन्दर और भले

मानस होते हैं, और इसी तरह नींच—कुलवाले कुरूप और खोटे होते हैं, पर यह बात कुछ सब जगह नहीं है, कहीं कहीं इसका विपरीत भी देखने में आता है। जातिभेद केवल इसी मुल्क में है, यह बात दूसरी किसी विलायत में नहीं, प्रधान तो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र ये चार हैं, पर अब इन से सैकड़ों निकल गईं। रुपया इस मुल्क के आदमियों का शादी ग़मी में बहुत ख़र्च होता है, अर्थात् लड़का लड़की के बिवाह में और मा बाप के क्रिया कर्म में। सिवाय इसके जो लोग सुबुद्धी हैं वे अपना धन तीर्थ—यात्रा और दान-धर्म-करने में और मन्दिर धर्मशाला कूआ तालाब पुल सरा इत्यादि बनाने में उठाते हैं, और सदावर्त बिठलाते हैं, और कपूत और कुबुद्धी नाच रंग और तमाशबीनी में उसे उड़ा देते हैं। बाक़ी गुज़ारा इनका बहुत थोड़े से में होजाता है, खाने पहन्ने और रहने के लिये इनको बहुत नहीं चाहिये, गहना पहन्ना और नौकर बहुत से रखना यही बहुधा धनी और दरिद्री का भेद है। स्त्री यहां की लाज करती हैं, और पर्दे में रहती हैं, आगे यह बात न थी जब से मुसलमानों की अमलदारी आई तब से यहां यह रस्म जारी हुई, आगे रानी लोग राजाओं के साथ सभा में बैठती थीं। बिवाह इस देश में बहुत छोटी उमर में करलेते हैं, और इसी से पुरुष बहुधा दीर्घायु और बलवान् नहीं होते। पातिब्रत धर्म इस मुल्क का सा और कहीं भी नहीं, यहां उच्च कुल की स्त्री कदापि दूसरा बिवाह नहीं करतीं, वरन अपने पति की लाश के साथ चिता पर बैठकर जल जाती थीं। सर्कार ने अब इस सती होने की बुरी रस्म को मौकूफ़ कर दिया। आगे लौंडी गुलाम भी यहां बेचे और मोल लिये जाते थे, पर सर्कार के प्रताप से अब यह भी अन्याय दूर होगया। केवल एक बुरी

बात अब तक जड़ से नहीं गई, यद्यपि सर्कार उसके मिटाने में बहुत उद्यम और परिश्रम कर रही है, तथापि होही जाती है, अर्थात् कोई कोई दुष्ट रजपूत अपनी लड़कियों को मार डालते हैं कि जिस में किसी का सुसरा न बनना पड़े। पहले तो जीव का सताना ही बुरा है, तिस में पंचेन्द्रिय आदमी को मारना, तिस में भी स्त्री को, और तिस में भी ऐसी अवस्था में कि जिसे देख के राक्षस को भी दया आवे, और जिसका हाल सुन कर पत्थर भी पसीज जावे, और तिस में भी अपनी आत्मजा लड़की को। हम नहीं जानते कि ऐसे आदमियों को कैसी सज़ा देनी चाहिये, फांसी तो इनके वास्ते कुछ भी नहीं है, ये अपनी पूरी सज़ा को तभी पहुंचेंगे जब रौरव नर्क की अग्नि में जलेंगे। हिन्दू मुर्दों को आग में जलाते हैं, और मुसलमान मिट्टी में दाबते हैं, पर पारसी लोग न जलाते हैं न दाबते, वे अपने मुर्दों को एक खुले मकान के बीच जो केवल इसी काम के लिये बना है, धूप में रख देते हैं। भील गोंद चुवाड़ धांगड़ कोल इत्यादि को जो जंगल पहाड़ों में बस्ते हैं, अंगरेज लोग इस मुल्क के क़दीमी बाशिन्दे अर्थात् भूमिये ठहराते हैं, और कहते हैं कि ब्राह्मण क्षत्री और वैश्य उत्तर अथवा पश्चिम से आकर पहिले सारस्वत देश अर्थात् कश्मीर लाहौर मुलतान और सिन्ध इत्यादि में बसे, और फिर धीरे धीरे सारे हिन्दुस्तान में फैल गए, और इस बात के साबित करने के लिये बड़ी बड़ी दलीलें लाते हैं। निदान यह तो हमने वे बातें लिखीं जो प्राय सारे हिन्दुस्तान में मिलेंगी, पर याद रखना चाहिये कि यह ऐसी बड़ी विलायत है कि इस में एक एक सूबे के दर्मियान कई तरह के आदमी बस्ते हैं, और जुदा ही रंग रूप पहनावा और चाल ढाल रखते हैं। उत्तराखण्ड के

आदमी विशेष करके गंगा और सिन्धु के बीच गोरे सुन्दर और सीधे सादे सच्चे होते हैं, स्त्रियां वहां की ऐसी रूपवती कि मानो कहानी क़िस्से की परियों को पर काटकर छोड़ दिया है। कश्मीर की सदा से प्रसिद्ध रही हैं पर कमर उनकी ज़रा मोटी होती है। जम्बू चम्बा कांगड़ा और कहलूर इन इलाक़ों की सब से बढ़कर हैं, पर यह हम उन्हीं लोगों का हाल लिखते हैं जो बर्फ़िस्तान से इधर नीचे पहाड़ों में बस्ते हैं, और नहीं तो हिमालय के उत्तर भाग में बर्फ़िस्तान के दर्मियान भोटिये लोग महा ग़लीज़ और अति कुरूप होते हैं, प्यास बुझाने के लिये भी झरनों में गाय बैलों की तरह मुंह लगाकर पानी पीते हैं हाथ से नहीं छूते, फिर बदन धोने की कौन बात है। पोशाक में कश्मीर की औरतें केवल एक पीरहन अर्थात् गले का कुरता पर एड़ी तक लटकता हुआ पहनती हैं, और सिरसे एक तिकोना रूमाल पट्टी की तरह बांध लेती हैं। गंगा से पूर्व नैपाल इत्यादि उत्तराखण्ड के देशों में लोग नाटे होते हैं, और उनकी छाती और कन्धा चौड़ा, बदन गोल गोल और गठीला, चिहरा चकला आंखें छोटी और नाक चपटी होती है, उत्तराखण्ड के मुल्कों में स्त्रियें लाज कम करती हैं, और सिवाय कुलीन आदमियों के उन सब को वहां इख़्तियार है कि चाहे जितने विवाह करें और चाहे जिस पुरुष के पास जा रहें, जब कोई स्त्री एक पुरुष को छोड़ कर दूसरे के पास जाती है तो वह पहला पुरुष उस दूसरे से कुछ रुपये जो उसने विवाह के समय खर्च किये थे अवश्य ले लेता है। और इसी तरह जब वह स्त्री दूसरे को छोड़ कर तीसरे के पास पहुंचती है, तो वह दूसरा अपने रुपये उस तीसरे आदमी से वसूल कर लेता है। औरत क्या यह तो दर्सनी हुंडी ठहरी। और जब कई भाई

मिलकर पाण्डवों की तरह एक ही औरत से व्याह कर लेते हैं, तो पहला लड़का बड़े भाई का, दूसरा दूसरे भाई का, तीसरा तीसरे भाई का, इसी तरह क्रम से बट जाते हैं। सिन्धु के तटस्थ-देशों में हिन्दू मुसलमानों से बहुत कम पर्हेज़ रखते हैं। बरन किसी किसी जगह आपस में शादी व्याह भी कर लेते हैं। पंजाब के सिक्ख हजामत नहीं बनाते, जवान अच्छे सजीले होते हैं, पोशाक उनकी सिपाहियाना, और सुन्दर, दांत पान न खाने से सफ़ेद मोतियों की लड़ी से रहते हैं, उस देश में औरतें भी तङ्ग मुहरी का पाजामा पहनती हैं। रजपुताने की औरतों के घांघरों का घेर बहुत बड़ा रहता है, डाढ़ी रखने की वहां भी चाल है, और कच्ची रसोई की छूत बिलकुल नहीं मानते, बनिये महाजनों को नाई दाल भात और रोटी परोस देता है। लखनऊवालों का पहनावा ज़नाना है, पाजामे की मुहरियां इतनी चौड़ी रखते हैं कि उठावें तो सिर तक पहुंचें, और पगड़ियों का घेरा इतना बड़ा कि छतरी का भी काम न पड़े, बोझ में तो छोटी मोटी गठड़ी से कम न होगी, बरन कहीं खुलजावे तो अन्दर से गड़गूदड़ का ढेर इतना निकले कि एक टोकरी भरे। बङ्गाली बड़े कमहिम्मत और असाहसी बरन डरपोकने होते हैं, और सन्देस और मण्डा खा खा कर बहुधा बूढ़े होने पर तुन्दले होजाते हैं, ये लोग अंगरेज़ों की तरह सिर अकसर खुला रखते हैं, बादशाही महलों के लिये इन्हीं बङ्गालियों को खोजा बनाते थे। औरतें वहां की केवल एक धोती पर किफ़ायत करलेती हैं, पर उसे भी इस ढब से लपेटती हैं कि नङ्गी और कपड़ेवालियों में थोड़ा ही फ़र्क़ रहजाता है। दक्षिण में विशेष करके कावेरी पार मुसलमानों का राज्य पक्का न होने के कारन अब तक भी बहुत बातें असली हिन्दूमत

की देखने में आती हैं, आदमी वहां के नाटे होते हैं धोती दुप्पटा और पगड़ी पहनते हैं, औरतें साड़ी पहनती हैं, पर मर्दों की तरह लांघ कस लेती हैं, इस सबब से उनकी पिण्डलियां खुली रह जाती हैं, लाज बिलकुल नहीं करतीं, घोड़ों पर सवार होकर फिरती हैं, बहुत सी रस्म और रवाज और लोगों की चाल ढाल और सूरत शकल जो खास किसी ज़िले से इलाक़ा रखती हैं, और उनका अहवाल सुनने लाइक़ है, वह सब उन्हीं ज़िलों के साथ वर्णन होंगी यहां मौक़ा नहीं है ॥

मज़हब यहां सदा से दो चले आये थे, एक वेद के मुवाफ़िक़ और दूसरा वेद के बख़िलाफ़, यह बात खुद वेदों से प्रगट है । जो लोग वेद को नहीं मानते थे, वह असुर और राक्षसों में गिने जाते थे। बौद्ध और जैनी वेद को नहीं मानते और पशु का घात करना बहुत बुरा समझते हैं । दो ढाई हज़ार बरस का अर्सा गुज़रता है कि यह मत बड़ा प्रबल होगया था, और सारे हिन्दुस्तान में राजा प्रजा सब लोग उसी मत को मानते थे केवल, कन्नौज ऐसी जगहों के आस पास कुछ कुछ वेद के माननेवाले रह गये थे, शङ्कराचार्य के समय से वह मत दूर हुआ, और वेद की महिमा फिर चमकी । अब मुख्य मत तो शैव शाक्त वैष्णव वेदान्ती और जैनी हैं, पर भेद इनके हज़ारों ही हो गये, सिवाय इसके आठवें हिस्से से अधिक इस देश में मुसलमान बस्ते हैं और लाखों ही अब क्रिस्तान होते चले हैं ॥

विद्या की जड़ यही मुल्क है, इसी मुल्क से विद्या निकली थी, सब से पहले इसी मुल्क के आदमियों ने विद्या अभ्यास में चित्त लगाया, और यहां के पण्डित सदा से नामी और ज्ञानी और अन्य सब देशियों के मान्य और शिरोमणि रहे । मिसर और यूनानवाले

जिन्हों ने सारे फ़रंगिस्तान को आदमी बनाया, अपने बड़े परिडतों के हाल में यही लिखते हैं कि वे हिन्दुस्तान से विद्या सीख आए, सिकन्दर इतना बड़ा बादशाह जिसकी सभा में अरस्तू-ऐसे बड़े बड़े योग्य यूनानी पण्डित मौजूद थे, इस देश से एक पण्डित को जिसका नाम वहांवालों ने कलन लिखा है और असल में कल्याण मालूम होता है, बड़ी खुशामद से अपने साथ ले गया था, उस समय उसके साथ यहां से कोई बड़ा परिडत तो काहे को गया होगा, किसी ऐसे वैसे ही ने यह बात क़बूल की होगी, पर यूनानवाले उसकी प्रशंसा यों लिखते हैं कि जितने दिन वह सिकन्दर के पास रहा, उस ने अपने चलन में ज़रा भी फ़र्क़ न आने दिया, और अच्छी तरह हिन्द का धर्म निबाहा, और जब बहुत बूढ़ा हुआ तो उन सब के साम्हने तुषानल करके अपने आप जल गया। ईरान के प्रतापी बादशाह बहराम ने यहां से गवैये बुलवाये थे, गान-विद्या अब तक भी हिन्दुस्तान सी दूसरी जगह नहीं है। बग़दाद के बड़े ख़लीफ़ा मामूं ने यहां से वैद मंगवाए थे, और सदा उन्हीं वैदों की दवा खाता था, ग्रन्थ भी इस देश में आत्मतत्व ज्योतिष गणित भूगोल खगोल इतिहास नीति व्याकरण काव्य अलङ्कार न्याय नाटक शिल्प वैद्यक शस्त्र गान अश्व गज इत्यादि सब विद्या के अच्छे अच्छे मौजूद थे, परन्तु मुसलमानों ने अपनी अमलदारी में हिन्दुओं के शास्त्र नष्ट कर दिये और फिर राज्य भ्रष्ट होने के कारण इन विद्या की चाह न रहने से घटते घटते उनका पढ़ना पढ़ाना ऐसा घट गया कि अब तो कोई ग्रन्थ भी यदि हाथ लग जाता है उसका पढ़ाने और समझानेवाला नहीं मिलता। मुसलमान बादशाहों के समय में लोग फ़ारसी अरबी सीखते रहे, अब इन दिनों में अंगरेज़ी विद्या ने उन्नति पाई है, सर्कार

ने हिन्दुस्तानियों का हित बिचार उनके पढ़ने के लिये जगह जगह पर मदरसे और पाठशाले बैठा दिये हैं, और दिन पर दिन नये बैठते जाते हैं, उमेद है कि इस अंगरेज़ी भाषा के द्वारा फिर भी हमारे देशवासी सब विद्याओं में निपुण हो जावें, और जो सब नई नई बातें फ़रंगिस्तानवालों ने अपनी बुद्धि के बल से निकालीं और निर्णय की हैं उन से बड़े फ़ायदे उठावें ॥

बोली इस मुल्क में अब उर्दू मुख्य गिनी जाती है, परंतु यह केवल थोड़े ही दिनों से जारी हुई है, उर्दू का अर्थ लशकर है, जब तुर्क अफ़ग़ान और मुग़लों की हिन्दुस्तान में बादशाहत हुई, और उनके आदमी यहां लशकर के दर्मियान बाज़ारियों के साथ हर वक्त ख़रीद फ़रोख़्त में बोलने चालने लगे तो उनकी अरबी फ़ारसी और तुर्की इन लोगों की हिन्दी (१) के साथ मिलकर यह एक जुदी बोली बन गई, और इसका निकास उर्दू अर्थात् लशकर के बाज़ार से होने के कारन नाम भी इसका उर्दू की ज़ुबान रक्खा गया, महाराज पृथ्वीराज के भाटचन्द ने जो दोहरे बनाए हैं, वह उसी असली हिन्दी बोली में हैं, जो मुसलमानों के चढ़ाव से पहिले इस देश में बोली जाती थी, अब जिस बोली में फ़ारसी अरबी के शब्द कम रहते हैं, और हिन्दी हर्फ़ों में लिखी जाती है, उसे हिन्दी और जिस-

---

(१) पुरानी पोथियों में जो दस भाषा लिखी हैं अर्थात् पञ्चगौड़ और पञ्चद्राविड़। पञ्चगौड़ में सारस्वत कान्यकुब्ज गौड़ मिथिला और उड़ेसा। और पञ्चद्राविड़ में तामल महाराष्ट्र कर्नाट तैलङ्ग और गुर्जर। सो इन में से जो बोली कान्यकुब्ज में बोली जाती थी वही हिन्दी की जड़ है ॥

में फ़ारसी अरबी के शब्द अधिक रहते हैं, और फ़ारसी हर्फों में लिखी जाती है, उसे उर्दू कहते हैं, प्राचीन समय में यहां प्राकृत अर्थात् मागधी भाषा बोली जाती थी, बौद्ध मत और जैन मत की बहुत पोथी इसी भाषा में लिखी हैं, पर संस्कृत, जिस में वेद और पुराण इत्यादि हिन्दुओं के शास्त्र लिखे हैं, ऐसा नहीं मालूम होता कि कभी इस मुल्क की बोली रही हो, और सब लोग संस्कृत में बोल चाल करते हों, बरन इसीलिये ब्राह्मण इसे देवबाणी पुकारते हैं, मुख्य बोली कहने से मुराद हमारी उस बोली से है जो मध्यदेश में राजा की सभा और राजधानी में बोली जावे, जैसे कि उर्दू, दिल्ली आगरे लखनऊ में और मध्यदेश की सब सरकारी कचहरियों में बोली जाती है, और नहीं तो हिन्दुस्तान में हर जगह की एक जुदी बोली है, जैसे बङ्गाले में बङ्गाली, भोट में भोटिया, नयपाल में नयपाली, कश्मीर में कश्मीरी, पंजाब में पंजाबी, सिन्ध में सिन्धी, गुजरात में गुजराती, रजपुताने में देसवाली, ब्रज में ब्रजभाषा, तिरहुत में मैथिली, बुन्देलखण्ड में बुन्देलखण्डी, उड़ेसे में उड़िया, तिलंगाने में तैलंगी, पूना सितारे की तरफ़ महाराष्ट्री, कर्नाटक में कर्नाटकी, द्रविड़ में तामली, जिसे अन्ध्र भी कहते हैं, बोलियां बोली जाती हैं। इन सबमें ब्रजभाषा बहुत प्रसिद्ध, और अत्यन्त मधुर कोमल प्यारी और रसीली है, और कितने ही काव्य के ग्रन्थ इस भाषा में कवि लोगों ने बहुत सुन्दर और नामी रचे हैं॥

चीजें यहां सब तरह की बनती हैं, ज़िन्दगी के ज़रूरी और आराम दोनों तरह के असबाब यहां हाथ लग सकते हैं, और सब क़िस्म के कारीगर मौजूद हैं, पर तो भी कश्मीर की शाल और ढाके की मलमल बहुत प्रसिद्ध है, यह दोनों चीज़ जैसी इस मुल्क में बनती है दूसरे

मुल्कों के आदमी हर्गिज़ नहीं बना सकते। सारी दुनिया के बादशाह इन्हीं कश्मीरियों के बुने दुशाले ओढ़ते हैं, अंगरेज़ों ने इंगलिस्तान में हज़ारों तरहकी कलें बनाईं, परन्तु इस देश की सी शाल और मलमल बनाने की उन्हें भी कोई तदबीर न सूझी, न ऐसी नर्म और गर्म शाल वहां बन सकती, और न ऐसी बारीक मज़बूत और मुलाइम मलमल तैयार हो सकती है, अब भी वहां की जो सुकुमार बीबियां हैं, गर्मी में ढाके की मलमल का गौन पहनती हैं। अकबर के समय में ढाके के दर्मियान पांच अशरफ़ी तक की मलमल और १५ अशरफ़ी तक का ख़ासा तैयार होता था, और दुशाला अब भी कश्मीर में सात हज़ार रुपये तक का बुना जाता है। सिवाय इसके कश्मीर के काग़ज़ और कलमदान, बनारस के कमख़ाब दुपट्टे और गुलबदन, फ़र्रुख़ाबाद की छींटें, मुलतान के रेशमी कपड़े और क़ालीन, मुर्शिदाबाद के बूंद और कोरे, दिल्ली के आइने और नैचे, ग़ाज़ीपुर का गुलाब, शाहजहांपुर का क़न्द, गया और जयपुर की काले और सफ़ेद पत्थरों की चीज़ें, अमरोहे और चनार के मिट्टी के बर्तन बहुत बढ़िया और अच्छे होते हैं॥

तिजारत इस मुल्क में कम है, यहां के आदमी ज़मीदारी की तरफ़ बहुत मन देते हैं, और अपने मुल्क से निकलकर दूसरे मुल्क में तो बनज बेवपार के लिये कदापि नहीं जाते। अगले ज़माने में दूसरी विलायतों के आदमी यहां आकर इस मुल्क की चीज़ें ले जाते थे, और उसके बदल में सोना चांदी देजाते। पर अब फ़रंगिस्तान वालों ने कल के बल से बस्तु के बनाने में श्रम और समय घटाकर उन्हें ऐसा सस्ता कर दिया, और दुरुस्ती और सफ़ाई में इस दर्जे को पहुंचाया कि सारी दुनिया उन्हीं की चीज़ें पसन्द करती है और

हिन्दुस्तानियों की बनाई हुई कोई नहीं पूछता, वरन हिन्दुस्तानी लोग भी अपने सब काम उन्हीं विलायती चीज़ों से चलाते हैं, इस देशकी बनी हुई चीज़ से राज़ी नहीं होते, अगले ज़माने में ईरान तूरान और रूम यूनान इत्यादि देशों के सौदागर खुश्की पिशावर की राह से ऊंटों पर माल ले जाते थे, और मिसर और अरब के बेवपारी समुद्र की राह जहाज़ लाते थे, पर यह जहाज़ उतनी ही दूर में चलते थे, जिसे अरब की खाड़ी कहते हैं, वे लोग तब जहाज़–चलाने की विद्या में ऐसे निपुण न थे जो किनारा छोड़कर दूर खाड़ी से बाहर महासागर में अपना जहाज़ लेजाते। फ़रंगिस्तानवाले समुद्र की राह अपने जहाज़ हिन्दुस्तान में लाने के वास्ते बहुत तड़फते थे, उन दिनों में वे भी अरब और मिसरवालों की तरह जहाज़ चलाने में चतुर न थे, और न भूगोल विद्या अच्छी तरह जानते थे, समुद्र को अपार और अगम्य समझ के सदा अपने जहाज़ों को तट से निकट रक्खा करते, पहले तो वहांवाले हिन्दुस्तान आने के लिये अपने जहाज़ उत्तर समुद्र में ले गये इस मंसूबे पर कि रूस और चीन की परिक्रमा देकर यहां पहुंचें, पर जब कितने ही जहाज़ उस समुद्र के जमे हुए बर्फ़ में फसकर तबाह होगये और रूस की हद से आगे न बढ़ सके, तब उस राह को छोड़कर पश्चिम तरफ़ अटलांटिक समुद्र में चले, वहां उनका जहाज़ अमरिका के महाद्वीप में जा लगा, और आगे न बढ़ सका, तब हारकर दक्षिण की राह ली, और अफ़रीका के किनारे किनारे केपअवगुडहोप से जिसे कोई उत्तमाशा अन्तरीप भी कहता है, मुड़कर हिन्दुस्तान में आए। जिस आदमी ने यह समुद्र की राह फ़रङ्गिस्तान से हिन्दुस्तान को निकाली उसका नाम वास्को-डिगामा था, आठवीं जुलाई सन् १४९७ को कि जिन दिनों में सुल्तान

सिकन्दर लोदी दिल्ली के तख़्त पर था वास्कोडिगामा तीन जहाज़ लेकर पुर्टगाल की राजधानी लिसबन से वहां के बादशाह की आज्ञानुसार हिन्दुस्तान की राह ढूंढ़ने के वास्ते निकला, और साढ़े दस महीने के अर्से में उसका जहाज़ कल्लीकोट में आकर लगा। निदान फ़रंगियों का यह पहला जहाज़ था कि जिसने हिन्दुस्तान का किनारा छुआ, और वास्कोडिगामा पहला फ़रंगी था कि जो समुद्र की राह से इस देश में पहुंचा, और कल्लीकोट पहला नगर था जिस में इनका क़दम आया। कहते हैं कि जब वास्कोडिगामा के जहाज़ लिसबन से चले थे तो वहांवालों को फिर इन जहाज़ों के देखने की आस न थी, और इन जहाज़ियों को मुर्दों में गिन चुके थे, जब इन के जहाज़ लौट कर लिसबन में पहुंचे तो वहां के राजा और प्रजा सब को अत्यन्त हर्ष हुआ और बड़ी ही खुशियां मनाई। पुर्टगालवालों की देखा देखी फिर फ़रंगिस्तान के और लोग भी अपने जहाज़ इस राह से यहां लाने लगे, और हिन्दुस्तान की तिजारत से बड़े बड़े फ़ाइदे उठाए, जब से धूएं के जहाज़ बनने लगे तब से यहां का आना जाना फ़रंगिस्तान वालों को और भी बहुत सुगम होगया, और यद्यपि स्वीज़ के डमरूमध्य के पास थोड़ी दूर खुश्की तो अवश्य चलना पड़ता है. परन्तु रेडसी से मेडिटरेनियनसी में चले जाने से यह राह फ़रंगिस्तान की बहुत ही निकट पड़ती है। इस राह यहां से धूएं के जहाज़ पर इंगलिस्तान तक जाने में डेढ़ महीना भी नहीं लगता। फ़रंगिस्तान और अमरीका से यहां शराब, कपड़े, हथियार, औज़ार, बरतन, धात खुशबू, किताबें, ज़ेवर, खाने की चीज़ें, लिखने पढ़ने की वस्तु, कलें, खिलौने, मकान सजाने के असबाब, और तरह बतरह के अद्भुत और अनोखे पदार्थ आते हैं। और यहां से नील, शोरा, अफ़यून, रेशम, हाथीदांत,

रुई, चांवल, शक्कर, गोंद, जवाहिर, शाल, मलमल, गर्म मसाले और दवाइयां, उन मुल्कों को जाती हैं। सिवाय इन मुल्कों के ईरान तूरान तिब्बत अफ़गानिस्तान, बर्मा चीन अरब मिसर इत्यादि एशिया और अफ़रीका के देशों से भी इस मुल्क की तिजारत जारी है। अपने मुल्क में अर्थात् एक शहर से दूसरे शहर को हिन्दुस्तानी लोग जहां दर्या है वहां नाव पर, और जहां सड़कहै वहां गाड़ियों पर, और रेगिस्तान में ऊंटों पर, और पहाड़ों में भेड़ी बकरी और याकबैलों पर और बाक़ी जगहों में बैल टट्टू और खच्चरों पर, तिजारत का असबाब ले जाते हैं। बहुत जगहों में बार्षिक मेले भी हुआ करते हैं, कि जिन में सब तरफ़ के व्यापारी माल लाते हैं। हरिद्वार का मेला जो हर साल मेष की संक्रांति को हुआ करता है, इस देश में सरनाम है, पर उसमें भी बारहवें बरस जो कुम्भका मेला होता है, वह बहुतही भारी है, कभी कभी बीस लाख तक आदमी इकट्ठा हो जाते हैं ॥

राज्य इस देश का सदा से सूर्य और चन्द्रबंशी राजाओं के घराने में रहा, परंतु अगले समय के हिन्दू राजाओं का वृत्तान्त कुछ ठीक ठीक नहीं मिलता, और न उनके साल संबत् का कुछ पता लगता है, जो किसी कवि या भाट ने किसी राजा का कुछ हाल लिखा भी है, तो उसे उसने अपनी कविताई की शक्ति दिखलाने के लिये ऐसा बढ़ाया कि अब सच से झूठ को जुदा करना बहुत कठिन पड़ गया। सिवाय इसके ब्राह्मणों ने बौध राजाओं को असुर और राक्षस ठहराकर बहुतों का नाम मात्र भी अपने ग्रन्थों में लिखना उचित न समझा, और इसी तरह बौध ग्रन्थकारों ने इनके राजाओं का बर्णन अपनी पुस्तकों में लिखना अयोग्य जाना, तिस पर भी बहुत से ग्रन्थ अब लोप हो गए, बौधों ने ब्राह्मणों के ग्रन्थ नाश

किये, और ब्राह्मणों ने बौधों के ग्रन्थ ग़ारद किये, मुसलमानों ने दोनों को मिट्टी में मिला दिया। छापे की हिक्मत जिस्से ग्रन्थ अमर हो जाते हैं, आगे कोई नहीं जानता था, निदान हिन्दुस्तान के अगले राजाओं की बंशावली और वृत्तान्त शृङ्खलायुक्त और सम्पूर्ण ठीक ठीक अखण्डित अब कहीं से भी नहीं मिल सकता। कहते हैं कि सब से पहला राजा इस देश का मनु का बेटा इक्ष्वाकु हुआ, उसकी राजधानी अयोध्या थी, उसके कुल में बड़े बड़े नामी राजा हुए, सब के भूषण राजा रामचन्द्र तक उस गद्दी पर इक्ष्वाकु बंश के सत्तावन राजा बैठ चुके थे, और फिर छप्पन रामचन्द्र से सुमित्र तक बैठे। सुमित्र अयोध्या का पिछला राजा था, विक्रमादित्य से कुछ दिन पहले उसका देहान्त हुआ। जयपुर जोधपुर और उदयपुर के राजा तीनों अपनी असल रामचन्द्र की औलाद से बतलाते हैं। राठौर अर्थात् जोधपुरवाले मुसलमानों के चढ़ाव के समय कन्नौज की गद्दी पर थे, जब मुसलमानों ने वहां से निकाला तो मारवाड़ में आए। कछवाहे अर्थात् जयपुरवाले पहले नरवर में थे। गहलौत अर्थात् उदयपुरवालों की पहली राजधानी सूरत के पास बल्लभीपुर था। इक्ष्वाकु के बहनोई बुध के बंशवाले राजा चन्द्रबंशी कहलाए, इनकी राजधानी प्रयाग में थी। बुध के बेटे पुरुरव के पड़पोते ययाति के तीन बेटे थे, उरु, पुरु और यदु, पुरु की सत्ताईसवीं पीढ़ी में हस्ती ने हस्तिनापुर बसाया। हस्ति की तेईसवीं पीढ़ी में युधिष्ठिर ने महाभारथ जीतकर इन्द्रप्रस्थ में, जिसे अब दिल्ली कहते हैं, राज किया। यदु के कुल में इक्यावन पीढ़ी के बाद कृष्ण और बलराम उस बंश के भूषण भये, युधिष्ठिर के भाई अर्जुन से लेकर तीस पीढ़ी तक उसी के कुल में इन्द्रप्रस्थ की गद्दी चली आई। पिछला राजा क्षेमराज

जो सुस्त और अचेत हुआ, तो उसका मंत्री बिसर्व उसे मारकर गद्दी पर आप ही बैठा। विक्रमादित्य के समय में त्रिसर्व से लेकर इस गद्दी पर अट्ठतीस राजा तीन घरानों के बैठ चुके थे। अट्ठतीसवें राजा राजपाल को जब कमाऊं के राजा सुखवन्त ने मार इन्द्रप्रस्थ पर कब्ज़ा करना चाहा तो महाराज विक्रम ने चढ़ाव किया और वह राज सारा अपने आधीन करलिया। फिर कोई सात सौ बरस पीछे समय के फेर फार से यह इन्द्रप्रस्थ तोमर अथवा तवार राजाओं की राजधानी हुआ, और इक्कीस पीढ़ी तक उन्हीं के हाथ में रहा, उन्नीस पीढ़ी के बाद राजा अनङ्गपाल ने पुत्रहीन होने के कारन अपने नाती पृथ्वीराज को गोद लिया। विक्रमादित्य सन् ईसवी से छप्पन बरस पहले प्रमर अथवा पवार वंश में उज्जैन की राजगद्दी पर बैठा था, यह राजा बड़ा प्रतापी हुआ, लोग उसके गुण आज तक गाते हैं, और आज तक भी उसे परजन-दुखभञ्जन पुकारते हैं, यद्यपि वह ऐसा पराक्रमी और इतना बड़ा राजा था, पर तौ भी उस के सीधेपन और तपस्या को देखो कि राजाधिराज होकर चटाई पर सोता और अपने हाथ सिप्रा नदी से तूंबा भरकर पानी ले आता, संवत् हिन्दुस्तान में उसी का वर्ता जाता है। उत्तर दक्षिण और पूर्व से तो उस समय में हिन्दुस्तान को बाहर के शत्रुओं का कुछ भी भय न था, क्योंकि तब जहाज़ चलाने की विद्या लोगों को अच्छी तरह न आने से दूसरी विलायत के आदमी कदापि समुद्र की राह, जो हिन्दुस्तान के गिर्द प्राय आधी दूर तक खाई तरह घूमा है, इस मुल्क पर चढ़ाव नहीं कर सकते थे, और न कोई हिमालय ऐसे पर्वत के पार हो सकता था, इस मुल्क में आने के लिये पश्चिम तरफ़ अर्थात् पिशावर मानो दर्वाज़ा था, और ईरान इत्यादि सिन्धु

पार के देशवाले उसी राह से इस मुल्क पर चढ़ाव करते थे, सब से पहला चढ़ाव जिसका पक्का पता लगता है, सिकन्दर का था। फ़ारसी तवारीखों में यह बात अशुद्ध लिखी है, कि वह कन्नौज तक आया। खुद सिकन्दर के साथी लोग अपनी यूनानी-किताबों में लिखते हैं, कि वह सतलज इस पार न उतर सका, गंगा के दर्शनों की उसके मन में लालसा ही रही। पंजाब के राजाओं को तो उस ने लड़ भिड़ कर ज्यों त्यों अपने मुवाफ़िक़ कर लिया था, पर जब उसकी फ़ौज ने सुना, कि मगधदेश का नागबंशी राजा महानन्द छ लाख पियादे तीस हज़ार सवार और नौ हज़ार हाथी की भीड़ भाड़ रखता है, तो उनका दिल यकबारगी टूट गया और आगे बढ़ने से इनकार किया, नाचार फ़ौज के फिर जाने से सिकन्दर को भी उसी जगह से लौटना पड़ा। सिकन्दर के पीछे फिर कई बार ईरान के बादशाहों ने इस देश पर चढ़ाव किया, पर जय ऐसी किसी ने न पाई, जो मध्यदेश तक आता, जो चढ़े सो सिन्धुही के तटस्थ देशों में लड़ भिड़ कर लौट गए, यहां तक कि सन् १००१ ईसवी में महमूद गज़नवी ने अपने लशकर की बाग हिन्दुस्तान की तरफ़ मोड़ी। उस समय में उज्जैन और मगध का राज बहुत दिनों से नष्ट होगया था, और नए नए घरानों के नए नए राजा खण्ड खण्ड में राज करते थे, क्षत्रियों का बहुधा नाश होगया था, और ब्राह्मणों से लेकर शूद्र अहीर पहाड़ी और जंगली मनुष्यों तक गद्दी पर बैठ गए थे। दिल्ली तवारों के आधीन थी कन्नौज राठौरों के हाथ था, और मेवाड़ में गहलौतों का राज था, आपस में नित के बैर से बाहर के शत्रुओं का मन बढ़ा, और सब का एक महाराजाधिराज के न रहने से उनको इस देश में घुस आना सहज हो गया, निदान महमूद ने पच्चीस बरस के भीतर बारह

बार हिन्दुस्तान पर चढ़ाव किया, और बारहीं बार जय पाई, वह कन्नौज और कालिञ्जर तक आया, और यहां तक सारा मुल्क लूट मार से तबाह कर दिया, महमूदशाह के विजयी होने से हिन्दुस्तान का भरम खुल गया, और फिर हर एक यहां आकर लूट मार मचाने लगा। सन् ११९१ में शहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ोरी ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाव किया, पहली लड़ाई में तो उस ने महाराज पृथीराज से शिकस्त खाई, पर दूसरी में, जो थानेसर के पास तलावड़ी के मैदान में हुई थी और जिस में कम से कम तीन लाख सवार और तीन हजार हाथी पृथीराज के साथ थे और पैदलों की कुछ गिनती न थी, पृथीराज को उसने पकड़ लिया, और दिल्ली अपने गुलाम कुतबुद्दीन ऐबक को दी। पृथीराज हिन्दुस्तान का आखिरी स्वाधीन राजा था, हिन्दुओं का राज उसी के साथ गया॥

॥ कवित्त ॥

केते भये यादव सगर सुत केते भये
जात हू न जाने ज्यों तरैया परभात की।
बलि वेणु अम्बरीष मानधाता महलाद
कहां लौं कहिये कथा रावण ययात की॥
वे हू न बचन पाये काल कौतुकी के हाथ
भांति भांति सेना रची घने दुख घातकी।
चार चार दिना को चवाव सब कोउ करौ
अन्त लुट जैहै ज्यों पूतरी बरात की॥ १ ॥

सन् १२०६ में कुतबुद्दीन दिल्ली के तख्त पर बैठा, और यही गुलाम यहां हिन्दुस्तान में मुसलमानों की बादशाहत का बुनियाद-डालनेवाला हुआ, फिर धीरे धीरे ये सारे मुल्क के मालिक बनगए,

और नौबत बनौबत एक खानदान बिगड़ने के बाद दूसरे खानदान के आदमी सल्तनत करते रहे, यहां तक कि सन् १३९८ में समरकन्द के बादशाह तैमूरलंग ने बानवे दस्ते सवारों के लेकर चढ़ाव किया, और दिल्ली को फ़तह कर लिया। तैमूर तो दिल्ली में सोलही रोज रहकर अपने देश को चला गया लेकिन उसके पोते के पड़पोते बाबर बादशाह ने सन् १५२६ में पानीपत की लड़ाई के दर्मियान दिल्ली के बादशाह इबराहीम लोदी को मारकर यह सारा मुल्क अपने क़ब्जे में कर लिया। बाबर का पोता अकबर इस मुल्क में बड़ा नामी बादशाह हुआ, बरन ऐसा बादशाह तो मुसलमानों में कोई भी नहीं था, आज पर्य्यंत लोग उस का यश गाते हैं, और भलाई के साथ उसे याद करते हैं। जिन दिनों इस का बाप हुमायूं शेरशाह से शिकस्त खाकर सिन्ध की राह ईरान को भागाथा, तो उसी सिन्ध के रेगिस्तान में उस आफ़त के दर्मियान, कि हुमायूं के पास चढ़ने को घोड़ा भी मौजूद न था, एक सवार के टट्टू पर चलता था और पीने को पानी मुश्किल से मिलता था, अकबर का जन्म हुआ, और जब हुमायूं ने अपने भाई क़ामरां से, जो काबुल में था, आते वक्त लड़ाई की तो कामरां ने अकबर को, जो उस वक्त उसके क़ाबू में था, भाले से बांधकर क़िले के बुर्ज पर लटका दिया था, कि जिस में हुमायूं की फ़ौज क़िले पर हथियार न चलावे, क्या महिमा है सर्व शक्तिमान् जगदीश्वर की, कि वही अकबर सब बादशाहों का सिरताज हुआ, वह तेरह बरसकी उमर में तख्तपर बैठा, और इक्यावन बरस राज किया। यद्यपि यह इतना बड़ा बादशाह था कि जिस के इसतबल में पांच हजार हाथी, और दश हजार घोड़े खासे के बँधतेथे, और जिस का डेरा दौलतसरा कमखाब के फ़र्श और मखमली

मोती टके हुए पर्दोंवाला सफ़र के वक्त पांच मील के घेरे में खड़ा होता, हर सालगिरह को सोने से तुलादान करता, और सोने के बादाम अपने दरबारियों में लुटाता, पर तौ भी वह रइयत के साथ बहुत सीधा सादा रहता। आठ पहर में केवल एक बार खाता गोश्त से अकबर परहेज़ रखता, हिंसा बुरी जानता, नाम को मुसलमान था मन से सूरज की पूजा करता, आदित्यवार के दिन उसकी अमलदारी भर में जीव मारने की मनाही थी। रइयत उसे इतना चाहती, कि जीते जी उसे मन्नत चढ़ाने लगी थी, और कितनेही आदमी उस के मुरीद अर्थात् शिष्य हो गए थे। उसके राज्य में रुपयेका दोमन पौने चौदह सेर जौ बिकताथा, और एक मन बाईस सेर गेहूं, बाज़े बाज़े आईन इस बादशाह ने बहुतही अच्छे जारी किये थे। यह भी उसी का जारी किया हुआ आईन था, कि जब तक दूलहा दुलहन समझदार न हों, कि एक दूसरे से अपनी रज़ामन्दी ज़ाहिर करें, छोटी उमर में हर्गिज़ शादी न होने पावे। जैसे बुद्धिमान और विद्या में निपुण लोग अकबर की सभा में इकट्ठा हुए थे, ऐसे किसी दूसरे बादशाह के समय में नहीं भये, शेख़ अबुलफ़ज़ल, राजा बीरबल, राजा टोडलमल, नव्वाब खानख़ाना, तानसैन इत्यादि उस के यहां नव रत्न में गिने जाते थे, यह मिहनती मुश्किल काम राजा टोडलमल और अबुलफ़ज़ल का था, जो इस मुल्क के दफ़तर को हिन्दीसे फ़ारसी में उतारा, अब तक भी बहुत बन्दोबस्त अबुलफ़ज़ल के बांधे हुए उसी तरह पर चले जाते हैं। सूबे, सर्कार, महाल, पटवारी, क़ानूनगो, यह सब उसी ने मुक़र्रर किये थे, निदान शाहआलम तक यह बादशाहत इसी घराने में चली आई। शाहआलम से अंगरेज़ोंने लेली। यह घराना तैमूर का मुसलमानों की सल्तनत में सब से पिछला था, जिस

ने यहां बादशाहत का डङ्का बजाया। शाहआलम के पोते बहादुरशाह अब भी रंगून में नज़रबन्द हैं, खाने को सर्कार से पाते हैं, बादशाहत शाहआलम के साथ गई, अब यहां सिक्का सर्कार अंगरेज़ बहादुर का चलता है। कुतबुद्दीन ऐबक से लेकर शाहआलम तक पैंसठ मुसलमान बादशाह दिल्ली के तख्त पर बैठे, और शाहआलम के मरने तक पूरे छ सौ बरस बादशाहत करते रहे। इन में से उनतीस तो अपनी मौत मरे, और तेईस दूसरे के हाथ से मारे गए, सात बन्दीख़ाने में मरे, और छ का पता नहीं, पड़ता फैलाने से फ़ी बादशाह कुछ ऊपर नौ बरस बादशाहत आती है। स्वाधीन स्वेच्छाचारी बादशाहों का प्राय सब जगह ऐसाही हाल है। यह केवल आईनी-बन्दोबस्त का फ़ाइदा है, कि जो इंगलिस्तान में इथलरेड से चौथे विलियम तक ८५६ बरस के अर्से में कुल ४२ बादशाह हुए, और पड़ता फैलाने के हिसाब से फ़ी बादशाह कुछ ऊपर बीस बरस सल्तनत करते रहे, कि जो यहां की बनिस्बत दूनी से भी अधिक है। अंगरेज़ों ने जब देखा कि पुर्टगाल इत्यादि फ़रंगिस्तान की विलायतों के आदमी हिन्दुस्तान में जाते हैं, और यहां की तिजारत से बड़ा फ़ाइदा उठाते, तो फिर इन दैवी पुरुषों से कब चुप चाप रहा जा सकता था, इन्हों ने भी अपने माल के जहाज़ यहां को रवानः किये। और सन् १५९९ में लन्दन-शहर के दर्मियान बहुत से आदमियों ने आपस के साझे में कुछ रुपया इकट्ठा करके इस मुल्क में बनज-ब्यौपार-करने के लिये एक कोठी खड़ी की, और दूसरे ही साल वहां के बादशाह से कई एक शर्त्तों पर इस बात की अपने नाम एक सनद लिखवा ली, कि सिवाय इन साझियों के दूसरा कोई अंगरेज़ हिन्दुस्तान में तिजारत न करने पावे। लेकिन

जब इस मुल्क में उन्हों ने अपना क़ब्ज़ा और दख़ल करना शुरू किया, तो सन् १८१३ में उन को तिजारत करने की मनाही हो गई, और वह अटक उठगई। अंगरेज़ी में साझियों को कम्पनी कहते हैं, इसलिये इन साझी-सौदागरों का नाम भी ईस्टइण्डिया कम्पनी रखा गया। कम्पनी किसी बुढ़िया का नाम नहीं है, जैसा लखनऊ में जब लार्ड वालेंशिया गवर्नर जेनरल विलिज़ली के भानजे सैर को गये थे तो अख़बार नवीसों ने वहां बादशाह से अर्ज़ की, कि लाट साहिब के भानजे कम्पनी के नवासे तशरीफ़ लाये हैं, वे लोग तब तक यही जानते थे, कि कम्पनी बुढ़िया, और गवर्नर जेनरल उसके बेटे हैं। जब इङ्गलिस्तान में यह कम्पनी खड़ी हुई, तो यहां तख़्त पर अकबर बादशाह था। हिन्दुस्तान में पहले ही पहल इन की कोठियां सन् १६११ में सूरत, अहमदाबाद, खम्भात और घोघे में जारी हुई, १६५२ में बंगाले के दर्मियान बलेश्वर में, और उस से दो बरस पीछे मन्दराज में भी होगई। सन् १६६४ में पुर्टगाल के बादशाह से बम्बई का टापू मिला। सन् १७०० में बंगाले के सूबेदार ने कलकत्ता, गोबिन्दपुर और छोटानटी, ये तीन गांव इन को दे दिये, और कलकत्ते में एक क़िला भी, जिस का नाम अब फ़ोर्ट विलियम है, बनाने की आज्ञा दी, उस समय कलकत्ते में कुल सत्तर घरों की बस्ती थी। सन् १७५६ में बंगाले के सूबेदार नव्वाब सिराजुद्दौला ने इस बात पर, कि अंगरेज़ों ने उसके एक आदमी को, जो ढाके से कुछ ख़ज़ाना लेकर भागाथा पनाह दी, उस से नाख़ुश होकर कलकत्ता छीन लिया, और १४६ अंगरेज़ों को, जो उस समय वहां मौजूद थे, ऐसे एक छोटे से घर में, जिस का विस्तार बीस फ़ुट मुरब्बा से अधिक न था, और जिसे अब तक वे

लोग "ब्लेकहोल" अर्थात् कालीबिल पुकारते हैं, बन्द किया, कि दूसरे दिन उन में से कुल २३ जीते निकले, बाक़ी १२३ रात ही भर में वहां दम घुटकर मर गए। निदान यह खबर सुनते ही कर्नेल क्लैव साहिब मन्दराज से ९०० गोरे और १५०० सिपाही लेकर कलकत्ते में आए, कलकत्ता भी लिया और फिर मुर्शिदाबाद पर चढ़ाव कर दिया। सन् १७५७ की तेईसवीं जून को पलासी की लड़ाई में नव्वाब की फ़ौज ने, जो सत्तर हज़ार से कम न थी, शिकस्त खाई, नव्वाब भागा और उसी दिन मानो अंगरेज़ी अमल्दारी की नेव जमी। थोड़े ही दिनों पीछे सन् १७६५ में शाहआलम ने, जो तब दिल्ली के तख़्त पर था, बिहार, बंगाला और उड़ेसा, इन तीनों सूबे की इस्तिमरारी दीवानी का परवाना कम्पनी के नाम लिख दिया, कि जिसमें दो करोड़ रुपये साल की आमदनी का ठिकाना हुआ। और वज़ीर आसिफुद्दौला ने रुहेलों की लड़ाई में मदद लेनेकेलिये सन् १७७५ में बनारस का इलाक़ा इन के हवाले किया। अब देखना चाहिये महिमा सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की, कि ये लोग कहां से कहां बढ़ गए, और किस दर्जे को पहुंचे, जो लोग सौदागरी के लिये घरसे निकले वे अब यहां का राज करते हैं, और जो लोग लाखों सवार के धनी कहलाते थे, वे इन से खाने को टुकड़े मांगते हैं। पर सच पूछो तो यह केवल अपनी नीयत का फल है, अंगरेज़ लोग यहां सौदागरी के लिये आये थे, और वही सौदागरी मात्र चाहते थे, अपने बचाव का बन्दोबस्त अवश्य रखते थे, और जिसपर बिपत पड़ती उसे मदद देते, पर यहां वालों ने इन को छेड़ना और सताना शुरू किया, जैसा किया वैसा ही फल पाया, जिसने इन के साथ ज़ियादती की, इन्हों ने भी उसे अच्छी तरह उस ज़ियादती का मज़ा

चखाया। उस वक्त में हिन्दुस्तान की बादशाहत का अजब हाल था, आपस की फूट और नित के लड़ाई झगड़ों से तैमूर का खानदान जीर्ण और जराग्रस्त होगया था, तिस में भी सन् १७३९ में ईरान के बादशाह नादिरशाह और फिर थोड़े ही दिनों बाद पैदर्पै तीन चढ़ाव अहमदशाह दुर्रानी के जो उसके अमीरों में था इस मुल्क पर ऐसे हुए कि वह और भी जर्जरीभूत हो गया, सूबेदारों ने बादशाह को नाम मात्र भी मानना छोड़ दिया, और जिसके बाप दादा ने कभी चप्पे भर जमीन पर दखल न पाया था उसने भी हिन्दुस्तान की सल्तनत पर दिल दौड़ाया, इधर दक्षिण के सूबेदार निज़ामुल्मुल्क ने हैदराबाद में अपनी हुकूमत जमाई, और उधर नव्वाब वज़ीर ने अवध का सूबा अपने तले दबालिया, इधर आगरे तक मरहठों ने लूट मार मचादी, और उधर सरहिंद तक सिक्खों का हल्ला होने लगा, बादशाह लोग दिल्ली के क़िले में पड़े थे, पर वहां भी उन को कौन बैठा रहने देता था, आज एक आदमी तख्त पर बैठा कल दूसरे ने उसका गला काट सिक्का अपने नाम का चलाया, अभी तलवार का लहू सूखने नहीं पाया कि तीसरे ने उसी तलवार से उस को भी मौत का जामा पिन्हाया और ताज बादशाही का अपने सिर पर रक्खा, कभी बादशाह मरहठों की क़ैद में पड़ता था और कभी पठान उसे घेर लेते थे, सन १७०७ से कि जब औरंगज़ेब आलमगीर बादशाह अकबर का पड़पोता मरा सन् १७६० अर्थात् शाहआलम के राज्याभिषेक तक तिरपन बरस के अर्से में नादिरशाह और अहमदशाह छोड़कर चौदह बादशाह दिल्ली के तख्त पर बैठे, और इन में से यदि मुहम्मदशाह की सल्तनतके तीस बरस निकाल डालो तो तेईस बरस में तेरह बादशाह ठहरते हैं अब सोचो

जहां तख़्त औ ताज की ऐसी छीनछान मचेगी वहां की सल्तनत भी भला क़ाइम रह सकती है ? सदा से यही दस्तूर चला आया जब सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर देखता है कि अब लोग मेरी प्रजा का पालन नहीं कर सकते और जिस काम के लिये इन्हें नियुक्त किया था उसे छोड़कर विषय बासना में पड़ गए, तब तुर्त उन्हें दूर करता है और जो उसके बंदे इस काम के योग्य हैं उन्हें उनकी जगह पर बिठलाता है इस में कुछ सन्देह नहीं कि जो इस हालत में अंगरेज़ लोग हिन्दुस्तान को न लेते फ़रासीस अथवा फ़रंगिस्तान की किसी दूसरी बिलायत के बादशाह के क़ब्ज़े में आ जाता, और यदि वे भी न लेते तो कोई दूसरी क़ौम सिन्धु पार से आकर इस मुल्क को ज़ेर करती, तैमूर के ख़ानदान से बादशाहत निकल चुकी थी, ईश्वर की कृपा से दिन हिन्दुस्तानियों के अच्छे थे जो अंगरेज़ यहां आए, मानो सूखे हुए खेत फिर लहलहाए। निदान पहले तो हैदरअली के बेटे टीपू सुलतान का सिर खुज लाया कि इन अंगरेज़ों से बैर बिसाहा, और बैठे बिठाए इनके साथ लड़ना बिचारा। हैदरअली मैसूर के राजा का नौकर था, नमकहरामी करके उसका सारा मुल्क अपने क़ब्ज़े में कर लिया, टीपू का यह इरादा था कि अंगरेज़ों को दक्षिण से निकाल दे, और उभारा उसे फ़रासीसियों ने था, कई बरस के लड़ाई झगड़े में आख़िरकार सन् १७९९ में श्रीरङ्गपट्टन के हल्ले के दर्मियान अंगरेज़ी सिपाहियों के हाथ मारा गया, और मुल्क उसका बहुत सा सरकार के इख़्तियार में आया। उन्हीं दिनों में सरकार अंगरेज़ बहादुर को मरहठों की तरफ़ से खटका पैदा हुआ, फ़रासीसियों को वे भी नौकर रखने लगे थे, लार्ड विलिज़्ली साहिब ने जो उन दिनों यहां के गवर्नरजेनरल थे उनके पेशवा बाजीराव से

दोस्ती करनी चाही, उस वक्त तो दौलतराव सेंधिया के बहकाने से उसने न माना, लेकिन जब जस्वंतराव हुल्कर ने उस पर चढ़ाव किया तो सरकार से क़ौल क़रार भी किया और बुंदेलखण्ड का इलाक़ा भी दे दिया, यह बात सेंधिया को बुरी लगी, उसने चाहा कि नागपुरवाले से मिलकर कुछ फ़साद उठावे, पर इधर लार्ड लेकने डीगलसवारी और दिल्ली, और उधर जेनरल विलिज्ली ने असाई और अरगांव, की लड़ाइयों में इन दोनों के दांत ऐसे खट्टे किये कि सन् १८०३ में नागपुर के राजा ने तो कटक का ज़िला और सेंधिया ने अन्तरवेद अर्थात् गंगा जमना के बीच का मुल्क उनको देकर अपना पीछा छुड़ाया इस नए मुल्क के हाथ लगने से अंगरेज़ों की अमल्दारी दिल्ली तक पहुँच गई। उन दिनों में शाहआलम सेंधिया की क़ैद में था, लार्ड विलिज्ली ने उसको उसकी क़ैद से छुड़ाकर गुज़ारे के वास्ते लाख रुपए महीने से कुछ ऊपर पिंशन मुक़र्रर कर दिया। थोड़े ही दिनों बाद नयपालियों ने अपनी हद से पैर निकाला, और पहुँचते पहुँचते कांगड़े; तक पहुँचे, जब पहाड़ से उतर कर तराई में अंगरेज़ी रऐयत को सताने लगे तो सरकार ने उनको भी नसीहत देना मुनासिब समझा, और सन् १८१४ में मलौन के क़िले पर उनकी फ़ौज को शिकस्त देकर काली नदी से पश्चिम तरफ़ के पहाड़ तो अपने आधीन कर लिये, और पूर्व तरफ़ के उनके पास रहने दिये। यद्यपि बाजीराव ने विपत के समय अंगरेज़ों से क़ौल क़रार कर लिया था पर दिल से इन के साथ नर्द दग़ाकी खेलना चाहता था, छठी नवम्बर सन् १८१७ को पूना के दर्मियान रजीडंटी में आग लगवा दी, और अंगरेज़ी सिपाही जो थोड़े से वहां रहते थे उनका मुक़ाबला किया। इधर सेंधिया की भी एक चिट्ठी नयपाल के राजा

के नाम इस मज़मून की पकड़ी गई, जिस से उसकी दिली दुश्मनी सर्कार अंगरेज़ के साथ साबित हो गई। पिंडारों ने प्राय पच्चीस हज़ार सवार के इकट्ठा होकर सारे मुल्कमें लूट मार मचा रक्खीथी। हुल्कर के कारदार भी सर्कार के दुश्मनों की पच्छ करते थे। अमीरखां पठानों के साथ रजपुताने को तबाह कर रहा था। यद्यपि सब तरफ़ इस ढब से हलचल पड़गई थी, और सारे हिन्दुस्तान में फ़साद की आग भड़का चाहती थी, पर लार्ड हेस्टिंग्ज़ ने जो उस समय गवर्नर जेनरल था, इस होसयारी के साथ सबका बंदोबस्त किया, और फ़ौजों को इस ढब से चढ़ाया, कि इधर तो सेंधिया को ज़ो सर्कार ने कहा सब मानकर रजपुताने से अपना इख्तियार बिलकुल उठा लेना पड़ा, उधर मीरखां ने अपना तोपखाना सर्कार के हवाले कर दिया, इधर बाजीराव पेशवा ने सर्कारी ख़ज़ाने से आठ लाख रुपया सालाना पिंशन लेकर बिठूर में गंगा सेवन करना स्वीकार किया और उधर हुल्कर की फ़ौज ने महीदपुर में शिकस्त खाकर सर्कारी फ़र्माबरदारी को जान दिल से मंज़ूर कर लिया, नागपुर का राजा अपने क़सूर की दहशत से मुल्क ही छोड़ भागा, सर्कार ने कुछ थोड़ा सा इलाक़ा लेकर बाक़ी उसके वारिसों को बहाल रखा, और पिंडारे ऐसे मारे काटे गए कि नामको भी बाक़ी न रहे, जो जीते बचे वे लूट मार छोड़कर खेती बारी करने लगे। निदान सन् १८१८ में यह मरहठों का युद्ध फ़तह फ़ीरोज़ी के साथ पूरा हुआ, और सब तरफ़ अमन चैन हो गया। काबुल की लड़ाई के समय सिंध के अमीरों ने करांची और ठट्टा सर्कार को दे डालने और सिंधुनदी की राह से महसूल उठा लेने का क़रार कई बातोंके साथ किया था, पर फिर दग़ाकी, और अपने क़रार से प्रलट गए,

इस लिये सन् १८४३ में सर्कार ने उन को उस मुल्क से खारिज करके वहां बिलकुल अपना क़ब्ज़ा कर लिया। सन् १८४५ के अन्त में सिक्खों ने सतलज पार उतर कर इन पर चढ़ाव किया, पर जैसा किया वैसा ही फल पाया। पहले तो सन् १८४६ में सर्कार ने उन से केवल जलंधर-दुआब और सतलज के इस पार का मुल्क लिया था, और अपराध क्षमा करके दलीपसिंह को गद्दी पर बहाल रक्खा था, पर फिर भी जब वे लोग लड़ने भिड़ने और बखेड़ा करने से न हटे, तब सन् १८४९ में सर्कार ने बिलकुल मुल्क जब्त कर लिया, और दलीपसिंह को पंजाब से निकाल कर खाने के लिये दस हज़ार रुपया महीना पिंशन मुक़र्रर कर दिया। अब इस दम अटक से कटक तक सर्कार ही की अमल्दारी है, और हिमालय से समुद्र पर्यन्त इन्हीं का डंका बजता है, बरन हिन्दुस्तान की असली सरहद से भी पूर्व और पश्चिम में अब कुछ कुछ इन की अमल्दारी बढ़ती चली है॥

अंगरेज़ों की बराबर तो कभी किसी की याद में कोई राजा या बादशाह नहीं हुआ, और न किसी ने इन जैसा मुल्क का बन्दोबस्त और प्रजा का पालन किया। जिस तरह अब इन की अमल्दारी में यह विलायत आबाद होती चली है, ऐसी कभी नहीं हुई थी, और न इतनी धरती इस देश में कभी जोती बोई गई। ऐसा यहां कौन राजा हुआ, जो प्रजा से अपने अर्थ कुछ भी कर न लेवे, ख़ज़ाने में जितना रुपया आवे सब उन्हीं के सुख के लिये खर्च करे। किस राजा ने जमींदारों के साथ ऐसा पक्का बन्दोबस्त किया था, कि जो जमा एक बार उनके साथ ठहर जावे, फिर कभी उसके सिवा और कुछ उन से न मांगे, और व्योपारियों से तिजारत के माल पर महसूल न लेवे। ऐसी सड़कें किस ने बनाई थीं, जिन पर सावन भादों

की अँधेरी रात में बग्गियां दौड़ा करें, इतने पुल किस ने बनाये थे, कि सैकड़ों कोस बराबर चले जाओ पर घोड़े का सुम पानी में न डूबे। डाक इस तरह की किस ने बैठाई थी, कि ऐसे थोड़े महसूल पर इतनी दूर की चिट्ठियां और पुलंदे इस क़दर जल्द आ पहुंचें। पुलिस का बन्दोबस्त किस ने ऐसा किया था कि कोस कोस में सड़कों पर चौकियां बैठ जायँ। ग़रीबों के लड़कों को पढ़ाने के लिये किसने गांव गांव में पाठशाला बिठाये थे, और किस ने शहर में कंगालों के लिये दवाख़ाने बनाये थे। कब ऐसे छापेख़ाने हुये जो टके टके पर पोथियां मिलें, और कब किसी राजा ने अपने बन्धुओं को इस ढब आदमियों की तरह रखा। किस राजा ने ऐसी कचहरी खोली जिसमें राजा पर भी नालिश सुनी जावे, और किसने अपनी रऐयत का माल ऐसा शिवनिर्माल्य समझा कि जो गवर्नर जेनरल भी छटांक भर दूध चाय के वास्ते लें तो उसी दम उसका दाम ज़मींदार को चुका देवें। देखो जहां भारी भारी जंगल थे और शेर हाथी रहते थे वहां अब बस्तियां बस गईं, जो धरती सदा से बनजर पड़ी थी वह भी अब जोती बोई गई, बिरली ऐसी जगह है जहां खेती लायक़ धरती बनजर पड़ी हो, वन तो क्या पहाड़ भी इनकी अमलदारी में खेती से ख़ाली न रहे। हम लोगों की महारानी क्वीन विक्टोरिया, ईश्वर दिन दिन बढ़ावे प्रताप उनका, इस मुल्क की आमदनी से एक कौड़ी भी नहीं लेतीं, और हुक्म देदिया है कि जितना रुपया कम्पनी का हिन्दुस्तान से लगा था उसका वाजिबी सूद देकर बाक़ी हिन्दुस्तान की सारी आमदनी इन्हीं हिन्दुस्तानियों की बिहबूदी और बिहतरी के कामों में लगाओ, जैसे सूर्य पृथ्वी से पानी सोखलेता है और फिर मेह बरसाकर उसी पृथ्वी का भला

करता है। ज़मींदारों से जो गांवकी जमा मुक़र्रर हो गई अब साहिब कलक्टर का मक़दूर नहीं जो उनसे सेर भर घी भी बिना दाम मांग सकें, या एक आदमी भी उनका किसी काम के लिये बिना पैसा दिये बेगार में पकड़ सकें। चाहे जितना माल मुल्क के एक किनारे से दूसरे कनारे ले जाओ सरकारी अमल्दारी में एक कौड़ी भी कोई महसूल की न मांगेगा। सड़कें पक्की कंकर और सुरखी पिटी हुई तो कलकत्ते से दिल्ली तक और दूसरे बड़े बड़े शहरों के बीच भी बन ही गई हैं, और बनती चली जाती हैं, पर अब लोहे की सड़कें तैयार होती हैं, कि जिन पर धूएं की गाड़ी चला करेगी, और दूसरे दिन मुसाफ़िरों को कलकत्ते से दिल्ली पहुँचावेगी। पुल जहां पक्के बनने कठिन थे वहां लोहे के बना दिये, जो बाक़ी रह गए हैं उसकी भी तैयारी हो रही है। डाक में चिट्ठी पीछे अब कुल टका महसूल लगने का हुक्म हो गया, चाहो लाहौर से मन्दराज भेजो और चाहे बंबई से कलकत्ते मँगाओ। इलेक्ट्रिक टेलिग्राफ़ जिस्से तार के ऊपर बिजली दौड़ाकर सूइयों के इशारे से खबरें पहुँचा करती हैं तैयार हो गई है, उससे एकही लहजे में हज़ारों कोस की खबर भुगत जाया करती है। शास्त्र में बढ़ावा देकर लिखा है कि रावण-असुर अग्नि और पवन से काम लेता था, पर ये सुर तुल्य अंगरेज़ बहादुर जल, अग्नि, पवन, धूआं बरन बिजली से भी प्रत्यक्ष चाकरी लेते हैं। गाड़ियां माल की अब अकेली कलकत्ते से लाहौर को चली जाती हैं, न सवार साथ है न पियादा, जो सड़क में किसी जगह पर आधी रातको भी हांक लगाओ तो चारों तरफ़ से चौकीदार जवाब देंगे और उसी दम आकर खबर लेंगे, सड़क क्या जैसे बाज़ार बस्ता है कहीं चौकी कहीं दूकान, कहीं पड़ाव कहीं सरा कहीं कूआ कहीं तालाब, दुतर्फ़ा दरखतइसखूबी

से लगे हैं, मानो पथिक जन बाग़ में चले जाते हैं। पाठशालों में लड़कों को हिन्दी फ़ारसी अरबी संस्कृत अंगरेज़ी बंगला गुजराती मरहठी सब कुछ सर्कार की तरफ़ से पढ़ाया जाताहै, और अस्पताल में बीमारों की ऐसी ख़बर ली जाती है कि बाप बेटे की भी न लेगा। छापेख़ानों में बहुधा सर्कार भी अपनी तरफ़ से किताब और पोथियां छपवा देती है कि जिससे सस्ती होने से ग़रीब लोग भी उनसे फ़ाइदा उठावें। जेलख़ाने में क़ैदियों के खाने पहने सोने बैठने और मिहनत करने का ऐसा बंदोबस्त है कि जिस से वे क़ैद के सिवा और किसी बात का दुख न पावें, यह नहीं कि सज़ा तो उन्हें क़ैद की बोली जावे और जेलख़ाने में वे तड़फ़ तड़फ़ कर जान से गुज़र जावें, और मिहनत में भी उन से ऐसा काम लेते हैं कि जिसके सीखने से वे जन्म भर रोटी कमा खावें, और फिर कोई बुरा काम न करें। जिन राजाओं ने इन के साथ लड़ाई की थी उनको भी इन्होंने इस आराम से रखा है कि शायद वह अपनी गद्दी पर वैसा आराम न पाते। यदि एक छोटा सा ज़मींदार भी समझे कि सर्कार ने वाजिबी जमा से एक पैसा अधिक ले लिया, उसे इख़्तियार है कि अदालत में सर्कार पर नालिश करे, और यदि आईन के बमूजिब उसका दावा साबित होजावे तो सर्कार को उसी दम उसका पैसा ख़ज़ाने से निकाल देना पड़ताहै। फ़ौज तो क्या जब ख़ुद गवर्नर जेनरल भी दौरे को जाते हैं मक़दूर नहीं कि कोई किसी ज़मींदार से एक बोझा लकड़ी या घास बिना दाम दिये ज़बर्दस्ती लेसकें, न्याय और इंसाफ़ इसीका नामहै। देखो आगे यह मुल्क कितना बस्ताथा और कितना जङ्गल उजाड़ था। रामचन्द्र के अयोध्या से रामेश्वर तक जाने में बराबर जङ्गलही जङ्गल का वर्णन लिखा है, कि जिन में ऋषी मुनी अथवा भिल्ल इत्यादि

रहते थे। कृष्णचन्द्र के समय में भी वृन्दावन वन गिना जाता था, और गोप लोग उस में शकटो पर रहते थे, जैसे अब भी तातार के आदमी रहते हैं। अकबर के वक्त तक आगरे के सूबे में हाथी और चीते पकड़े जाते थे। क्या हुए अब वे सब बड़े बड़े जंगल जिनके नाम और वर्णन पुस्तकों में लिखे हैं ? कौन ऐसा राजा था जो दास और दासी न रखता था, कहो यह कौन न्याय की बात है कि आदमी को जानवर की तरह पकड़ रखें ? भिलसा के टोप पर जो दो हज़ार बरस से पहले का बना मालूम होता है, हिन्दू राजाओं की लड़ाई का एक चित्र लिखा है, उस में जहां सिपाही लोग स्त्रियों को दासी बनाने के लिये पकड़ रहे हैं, देखकर बदन कांपता है। खण्ड खण्ड के राजा होते थे, अयोध्या में रामचन्द्र और मिथिला में दस मञ्ज़िल के तफ़ावतपर जनक राज करते थे, देखो महाभारत में कितने राजाओं का नाम लिखा है, और फिर ये सब सदा आपस में लड़ते झगड़ते रहते थे, जहां नित की लड़ाई रहेगी वहां प्रजाकी अवश्य तबाही होगी। दो दो हज़ार बरस से अधिक पुरानी मुहर और अँगूठियें पीतल और तांबे की धरती से निकलती हैं, जो उस समय में धन बहुत था तो ऐसी चीज़ों पर लोग अपना नाम क्यों खुदवाते थे, बरन उस समय की जो अशरफ़ी भी मिलती हैं तो अकसर हलकी और निरसे सोने की (†) पुराणों को पढ़िये और

(†) बहुतेरे ऐसे भी आदमी हैं कि वह कदापि इस बात को न मानेंगे कि आगे इस देश में धन अब से अधिक न था, तो उनको यह भी समझ लेना चाहिये कि हमारी मुराद उस बात के साबित करने से नहीं है, हम इस जगह केवल इतनाही साबित करना चाहते हैं

बौधमत के ग्रन्थों को देखिये तो अच्छी, तरह यह बात खुल जायगी कि राजाओं के भण्डार में और जो सब महाजन साहूकार और कामदार राज से सम्बन्ध रखते थे उनके घरों में अवश्य सोने चांदी

कि यदि इस देश की दौलत घटी भी हो तो उसके घटने का कारन अंगरेज़ी अमल्दारी नहीं है। सच करके मानो जो कभी अंगरेज़ इस वक्त में इस मुल्क को न थाम लेते, हम लोगों का कहीं पता न लगता। दौलत जो गई तो महमूद ग़ज़नवी मुहम्मदग़ोरी और नादिरशाह इत्यादि उसे लेगये। दौलत जो छिपी तो लूट की दहशत से हमीं लोगों ने ज़मीन के अंदर छिपाई। दौलत जो नहीं आती तो फ़रंगिस्तानवालों की बुद्धि और विद्या का बल बढ़ने से और हम लोगों के सुस्त और निरुद्यमी पड़ने से और जहाज़वालों को अमरिका और दूसरे बड़े बड़े टापुओं की राह मालूम होजाने से अब उस का आना नहीं होता। आगे वे लोग हमारी बनाई हुई चीज़ें ले जाते थे, अब हमीं लोग उनकी बनाई चीज़ें मोल लेते हैं। जो हीरा रूई शक्कर नील गर्म मसाले इत्यादि इस देश की पैदा दूसरे देशों को जाती थीं, वह अब अमरिका और टापुओं से वहां आती हैं। जो लोग अंगरेज़ी अमलदारी को दौलत घटने का कारण समझते हैं, उन्हें पुराने क़िस्से कहानियों पर ध्यान न करना चाहिये, इस मुल्क की उस हालत को देखें कि जब अंगरेज़ी के हाथ पड़ा, ईरान में तो अंगरेज़ी अमल्दारी नहीं है, फिर वे लोग क्यों अपने मुल्क को आगे की बनिस्बत अब बहुत दीन और धनहीन समझते हैं? ज़रा समय के फेर फार पर निगाह करो, कि आगे एशिया और फ़रङ्गिस्तान में क्या तफ़ावत था और अब क्या हो गया॥

और रत्नों का ढेर लगा रहता था, पर प्रजा ऐसी खुशहाल नहीं थी जैसी अब है, आगे तालाब के पानी की तरह धन एक जगह में इकट्ठा रहता था, देखने में तो बहुत पर निरा निकम्मा था, और अब जैसे उसी तालाब को काटकर खेतों में लेजावें और उन्हें सींचकर अन्न उपजावें, इसी तरह वह धन सब प्रजा के बीच फैलगया, देखने में तो नहीं आता पर फल बहुत देता है। शत्रुओं को जब पराजय करते थे बुरी तरह से मारते, योगबाशिष्ठ में एक कथा के बीच लिखा है कि एक राजाने कई सौ चोर एक राक्षसी को खिला दिये, यद्यपि यह बात केवल दृष्टांत के वास्ते हो पर यह साबित है कि आगे चोरी भी बहुत होती थी, और अब सद्र निज़ामत का रजिस्टर देखो तो भारी जुर्म हरसाल घटते जाते हैं। सब राजा एक से नहीं होते थे, इस में संदेह नहीं जो कभी कभी कोई युधिष्ठिर विक्रमादित्य और भोज के से अच्छे भी होजाते थे, पर बहुधा नाच गाने में रहते और अन्याय भी बहुत करते। देखो रघुवंश में राजा अग्निवर्ण का क्या हाल लिखा (†) है, जब रामचन्द्र की औलाद में ऐसे भए तो औरों की क्या गिनती है। कुकर्म भी बहुत होताथा, महाराज चन्द्रगुप्त नायन के पेटसे थे, अब कोई नायन रखे तो ज़ात बाहर हो, जब राजा

(†) महाराज अग्निवर्ण नाच रंग और तमाशबीनी में ऐसा आसक्त होगए थे, कि प्रजा को उनका दर्शन मिलना भी दुर्लभ हुआ, और जब मंत्रियों ने महलों में जाकर बहुत सी विनती की कि महाराज आपके दर्शन की अभिलाषा में सारी प्रजा बाहर खड़ी है, तो महाराज ने उन के दर्शन के लिये झरोखे की राह अपना पैर बाहर निकाल दिया!

ने यह काम किया तो प्रजा को जिना के लिये कौन सज़ा देता होगा। मुसल्मानों का वक़्त इससे भी बत्तर था, बादशाह तो बहुधा शराब के नशे में चूर पड़े रहते थे, और फ़ौजें उनकी लड़ाई के नाम और बहाने से मुल्क को लूटती थीं, जिस राजा नव्वाब या ज़मीदार पर उसका धन धरती अथवा उसकी बेटी छीनने के लिये बादशाही फ़ौजें चढ़ती थीं, फिर यह हाल होता था कि दूध पीते बच्चे को भी उस इलाक़े में जान नहीं छोड़ते थे, और लड़कियों को भी पकड़ पकड़ कर ख़राब करते थे। खुलासतुलअख़बार वाला लिखता है कि सुलतान रुकनुद्दीन फ़ीरोज़शाह इतनी शराब पीता था कि आख़िर नाचार उसके अमीरों ने उसे क़ैद करलिया। जुब्दतुत्तवारीख़ वाला लिखता है कि सुलतान मुइज्जुद्दीन कैकुबाद इतनी शराब पीता था, और ऐसा ऐश और तमाशबीनी में डूब गया था, कि उसकी देखा देखी रऐयत को भी सिवाय शराब जिना और जुए के कुछ दूसरा शग़ल बाक़ी नहीं रहा, यहां तक कि मस्जिद और मन्दिरों में ये बातें होने लगी थीं। मआसिर रहीमी वाला लिखता है कि मुबारकशाह इस क़दर ऐयाश और ख़राब होगया था कि क़लम को भी उसका हाल लिखने में शर्म आती है, जनानी पोशाक पहन कर रंडियों के साथ अमीरों के घर नाच तमाशा करने को जाता, और अकसर नंगा मादर्ज़ात दर्बार किया करता। तारीख़ फ़िरिश्त: वाला मुहम्मदशाह दखनी की तारीफ़ यों लिखता है कि उसकी सल्तनत में पांच लाख हिन्दू मारे गए, और अहमदशाह दखनी का हाल यों बयान करता है, कि जब उसने बिजय नगर के राजा पर चढ़ाव किया तो पहले उस की रऐयत को क्या मर्द क्या औरत और क्या बच्चे सब को काटना शुरू किया, जिस मंज़िल में पूरे बीस हज़ार आदमी मारे जाते वह

तीन दिन मुक़ाम करता और बड़ी खुशियें मनाता। वही ज़ुब्दतुत्त-वारीखवाला सुल्तान मुहम्मद तुग़लक़ का ज़िकर इस तरह पर लिखता है, कि जब उस ने रऐयत पर महसूल इस क़दर बढ़ाया कि उस का अदा करना उनकी ताक़त से बाहर था, तो दुआबे के सारे ज़मीदार अपने छान छप्पर और खलिहान फूंक कर गांव छोड़ भागे, बादशाह ने सुनतेही अपनी फ़ौज को हुक्म दिया कि सारे दुआबेको लूट लो, और जहां जो ज़मीदार मिले बेशक मारडालो, बरन आप भी इन बेचारे ज़मीदारों का शिकार करने के लिये सवार हुआ, और सिर जो ज़मीदारों के कटते थे क़िले के कंगूरों से लटकाए जाते थे। निदान मुसल्मान बादशाहों की बादशाहत में हिन्दुओंके मन्दिर तोड़े जाते थे, और ब्राह्मणों के मुंह में थूक थूक कर ज़बर्दस्ती मुसल्मान बनाए जाते, बादशाही लशकरवाले ज़मीदारों को लकड़ी घास और दही दूध का कब दाम देते थे, बरन रसद भी ज़बर्दस्ती लेते, और लड़ाई के वक्त तो खेत तक काटकर घोड़ों को खिला देते, अब तक फ़ारसी मसल चली आती है, नमक अज़् सर्कार आरद अज़् बाज़ार, बेगार में ज़मीदार नित पकड़े जातेथे, अकबर जब कश्मीर में गया तो देखा कि बादशाही केसर चुनने के लिये ज़मीदार बेगार पकड़े गए हैं, हुक्म दिया कि आयंद: से उन बेगारियों को सर्कार से खाने को मिला करे, और यह बात एक ऐसी बड़ी समझी कि वहां की जामेमसजिद पर यह हुक्म खुदवा दिया, अब कहो यदि अकबर वहां केसर के खेत देखने न जाता तो उन बिचारे ज़मीदारोंको जो बादशाही काम करते थे किस तरह खानेको मिलता, और फिर भी एक केसर चुननेवालों ने खाने को पाया तो क्या हुआ, सारे मुल्क में जो बादशाही नौकर सब काम ज़मीदारों से ज़बर्दस्ती

मुफ्त बेगार में लेते थे उन्हें खाने को कौन देताथा। स्त्री का सुन्दर होना उसके वास्ते मानो एक अपराध था, जब राजाओं की बेटियां बादशाह ज़बर्दस्ती मँगवा लेते थे, तो बनिये महाजनों की कब छोड़ते होंगे। तारीख़ फ़रिश्तावाला लिखता है कि हुमायूंशाह यहां तक अपनी रऐयत पर ज़ुल्म करताथा कि जब किसी की बरात निकलती तो दुल्हन को मँगाकर पहले आप रख लेता तब दूल्हा के घर जाने देता। मुसाफ़िर सिवाय क़ाफ़िले के अथवा बिना सवार सिपाही लिये कभी राह न चलते, बरन क़ाफ़िले भी दिन दोपहर लूटे जाते थे, क़ाफ़िले क्या इस नित की लड़ाई झगड़ों में इलाक़े के इलाक़े तबाह होजाते थे, एक मैसूर ही का हाल सुनो कि बत्तीस बरस के अंदर अर्थात् सन् १७६० से १७९२ तक दसबार मरहठों के हाथ से लूटा गया। यह जो पक्की सराय बुर्ज और रौज़नों के साथ क़िले के तौर पर जा बजा बादशाही समय की बनी हुई हैं, कारण यही था कि मुसाफ़िरों को रात के समय डाकू और लुटेरों का बड़ा ही डर रहता था। अब भी बहुत से नादान जिन्हों ने पुरानी तवारीख़ें नहीं देखीं अगली बादशाहतों को याद करके ठंढी सांस लेते हैं, और हसरत के साथ उन दिनों को याद करते हैं, हमारी समझ में वे सब मिलकर एक अर्ज़ी इस मज़मून की लिखें और महारानी विक्टोरिया के चरण कमलों में भेजें, कि आप चौथाई मुल्क तो अगले बादशाहों की तरह जागीर में उन निकम्मे निरुद्यमी बेइल्म आदमियों को मुआफ़ कर दीजिए कि जो बहुधा इस देश में राजा बाबू और अमीर कहलाते हैं, जिससे वे बेफ़िकर होकर नाच रंग और भांड़ों का तमाशा देखें, और अपनी तोंद के बोझ के सिवा सेर आध सेर सोने चांदी और जवाहिरात का भी

बोझ अपने बदन पर बढ़ावें, और बाक़ी तीन हिस्से की आमदनी अपने तोशेखाने में दाखिल कीजिए। शाहजहां की तरह एक तख्त ताऊस बनवाइये, जिस्से जौहरियों को फ़ाइदा हो। नौकरों की तनख्वाहें बढ़ादीजिये, और जब वे मरें तो अगले बादशाहों की तरह उनका सारा घरबार ज़ब्त कर लीजिये, हैदराबाद के नव्वाब के यहां तो अब तक भी यही दस्तूर जारी है। राजाओंको हुक्म दीजिये अपनी सुन्दर सुन्दर बेटियां जिस तरह दिल्ली के बादशाहों को देते थे अब आप के शाहज़ादोंके वास्ते भेज देवें, और गवर्नरजेनरल को फ़र्माइये महाजन और भले मानसों की अच्छी अच्छी औरतें चुनकर नव्वाबों की तरह आप के वास्ते लौंड़ियां हाजिर करें, और जो उन औरतों को उन्हें देखना मंज़ूर हो, हुक्म देवें कि गवर्नमेंट-हौस में बादशाही ज़माने की तरह लेडी साहिब के लिये मीना बाज़ार लगे, जब लोगों की बहू बेटियां आवें लाट साहिब भेस बदल कर सब को परख लेवें, खुद अकबर यह काम करता था। नादिर शाह की तरह एक दो शहर क़त्ल करवाइये, औरंगज़ेब की तरह आप भी सब मंदिर और मस्जिदों को तुड़वा कर उनके मसाले से अपने मतके गिरजा बनवाइये और हिन्दू और मुसल्मानोंको जबर्दस्ती अपने मज़हब में लाइये, और जो बाक़ी रहें उन से मुसल्मान बादशाहों की तरह जो अकबर से पहिले हुए थे जिज़ये का रुपया वसूल कीजिये। बादशाह राजा और नव्वाबों को जिन्हें उनके मुल्क से खारिज किया अब आप लाखों रुपये क्यों पिंशन देती हैं, जिस तरह उमरखिलजी फ़र्रुखसियर अहमदशाह इत्यादि दिल्ली के बादशाहों की आंखें निकाली गई थीं आप भी इनकी आंखें निकलवा लीजिए, अथवा पोस्त या नमक का पानी पिलवाकर जान ही ले

डालिये। लाखों रुपया सूद का आप इन महाजनों को क्यों देती हैं, मुहम्मदतुग़लक़ की तरह तांबे का रुपया चलाकर क्यों नहीं उनका बिलकुल क़र्ज़ा अदा कर देतीं, अथवा जिस तरह पेशवा के कहने बमूजिब सेंधिया ने अपने दीवान घाटक्या की लड़की के व्याह का ख़र्च वसूल करने को उसे पूना में भेजकर वहां के महाजनों को गर्म तोप में बांध बांध रुपया वसूल कियाथा आप भी हम लोगों से उगाह लीजिये। नाव डूबने का तमाशा देखने के लिये आप भी सिराजुद्दौला की तरह एकदो गुज़ार की किश्तियों का बीच धारा में तख्ता खुलवा दीजिये, डाक की क्या ज़रूरत है जिसे काम होगा अगले ज़माने की तरह अब क़ासिद के हाथ चिट्ठी रवानः करेगा। सड़क और पुल तुड़वा दीजिये, और चौकी पहरा बिलकुल उठवा लीजिये, बरन इश्तिहार देदीजिये कि पिंडारों की औलादसे जो जीते हों फिर वहीं अपने बाप दादों का पेशा इख़्तियार करें, जिसमें लोग आगे की तरह अब भी एक शहर से दूसरे शहर में न जा सकें, और जांय तो क़ाफ़िला बांधकर और सवार सिपाही साथ लेकर, माल की बीमा बिकेगी, सिपाहियों का रुज़गार खुलेगा, बीमा लेने वाले महाजनों को फ़ाइदा होगा, और आपको भी मरहठों की तरह पिंडारोंसे लूट के माल की चौथ हाथ लगेगी। सिपाह की तनख्वाह बादशाहों की तरह बरस छ महीने चढ़ाकर बांटिये, जिस में वे रुपया क़र्ज़ लेवें तो महाजनों को पांच सात रुपये सैकड़े से भी अधिक सूद मिले, और बहुत तंग होंगे तो अगले ज़माने की तरह अब भी बाज़ार लूटकर अपना काम चलालेंगे। पाठशाला सब बर्ख़ास्त कीजिये, ग़रीबों को आगे कब किसने पढ़ाया था, न ये पढ़ेंगे न अपना भला चाहेंगे, न ये तवारीख़ें देखेंगे न बुरी भली अमल्दारी का फ़र्क़ कर सकेंगे।

छापेखाने बन्दकीजिये जिसमें किताब महँगीहों, और लेखकोंकी रोज़ी खुले। अस्पताल मौकूफ़ कीजिये जिसमें बैद हकीमोंको दो पैसे मिलें, और जब उनकी दवा किसी बीमारको फ़ाइदा न करे, तो मूलू आदिल शाह बीजापुरके बादशाहकी तरह क़त्ल करवाइए, और हाथी के पैरों से पिसवाइये। ज़मीदारों से जमा आगे किसने मुक़र्रर की थी, जो जिसके पास देखिये लेलीजिये, ये तो आपकी रऐयत हैं, इनको बेगार में पकड़िये, इन से अपनी ख़िदमत लीजिये, सर्कारी मकानात बनवाइये, सिपाहियों का बोझ ढुलवाइये, बाग़ लगवाइये, निदान जिन सब सर्कारी कामों में आप अब रूपया ख़र्चती हैं, वह सब अगले बादशाहों की तरह ज़मीदारों से मुफ़्त में लीजिये, आप केवल अपने अमीरों को खुश रखिये, और चैन से ऐश कीजिये, और ये करोड़ों ज़मीदार तो आपकी रऐयत गुलाम हैं, आपही के वास्ते ईश्वरने इन्हें बनाया है, इन्हें जो चाहिए सो कीजिये, और जो आप को यह खयाल हो कि कलकत्ते के बाबू लोग जो कुछ थोड़ा बहुत अंगरेज़ी पढ़गएहैं हमारी बदनामियां अख़बारों में छापेंगे, तो एक दो को उन में से अगले बादशाहों की तरह कान में सीसा पिला दीजिये, या खाल खिंचवाकर भुस भर दीजिये, और हिन्दुस्तानी कवि भाट और शाइरों को ज़मीन दुशाले और सोने के कड़े बख़्शिये, ये आपकी तारीफ़ में ऐसे ग्रंथ बनावेंगे कि फिर लोग स्किन्दर और नौशेरवां को भूलकर क़यामत तक आपही का नाम नेकी के साथ स्मरण करेंगे, और आपही का यश गावेंगे। निदान महारानी साहिब जो हिंदुस्तान की कमनीसीबी से यह अर्ज़ क़बूल करलें तो फिरभी अगला ज़माना आ सकता है, और जो इंसाफ के रूसे यह हुक्म चढ़ावें कि हम अमीरों के साथ कदापि वह बात न रखेंगे जो अगले बादशाह रखते थे,

नहीं तो वे भी उसी तरह हमारा गला काटेंगे, जैसे अगले अमीरों ने अगले बादशाहों का गला काटा था और हम अपनी हिन्दुस्तान की रऐयत के साथ वही सुलूक करेंगे, कि जैसा अपनी इंगलिस्तान की रऐयत के साथ सुलूक करते हैं, जिस में जैसा अंगरेज़ी रऐयत हम को हमारे सब कामों में मदद देती है, उसी तरह हिन्दुस्तानी रऐयत भी देवे, तो फिर अब कभी उस अगले ज़माने के मुंह देखने की दिल में उमेद न रखनी चाहिये, क्योंकि सर्कार अंगरेज़ बहादुर का बंदोबस्त ऐसा कच्चा नहीं है जो किसी तरह से हिल सके। हम ने इस बात की बड़ी खोज की कि जो लोग सर्कार कम्पनी की अमल्दारी को अच्छा नहीं कहते और पुराने वक़्तों को याद करते हैं उन से इस बात का सबब दर्याफ़्त करें, पर जो जो सबब उन लोगों ने बयान किये सब के सब नामाकूल मालूम हुए, क्योंकि पहले तो वे कहते हैं कि इस अमल्दारी में ज़मीनका ज़ोर घट गया, अन्न कम पैदा होता है, दूसरे आगे की बनिस्बत अब सर्कार महसूल ज़ियाद: लेती है, तीसरे तिजारत में फ़ाइदा न रहा, चौथे हिन्दुस्तानियों को बड़े उहदे नहीं मिलते, ऐसे काम पर अंगरेज़ ही भरती होते हैं। हमने जो आईन अकबरी की किताब खोली और हिसाब किया तो मालूम हुआ कि अकबर के वक़्त में जो सब से अच्छा बादशाह था भली से भली एक बीघे धरती में जो साठ मुरब्बा इलाही गज़का गिना जाता था (*) आठ मन साढ़े सत्तरह सेर गेहूं की पैदावारी पड़ती थी, इस से अधिक नहीं होती थी। हम जानते हैं कि शुरू अंगरेज़ी अमल्दारी में जब लोगों ने लूट मार से बचाव पाकर बहुतेरी ज़मीन

(*) इकतीस अंगुल का एक इलाही गज़ होता है॥

जो हज़ारों बरस से बनजर पड़ी थी जोत ली है उस में अब पहली सी पैदा न होने से ज़मीदार हाकिम को दोष देते हैं, यह नहीं समझते कि जो ज़मीन बराबर हर साल बोई जायगी उसका ज़ोर अवश्य घट जायगा, आगे अव्वल तो नित के लड़ाई झगड़ों से ऐसे बहुत कम खेत थे जो बराबर पांच सात बरस बोए जावें, दूसरे बादशाह कच्चा बंदोबस्त रहने के कारन जिस साल खेत बोआ जाता था उसी साल पूरा महसूल लेते थे नहीं तो तख़फ़ीफ़ करदेतेथे, अब लड़ाई झगड़े की बिलकुल दहशत उठ गई, सर्कार ने ज़मीदारों का फ़ाइदा समझकर कार्दारों की लूट मार से बचाने के लिये बड़ी बड़ी मुद्दतों का पक्का बंदोबस्त कर दिया, अब ज़मीदार आंख बंद करके हर साल बराबर एक ही तरह से अपने खेतों को बोते चले जाते हैं, यदि इङ्गलिस्तानियों की तरह फ़सल की बदली करें, और बारी बारी से खेत को बनजर छोड़ें, जैसा इस विषय की किताबों में लिखा है, तो कदापि धरती का जोर न घटे। नौ दस बरसका अर्सा गुज़रता है कि आगरे की गवर्नरी में २२९९९०७६ एकर (*) धरती बोई जाती थी और अब २४४५०२२८ एकर बोई जाती है भला जहां दस बरस के अर्से में १४५११५२ एकर धरती नई जोती बोई जावे, वहां यह बात क्योंकर कही जा सकती है कि आगे की बनिस्बत अब किसानों को फ़ाइदा कम है। महसूल यद्यपि अकबर के वक्त़ में ऐसी जमीन पर फ़ी बीघे केवल दो मन कुछ ऊपर सवा छ सेर गेहूं अथवा उसका दाम लिया जाता था, पर बेगार बेतरह थी, उत्तराखंड इत्यादि देशों के रजवाड़ों में जहां अब तक जमींदारोंसे बेगार ली जाती हैं,

(*) कुछ कम दो बीघे का एक एकर होता है॥

यदि बेगार मौकूफ़ हो खुशी से दूना महसूल देने को राज़ी हैं, पस सोचना चाहिये कि बेगार से कितना नुक़सान था, सिवाय इसके कश्मीर के इलाक़े में आधी आधी बटाई होती थी, और अकबर कारीगरों की बनाई चीज़ों पर पांच रुपया सैकड़ा लेता था, और जो महसूल कि साबिक़ से जारी थे और अकबर ने मौकूफ़ किये उनकी तफ़सील नीचे लिखी जाती है, भला इन महसूलों के बोझ से क्योंकर न रऐयत पिसती होवेगी, जहांगीर और शाहजहां तो अकबर की राह पर चले थे, पर औरंगज़ेब के वक़्त से फिर बहुतेरे महसूल जारी होगये ॥

तफ़सील महसूलों की जो अकबर ने मौकूफ़ किये ॥

१ जिज़या	११ फ़ोतहदारी
२ परवानराहदारी	१२ वजह किराया
३ मीरबहरी	१३ ख़रीतिया
४ कर हिंदू यात्रियों से	१४ सर्राफ़ी
५ गांव शुमारी	१५ हासिल बाज़ार
६ सरदरख़ती	१६ आबकारी
७ पेशकश	१७ नमक
८ पेशेवालों से	१८ चूना
९ दारोग़ानी	१९ मछए
१० तहसीलदारी	२० मकान की ख़रीद फ़रोख़्त
	२१ मवेशीकी ख़रीद फ़रोख़्त

तिजारत में फ़ाइदा इसीलिये नहीं होता कि हमारे मुल्क के आदमी जहाज़ पर नहीं चढ़ते, यदि ये जहाज़ों पर सवार होकर तिजारत

के लिये दूसरे मुल्कों में जावें निस्संदेह ये भी वही फ़ाइदा उठावें कि जो इनकी बदल फ़रंगी उठाते हैं (*)। रह गया चौथा उज़र सो उसका यह हाल है कि जो रुपया अंगरेज़ों को तनख्वाह और पिंशन में दिया जाता है, वह हम भी मानते हैं कि इस मुल्क को अवश्य घाटा पड़ता है, पर यदि हम से सर्कार सलाह पूछे तो हम यही कहेंगे कि जिन कामों पर अब हिन्दुस्तानी नौकर हैं उन पर भी अंगरेज़ मुक़र्रर कीजिये। सर्कारी आईन को इन्हीं हिन्दुस्तानियों ने बदनाम किया, मजिस्ट्रेट कलेक्टर से कोई नहीं दुख पाता, जो रोता है सो इन्हीं अमले पुलिस और सरिश्तेदारों के नाम को रोता है। कौन ऐसा बेवक़ूफ़ है जो इन थानेदारों को मजिस्ट्रेटी और सरिश्ते-दारों को कलेक्टरी मिलने की दुआ मांगे। हमारे मुल्क के आदमी अव्वल तो रिशवत लेना ऐब नहीं समझते, परम्परा से यह बात चली आई है, दूसरे हिंदू को काम मिला तो मुसल्मान को सताया, मुसल्मानों को इख्तियार हुआ तो हिंदुओं से खार निकाला, पस पहिले हिंदुस्तानियों को चाहिये कि अपने तईं उन कामों के लाइक़ बनावें, जिन के मिलने की उमेद रखते हैं। रुपये के रहने से राज्य का सुशासित होना अधिक बांछित है, जो प्रजा को चैन मिलेगा तो रुपया बहुत हो रहेगा, और जो मुल्क ही में बखेड़ा रहा तो फिर नादिरशाह सरीखे बरसों की इकट्ठा की हुई जमा पूंजी एकही दिन में झाड़ बुहार कर ले जायँगे। जो लोग हमारे सुख के प्रयोजन

(*) ऋग वेद की पहली संहिता के देखने से साफ़ साबित है कि आगे हिंदू लोग जहाज़ पर सवार होते थे और समुद्र में जाना ऐब नहीं समझते थे॥

इतना परिश्रम करते हैं, वह जो अपनी वाजिबी तनख्वाह ले जावें तो इसमें क्यों बुरा मानना चाहिये। बाज़े आदमी यह भी कहते हैं कि अंगरेज़ी अमल्दारी में दीवानी और फ़ौजदारी का बंदोबस्त अच्छा नहीं, उन्होंने शायद पुरानी तवारीखें नहीं देखीं, फ़ौजदारी के बाब में तो राफ़फ़िच साहिब जो सन् १५८३ में शाह इंगलिस्तान का खत अकबर के नाम लाये थे लिखते हैं कि बनारस और पटने के दरमियान इस तरह रास्ता लुटता था कि जैसे अरब लोग अपने मुल्क के जंगलों में डाका डालते हैं, बरन खुद अकबर का वज़ीर एक जगह में हिंदू फ़क़ीरों की बेवक़ूफ़ी दिखलाने के लिये लिखता है कि एक साल प्रयाग के मेले में साधु सन्तों के दो झुण्ड गंगा में पहिले नहाने के लिये तकरार कर रहे थे, बादशाह भी वहां मौजूद था, समझाया उन लोगोंने उसका समझाना न माना, झुंझला कर हुक्म दे दिया कि दोनों जी खोलके लड़ो, आप तमाशा देखता रहा, यहां तक कि बहुतेरे आदमी उन में से कट गये, वाह रे अकबर तेरा इंसाफ़। धन्य अंगरेज़ कि हरिद्वार के कुंभ के मेले में मक़दूर नहीं कि कोई मियान से तलवार निकाले, और दीवानी के वास्ते एक मोतबर तवारीखवाला लिखता है, कि एक रोज़ किसी लड़के ने शाहजहां के पास नालिश की, कि मेरी मा के पास तीन लाख रुपया है, और मुझ को कुछ नहीं देती, बादशाह ने उसकी बुढ़िया मा को बुलाकर हाल दरयाफ्त किया, उसने साफ़ कह दिया कि तीन लाख रुपया बेशक है, पर जब लड़का होशियार होगा दूंगी अभी खराब करेगा, बादशाह ने हुक्म दिया कि लाख रुपया लड़के को दे, और लाख रुपया अपने खानेको रख इस क़दर तुम दोनों के लिये काफ़ी है और बाक़ी लाख रुपया बादशाही खज़ाने में दाखिल

करदे। जब मुक़द्दमा फ़ैसल हो चुका और हुक्म काग़ज़ पर चढ़ गया बुढ़िया बहुत घबराई और चालाकी करके बादशाह से अरज़ की कि करामात लड़के को तो लाख रुपये वाजबी दिलवाया, मेरा पति उसका बाप था, पर आप का मेरा पति कौन होता था जो बराबर का तरका लेते हैं इतनी बात मिहरबानी करके बतला दीजिये कि जिस में आगे को इस रिश्तेदारी की खबर रहे। बादशाह अपने मन में लज्जित हुआ और हंसके उसका रुपया उलटा दिलवा दिया। तवारीखवाले ने तो यह बात शाहजहां की तारीफ़ में लिखी है कि एक एक बुढ़िया उस तक पहुंचकर अपने दिलकी कह सकती थी पर इस बहानेसे बादशाहकी नीयत और अदालतका आईन बखूबीप्रकट होगया अब तकभी गुजरातकी तरफ़ हिन्दुस्तानी अमलदारियों में यह दस्तूर जारी रहाहै कि जब किसी को किसी से रुपया वसूल करने होता तो भाटोंको जिनका वहां यही काम है कुछ देकर उसके घर धरना बिठलाता, और उस बेचारे के पास उस वक्त देने को न होता तो बहुत फ़ज़ीहत करता, यहां तक कि वे ब्राह्मण अपना लहू उसके दरवाजे पर छिड़कते, बरन कई बार ऐसा हुआ है कि अपने घर से किसी बूढ़े या बुढ़िया को लाकर उसके दरवाज़े चिता पर बिठला कर जला दिया है। जो वहां अदालत अच्छी होती तो यह नौबत क्यों पहुंचती। हम यह बात कुछ अंगरेजों की खुशामद या उनकी झूठी तारीफ़ की राह से नहीं लिखते कि जैसा अकसर ग्रंथकारों ने अपनी पुस्तकों के बीच श्लोक कवित्त शैर और क़सीदों में उन्हें सूर्य से अधिक तेजस्वी और आकाश से अधिक ऊंचा इत्यादि बढ़ावा दिया है, हमने तो केवल अगले राजा और बादशाहों का जो कुछ हाल पुरानी किताबों में देखा था लोगों के ज्ञानवृद्धि के कारन

इस जगह में दर्ज कर दिया, यदि किसी को उसमें संदेह हो पुरानी तवारीखों से मिलान कर ले ॥

यह भी जान लेना चाहिये कि सन् १८५८ में श्रीमती महारानी इङ्गलेंडईश्वरी क्वीन विक्टोरिया ने इस मुल्क का इंतिज़ाम कम्पनी से लेकर अपने एक वज़ीर के सपुर्द कर दिया, और उसकी मदद के वास्ते बारह आदमियों की एक कौंसल भी मुक़र्रर कर दी, यह वज़ीर सेक्रिटरी-अव-स्टेटफ़ार-इंडिया कहलाताहै, और उस कौंसल का नाम कौंसल अव-इंडिया कहा जाताहै। कम्पनी को अब सिवाय उस रुपये का जो इस मुल्कमें लगाया था सूद लेनेके और कुछ भी इस मुल्क से इलाका न रहा, बंदोबस्त और इंतिज़ाम बिलकुल वज़ीर के इख़्तियार में आगया वही सब साहिब लोगों को इस मुल्क के उहदों पर मुक़र्रर करके वहां से भेजता है, और यहां गवर्नर जेनरल को कौंसल के साथ एक राय होकर मुल्क के बन्दोबस्त और इंतिज़ाम का बिलकुल इख़्तियार दे रखाहै। गवर्नर जेनरल से नीचे मंदराज और बंबई के गवर्नर अपनी अपनी कौंसलों सहित और आगरे और पंजाब और बंगाले के लेफ़्टिनेंट गवर्नर मुक़र्रर हैं, और फिर सिवाय पंजाबके उनचारों गवर्नरों के नीचे चार सदर दीवानी और सदर निज़ामत अदालत और चारही बोर्ड-अव-रवन्यू और फिर उनके ताबेज़िले ज़िलेमें कमिश्नर जज मजिस्ट्रेट कलेक्टर इत्यादि अपने अपने कामपर नियुक्त हैं। पंजाबमें सदरके बदल जूडीशल कमिश्नर और बोर्डकी एवज़ फ़िनांशल कमिश्नर मुक़र्रर हैं, और कमिश्नर के नीचे ज़िले के हाकिम डिपुटी कमिश्नर कहलाते हैं। सिवाय इस के कलकत्ते बंबई और मंदराज में उन तीनों शहर के दीवानी फ़ौजदारी के मुक़द्दमे और जो नालिशें कि असली अंगरेजों पर दाइर हों सुन्ने के वास्ते

एक एक सुप्रीमकोर्ट की कचहरी भी बादशाहकी तरफ़से मुक़र्रर है, और उस में तीन तीन जज बैठते हैं। फ़ौज के सेनापति अर्थात् कमांडरिंचीफ़ साहिब इंगलिस्तान से मुक़र्रर होकर आते हैं। कलकत्ता मंदराज और बंबई तीनों हातों में तीन कमांडरिंचीफ़ रहते हैं, पर कलकत्ते वाले का हुक्म दोनों पर ग़ालिब है।

सन् १८५३ में सर्कारी फ़ौज सब मिलाकर इस मुल्क में प्राय अढ़ाई लाख हिन्दुस्तानी और पचास हज़ार गोरे थे, और बत्तीस हज़ार सिपाही कांटिंजंट की फ़ौज में भरती थे, कांटिंजंट वह है जिसका ख़र्च हिन्दुस्तानी रईसों के यहां से मिलता है और वे उनको हिफ़ाज़त के लिये उन्हों के इलाक़ों में रहते हैं, लेकिन अब गोरे बहुत बढ़ गए, अस्सी हज़ार से कम नहीं हैं, और उनकी एवज़ में हिंदुस्तानी सिपाह घट गई, बरन ऐसी तजवीज़ हो रही है कि यह भी अस्सी हज़ार रहे॥

आमदनी इस मुल्क की प्राय तीस करोड़ रुपया (१) सालाना सर्कारी ख़ज़ाने में आता है, और अनुमान नब्बे करोड़ रुपया सर्कार को लोगों का देना है कि जिस के वास्ते सर्कार ने प्रामिसरी नोट अर्थात् तमस्सुक लिख दिये हैं, और साढ़े पांच रुपये से साढ़े तीन रुपये सैकड़े तक सालाने के हिसाब से छठे महीने सूद दिया करती है। कम्पनी इस मुल्क की आमदनी से केवल उतने रुपये का वाजिबी सूद ले लेती है, कि जो उसने पहले ही पहल इस मुल्क में अपनी गिरह से लगाया था, उस्से सिवाय उसे एक कौड़ी भी लेने का हुक्म नहीं, और न बादशाह इस में से एक कौड़ी लेता है,

(१) सन् १८६० में सैंतीस करोड़ होगया।

यह सारा रूपया इसी मुल्क के कामों में ख़र्च होता है (२)

	आमदनी	ख़र्च
बंगाला	११४४७१८४५	१२९३८११३७
आगरा व पंजाब	७६६५१०००	३१८२५३००
मंदराज	५२६२२८२०	४९७६८६६०
बंबई	४८५३६८६०	५२२००१६४
इंगलिस्तान		२४१५७८५४
	२९२२८२५२५	२८७३३३११५

और तीसरी जून सन् १८५२ को जो इंगलिस्तान से गवर्नर जेनरल बहादुर के नाम चिट्ठी आई थी उस्से सन् १८५०-५१ की आमदनी और ख़र्च का व्यौरा लिखते हैं।

आमदनी		ख़र्च	
धरती बाबत	१४२८२९६८०	तहसील बाबत	२००१३०६६
महसूल	१९७४५५६०	अदालत	१९५८२६०४
नमक	१७२४४९८०	महसूल	२०२७७३९
अफ़यून १८५१-२	२६८७८१८४	किश्ती व जहाज़	४७१३४७३
साइर व आबकारी	१०४९९८४०	फ़ौज	१००९५६०४०

(२) सोलहवीं दिसम्बर सन् १८५२ को जो गवर्नर जेनरल बहादुर ने बाबत सन् १८५२-५३ अर्थात् शुरू मई सन् १८५२ से आख़िर अप्रैल सन् १८५३ तक एक साल की आमदनी और ख़र्च का तख़मीना बांधकर मंज़ूरी के वास्ते इंगलिस्तान को रिपोर्ट भेजा है उसका खुलासा नीचे लिखा जाता है।

आमदनी		ख़र्च	
स्टाम्प डाक कर टकसालव तमाकू	१५७१०९८३	सूदतमस्सुकों का	२२२३८९१८
लाहौर सिंध ब्रह्मा व टापू	१९१०००००	सूद इंगलिस्तानमें	४७४५६८५
		पिंशन इमारत और विद्यालय	४४८५२०८८
		मुतफ़ार्रिक़ात ग़ैर मामूली	२५५४८८६२
	२५१४७९२२७		२५१९७९२२७

तीसवीं अपरैल सन् १८५३ को सर्कारी ख़ज़ानों में नक़द रोकड़ मौज़ूद है १५२३९६०४४

बंगालहाता ।

निदान मुजमल बयान तो हिंदुस्तान का हो चुका, अब उसके जुदा जुदा ज़िलों का कुछ बखान करते हैं । जानना चाहिये कि इस मुल्क के तीन खंड गिने जाते हैं, जितना हिमालय के पहाड़ों में बसाहै वह तो उत्तराखंड कहलाता है, और जो नर्मदा और महानदी से दक्षिण है वह दक्षिणात्य अर्थात् दक्षिण देश अथवा दखन कहा जाता है, इन दोनों के बीच आर्यावर्त है उसी को पुण्य भूमि भी कहते हैं । हिन्दुस्तान का दक्षिण भाग अंतरीप है, क्योंकि वह पूर्व पश्चिम और दक्षिण तीनों तरफ़ समुद्र से घिरा है । मुसल्मान बादशाहों ने अपनी बादशाहत में इस मुल्क को बाइस सूबों में विभाग किया था, परन्तु उन में से काबुल क़ंदहार और ग़ज़नी तो इस विलायत से बाहर हैं , और दक्षिण देश के कितने ही ज़िले उनके

दखल में न रहने के कारन उन सूबोंमें गिने ही नहीं गए थे, सिवाय इस के उन सूबों की हदें अब ऐसी बदल गई हैं कि कुछ तो एक के पास हैं और कुछ दूसरे के हाथ चले गए, इस लिये हम उन सूबों का खयाल छोड़कर और इस मुल्क को अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी अमलदारी में भाग देकर उन के एक एक जिलों का उस क्रम से बयान करते हैं कि जो अब बर्ते जाते हैं। अंगरेज़ी अमलदारी में तीन हाते हैं, बंगाल हाता, बंबई हाता, और मंदराज हाता। बंगाल हाते में कर्मनाशा नदी तक के ज़िले तो बंगाले के लेफ़्टिनेंट गवर्नर के तहत में हैं, फिर जमना तक पश्चिमोत्तर देशाधिकारी लेफ़्टिनेंटगवर्नर के ताबे, जमना के पार उत्तर में लाहौर के लेफ़्टिनेंट गवर्नर का इख़्तियार है, और गंगा पार अवध के इलाक़े में वहां के चीफ़ कमिश्नर का॥

पश्चिमोत्तर देशकी लेफ़्टिनेंट गवर्नरी॥

पश्चिमोत्तर देशाधिकारी लेफ़्टिनेंट गवर्नर के तहत के जो ज़िले हैं उन में--१--इलाहाबाद सदर मुक़ाम (१) इलाहाबाद जिस का असली नाम प्रयाग है २५ अंश २७ कला उत्तर अक्षांस और ८१ अंश ५० कला पूर्व देशांतर में ७२००० आदमियों की बस्ती गंगा और जमुना के बीच जहां उन दोनों का संगम हुआ

---

(१) ज़िले का सदर मुक़ाम उसको कहते हैं जहां हाकिम रहे और कचहरी हो॥

हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। वह बादशाही ज़माने में इसी नाम के सूबे की राजधानी था अब पश्चिमोत्तर देशाधिकारी लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की राजधानी है। गंगा और जमना दोनों बड़ी नदियों के संगम होने से और तीसरी सरस्वती का संगम भी जो आंखों से दिखलाई नहीं देती पर शास्त्र में इसी जगह लिखे रहने से उसको त्रिवेणी भी कहते हैं, और सब तीर्थों का राजा मानते हैं। मकर की संक्रांति को बड़ा भारी मेला होता है, लाखों यात्री आते हैं। क़िला बहुत मज़बूत है, एक तरफ़ उसके जमना और दूसरी तरफ़ गंगा मानो उसकी खाई होगई है। सर्कार की तरफ़ से उसकी बड़ी तैयारी रहती है, और मेगज़ीन भी उसमें रक्खा गया है इस क़िले के अंदर एक तलघरे में बड़के दरख्त की जड़ है, हिंदू उसे अक्षय-बट कहते, और बहुत मानते हैं। तवारीखों से ऐसा मालूम होता है कि आगे गंगा जमना का संगम ठीक उस बड़के नीचे था, और जो लोग त्रिवेणी में डूबकर मरना चाहते थे वे उसी बड़ पर चढ़कर कूदते थे, शायद किसी बादशाह ने इस बात के बंद करने के लिये उसे कटवाडाला, और समय पाकर दरिया भी वहां से हट गया। उसी क़िले में ४२ फ़ुट ऊंची एक पत्थर की लाट अर्थात् शिला स्तम्भ जिसे वहां के ब्राह्मण बहुधा भीमसेन का सोंटा कहते हैं दो हज़ार बरस से अधिक पुरानी है, उस पर मगध देश के महाधार्मिक राजा महाराज प्रियदर्शी अर्थात् अशोक का एक अनुशासन अर्थात् हुक्मनामा पाली भाषा में जो मगधी से मिलती है पुराने पाली अक्षरों के दरमियान खुदा हुआ है। इस से अधिक पुरानी लिपि इस भारतवर्ष में और कोई नहीं। जेम्स प्रिंसिप साहिब इन अक्षरों को पढ़कर उनकी एक वर्णमाला बना गए हैं, अब उस वर्णमाला की

सहाय से जो कोई चाहे इस प्रकार के अक्षर पढ़ सकता है। निदान उस लाटपर इन पाली हर्फ़ों में उस समय के राजा अशोकका हुक्म यह खुदा है, कि मैंने अहिंसा को परम धर्म माना और इसी धर्मको अंगीकार किया, मेरी प्रजा भी सब ऐसाही करे, और फिर किसी पशुको न वधे, दया दान सत्य शौच का पालन करे, और चण्डत्व नैष्ठुर्य क्रोध मान ईर्ष्यादि से दूर रहे। पुराणों में इस अशोक को महा-राज चंद्रगुप्त का पोता कहा है, और जैन शास्त्र में बौध पुस्तकोंकी तरह उसकी बड़ी प्रशंसा लिखी (१) है। वह सन् ईसवी से कुछ न्यूनाधिक अढ़ाई सौ बरस पहिले राजसिंहासन पर बैठाथा। इस तरहके शि-लास्तम्भ दिल्ली इत्यादि और भी कई स्थानों में हैं, और उन पर भी यही धर्मलिपि इसी राजा की आज्ञा से इन्हीं अक्षर और भाषा में खुदी है। फ़ारसी इत्यादि अक्षर जो उसपर हैं वह पीछे से खोदे गये हैं। सराय इलाहाबाद की पक्की और बहुत बड़ी है, और उसी से लगा हुआ सुलतान खुसरो का मक़बरा बना है—२—मिरज़ापुर इलाहाबाद से अग्निकोन की तरफ़। यह ज़िला बहुत सा बिंध्य के पहाड़ों से आच्छादित है। सदरमुक़ाम मिरज़ापुर ७५००० आदमियों की बस्ती जो इस समय बड़े बेवपार और तिजारत की जगह है इलाहाबाद से ४५ मील पूर्व अग्निकोन को झुकता गंगाके दहने किनारे (२)

---

(१) बौध और जैनियों की पुस्तक मिलाने से और पुराने मंदिर और मूर्त्ति के देखने से इस बात में कुछ भी संदेह बाक़ी नहीं रहता कि किसी समय में यह दोनों मत एक थे थोड़े दिनों से भेद पड़ा है।

(२) जिधर नदी बहती हो उधर उसका मुंह मानकर दहने और

पाली अक्षरों की वर्णमाला

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व

ह स अ आ इ उ ऊ ए ऐ ओ मा गि घो च कू द धै मौ स्य

पर बसा है मिरज़ापुर से तीन कोस पर एक झरना बीस गज़ ऊंचे पहाड़ से गिरता है बरसात में वह जगह सैर की है, और कोस दो एक के तफ़ावत पर जहां विंध्याचल गंगा के समीप आ गया है पहाड़ के नीचे गंगा के निकट बिंध्यबासिनी देवी का मंदिर है। नवरात्रि में बड़ा मेला होता है। क़िला चर्नार का, जिसका शुद्ध नाम चरणाद्रि है, मिरज़ापुर से १२ कोस पूर्व गंगा के तट कई सौ फुट ऊंचे एक पहाड़ के टुकड़े पर बहुत मज़बूत बना है। हिंदू इस क़िले को विक्रम के भाई राजा भर्तृहरि का बनाया कहते हैं, बरन अकसर नादान निश्चय रखते हैं कि भर्तृहरि अब तक उस में बैठा है। एक तहख़ाना अंधेरा जिसका मुंह इतना छोटा है कि आदमी मुशकिल से अंदर जासके हिंदुस्तानी अमल्दारी में उस क़िले का जेलख़ाना था कितने आदमी उस में घुटकर मरे होंगे यह परमेश्वर जाने पर अब भी उसके देखने से रोंघटे खड़े होते हैं, न मालूम कैसा दिल था उन लोगों का जो इस ढबसे तड़फ़ा तड़फ़ा कर आदमियों की जान लेतेथे! चर्नार से तीन मील पर शेख़क़ासिम सुलैमानी का मक़बरा भी विशेष करके उसका दरवाज़ा और गिर्द की जालियां देखने लाइक़ हैं—३—बनारस मिरज़ापुर के ईशान कोन, यह ज़िला बहुतही आबाद है। शहर बनारस जिसे मुसल्मान मुहम्मदाबाद और हिंदू काशी और बाराणसी भी

बांयें किनारों का भेद विचार लेना चाहिये जैसे नर्मदा पूर्वसे पश्चिम को बहती है तो दक्षिण के देश उसके बांयें किनारे पर और उत्तर के देश दहने किनारे पर पड़ेंगे और महानदी पश्चिम से पूर्वको बहती है तो दक्षिण के देश उस के दहने किनारे पर और उत्तर के देश बांयें किनारे पर पड़ेंगे।

कहते हैं, क्योंकि बरणा और असी दो नदियों के बीच इलाहाबाद से ७० मील पूर्व ऐन गंगा के बाएं किनारे बसी है, बहुत आबाद दौलत की इफ़रात और हिंदुओंका बड़ा तीर्थ स्थान है। १८१००० उस में आदमी बसते हैं। गलियां बहुत तंग और मकान बहुत ऊंचे, ऐसा कि छ सात मरातिब तक, गर्मियों में चलने का बड़ा आराम छतरी दर्कार नहीं, छांव छांव में सारे शहर का चक्कर दे आइये। घाट गंगाके तीर बहुत संगीन और सुहावने बने हैं। बिंदुमाधव का मंदिर तोड़कर जो औरंगज़ेब ने मस्जिद बनाई है उसके दोनों मीनार मस्जिद की छत से १५० फुट और गंगातीर से अनुमान २१० फुट ऊंचे हैं। ऊपर जाने से सारा शहर और दूर दूर तक का गिर्द नवाह गंगाके दोनों तरफ़ दिखलाई देता है। उनपर चढ़ने के लिये १३१ सीढ़ी लगी हैं। बिश्वेश्वरका मंदिर भी यहां उसी बादशाहने तोड़ा था, कहते हैं कि तब असली बिश्वेश्वर तो ज्ञानवापी के कूए में पड़े और जिनकी अब पूजा होती है वह उन की जगह पर नए बिठाए गए। मान मंदिर में राजा जयसिंह जयपुरवाले के बनवाये हुए चन्द्र सूर्य तारादिकों के देखने और ग्रहों के बेधने के लिये बहुत अच्छे यंत्र बने थे पर अब सब बेमरम्मत हैं। इन यंत्रों का तात्पर्य बिना ज्योतिष शास्त्र पढ़े समझ में नहीं आवेगा, इस कारन हमने विस्तार पूर्वक नहीं लिखा, इतना ही समझ लेना चाहिये कि ज्योतिष सम्बन्धी बेधशाला में ऐसे ऐसे यंत्र बने रहते हैं, कि जिन से विद्वान लोग सूर्य चन्द्र और तारादिकों के चलने फिरने का हाल मालूम करते हैं। संस्कृत विद्या का यह काशी मानों घर है, यहां के पण्डित सर्वत्र प्रसिद्ध हैं। तीर्थ के कारन फ़क़ीर बहुत रहते हैं। सांड़ गली गली घूमते हैं। रूप यहां अच्छा होता है, तिस में भी

बौधमत का श्लोक जो सारनाथ की धमेख में मिला था

७ ये धर्म्महेतु मभवाहेतुतेषां तथा गता ह्मवदत् तेषांचयो निरोध
एवंवादी महाश्रमणः ॥

बिहार के ज़िले में बहुतेरी प्राचीन बौध मूरतों पर यह श्लोक खुदा हुआ है, वरन राज गृह के प्रसिद्ध जैन मंदिर में भी जो बस्ती में है एक मूर्त्ति पर यही श्लोक खुदा है, और इसीकारण हम उसको प्राचीन बौधमती अनुमान करते हैं ॥

नागरियां तो इस नगर की अत्यंत ही सुन्दर हैं। सर्कार ने लड़कों के पढ़ने के लिये एक पाठशाला अंगरेज़ी डौल का यहां बहुत अच्छा बनवाया है, उस मकान के बनने में प्राय सवा लाख रुपया खर्च हुआ। नए आदमी के वास्ते काशी की सैर के दो समय हैं, एक तो नाव पर सवार होकर प्रातःकाल घाट ही घाट जाने का, कि जब सब लोग स्नान पूजा करते हैं, और दूसरा संध्या को मीनार पर से देखने का कि सारा शहर हथेली सा और सब मर्द औरत अपने घरों में काम करते हुए दिखाई देते हैं। बुढ़वा मंगल का मेला इस शहर में मशहूर है, और हक़ीक़त में देखने लाइक़ होता है, होली के पीछे जो मंगल आता है लोग शाम से किश्तियों पर जा बैठते हैं, और फिर बुध के दिन दो पहरको उतरते हैं, छ पहर मेला रहता है, बिलकुल दर्या किश्तियों से छा जाता है, और लोग किश्तियों को अपने अपने मक़दूर मुवाफ़िक़ रंग रंगाकर और उन में झाड़ फ़ानूस और तसवीरें लगाकर बहुत आरास्तः करते हैं, सैकड़ों किश्तियों पर नाच गाना होता है, और हलवाई और तंबोलियों की दूकानें भी कोड़ियों किश्ती पर चलती हैं, रोशनी भी होती है, और आतिश बाज़ियां भी छुटती हैं। शहर से डेढ़ कोस पर सारनाथ महादेव के पास बौधमतवालों के बनाए हुए कुछ मकान टूटे फूटे अब तक भी बाक़ी हैं, जिसे वहांवाले सारनाथ की धमेख कहते हैं और देखने में एक बहुत बड़ा ठोस गुम्बज़ औंधी हांडी की सूरत दिखलाई देता है पर इतना पुराना कि उसके पत्थर बुढ़िया के दांतों की तरह गिरते चले जाते हैं, हक़ीक़त में वह बौध लोगों का देहगोप अर्थात् उन के महापुरुषों से किसी की क़बर और पूजा की चीज़ है, साहब लोगों की तहक़ीक़ात से ऐसा मालूम होता है कि सन् ईसवीसे ५४३

बरस पहले शाक्य मुनिके मरने पर उस समय हर एक राजा ने जो बौधमती था यही चाहा कि उनकी लाश को अपने इलाक़े में उठा ले जावे, और सब के सब उसके वास्ते युद्ध करनेको उपस्थित हुए, तब उस के चेलों ने उसकी लाश जलाकर थोड़ी थोड़ी हड्डी और राख सबको बांटदी, और लड़ने से रोका। निदान राजाओं ने उस हड्डी राखको अपने अपने इलाक़े पर धरती में गाड़कर गुम्बज़ बना दिये और फिर उसके चेलों के मरने पर उनकी हड्डी राखके ऊपर भी इसी तरह के गुम्बज़ तैयार किये और उस सब की पूजा करने लगे। भिलसा मानिकयाला इत्यादि स्थानों में कई जगह अब भी ये गुम्बज़ मौजूद हैं, और बर्म्हा सिंहल तिब्बत चीन इत्यादि देशों के बौधमती लोग आज लों इन गुम्बज़ों की नक़ल धातु पत्थर अथवा मिट्टी की बनाकर चिता सम्बन्धी होने के कारण चैत्य के नाम से पूजते हैं, यहां भी पुराने मंदिर और खंडहरों में अकसर जगह ये चैत्य मिलते हैं। और धमेख की असल धर्ममृग मालूम होती है, क्योंकि बौध पुस्तकों में लिखा है कि काशी में मृग अर्थात् हिरनों को धर्मके लिये दाना मिलता था, शायद उसी के पास उन हिरनों का रमना था। अब यह गुम्बज़ अथवा धमेख टूट फूटकर बहुत जर्जर हो गया है, कुछ गिरगया है और कुछ गिरता जाता है, तिस पर भी अनुमान नब्बे फुट ऊंचा और तीन सौ फ़ुट के घेरे में है। जेमृस प्रिंसिप साहिब ने भेद लेने के लिये उसे एक तरफ़ से खुदवाया था, तब उस के अंदर से एक डिब्बे में हड्डी और राख और कुछ उस समय के प्रचलित सिक्के और तांबे के पत्र पर उसी समय के अक्षरों में बौध मतका एक श्लोक खुदा हुआ निकला था। जिन दिनों में बुद्धका मत सारे हिंदुस्तान में फैल रहा था, यहां के राजा भी उसी मत को मानते थे

और इस काशी को जो अब ब्राह्मणों का बड़ा तीर्थ है बौधका तीर्थ जानते थे । गंगाके पार राम नगर में महाराजै बनारस के रहने के महल और मकान सुहावने बने हैं, उसी के पास एक तालाब और मंदिर राजा चेतसिंह का बनाया यद्यपि अधबना रहगया है पर जितना है उसमें पत्थरकी पुतली इत्यादि चित्र बहुत, बारीकी के साथ बनाए हैं ।—४—जौनपुर बनारस के उत्तर सदर मुक़ाम जौनपुर इलाहाबाद से ६० मील ईशानकोन पूर्व को झुकता गोमती के बांएं किनारे पर बसा है। आबादी २७००० आदमियों की, फुलेल वहां का मशहूर है । क़िला पत्थर का बना है पुल गोमती पर १५ ताकवाला संगीन बहुत मज़बूत और आलीशान है, यद्यपि वह सैकड़ों बरस का पुराना होचुका है, और सन् १७७३ में उस पर इतना पानी आगया था, कि बार्कर साहिब के सिपाहियों की नावें उसके ऊपर होकर निकल गईं, तथापि अब तक कहीं से चल बिचल नहीं हुआ । अंगरेज़ भी उस के बनानेवाले कारीगरों की तारीफ़ करते हैं । सिवाय पुल और क़िले के यहां तीन मस्जिदें ऐसी बड़ी बड़ी संगीन बनी हैं कि यद्यपि अब निरीखंडहर होगई हैं तौभी किसी समय में कुछ दिन इस शहर के पायतख्त रहने की पक्की गवाही देती हैं । —५— आज़मगढ़ जौनपुर के ईशानकोन की तरफ़, इस का सदर मुक़ाम आज़मगढ़ इलाहाबाद से १३० मील ईशानकोन पूर्व को झुकता टोंस नदी के बांयें किनारे बसा है । आबादी उस में १३००० आदमी से ऊपर है ।—६—ग़ाजीपुर आज़मगढ़ के अग्निकोन की तरफ़ । गुलाब और गुलाब का इतर यहां बहुत बढ़िया बनता है और सब दिसावरों को जाता है।बारह रुपयेतक बोतल गुलाब की और पचासरुपये तोले तक का इतर अब भी तैयार होता है । बिशप हीबर साहिब जब वहां गये थे

तो दो लाख फूल का तोले भर इतर सौ रुपये को बिकता था । सदर मुक़ाम ग़ाज़ीपुर ३८००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ११५ मील पूर्व गंगा के बांयें तीर है । लार्ड कार्न वालिस की क़बर इसी जगह बनी है, उसके बनाने में लाख रुपया ख़र्च हुआ था ।-७- गोरखपुर आज़मगढ़ के उत्तर, गर्मी बहुत नहीं पड़ती परन्तु आब हवा कुछ अच्छी नहीं है । उत्तर तरफ़ नयपाल की तराई में बड़ा भारी जंगल है सदर मुक़ाम गोरखपुर ५४००० आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से १३० मील ईशानकोन रावती नदी के बांयें किनारे बसा है, उस में गोरखनाथ का मन्दिर है । ऊपर लिखे हुये छओं ज़िले बनारस की कमिश्नरी में गिने जाते हैं ।-८-बांदा इलाहाबाद के पश्चिम सदर मुक़ाम बांदा ४१००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ९० मील पश्चिम है । कालिंजर का क़िला बांदे से ४८ मील दक्षिण अढ़ाई कोस के घेरे का एक पहाड़ पर जो वहां के मैदान से अनुमान चार सौ गज़ ऊंचा होवेगा मज़बूत और बहुत मशहूर है, पर अब बे मरम्मत और टूटा फूटा पड़ा है । बांदे से ३६ मील अग्निकोन को चित्रकोट में हिन्दुओं का मन्दिर और तीर्थ है, नदी पहाड़ और जंगल उदासीन मनवालों को बहुत सुख देते हैं ।-९- फ़तहपुर इलाहाबाद से वायुकोन की तरफ़ । सदर मुक़ाम फ़तहपुर २०००० आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से ३० मील वायुकोन को बसा है ।-१०-कान्हपुर फ़तहपुर के वायुकोन । सदर मुक़ाम कान्हपुर जिस की आबादी लाख आदमियों से प्राय अठारह हज़ार ऊपर गिनी गई है इलाहाबाद से १२० मील वायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता गंगा के दहने किनारे पर बसा है । वहां सर्कारी फ़ौज की बड़ी छावनी है । कान्हपुर से नौ मील उत्तर पश्चिम को झुकता

हुआ गंगा के दहने किनारे बिठूर हिन्दुओं का तीर्थ है। ऊपर लिखे हुए तीनों ज़िले इलाहाबाद की कमिश्नरी में हैं।—११—इटावा कान्हपुर के पश्चिम। सदर मुक़ाम इटावा प्राय २३००० हज़ार आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से २०० मील वायुकोन पश्चिम को झुकता जमना के बांएं तीर बसा है।—१२—फ़र्रुख़ाबाद इटावे के ईशानकोन की तरफ़। सदर मुक़ाम फ़र्रुख़ाबाद १३२००० आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से २०० मील वायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता गंगा से डेढ़ कोस हटकर दहने किनारे बसा है। छावनी फ़तहगढ़ में ऐन गंगा के किनारे है। वहां एक क़िला भी कच्चा बना है डेरे तम्बू उस जगह में बहुत अच्छे बनते हैं। कन्नौज का पुराना शहर जिसे संस्कृत में कान्यकुब्ज कहते हैं फ़र्रुख़ाबाद से प्राय ४० मील अग्निकोन गंगा के इसी किनारे पर उजाड़ सा पड़ा है, यदि बस्ती के निशानों पर नज़र करो तो किसी समय में उसकी बस्ती का बिस्तार लंदन से भी अधिक मालूम पड़ता है। यह वही कन्नौज है जिस में बारह सौ बरस भी नहीं बीते कि तीस हज़ार तो केवल तंबोलियों की दुकान खुलती थी। इसी कन्नौज का राजा इस देश में मुसल्मानों के राज्य का कारण हुआ, कहते हैं कि जब वहां के राजा जयचंद राठौरने अपनी लड़की का स्वयंबर करने के लिये राजसूयज्ञ रचा, और पृथीराज दिल्लीवाला उस यज्ञ में न आया, तो जयचंद ने एक सोने का पृथीराज बना के दरवाज़े पर द्वारपाल की ठौर बैठा दिया, महाराज पृथीराज को इस बात के सुनने से बड़ा कोप आया, उसी दम अपने बीरों को ले उठ धाया, और जयचंद की बेटी को हर ले गया। इस लड़ाई में पृथीराज के अच्छे अच्छे आदमी मारे गए, और इसी सबब जब जयचंद ने इस लाग की

आग से शहाबुद्दीन मुहम्मदग़ोरी को हिंदुस्तान में बुलाया, तो आखिर को पृथीराज ने शिकस्त खाई और हिन्दुस्तान में मुसल्मानों का राज हो गया। यदि मुहम्मदग़ोरी के चढ़ाव के समय इन का आपस में बिगाड़ न रहता, और जयचंद पृथीराज को सहाय करता तो हिन्दुओं का राज कदाचित् फिर भी कुछ दिन ठहर जाता।-१३-मैनपुरी इटावे के उत्तर। सदर मुक़ाम मैनपुरी बसी हज़ार आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से २१० मील वायुकोन को बसा है।-१४- आगरा मैनपुरी के पश्चिम। बादशाही वक्त में उस के आसपास के जिले उसी नाम के सूबे में दाखिल थे। शहर आगरे का, जिसे सिकन्दरलोदी ने बसाकर बादलगढ़ नाम रखा था और फिर अकबर बादशाह के वक्त से जब वह हिन्दुस्तान की दरूस्सल्तनत हुआ अकबराबाद कहलाया, इलाहाबाद से २८५ मील वायुकोन जमना के दहने किनारे पर बसा है। आगे कीसी आबादी तो कहां पर फिर भी १२५००० आदमी उसमें बस्ते हैं हिन्दू इस जगह को परशुराम का जन्मस्थान कहते हैं। शाहजहां बादशाह की बेगम मुम्ताज़ महल का मक़बरा, जिसे लोग ताजगंज अथवा ताजबीबी का रौज़ा कहते हैं, इस शहर में एक निहायत उमदा मकान बना है। फ़रंगिस्तानवालों ने सारी दुनिया छान डाली, पर इस साथ की इमारत कहीं नहीं पाई, इसके देखने को यदि लोग रूम और चीन से भी पैदल दौड़ते हुए आवें, तो निश्चय है कि उसे आंख भरकर देखने ही में अपनी सारी मिहनत भर पावें। न उस में जाकर फिर उस में बाहर आने को जी चाहे, न उसे देखकर फिर उस पर से आंख उठाने को मन माने। दरवाज़े के अन्दर जाते ही उसको सीतल मंद सुगंध समीर से मन की कली मानो फूल सी खिल जाती है,

साम्हने बाग़ जिस में नहर और फव्वारे जारी सर्व के दरख़त दुतरफ़ा लगे हुए उन के बीचसे रौज़े का गुम्बज़ और उसके चारों कोने के चारों मीनार साम्हने देख पड़ते हैं, ऐसे ऊंचे कि मानों आस्मान से बातें करते हैं। इस गुम्बज़ का कलस अढ़ाई सौ फ़ुट से कम कदापि ऊंचा नहीं है, और व्यास अर्थात् चौड़ान उस गुम्बज़ की ७० फ़ुट है। वह सारा मकान संगमर्मर का बना है, और उस पर लाजवर्द अक़ीक़ सुलैमानी गोरी तामड़ा यशम बिलौर फ़ीरोज़ा इत्यादि सैकड़ों क़िस्म के क़ीमती पत्थर जड़कर ऐसे बेल बूटे फूल फल और जानवर बनाए हैं, कि मानो किसी चितेरे ने हाथीदांत पर अभी तसवीरें खींच दी है। तसवीरें भी कैसी, कि यह न मालूम हो कि तसवीरें खींची हैं। या सचमुच किसी ने बाग़ से फूल फल तोड़कर उस पर ला रखे हैं। बारीकी का यह हाल है, कि अठन्नी बराबर एक फूल में सत्तर टुकड़े पत्थर के, और फिर भी नाखुन घिसने से उस पर न अटके पत्तियों में हल्के भारी रंग का होना, रग रेशों का जुदा जुदा दिखलाई देना, यही मन में लाता है कि जो इस का बनानेवाला कारीगर यहां होता तो उसके हाथ चूमते, पर कहते हैं कि शाहजहां ने उसके हाथ कटवाडाले थे, जिस में फिर दूसरा मकान ऐसा न बना सके। जमना उसकी दीवार के तले बहती है, और उस तरफ़ उसकी दीवार ३००० गज़ लंबी है। कप्तान इजर्टन साहिब अपनी किताब में इस की लागत कुछ ऊपर तीन करोड़ सत्तरहलाख रुपया लिखते हैं। सर्कार ने इस की और सिकंदरे की मरम्मत के लिये सन् १८१४ में एक लाख रुपया ख़र्च किया था। शाहजहां भी अपनी बेगम की क़बर के पास इसी रौज़े के अन्दर गड़ा है। शहर से तीन कोस पर सिकंदरा जहां अकबर की क़बर है, और जमना पार एतमादुदौला का मक़बरा और

रामबाग़ भी देखने के योग्य स्थान हैं। क़िला जमना के किनारे लाल पत्थर का अकबर का बनवाया हुआ बहुत सुन्दर है, पर जहां उस समय में जयपुर और जोधपुर के राजाओं को भी बैठना कठिन था, खड़ेही रहते थे, वहां अब उल्लू और चमगीदड़ का बासा है। जहां मीयां तानसेन की तान छिड़ती थी, वहां अब मकड़ियां जाला तनती हैं। जहां तीन तीन गज़ लम्बी कपूरी बत्तियां सोने के बीस बीस सेर भारी शमादानों पर बलती थीं वहां अब कोई चिराग़ में कौड़ी भर तेल भी नहीं डालता। मोती मसजिद इस क़िले में निरे संगमर्मर की बहुत उमदा बनी है। सन् १८०३ में जब लार्डलेक ने मर्हठों से आगरा छीना तो वहां एक तोप छ सौ मन भारी हाथ लगी, मालूम नहीं कि किस समय की बनी थी, लार्डलेक ने चाहा कि कलकत्ते भेजें, पर नाव का तख्ता टूट जाने के सबब जमना में डूब गई। इसी ज़िले में आगरे से नौ कोस पर फ़तहपुर सीकरी में शेख़ सलीम चिशती की दर्गाह है, और अकबर के बनवाये बहुत से मकान उमदा उमदा बने हैं, पर अब सब बे मरम्मत हैं, दर्गाह देखने लाइक़ है। राफ़फ़िच साहिब जो अकबर के समय में आये थे फ़तेहपुर की शान को आगरे से भी बढ़कर लिखते हैं।—१५-मथुरा आगरे के वायुकोन को। शास्त्र में इसी ज़िले का नाम सूरसेन लिखा है। शहर मथुरा का ६५००० आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से २९० मील वायुकोन पश्चिम को झुकता जमना के दहने किनारे बसा है। कृष्ण का जन्मस्थान और इसीलिये तीर्थ की जगह है। पारखजी का मंदिर यहां प्रसिद्ध है। क़िले में राजा जयसिंहने ग्रह नक्षत्रादिकों के बेधने के लिये कुछ यंत्र बनवाये थे, पर अब वह सब टूट फूट गए, क़िले का भी केवल नाम ही रह गया है। पुराने मंदिर तो इस शहर के सन् १०१७ में

महमूदग़ज़नवी ने तोड़े थे, पर पीछे से एक मन्दिर छत्तीस लाख रुपया लगा के राजा बीरसिंहदेव उर्छावाले ने बनवाया था, सो औरंगजेब ने उसे तुड़वाकर उसके मसाले से उसी जगह मस्जिद बनवा दी। महमूद ग़ज़नवी ने यहां से सौ मूरतें चांदी की और पांचमूरतें सोने की लूटी थीं, और इस शहर की तारीफ़ में एक ख़त के दरमियान ग़ज़नी के क़िलेदार को यों लिखा था, कि "इस साथ का शहर दो सौ बरस की मिहनत में भी दूसरा तैयार होना कठिन है, हज़ारों इमारतें जिन में बहुतेरी संगमर्मर की बनी हैं मुसल्मानों के मत की तरह मज़बूत हैं, और मन्दिरों की तो गिनती भी नहीं हो सकती" मथुरा से पांच मील उत्तर जमना के दहने किनारे वृन्दावन कृष्ण के रास बिलास की जगह बहुत रम्य और सुहावनी है। कुंज और मन्दिर बहुत मनोहर बने हैं। बन्दर और लंगूर और मयूर वृक्षों की घनी घनी छांव में सदा कलोले करते रहते हैं। ऊपर लिखे हुये पांचों ज़िले आगरे की कमिश्नरी में हैं।-१६-बदाऊं फ़र्रुखाबाद के वायुकोन को गंगा पार। सदर मुक़ाम बदाऊं २७००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से २५०मील पर वायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता हुआ है।-१७-शाहजहांपुर बदाऊं के पूर्व। सदर मुक़ाम शाहजहांपुर कुछ ऊपर ७४००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से २१० मील वायुकोन उत्तर को झुकता गर्रा नदी के बांएं किनारे बसा है। -१८- बरेली शाहजहांपुर के उत्तर। सदर मुक़ाम बरेली १११००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से २६५ मील वायुकोन उत्तर को झुकता हुआ और संकरा दोनों नदियों के संगम पर बसा है। मेज़ कुरसी कौंच संदूक़ इत्यादि काठ के सियाह रोग़नी वहां बहुत अच्छे बनते हैं, और दूर दूर तक जाते हैं। रुहेले सिपाही इस ज़िले में बहुत रहते हैं, पर अब

अंगरेज़ी अमल्दारी होने से दंगा फ़साद और लूट मार उन लोगोंने छोड़ दिया, बहुतेरे हल जोतते हैं, और बहुतेरों ने परदेस में नौकरियां करलीं। बरेली से ३० मील ईशान कोन को पीलीभीत २५००० आदमी की बस्ती गर्रा नदी के बांए किनारे है, चांवल वहां अच्छे होते हैं। —१९—मुरादाबाद बरेली के वायुकोन। उत्तर भाग में पहाड़ और जंगल हैं। ऊख इस ज़िले में बहुत होती है। सदर मुक़ाम मुरादाबाद कुछ कम ५७००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३०० मील वायुकोन उत्तर को झुकता रामगंगा के दहने किनारे बसा है। वहां से मंज़िल एक पर दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता संभल है, जहां हिंदू लोग कलि के अंत में कलंकी अवतार होने का निश्चय रखते हैं। —२०—बिजनौर मुरादाबाद के उत्तर सदर मुक़ाम बिजनौर ११००० आदमियों की बस्ती इलाहाबाद से ३७५ मील वायुकोन ज़रा उत्तर की तरफ़ झुकता हुआ है। ये ऊपर लिखे हुए पांचों ज़िले रुहेलखण्ड की कमिश्नरी में गिने जाते हैं। —२१—अलीगढ़ मुरादाबाद के नैर्ऋतकोन को। सदर मुक़ाम कोयल ५५००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से २८० मील वायुकोन को है, और उससे कोस भर पर अलीगढ़ का क़िला है। —२२—बलंदशहर अलीगढ़ के उत्तर सदर मुक़ाम बलंदशहर १५००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३१५ मील वायुकोन काली नदी के दहने किनारे है। —२३—मेरट बलंदशहर के उत्तर सदर मुक़ाम मेरट ४०००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३५५ मील वायुकोन को है और वहां सरकारी फ़ौज की बहुतबड़ी छावनी है। वह स्थान जहां किसी समय में हस्तिनापुर बस्ता था मेरट से २५ मील ईशानकोन की तरफ़ गंगा के दहने तट से निकट है

अब वहां केवल एक मंदिर दिखलाई देता है और बाक़ी हर तरफ़ दीमकों की बांबियां हैं। मेरट से एक मंज़िल वायुकोन को सरधने में समरू की बेगम का बनाया गिरजाघर देखने लाइक़ है। उस में पच्चीकारी के कामकी संगमर्मर की बेदी बनाई है। —२४—मुज़फ़र नगर मेरट के उत्तर। सदर मुक़ाम मुज़फ़रनगर नौ हज़ार आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३७५ मील वायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता है। —२५—सहारनपुर मुज़फ़र नगर के उत्तर। ऊख बहुत होती है सदर मुक़ाम सहारनपुर ३७००० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ४१० मील वायुकोन ज़रा उत्तर को झुकता हुआ है। अलीमर्दाखांवाली जमना की नहर उसके बीच से जाती है। सहारनपुर से पूर्व अग्नि कोन को झुकता हुआ रुरकी एक मुक़ाम है। वहां गंगा की नहर लाने के लिये सलानी नदी पर जो अंगरेज़ों ने पुल बांधा है देखने योग्य है। वह नदी नहर के रस्ते में थी और उसके किनारे नहर के पानी से नीचे पड़ते थे इन्होंने क्या हिक्मत की है कि जहांतक धरती नीची थी वहां तक नहर के बराबर ऊंचा पक्का बंध बांधकर और सलानी के बहने के लिये उसके बीच में एक पुल रख कर उस बंध और पुल पर से नहर को निकाल दिया है, अर्थात् पुलके नीचे तो सलानी जारी और पुलके ऊपर से नहर चलती है वहां सरकार की तरफ़ से एक कालिज भी बहुत बड़ा बना है कि उसमें लड़के एंजिनिअरिंग अर्थात् इमारत का काम सीखते हैं। और खाने पहने और रहने को जगह भी सरकार से पाते हैं। ज्यों ज्यों काम सीखते जाते हैं उनकी तनख़्वाहें बढ़ती जाती हैं और जब पढ़ लिखकर तैयार होते हैं तो सड़क पुल नहर बंगले बारक इत्यादि बनाने के कामों पर मुक़र्रर होजाते हैं ये पांचों ज़िले मेरटकी कमिश्नरी में हैं

।-२६-देहरादून (†) सहारनपुर से उत्तर पहाड़ों के अंदर। सालके जंगल इस ज़िलें में बहुत हैं। लंधौर और मंसूरी टीबा जो समुद्रसे कुछ न्यूनाधिक छ हज़ार फुट ऊंचे होवेंगे साहिब लोगों के हवाखाने की जगह इसी ज़िले में हैं। गंगा और जमना वहां से दूरतक बहती हुई दिखलाई देती हैं, परंतु शिमला की तरह इन पहाड़ों पर बड़े बड़े ऊंचे पेड़ों के सुंदर और मनोहर जंगल नहीं हैं। सदर मुक़ाम देहरा इलाहाबाद से ४१५ मील वायुकोन उत्तर को झुकता हुआ है वहां सिखों का गुरुद्वारा है। वहां से छ मील उत्तर मंसूरी टीबे की जड़ में राजपुरा बसा है जो लोग हवा खाने को टीबे पर जाते हैं गाड़ी इत्यादि जो असबाब पहाड़ोंपर नहीं चढ़सकता इसी जगह छोड़ जाते हैं। -२७-कमाऊं गढ़वाल सहारन पुरसे ईशान कोनको हिमालय के पहाड़ों में चीन की हद तक। यह एक बे आइनी कमिश्नरी है। अक्सर नदियों का बालू धोने से सोना हाथ लगता है, पर बहुत थोड़ा। तांबे की खान है। बस्ती यहां खसियों की बहुत सूरत इन पहाड़ियों की कुछ कुछ तातारियों से मिलती है कमाऊं का असिस्टेंट सदर मुक़ाम अलमोरे में रहता है, वह ३५०० आदमी की बस्ती इलाहाबाद से ३५० मील उत्तर वायुकोन को झुकता हुआ समुद्र से कुछ ऊपर तिरपन सौ फुट ऊंचे पहाड़ पर बसा है। शहर के पश्चिम एक छोटा सा क़िला सरकार ने फ़ोर्ट माइरा नाम बनवाया है गढ़वालका असिस्टेंट अलमोरे से १०४ मील वायुकोन अलखनन्दा नदी के बाएं किनारे श्री नगर के पास पावरी में रहता है। अलमोरेसे २५ मील पूर्व अग्नि कोन को झुकती नयपाल की हद पर लोहू घाट की छावनी है।

(†)दून उसे कहते हैं जो दो पहाड़ों के बीच चौरस मैदान हो।

वहां से तीन मील पश्चिम एक पहाड़ पर फ़ोर्टहेस्टिंगज़ छोटा सा क़िला है, पर मज़बूत बना है। हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ बदरीनाथ अलमोरे से ८० मील उत्तर ज़रा वायुकोन को झुकता विष्णुगंगा के दहने किनारे समुद्र से दस हज़ार तीन सौ फ़ुट ऊंचा है। मन्दिर शिखरदार ४५ फ़ुट बलन्द, ऊपर तांबेकी छत सुनहरी कलस चढ़ा हुआ, मूर्त्ति नारायणकी गज़ भर ऊंची श्याम पाषाण की है। वहां गर्मियों में यात्रियों का मेला लगता है। जाड़े भर मन्दिर बर्फ़ के नीचे दबा रहता है। उस के पासही गर्म पानी का एक सोता है, जिस में गन्धक की गन्ध आती है। बदरीनाथ से सीधा पच्चीस मील लेकिन सड़क की राह प्राय १०० मील केदारनाथ का मन्दिर है, जहां एक काले पत्थर की पूजा होती है। जिनको हिमालय में गलना मंज़ूर होता है इसी जगह से बर्फ़ के पहाड़ों में चले जाते हैं। हिन्दू लोग इस तरह अपने तईं हलाक करने में बड़ा पुण्य समझते हैं। जिसे गलना मंज़ूर होता है पण्डा उसे एक तरफ़ को इशारा करके कह देता है कि यही स्वर्ग की राह है, निदान यह बेचारा पहाड़ के अन्दर उसी तरफ़ दौड़ता है, और जब नज़रों से निकल जाताहै तो उसे एक बर्फ़ के खाड में उतरना पड़ता है कि जहां से फिर उलटा नहीं लौट सकता क्योंकि बर्फ़ का ढाल कुढब है, उतर जाना सहज पर फिर चढ़ आना कठिन, निदान जब वह बर्फ़ की सर्दी से वहां ठिठुरकर मर जाता है, तो चील कव्वे उस पर गिरते हैं। अलमोरे के दक्षिण तीस मील की राह पर कोई एक मील लम्बी भीमताल की सुन्दर झील है इस्से दो मील पूर्व नौकुचिया ताल है। अलमोरे से २२ मील नैर्ऋत कोन दक्षिण को झुकता ५६०० फ़ुट समुद्र से ऊंचा नैनीताल साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है।

ताल के गिर्द घूमने में कुछ कम ज़ियादः दो घण्टा लगता है । चारों तरफ़ उसके पहाड़ों पर कोठी और बंगले बने हैं । ताल बड़ा गहरा और स्वच्छ जल से भरा हुआ बहुत रम्य और सुहावना मालूम देता है ।–२८–अजमेर यह ज़िला रजपुताने के बीच अर्बली पहाड़ से पूर्व है । दूसरे सर्कारी ज़िलों से किसी तरफ़ भी नहीं मिला, चारों तरफ़ जयपुर जोधपुर किशनगढ़ और उदयपुर की अमलदारियों से घिरा है यह भी एक बे आईनी कमिश्नरी है । बादशाही ज़माने में इस के आस पास के सब इलाक़े इसी नाम के सूबे में गिने जाते थे अब अंगरेज़ी दफ़्तरों में यह सूबा रजपुताने के नाम से लिखाजाता है क्योंकि उस गिर्दनवाह में रजपूत राजा बहुत हैं । सीसे की इस ज़िले में खान है । सदर मुक़ाम अजमेर इलाहाबाद से ४५० मील पश्चिम ज़रा वायुकोन को झुकता एक पहाड़ की जड़ में पक्की शहरपनाह के अन्दर बसा है । ८०० फ़ुट ऊंचे पहाड़ पर तारागढ़ का बे मरम्मत पुराना क़िला है । ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दर्गाह जिस की ज़ियारत को अकबर आगरे से नंगे पांव गया था इस शहर में बहुत मशहूर है । शहर के बाहर एक झील के किनारे जिस का घेरा ८ मील का होगा बादशाही बाग़ है । रजपुताने के अजण्ट के रहने की जगह यही अजमेर है । शहर से सात कोस पर नसीराबाद की छावनी एक वृक्ष रहित पथरीले मैदान में बनी है । जेनरल अक्टरलोनी साहिब को दिल्ली के बादशाह ने नसीरुद्दौला ख़िताब दियाथा इसी कारन उनके नामपर इस छावनी का नाम नसीराबाद रहा । दूसरी तरफ़ तीन कोस के फ़ासिले पर पुष्कर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है अनुमान आध कोस के घेरे में वह झील होवेगी किनारे पर घाट और मंदिर बने हैं झील में कमल

और मगर बहुत हैं यहां ब्रह्मा की पूजा होती है। -२९-सागर नर्मदा अथवा जब्बलपुर की बे आईनी कमिश्नरी नैर्ऋत कोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी से नर्मदा नदी के दोनों तरफ़ भूपाल और सेंधिया की अमल्दारी तक चला गया है। विंध्य के तटस्थ होने के कारन जंगल पहाड़ों से भरा हुआ है। कोयले की खान है सद्र मुक़ाम जब्बलपुर इलाहाबाद से २०० मील नैर्ऋतकोन को नर्मदा से कुछ दूर हटकर दहने किनारे पर बसा है। वहां सर्कार ने ठगों के लिये बड़ा बंदोबस्त बांधा है। जो ठग आगे अपना पेटपालने को आदमियों का गला घोंटते थे वे सब वहां शतरंजी कालीन बुनते हैं, और डेरे तंबू बनाते हैं। जो ठग गिरफ्तार होते हैं उसी जगह भेजे जाते हैं और सज़ा मुआफ़ होने के वादे पर अपने सारे साथियों को पकड़ा देते हैं। अब वहां इन ठगों का एक गांव बस गया है, और उसी जगह उनका आपस में शादी व्याह भी हुआ करता है। सर्कार उन से काम लेती है, और उन्हें खाने को देती है। साहिब कमिश्नर के नीचे कई डिपटी कमिश्नर मुक़र्रर हैं, वे आईनी ज़िले के मेजिस्ट्रेट कलेक्टरों की तरह अपने अपने हिस्से के इलाक़े में इस हिसाब से इन्तिज़ाम करते हैं, कि एक तो सागर में जो जब्बलपुर के वायुकोन को सौ मील पर बसा है। दूसरे सिउनी में जो जब्बलपुर के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता सौ मील पर बसा है। तीसरे बैतूल में जो जब्बलपुर के नैर्ऋत कोन १७० मील पर बसा है चौथे नरसिंहपुर में जो जब्बलपुर के पश्चिम नैर्ऋत कोन को झुकता ७० मील पर बसा है। पांचवें होशंगाबाद में जो जब्बलपुर के पश्चिम नैर्ऋत कोन को ज़रा झुकता १५० मील पर नर्मदा के बांये किनारे बसा है, वहां सर्कारी फ़ौज की छावनी है। छठे मंडले

में जो जब्बलपुर के दक्षिण ५६ मील पर बसा है और सातवें द-मोह में जो जब्बलपुर के वायुकोन उत्तर को झुकता ६० मील पर बसा है।—३०—झांसी की वे आईनी कमिश्नरी कानपुर के पश्चिम जमना पार। इस में चार जिले हैं पहले का सदर मुकाम हमीरपुर इलाहाबाद से ११० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता बेत्वा के बांएं किनारे जहां वह जमना से मिली है दूसरे का जालौन हमीर पुर के वायुकोन मिसरी कालपी की प्रसिद्ध है। वह १८००० आ-दमियों की बस्ती जमना के दहने किनारे हमीरपुर से एक मंजिल वायुकोन को बसा है। तीसरे का झांसी जालौन के नैर्ऋतकोन और चौथे का चन्दरी झांसी के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता च-न्देरी का कपड़ा किसी समय में बहुत प्रसिद्ध था, और उस में अबु-लफ़ज़ल अक्बर के समय १०००० मसजिद ३६० सरा और ३८४ बाज़ार लिखता है, लेकिन अब तो ऊजड़ सा पड़ा है॥

इति

अनुक्रमणिका

पहिला हिस्सा

इति

भूगोल हस्तामलक

OR

THE EARTH AS [A DROP OF] CLEAR WATER IN HAND
IN THREE VOLUMES.

तीन जिल्दों में

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत
नव्वाब लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार

बैकुण्ठबासी राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द (३) ने बनाया

BY

LATE RAJA SIVAPRASAD, C. S. I.

॥ मस्त ॥

बैठकर सैर मुल्क की करनी यह तमाशा किताब में देखा

VOLUME I.

पहली जिल्द

PART II.

—दूसरा हिस्सा

इलाहाबाद गवर्नमेंट के छापेख़ाने में छापा गयाथा

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपी
अक्टूबर सन् १८९८ ई० ॥

CONTENTS

OF THE

SECOND VOLUME.

विज्ञापन

जानना चाहिये कि यह भूगोल हस्तामलक सन् १८५१ या १८५२ ई० में लिखा गया था उस समय जो कुछ हालत कश्मीर की देखीगयी थी लिखने में आयी थी पर अब उस की हालत कुछ और ही सुनने में आती है महाराज गुलाबसिंह के बेटे महाराज रण-बीरसिंह बहादुर बड़े धर्मात्मा और अपनी प्रजा प्यारे हैं इनका यश सारे भारतवर्ष में छारहा है और इन्हों ने अपना सारा मन प्रजा पालन में तत्पर कर रक्खाहै अब हम कहसक्ते हैं कि कश्मीर स्वर्ग है और देवताओं के हाथ में है महाराज रणबीरसिंह इन्द्रकी समान शासन कररहे हैं ॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९०	३	"झगड़ती हैं" इस के आगे "कारीगर" तक	झगड़ती हैं । कारीगर
९३	१८ से	"यातें सरसन और॥१॥"	यातें सरस न और॥ १ ॥
९४	२३तक	इसके आगे "आमदनी उसकी" तक	आमदनी उसकी

शिवप्रसाद

दूसरे भाग का सूचीपत्र

भूगोल हस्तामलक
दूसरा भाग

बंगाले की डिपुटी गवर्नेरी

बंगाले के डिपुटी गवनर के तहत में जो जिले हैं उन में—१—चौबीस परगना हैं भागीरथी के पूर्व और सुन्दर बन के उत्तर। कहने में अबतक भी यह जिला चौबीस परगना कहलाता है, पर हक़ीक़त में उसके अंदर अब अठारही परगने गिने जाते हैं, छ दूसरे जिलों के साथ लग गए। उसका सदर मुक़ाम कलकत्ता इसी जिले में उत्तर की तरफ़ २२ अंश २३ कला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश २८ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से ५० फ़ुट ऊंचा और प्राय सौ मील दूर और इलाहाबाद से ४९८ मील अग्निकोन पूर्व को झुकता छ मील लंबा भागीरथी के बाऐं कनारे पर जिसे वहां दरयाय हुगली कहते हैं बसा है। अनुमान करते हैं कि कलकत्ता इस शहर का नाम काली घाट के सबब से जो वहां दरया कनारे देवी का एक मंदिर है रहाथा। अब यही शहर हिन्दुस्तान की राजधानी है। साबिक़ में उस शहर के पास दलदल झील और जंगलों की बहुतायत से आब हवा खराब थी, पर जब से सरकार ने पानी का निकास करके दलदल जमीनों को सुखवा दिया,

जंगल कट गये, और हर तरफ़ सफ़ाई रहने लगी तब से बहुत राह पर आती चली है। अब यह शहर बड़ी रौनक पर है। क्या शक्ति है परमेश्वर की जहां सौ बरस भी नहीं गुज़रे साठ सत्तर झोपड़ों की बस्ती थी, वहां अब तीन कोस लंबा शहर बसता है। शहर भी कैसा कि जहां बीस से ऊपर तो बड़े बड़े नामी बज़ार हैं कि जिन में सारी दुनियाकी चीज़ें मयस्सर और बसती जिसकी दो लाख तीस हज़ार आदमी से ऊपर गिनी जाती है। लाख आदमी से अधिक नित गिर्दनवाह और आस पास के गांवों से आया करते हैं। वहां सब विलायतों के आदमी नज़र पड़ जाते हैं। सुस्ती और काहिली का निशान कम दिखलाई देता है, जिसको देखिये अपने काम में मशगूल है बग्गी और गाड़ियां वहां इतनी दौड़ा करती हैं, कि बाज़े वक्त़ रसता न मिलने के सबब घड़ियों खड़ा रहना पड़ता है। सवारी वहां पालकी और घोड़े की गाड़ी जिस वक्त़ जिस जगह चाहिये, दो असरफ़ी रोज़ से दो आने रोज़ तक की घोड़े की गाड़ी, किराए पर मौजूद है। कोठियां वहां अंगरेज़ी डौल की दुमंज़िली तिमंज़िली बरन चौमंज़िली तक हज़ारों बनी हैं। बाग़ बाबुओं के ऐसे उमद: और सूथरे कि राजाओं का भी दिल उन की सैर को ललचाय। जहाज़ गंगा में सैकड़ों लगे हुए, जहां तक नज़र जावेगी मस्तूलही मस्तूल दिखलाई देवेंगे। शाम के वक्त़ जब हज़ारों साहिब मेमों के साथ गाड़ियों पर सवार होकर गंगा कनारे की सड़क पर हवा खाने को निकलते हैं अजब एक कैफ़ियत होती है। निदान यह शहर लाइक़ सैरके है। लंदन का नमूना है। क़िले की तय्यारी में जिसका नाम फ़ोर्ट विलियम है दो करोड़ से ऊपर ख़र्च हुआ है, और गवर्नर जेनरल के रहने का मकान भी बहुत आलीशान और सुंदर बनाहै। एक म्यूज़ियम

अर्थात् अजाइब घर उस शहर में ऐसाहै कि उसके अंदर तमाम एशियाकी अद्भुत और अनोखी चीजें भरी हैं। यदि नाममात्र भी उन चीजों का लिखें तो ऐसे ऐसे कई ग्रंथ बनजावें। धातु बनस्पति जीव विशेष कृत्रिम और स्वाभाविक जो पदार्थ जहां कहीं क्या जल क्या थल में अद्भुत मिला सब को इस घरमें ला रक्खा। फल फूल पेड़ोंकी टहनियां मरेहुए जीव जंतु और नए नए तरह के पक्षी कीट पतंग इत्यादि शीशों के अंदर ऐसे दवाके अरकों में रखे हैं, कि मानों वह तो अभी तोड़े गये और यह अभी हिलें चलें और बोलेंगे। अस्पताल कई एक बहुत बड़े बड़े बने हैं। विद्यालय इतने हैं कि जिन में हजारों लड़के सारी दुनियां के इल्म सीखते हैं। मेडिकल कालिज में लड़कों को डाक्टरी का इल्म सिखलाया जाताहै, और मुर्दों का पेट चीर चीर कर दिखलाया जाताहै। जब वे पक्के होते हैं तब डाक्टरी के कामपर मुकर्रर होजाते हैं। वहां इस कालिज में शीशोंके अंदर अर्कों के दर्मियान बड़ी बड़ी चमत्कारी चीज रखी हैं। कहीं दो धड़ एक सिर और कहीं दो सिर एक धड़ का लड़का, कहीं सारा बदन आदमी और मुंह जानवर का और कहीं सारा बदन जानवर और मुंह आदमी का। मा के गर्भ में बालकों की पहिले क्या सूरत रहती है और फिर दिनपर दिन क्योंकर बदलती जाती है, नौ दिनसे लेकर नौ महीने तक आंवलनाल समेत रखेहुए हैं। लड़कियों के पढ़नेके वास्ते भी इस्कूल बने हैं। अब वहां के अमीरों ने आपस में चंदाकरके एक इस्कूल ऐसा तय्यार कियाहै कि जिसमें सिवाय हिंदुओं के और किसी जात के लड़के न आनेपावें। टकसाल भी लाइक़ देखने के है, कैसी कैसी धूंएं की कलें उस में लगाई हैं। और कैसा उन कलों के बल-आपसे आप जल्द सिक्का तैयार होताहै। गनफ़ौंडरी में इसी तरह धूंएं

की कलों के ज़ोरसे तोपें ढलती और खराद पर चढ़ती हैं। जेनरल अक्टरलोनी के मानमेंट अर्थात् मीनार पर जो १६५ फुट ऊंचा है चढ़ने से सारा शहर मानों हथेलीपर दिखलाई देने लगताहै। चढ़ने के लिये उसके अंदर २१३ सीढ़ियां बनी हैं। सड़कें वहां की सब साफ़ और चौड़ी और रातको रोशन रहती हैं रोशनी का यहां भी लंदनकी तरह बाफ़से बंदोबस्त होगया है। (१) और छिड़काव के लिये नहरों में पानी लानेको गंगाके कनारे धूंएं का पम्प अर्थात् वह कल जिस्से पानी ऊपर उठता है बना दियाहै। लहर समुद्रकी गंगा में कलकत्ते तक पहुँचती है, उसीको ज्वार भाठा कहते हैं। जहाज भी कलकत्ते तक आते हैं। मांस अहारियों की बहुतायत से कव्वे चील और हड़गिल्ले वहां बहुत हैं। यह हड़गिल्ला पांचफुट ऊंचा होताहै और पर उसका फैलने से पंदरह फ़ुट तक नापागया है। कलकत्ते से आठ कोस उत्तर गंगा के बांएं कनारे बारकपूर की छावनी है। वहां भी गवर्नर जेनरल के रहने का एक उमदा मकान और बाग़ बना है। कलकत्ते से छ मील ईशानकोन को दमदमे में तोपखाना रहता है। यह भी मालूम रखना चाहिये कि शहर कलकत्ते का सुप्रिमकोर्ट के तहत में है, परगनों के लिये जज कलेक्टर इत्यादि जुदा मुक़र्रर हैं, और वे सब फ़ोर्ट विलियम के क़िले से कोस आध एक पर अलीपूर में कचहरी करते हैं -२-हौरा चौबीस परगने के पश्चिम। सदर मुक़ाम

(१) जिस तरह ख़ज़ाने से नलों की राह फ़व्वारों में पानी पहुँचा करता है, इसी तरह यह बाफ़ भी अपने ख़ज़ाने से नलों की राह जाबजा पहुँच जाती है, और जिस तरह फ़व्वारे के मुहँ से पानी निकला करता है उसी तरह इसके नलोंके मुहँ से इसकी ज्वाला निकलती है। मुफ़स्सल बयान इस बाफ़ के तैयार करने का और नलों में उसके बांटने का लंदन के बयान के साथ होगा यहां इतनाही रहेगा ॥

हौरा अथवा हवड़ा ठीक कलकत्ते के साम्हने गंगा पार बसा है। वहां बारूत बनाने की मेगज़ीन धूंएं के ज़ोर से चलते हुए आरे कल के कोल्हू इत्यादि, कई कारख़ाने हैं।–३–बारासत चौबीस परगने के उत्तर। सदर मुक़ाम बारासत कलकत्ते से १२ मील ईशानकोन की तरफ़ है।–४–नदिया बारासत के उत्तर। उसका सदर मुक़ाम किशन नगर कलकत्ते के उत्तर ५७ मील पर बसा है। शहर नादिया अथवा नवद्वीप गंगा के कनारे उस मुक़ाम पर है जहां उसकी दोनों धारा जलंघी और भागीरथी का संगम हुआ है, पर वह अब बर्दवान के जिले में गिना जाता है। बंगाले में वहां के पण्डित बहुत प्रसिद्ध हैं, विशेष करके नय्यायिक। इसी जिले में वायुकोन की तरफ़ भागीरथी के कनारे मुर्शिदाबाद के दक्षिण तीस मील पर पलासी का गांव है, जहाँ लार्ड क्लाइव ने सन् १७५७ में सिराजुद्दौला को शिकस्त दी थी।–५–जसर नदिया के पूर्व। आब हवा बहुत ख़राब। सुंदरबन इस ज़िले के दक्षिण भाग से बड़ा है। सदर मुक़ाम जसर अथवा मुरली कलकत्ते में ६२ मील ईशानकोन की तरफ़ है।–६–बाक़रगंज जसर के पूर्व। सन् १८०१ में इसका सदर मुक़ाम बाक़रगंज से उठकर बैरीसाल में आगया। वह कलकत्ते से १२५ मील ठीक पूर्व गंगा के एक टापूमें बसा है।–७–नावकोली बाक़रगंज के पूर्व। सदर मुक़ाम बलुआ कलकत्ते से १८० मील पूर्व ईशानकोन को झुकता मेघना के बाएं कनारे है।–८–फ़रीदपुर अथवा ढाका जलालपुर बाक़रगंज के के उत्तर। उसका सदर मुक़ाम फ़रीदपुर कलकत्ते से १२५ मील ईशानकोन की तरफ़। वहां से अढ़ाई कोस पर पद्मावहती है। इसी ज़िले में ढाके से चार कोस अग्निकोन की तरफ़ नरायनगंज में नमक का बहुत रोज़गार होता है।–९–ढाका ढाका जलालपुर के पूर्व ढाके

का शहर, जिसे जहांगीर नगर भी कहते हैं, कलकत्ते से १८० मील ईशानकोन की तरफ़ बूढ़ी गंगा के बांएं कनारे बसा है, बरसात के दिनों में जब पानी की बाढ़ आती है, तो हर तरफ़ उसके जल ही जल दिखलाई देता है। किसी समय में यह शहर बहुत आबाद और सूबे बंगाले की राजधानी था। अब तक भी उस के गिर्दनवाह में बहुतेरे खंडहर पड़े हैं और अनुमान ६०००० आदमी उस में बसते हैं। कहते हैं। कि शाइस्ताखां की सूबेदारी में वहां रुपये का आठ मन चावल बिका था, सन् १६८९ में जब वह वहां से चलने लगा तो उसने शहर का पश्चिम दरवाज़ा चुनवाकर उस पर यों तिलाक़ अर्थात् आन लिखवा दिया, कि इस दरवाजे को मेरे पीछे वही सूबेदार खोले जो फिर ऐसा सस्ता करे।—१०—त्रिपुरा ढाका और इस जिले के बीच में ब्रह्मपुत्र का दर्या जिसे वहां वाले मेघनाके नाम से पुकारते हैं बहता है। इस ज़िले का नाम पुराने काग़ज़ों में कहीं कहीं रौशनाबाद भी लिखा है। यह पूर्व दिशा में हिन्दुस्तान का सब से परला ज़िला है। इस से आगे फिर जंगल पहाड़ है, कि जिन से परे बम्र्हा का मुल्क बस्ता है। आदमी वहां के जिन्हें बंगाली तिउरा पुकारते हैं कुछ जंगली से हैं बहुधा ज़मीन में बल्लियां गाड़ कर उन बल्लियों पर अपने झोपड़े बनाते हैं। सूरतें उनकी चीन और बम्र्हावालों से बहुत मिलती हैं। धर्म का उनके कुछ ठिकाना नहीं। इसका सदर मुक़ाम कोमेला पहाड़ के पास गोमती नदी के बांएं कनारे कलकत्ते के पूर्व ईशान कोन को झुकता २०० मील पर बसा है।—११—चित्रग्राम अथवा चटगांव जिसे अंगरेज़ लोग चिटागांग कहते हैं, त्रिपुरा के अग्निकोन की तरफ़ नाफ़ नदी तक चलागया है। यहभी ज़िला हिन्दुस्तान की हद पर है इस से पूर्व जंगल पहाड़ और फिर उन से आगे बम्र्हा का

मुल्क है। इस ज़िले में बस्ती कम है और बन बहुत। यहां के आदमी भी त्रिपुरावालों की तरह छ सात हाथ लम्बी बल्लियां जमीन में गाड़कर उस पर अपने झोपड़े बनाते हैं। अठवारे में एक दो बार कई मुक़ामों पर हाट लगा करती है उसी जगह लोग सौदा करने के लिये इकट्ठा होते हैं। मज़हब का उनके कुछ ठिकाना नहीं सब चीज खाते पीते हैं। शिकारी बहुधा हाथी मारकर उसी के गोश्त पर गुज़ारा करते हैं। हाथी वहां के जंगलों में त्रिपुरा की तरह बहुतायत से होते हैं। गरजन का तेल जो काठ की चीजों को साफ़ रखने के लिये खूब चीज़ है वहां बहुत बनता है। आब हवा अच्छी है। चटगांव अथवा इसलामाबाद २२००० आदमी की बस्ती इसका सदर मुक़ाम कर्नफूली नदी के दहने कनारे कलकत्ते के पूर्ब तीन सौ मील पर बसा है। उस से बीस मील उत्तर हिंदुओं का तीर्थ सीता कुंड है, कि जिस का जल सदा गर्म रहता है। जो कोई उसके जल के पास जलती हुई बत्ती लेजावे तो उसकी बाफ़ गोरख डिब्बी की तरह बारूत सी भभक जाती है। उसी थाने के इलाक़े में बलेवा कुंड हिंदुओं का दूसरा तीर्थ है, उस में पानी के ऊपर ज्वालामुखी की तरह सदा आग बला करती है। ज्वालामुखी और गोरखडिब्बी का बर्णन और वहां आग के जलने और भभकने का कारण कांगड़े के ज़िले में लिखा जावेगा—१२--सिलहट जिसका शुद्ध नाम श्रीहट्ट है त्रिपुरा के उत्तर। शास्त्र में जो मत्स्यदेश लिखा है वह इसी के आस पास है। इस ज़िले के पूर्ब और दक्षिण भाग में जंगल और पहाड़ हैं, और बाक़ी मैदान कि जो बरसात के दिनों में बहुधा जल मग्न हो जाता है। लोहे और कोयले की खान है। इन पहाड़ों में अक्सर खसिये लोग बसते हैं, मज़बूत होते हैं, और हथियार उनके तीर कमान और नंगी लंबी त-

लवारें और और ढालें चौखूंटी इतनी बड़ी कि जिनसे मेह में छतरी की बिलकुल इहतियाज नहीं। उन लोगों में पैतृकाधिकार बड़ी बहन के लड़के को पहुंचता है। ढाल और सीतलपाटी अर्थात् बेत की बुनी हुई चटाई यहां के बराबर कहीं नहीं बनती। इमारत कम बहुत आदमी छान छप्परों में रहते हैं। सदर मुक़ाम इसका सिलहट कलकत्ते के ईशानकोन को कुछ ऊपर ३०० मील पर बसा है। सिलहट से एक दिन का राह पर वायुकोन को पडुवा नाम बस्ती है। वहां से नौ मील ईशान कोनको पहाड़में एक अद्भुत गुफा है, दस से अस्सी फुट तक ऊंची और चौड़ी, लम्बान की खबर नहीं, लोग आध कोस तक तो उसके अंदर गए हैं, फिर लौट आए। सिलहटसे २० मील ईशानकोन उत्तर को झुकता जयंतापुर पहले एक राजा के दखल में था, सन् १८२२ में वहां के राजा की बहन ने काली के साम्हने नर बलि चढ़ाने को एक बंगाली पकड़ने के लिये अपने आदमी सरकारी अमल्दारी में भेजे थे, पर क़िस्मत बंगालियों की अच्छी थी कि वह आदमी गिरफ्तार हो गए और जेलखाने में भेजे गए, परंतु सन् १८३५ में वहां के राजा ने तीन आदमी सरकारी रैयत को अपने इलाक़े के अंदर पकड़कर काली के साम्हने बल देही दिया, तब सरकार ने उस इलाक़े को जब्त करके सिलहट में मिला लिया, और राजा के खाने को पिंशन मुक़र्रर कर दिया। —१३—कचार अथवा हेरम्ब सिलहट के पूर्व। यह ज़िला तीन तरफ़ पहाड़ों से घिरा है, कि जो आठ आठ हज़ार फुट तक ऊंचे हैं, और मैदान दलदल और झीलों से भरा है। दक्षिण भाग में बड़ा घना जंगल है। लोहा खान से निकलता है। सदर मुक़ाम सिलचार कलकत्ते से ३०० मील ईशानकोन बारक नदी के बांएं कनारे बसा है।—१४—मैमनसिंह सिल-

हट से पश्चिम। यह ज़िला ब्रह्मपुत्र के दोनों कनारों पर बसा है। और बहुत सी नदियां उस में बहती हैं। बरसात के दिनों में प्राय सारा ज़िला जल मग्न हो जाता है इसका सदर मुक़ाम सोवारा अथवा न-सीराबाद ब्रह्मपुत्र के दहने कनारे कलकत्ते के उत्तर ईशानकोन को भुकता हुआ २०० मील है। -१५-पबना जसर के उत्तर। इसका सदर मुक़ाम पबना कलकत्ते से १३७ मील उत्तर ईशानकोन को भुकताहै। -१६-राजशाही पबना के वायुकोनकी तरफ़। इस ज़िले के बीच कई धारा गंगा की ओर दूसरी नदियां भी बहती हैं, और बरसात में सब जगह जल ही जल हो जाता है। इसका सदर मुक़ाम बौलिया कलकत्ते से १३० मील उत्तर गंगा के बांएं कनारे पर बसा है। -१७-बगुड़ा राजशाही के ईशानकोन की तरफ़। इसका सदर मु-क़ाम बगुड़ा कलकत्ते से १७५ मील उत्तर ज़रा ईशानकोन को भुकता हुआ है। -१८- रंगपुर बगुड़ा के उत्तर। ब्रह्मपुत्र तिष्ठा करतोया इत्यादि कई नदियां इस में बहती हैं, और ईशानकोन की तरफ़ भीलें भी हैं। गर्मी कम पड़ती है। पूर्व भाग में लू बिलकुल नहीं चलती। इस ज़िले में बहुतेरे आदमी आटा पीसने की तरकीब न जानने के कारन गेहूं भी चावल की तरह उबाल कर खाते हैं। इमारत बहुत कम, बड़े बड़े आदमी और महाजन भी घास फूस के बंगलों में रहते हैं। जंगल ऐसे कि जिन में हाथी गैंड़े फिरते हैं। सदर मुक़ाम रंगपुर कलकत्ते से २४० मील उत्तर ज़रा ईशानकोन को भुकता है। -१९-दिनाजपुर रंगपुर के पश्चिम। नदियां इस ज़िले में बहुत हैं, गांव गांव नाव घूमती है, पर बरसात में जगह २ पर जो पानी बंद रह जाता है और बहुत से तालाब जो बे मरम्मत पड़े हैं गर्मियों में उनका सड़ना और सूखना बुरा होता है। सदर मुक़ाम

दिनाजपुर कलकत्ते के ठीक उत्तर २२५ मील पूर्ण बाबा नदी के कनारे अनुमान ३०००० आदमी की बस्ती है।–२०–पुरनिया दिनाजपुर के पश्चिम। मोरंग का पहाड़ और जंगल इस ज़िले के उत्तर पड़ता है, जिसे संस्कृत में किरात देश लिखा है। बरसात में इस ज़िले की प्राय आधी धरती जल मग्न हो जाती है। ज़मीदारों को खेतियों की हाथियों से रखवाली करनी पड़ती है। जब अंगरेज़ों की वहां नई अमल्दारी हुई थी तो उन के नौकरों ने उन से यह मशहूर कर दिया कि यहां की लोमड़ी रात को रुपए और कपड़े भी उठा ले जाती है और इस बहाने से बहुतेरी चीज़ें चुरालीं। गाय भैंस यहां बहुत होती हैं, मोरंग के जंगल में चराई का आराम है। सदर मुक़ाम पुरनियां कलकत्ते से २५० मील उत्तर वायुकोन को ज़रा झुकता, यद्यपि नौ मील मुरब्बा के बिस्तार में बसाहै, पर आदमी उसमें चालीस हज़ारसे अधिक न होंगे। जो लोग कुलीन नहीं होते वे लोग कुलीन बनने के लिये अपनी बेटियों को कुलीनों के साथ व्याहने में बड़ा रुपया ख़र्च करते हैं, बरन कभी कभी दंतहीन और कंठागत प्राणवालों के साथभी व्याह देते हैं, कि जिससे फिर उसके भाइयों का विवाह कुलीनों के साथ हो सके, और अकुलीन स्त्रियों के लेने में रुपया मिले।–२१–मालदह पुरनिया के दक्षिण। सदर मुक़ाम मालदह कलकत्ते से १८० मील उत्तर महानंद नदीके तटपर अनुमान २०००० आदमियों की बस्ती है। गौड़का शहर जो किसी समय में बंगाले की राजधानी था, मालदह से नौ दस मील दक्षिण गंगा कनारे बस्ताथा, अब गंगाकी धारा वहांसे चारपांच कोस हटगई, शहर की जगह खंडहर और जंगली दरख़्त खड़े हैं। अकबर के बाप हुमायूं बादशाह ने उसका नाम जन्नताबाद रखा था।

पुराना नाम उसका लक्ष्मणावती है। उसके खंड़हर अब तक भी बीस मील मुरब्बा में नज़र पड़ते हैं। उसमें एक मीनार ७१ फुट ऊंचा है।–२२–मुर्शिदाबाद मालदह से दक्षिण आब हवा वहांकी खराब। सदरमुक़ाम मुर्शिदाबाद भागीरथी के बांएं कनारे १२० मील कलकत्ते के उत्तर बसा है। पहिले उसका नाम मक़सूदाबाद था, सन् १७०४ में बंगाले के नाजिम मुरशिदक़ुली खां ने उसे मुर्शिदाबाद किया, और सूबै बंगालेकी राजधानी बनाया, कि जो बिहार से पूर्व ब्रह्मा की हदतक चलागया है। अब भी नव्वाब नाज़िम जो सरकार से पंद्रह लाख रुपया सालाना पिंशन पाताहै इसी शहर में रहता है, एक कोठी अंगरेज़ी तौर की अपने रहनेके वास्ते बहुत उमदा बनाई है, कहते हैं कि उसकी तैयारी में अठारह लाख रुपया खर्च हुआ है, और अनुमान डेढ़लाख आदमी उस शहरमें बस्ते हैं। मुर्शिदाबादसे छ मील दक्षिण भागीरथी के बांएं कनारे बहरामपुर की छावनी है। –२३–बीरभूम मुर्शिदाबाद के पश्चिम इस ज़िले में कोयले और लोहे की खान है। सिउड़ी इसका सदर मुक़ाम कलकत्ते से ११० मील उत्तर वायुकोन को झुकता हुआहै। वहां से ६० मील वायुकोन को झाड़खंडके बीच देवगढ़ में वैद्यनाथ महादेव का प्रसिद्ध मंदिर है। शिवरात्री को बड़ा मेला होताहै। हज़ारों कांवड़िये गंगासे महादेवके लिये गंगाजल लाते हैं। और पंद्रह मील पश्चिम नागौर का पुराना शहर वीरानसा पड़ा है। उससे सातमील पर बकलेसर में गर्म पानी का एक सोता जारी है। गंधकका उसमें असरहै और थर्मामेटर [१]

---

[१] गर्मी का प्रमाण जानने के लिये थर्मामेटर खूब चीज़ है। पतली लम्बी गर्दन की एक शीशी में पारा भरा रहता है मुंह शीशी का बिलकुल बंद और गर्दन शीशी की हवासे ख़ाली होती है, और उस शीशी के नीचे एक पटरा पीतल की

उसके अंदर डुबाने से १५२ दर्जे चढ़ता है । सिउड़ी से अनुमान २० मील नैर्ऋतकोन को मंगलपुरके पास वृक्ष रहित बीहड़ धरती में जो कोयले की खान है, तीस सीढ़ी उतरकर उसके अंदर जाना होताहै, धरती के नीचे सुरंगों की तरह आध आध कोस तक हर तरफ़ खान खोदते चले गये हैं, और उन सुरंगों में जगह जगह पर बड़े बड़े मोखे रखे हैं, उन्हीं मोखों की राह से जैसे कुए से पानी खींचते हैं, लोहे की चरखियों से खुदा हुआ कोयला खींच लेते हैं, खान अंदर अंधेरी हैं, पर सीधी ऊंची चौड़ी और साफ़ ऐसी, कि यदि आदमी बिना मशाल भी उस में जावे तो ठोकर और टक्कर न खावे कई सौ आदमी सरकार की तरफ़ से कोयला खोदा करते हैं और साल में चार पांच लाख मन कोयला वहां से निकल जाता है । खान के अंदर जो सोतों से पानी निकलता है उसके बाहर फेंकने के लिये धूंएं की कल लगाई है । दस बारह कोस के घेरे में और भी इस तरह की कई खान हैं । जगह देखने लायक़ है—२४—बर्दवान बीरभूम के दक्षिण । शुद्ध नाम इसका बर्द्धमान जैसा नाम तैसा गुण, धरती बड़ी उपजाऊ, बनारस से उतरकर ऐसा आबाद और उपजाऊ तो दुनियां में कोई दूसरा जिला नहीं देख पड़ता । फैलाने से फ़ी मील मुरब्बा छ सौ आदमी की बस्ती पड़ती है । सदर मुक़ाम इसका बर्दवान कलकत्ते से ६० मील वायुकोन की तरफ़ अनुमान ६०००० आदमी की बस्ती

---

२४० बराबर हिस्सों में बंटी हुई लगी रहती है । पारे का स्वभाव है कि गर्मी से फैलता और सर्दी से सिकुड़ जाता है, पस वह पारा जहां जितना फैलकर जितने दर्जे तक उस शीशी के अंदर चढ़े वहां उतनी गर्मी समझनी चाहिये । बिना थर्मामेटर के कदापि कोई यह बात नहीं बतला सकता कि एक जगह से दूसरी जगह किस क़दर कम या ज़ियादा गर्मी है ॥

है। मकान वहां के राजा ने बहुत उमदा उमदा बनवाये हैं, पालेस की कोठी और गुलाब बाग़ दोनों देखने लायक़ हैं, उनकी तैयारी में राजा ने अपने हौसिले बमूजिब कोई बात बाक़ी नहीं छोड़ी। वहांवाले कहते हैं कि यह गुलाब बाग़ लंदन के हैडपार्क के नमूने पर बना है, अंगरेज़ी तौर के मकान और बाग़ इस तैयारी और सफ़ाई के साथ इस गिर्दनवाह में और कहीं भी नहीं मिलेंगे।—२५—हुगली बर्दवान के अग्निकोन को। उस में कोयले की खान है सदर मुक़ाम हुगली भागीरथी के दहने कनारे पर कलकत्ते से २६ मील उत्तर बसा है। मुर्शिदाबाद के नव्वाब के किसी रिश्तेदारने वहां एक इमाम बाड़ा बनवाकर उसके खर्च के वास्ते कुछ ज़मीन माफ़ कर दी थी, लेकिन आमदनी ज़मीन की वहां के मुतवल्ली हज़म कर जाते थे, अब सरकार ने अपनी तरफ़ से ऐसा बंदोबस्त कर दिया है कि उस ज़मीन की आमदनी से इमामबाड़ा भी खूब तैयार रहता है, और एक अस्पताल और दो बड़े विद्यालय भी मुक़र्रर हो गये हैं।—२६—मेदनीपुर हुगली और हवड़ा के नैर्ऋत कोन। आदमी इस ज़िले के बड़े सुस्त आलस्यी और धनहीन हैं। सदर मुक़ाम मेदनीपुर कलकत्ते से ६९ मील पश्चिम ज़रा नैर्ऋतकोनको झुकता हुआ है।—२७—बलेश्वर जिसे बालासोर भी कहते हैं मेदनीपुर के दक्षिण। नमक इस ज़िले में लाख रुपये से ज़ियादः का बनता है। लोहे की खान है। सदर मुक़ाम बलेश्वर कलकत्ते से १४० मील दक्षिण नैर्ऋत-कोनको झुकता हुआ बूढ़ी बलङ्ग नदी के दहने कनारे समुद्रसे आठ मील पर बसा है। किसी समय में जब सरकार कम्पनी की तरफ़ से वहां तिजारत का कारखाना जारी था, और फ़रासीस डेनमार्क और डचवाले भी दूकान और कोठियां रखते थे, तो बहुत आबाद

था, पर अब बिलकुल बे रौनक़है। वहां के आदमी शराब बहुत पीते हैं और जो लोग शराब से परहेज़ रखते हैं वे अफ़यून खाते हैं।—२८—कटक बलेश्वर के दक्षिण। संस्कृत में उसे उत्कल देश कहते हैं। बादशाही वक्त में वह अपने आस पास के ज़िलों के साथ बंगाले की हद तक सूबे उड़ेसा लिखा जाताथा। बाग़ यहां अच्छे नहीं लगते कहीं कहीं लोहा और पहाड़ी नदियों का बालू धोने से कुछ सोनाभी मिलता है। समुद्र के कनारे नमक बहुत बनता है। समुद्रके कनारे तो यह ज़िला दस कोस तक नीचा और जंगल है, और जब समुद्र से हुम्मा आता है तो बिलकुल जल मग्न होजाता है, और फिर दस कोस तक आबाद है, उस से आगे पश्चिम को पहाड़ और बन है। पहाड़ सब से बड़ा दो हज़ार फुट तक समुद्र से ऊंचा है। सदर मुक़ाम कटक नव्वे हज़ार आदमी की बस्ती, कलकत्ते से अढ़ाई सौ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता हुआ महानदी के किनारे पर बसा है। क़िला बारहभट्टी अथवा बारहबट्टी का शहर से आधकोस पर बना है, गिर्द उस के ८० गज़ चौड़ी ख़ंदक़ है।—२९—खुरदा अथवा पुरी कटक के दक्षिण चिलका झील तक। सदर मुक़ाम पुरुषोत्तमपुरी अथवा जगन्नाथ कलकत्ते से ३०० मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता समुद्र के कनारे बसा है, उस में जगन्नाथ का मंदिर कुछ कम सवा दो सौ गज़ लंबा और इतना ही चौड़ा एक ऊंचा पत्थर की दीवारों का हाता है उसके भीतर ६७ गज़ ऊंचा बना है, इस बड़े मंदिर के सिवाय जिसमें जगन्नाथ विराजते हैं उस हाते के अन्दर और देवताओं के भी बहुत से मंदिर हैं। जगन्नाथ के रथ के पहिये के नीचे दबकर मरने में हिंदूलोग बड़ा पुण्य समझते हैं, और आगे कितनेही आदमियों ने इसतरह

पर अपनी जान दे डाली है। इस मंदिर को राजा अनंगभीमदेवने बनवाया था, और वह सन् ११७४ में उड़ेसे की गद्दी पर बैठा था। कटक से जगन्नाथ जाते हुए कोई सोलह मील पर खुरदा की तरफ़ झाड़ी में एक ऊंचा सा बुर्ज दिखलाई देता है, वहां से दो तीन कोस भवानेश्वर का उजड़ा हुआ शहर है, वहांवाले बतलाते हैं कि किसी समय में इसके अन्दर सात हज़ार मंदिर और एक करोड़ महादेव के लिङ्ग थे, अब भी बहुतेरे मंदिर टूटे फूटे पड़े हैं, एक उन में से १८० फ़ुट ऊंचा है, और एक लिङ्ग भी महादेव का वहां चालीस फ़ुट से कम नहीं है। भवानेश्वर से पांच मील पश्चिम खंडगिर के पहाड़ में कई जगह पत्थर काटकर गुफ़ा बनाई हैं, एक पर पुराने अक्षर भी खुदे हैं, पुराने मंदिरों के टूटे हुए खंभे इत्यादि और जैन-मत की मूर्तें वहां बहुत पड़ी हैं, राजा ललितेन्द्र केसरी के महलों के निशान हैं, और पहाड़ की चोटी पर एक नया मंदिर पार्श्वनाथ का अब थोड़े दिनों से बना है। कटक से ३५ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता वैतरणी नदी के दहने कनारे जहाजपुर में जो सब पुराने मंदिर और मूरतें कि अब तक भी बाक़ी हैं उन से मालूम होता है कि वह किसी समय में बड़ा मशहूर और हिंदुओं का तीर्थ था। जगन्नाथ से १८ मील उत्तर समुद्र के तट पर कनारक गांव के पास एक पुराना टूटा हुआ पर बड़ा अद्भुत सूर्य का मंदिर है, सन् १२४१ में राजा नृसिंहदेव लंगोरे ने बनवाया था और बारह बरस की आमदनी उड़ेसे की उस में ख़र्च हुई थी, यद्यपि शिखर बिलकुल गिर गया है पर फिर भी जितना बाक़ी, है सवा सौ फ़ुट के लग भग ऊंचा होवेगा। कहते हैं किसी समय में उसके ऊपर एक टुकड़ा चुम्बुक का इतना बड़ा लगा था कि लोहे के कील कांटेवाले जहाजों

को जो उस तरफ़ से निकलते थे कनारे पर खींच लेता था। जगमोहन अथवा सभामंडप उस मंदिर का साठ फुट लंबा और इतना ही चौड़ा और ऊंचा है, दीवारें बीस बीस फुट तक मोटी हैं, यह मंदिर निरे पत्थरों का बना है, कि जिन को लोहे से आपस में जड़ दिया है, और उसमें स्त्री पुरुष जीव जंतु पक्षी की सूरतें और बेल बूटे बड़ी कारीगरी के साथ बनाये हैं। -३०- बांकुड़ा बर्दवान के पश्चिम। कोयले की खान है। सदर मुक़ाम बांकुड़ा कलकत्ते से सौ मील पश्चिम वायुकोन को झुकता है। वहां सरकार की तरफ़ से मुसाफ़िरों के लिये एक सरा बनाई गई है।-३१-भागलपुर मुर्शिदाबाद के वायुकोन बिंध्य के पहाड़ पूर्व में इसी जिले तक हैं, यहां से फिर दक्षिण को मुड़ जाते हैं। एक क़िस्म की खरी मिट्टी इन पहाड़ों में बहुतायत से होती है; अकसर वहां की औरतें जब गर्भवती होती हैं तो उसे खाती हैं। सदर मुक़ाम भागलपुर पांच हज़ार घर की बस्ती कलकत्ते से २२५ मील उत्तर वायुकोन को झुकता गंगा के दहने कनारे कोस भर के फ़ासले से बसा है। भागलपुर के पूर्व दक्षिण को ज़रा झुकता साठ मील पर गंगा के दहने कनारे तीस हज़ार आदमियों की बस्ती राजमहल है। मकान बादशाही जो गंगा कनारे अच्छे उमदा बने थे अब सब टूट फूट कर खंड़हर होगये। भागलपुर से दो मंज़िल दक्षिण जंगल के बीच आध कोस ऊंचे मंदरगिर पर्वत पर हिन्दुओं का प्राचीन तीर्थ है। पहाड़ और पानी के झरने बरसात में बड़ी कैफ़ियत दिखलाते हैं। वहांवाले कहते हैं कि देवताओं ने इस पहाड़ से समुद्र मथा था।-३२-मुंगेर भागलपुर के पश्चिम सदर मुक़ाम मुंगेर, जिसका असली नाम मुद्गिर बतलाते हैं, कलकत्ते से २५० मील उत्तर वायुकोन को झुकता गंगा के दहने कनारे पर

है। क़िला मज़बूत था, पर अब बेमरम्मत और टूटा फूटा सा पड़ा है। बंदूक़ पिस्तौल छुरी कांटे इत्यादि लोहे की अंगरेज़ी चीजें वहां अच्छी और सस्ती बनती हैं। यह शहर सूबे बंगाले की सरहद पर बसा है, इसके पश्चिम सूबे बिहार शुरू होता है। मुंगेर से पांच मील पूर्व सीताकुंड का गर्म सोता है, अठारह फ़ुट मुरब्बा में पक्का ईंटों का एक हौज़ बना है, और उसी में कई जगह पानी के नीचे से बुलबुले उठा करते हैं, जहां बुलबुले उठते हैं वहां पानी अधिक गर्म रहता है, पानी साफ़ है, और उस में थर्मामिटर डुबाने से १३६ दर्जे तक पारा उठता है। उसी गिर्दनवाह में और भी कई एक इस तरह के गर्म सोते हैं।–३३–बिहार मुंगेर के पश्चिम दक्षिण भाग में पहाड़ हैं। अफ़यून इस ज़िले में बहुत होती है, और चावल बासमती अच्छा। वहां ग्वालों के दर्मियान अजब एक रस्म जारी है, दिवाली के दिन एक सूवर के पांव बांध कर मैदान में छोड़ देते हैं, और फिर उसको अपने गाय बैलों के पैर से रूंदवाते हैं, यहां तक कि वह मर जाता है, इसका एक मेला होता है, और फिर उस सूवर को वे लोग खा जाते हैं, इस ज़िले में अबरक बिल्लौर गेरू लोहा संगमूसा और अक़ीक़ की खान है। सदर मुक़ाम गया हिन्दुओं का तीर्थ कलकत्ते से २८९ मील वायुकोन को फल्गु नदी के बांएं कनारे है। हिन्दू निश्चय रखते हैं कि फल्गु कभी दूध की बहती है, कारण ऐसा मालूम होता है कि शायद उसके करारों के टूटने से कभी कभी खरी मिट्टी इतनी पानी के साथ मिल जाती है कि वह दूध सा दिखलाई देता है। यह बात अकसर नदियों में हुआ करती है, जिन के कनारों पर या थाह में खरिया का असर है, हम दूध उसी को कहेंगे जिस से मक्खन निकले। पुराना शहर गया जिस में

गयावाल ब्राह्मण बसते हैं एक पथरीली उचान पर फल्गु नदी और एक पहाड़ी के बीच में बसा है, और साहिब गंज जहां बाज़ार है और ब्यौपारी लोग रहते हैं, रामशिला की पहाड़ी के दक्षिण और शहर के उत्तर फल्गु के कनारे मैदान में है, इन दोनों के बीच साहिब लोगों के बंगले हैं। शहर की गलियां तंग और निहायत ग़लीज ऊंची नीची बीच बीच में पत्थर के ढोंके पड़े हुए, पत्थरों के तपने से और फल्गु का बालू धिकने से गर्मी वहां शिद्दत की होती है। फल्गु के कनारे बिष्णुपादोदका का मंदिर है, मंदिर के बीच में कुण्ड को जिस में चरण का चिह्न है, चांदी से मढ़ा है। पास ही एक मंदिर में पुण्डरीकाक्षजी की मूर्त्ति है, उस मूर्त्ति का पत्थर हाथ की चोट लगने से धातु की सी आवाज़ देता है, हिन्दू उसे करामात समझते हैं, यह नहीं जानते कि चीन में ऐसा भी एक पत्थर होता है कि उसे बजाओ तो बाजे की आवाजें निकलें। आदमी वहां सब मिलाकर प्राय एक लाख बसते होंगे। गयावाल ब्राह्मण आगे यात्रियों पर बहुत ज़ियादती करते थे, अब भी अकसरोंसे जो कुछ वे बेचारे अपने घर से लाते हैं ले लिवाकर आगे को उन से तमस्सुक लिखवा लेते हैं। बिहार ३००० आदमियों की बस्ती गया से ४० मील ईशानकोन की तरफ़ है। मुसल्मान बादशाहों के वक्त में इसी शहर के नाम से यह सूबा जो सूबे इलाहाबाद और बंगाले के बीच में पड़ा है पुकारा जाता था। संस्कृत में उसके दक्षिण भाग को मगध और उत्तर भाग को मिथिला लिखा है। किसी जमाने से इस के आस पास बौध लोगों के बड़े तीर्थ थे। बिहार वे लोग उस जगह को कहते हैं जहां उस मत के भिक्षुकों के रहने के लिये मठ और धर्मशाला बनें, बरन उन्हीं मठ और धर्म-

शाला का नाम बिहार है। अब भी इस ज़िले में हर जगह बौध लोगों के मकान और मंदिरों के निशान मिलते हैं, और हर तरफ़ उनकी मूरतें टूटी फूटी ढेर की ढेर नज़र आती हैं, बरन जैनी और वैष्णवों ने भी वहां अपने मंदिरों में कितनी ही मूरतें बौध मत की उठा कर रख ली हैं। बराबर के पहाड़ों में जो गया से सात कोस है भिक्षुकों के रहने के लिये पत्थर काट काट कर सुन्दर सचिक्कण गुफ़ा बनाई हैं, उन में उस समय के खुदे हुए अक्षर भी मौजूद हैं। निदान ये सब निशान किसी समय में बौध मत के प्रबल होने के देखने लाइक़ हैं। बुध गया में, जो गया से आठ मील होगा, एक पुराने बुध के मंदिर के पीछे पीपल का पेड़ है, ब्राह्मण उसे ब्रह्मा का लगाया और बौध उसे सिंहलद्वीप के राजा दुग्धकामिनी का लगाया कुछ कम तेईस सौ बरस का पुराना और उस स्थान को पृथ्वी का मध्य बतलाते हैं। देखने में तो वह पेड़ कोई १५० बरस का पुराना मालूम होता है, पर यह अलबत्ता हो सकता है कि उसी स्थान पहले कोई दूसरा पीपल रहा हो। बिहार से सोलह मील दक्षिण पहाड़ों की जड़ में राजग्रह की छोटी सी बस्ती है, जिसे जरा· सिन्ध की राजधानी बतलाते हैं, और पहाड़ों के अंदर उसके मकान और उस मैदान का जहां वह भीम के हाथ से मारा गया था निशान देते हैं। मकानों के निशान और क़िले अथवा शहरपनाह की टूटी हुई पुरानी दीवार और बुर्जों को देखने से जो पहाड़ों के ऊपर दस मील के घेरे में नमूदार हैं मालूम होता है कि राजग्रह किसी समय में निस्सन्देह बहुत बड़ा शहर बस्ता था। यह जगह जैनी और वैष्णव दोनों का तीर्थ है। जैनियों के तो पांचों पर्वतों पर पांच मंदिर बने हैं, और वैष्णव गर्म और सर्द कुण्डों में जिनकी वहां

इफरात है नहाते और अपने मत के देवलों में दर्शन करते हैं। गर्म कुंड के पास ही एक गुफा, जैसी बराबर के पहाड़ में है, पत्थर काट कर भिक्षुकों के रहने के लिये बनी है। वहां के अकसर बेवकूफ़ उसे सोन भंडार बतला कर कहते हैं कि उसमें जरासिंध की दौलत गड़ी है। राजग्रह से पंदरह मील कुण्डलपुर रुक्मिनी का जन्मस्थान एक गांव सा बस्ता है, बुध की मूरतें और पुरानी इमारतों के निशान वहां भी बहुतायत से हैं।-३४—पटना अथवा अज़ीमाबाद बिहार से पश्चिम वायुकोन को झुकता हुआ। सदर मुक़ाम पटना कलकत्ते से ३२० मील वायुकोन गंगा के दहने कनारे पर बसा है, और कनारेही कनारे कोई नौ मील तक चला गया, पर बस्ती बहुत दूर दूर है, अगली सी आबादी अब नहीं रही, फिर भी लाख से ऊपर आदमी है। बाज़ार तो चौड़ा है, पर गलियां तंग मेह में कीचड़ खुरकी में गर्द। बहुत दिन हुए कि सरकार ने वहां एक गोदाम चावल रखने के लिये जिसे वहांवाले गोलघर कहते हैं गुम्बज़ अथवा औंधी हुई हांड़ी की सूरत का बनाया था, अब उस में सिपाहियों का असबाब रहता है, आवाज़ उसके अंदर खूब गूंजती है, चढ़ने को बाहर से दुतरफ़ा सीढ़ियां लगी हैं। एक मूर्त्ति को वहां के ब्राह्मण पटनेश्वरी देवी कह कर पूजते हैं, लेकिन वह मूर्त्ति असल में बुध की है। हरिमन्दिर सिखों का तीर्थ है, कहते हैं कि उनका नामी गुरु गोबिन्दसिंह इसी जगह पैदा हुआ था। शाह अर्ज़ानी का मुक़बरा मुसल्मानों का ज़ियारतगाह है। यह शहर बौध मती गुप्त राजाओं के समय में बड़ी रौनक़ पर था, मगध देश बरन सारे हिंदुस्तान की राजधानी और पाटलीपुत्र पद्मावती और कुसुमपुर के नाम से पुकारा जाता था। उस समय के यूनानियों ने उसे दस मील लम्बा और

६४ दरवाज़ों का शहर लिखा है । शास्त्र में पाटलीपुत्र को शोण के संगम पर कहा है, इस से ऐसा मालूम होता है कि शोण आगे पटने के समीप गंगा से मिलती थी, अब १६ मील हट गई है । पटने से १० मील पश्चिम गंगा के दहने कनारे दानापुरकी बहुत बड़ी छावनी है । दानापुर से इतनी ही दूर पर जहां शोण गंगा से मिली है मोनिया अथवा मनेरमें एक मक़बरा पत्थरका मख़दूमशाह दौलत का बहुत अच्छा बना है । पटने से तीस मील पूर्व गंगा के दहने कनारे बाढ़ छोटा सा क़सबा है, चंबेली का फूलेल वहां बहुत उमदा बनता है ।–३५–तिरहुत अथवा त्रिहुत जिसे बाज़े आदमी त्रिभुक्ति भी कहते हैं भागलपुर और मुंगेर से वायुकोन को । उत्तरमें तराई का जंगल है । गंडक और कोसी नदी के बीच जो देश है उसे संस्कृत में मिथिला और वैदेह कहते हैं, उसी का यह मानो मध्य भाग है । आब हवा वहां की अंगरेजों को तो मुवाफ़िक है, पर हिन्दुस्तानियों के लिये खराब। शोरा बहुत होताहै । सदर मुक़ाम मुज़फ्फ़रपुर आठ हज़ार आदमियों की बस्ती कलकत्ते से ३४० मील वायुकोन उत्तर झुकता हुआ है।––३६––शाहाबाद पटने से पश्चिम शोण से लेकर कर्म्मनाशा नदी तक, जो सूबै बिहार की हद है । नैर्ऋत कोन की तरफ़ उजाड़ है, बाक़ी सब आबाद और उपजाऊ । फिटकरी की खान है, कभी कभी हीरा भी मिल जाता है । इस का सदर मुक़ाम आरा कलकत्ते से ३५० मील वायुकोन को है। आरे से दो मंज़िल पूर्व गंगा के दहने कनारे बक़सरका क़िला और शहर है । सन् १७६४ में नव्वाब वज़ीर शुजाउद्दौला ने सरकारी फ़ौज से इसी जगह शिकस्त खाई थी । बक़सर से चौंतीस मील दक्षिण सहसराम में एक पक्के तालाब के बीच, जो मील भर के घेरे में होगा,

शेरशाह बादशाह का मक़बरा संगीन बना है। आरे से अनुमान ७५ मील दक्षिण पश्चिम को झुकता प्राय १००० फुट ऊंचे पहाड़ पर दस मील मुरब्बा के विस्तारमें शोण नदी के बांएं कनारे एक बड़ा मज़बूत क़िला रूहतासगढ़, जिसका शुद्ध नाम रोहिताश्म बतलाते हैं, उजाड़ पड़ा है। उस पर जाने के लिये दो कोस की चढ़ाई का कुल एक तंग सा रस्ता है, बाक़ी सब तरफ़ वह पहाड़ जंगल और नदियों से ऐसा घिरा है, कि किसी प्रकार भी आदमी का गुज़र नहीं हो सकता। दो मंदिर उस में प्राचीन हैं, बाक़ी सब इमारतें महल बाग़ तालाब इत्यादि जिनके अब केवल निशान भर बाक़ी रह गये हैं मुसल्मान बादशाहों के बनवाये मालूम होते हैं।-३७-सारन, जिसका शुद्धोच्चारण शरण है, शाहाबाद के उत्तर, बहुत आबाद और उपजाऊ। शोरा वहां बहुत पैदा होता है, गाय बैल भी अच्छे होते हैं। सदर मुक़ाम छपरा ५०००० आदमियों की बस्ती कलकत्ते से ३६० मील पर वायुकोन को गंगा के बांएं कनारे है। वहां से दो मंजिल पूर्व गंडक के बांएं कनारे, जहां गंगा के साथ उसका संगम हुआ है, हाजीपुर में हर साल कार्तिक की पूर्णमा को एक बहुत बड़ा मेला हुआ करता है। -३८-चम्पारन सारन के उत्तर। सदर मुक़ाम मोतीहारी कलकत्ते से ३७५ मील वायुकोन को है वहां से थोड़ी सी दूर उत्तर सुगौली की छावनी है।-३९-आशाम सिलहट के उत्तर ब्रह्मपुत्र के दोनों तरफ़ हिमालय में चीन की सरहद तक चला गया है। आशाम आईनी ज़िलों में नहीं गिना जाता, कमाऊं गढ़वाल और सागर नर्मदा की तरह इस इलाक़े के लिये भी एक जुदा कमिश्नर और अजंट मुक़र्रर है, और उसके नीचे छ बड़े अस्टिंट छ जगहों में कचहरियां करते हैं।

पहिला सदर मुक़ाम गोहाट में। दूसरा गोहाट से ७५ मील पूर्व ईशानकोन को झुकता नौगांव में। तीसरा गोहाट से ६५ मील ईशानकोन ब्रह्मपुत्र के दहने कनारे तेजपुर में। चौथा गोहाट से ८० मील पश्चिम ब्रह्मपुत्र के बांएं कनारे ग्वालपाड़े में। पांचवां गोहाट से १९० मील ईशानकोन लखमपुर में। और छठा गोहाट से १८० मील ईशानकोन पूर्व को झुकता शिवपुर अथवा शिवसागर में। गोहाट से ६५ मील दक्षिण खसियों के पहाड़ में जिसे अंगरेज़ कोसिया कहते हैं समुद्र से ४५ फुट ऊंची चेरापूंजी साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है। रहने के लिये बंगले बन गये हैं। मेह वहां बहुत बरसता है। साल भर में ३०० इंच तक नापा गया है (१) अजंटी के तहत में बीस राजा और सरदार गिने जाते हैं, पर केवल गिनती मात्र को हैं, राजा के बदल उनको बनरखा कहना चाहिये, केवल बन और झाड़ी उनकी मिलकियत है, और यही जंगली आदमी जिनका वर्णन आगे होता है, उन की रैयत हैं। सरकार के सब ताबे और फ़रमाबर्दार हैं। जितनी नदियां इस ज़िले में बहती हैं, शायद और कहीं भी इतने बिस्तार में न बहती होंगी।

---

(१) मेह का हर जगह अंदाज़ा समझने के लिये यह तर्कीब बहुत अच्छी है, अर्थात् जिस स्थान के मेह का प्रमाण जानना दरकार हो इस बात को समझ लेना चाहिये कि जो वहां धरती बराबर होती और मेह का पानी जितनी धरती पर पड़ता उतनी ही धरती पर इकट्ठा होने पाता, तो वह नापने में कितना गहरा होता, जैसे चेरापूजी की सारी धरती थाली की तरह बराबर होती और साल भर के मेह का पानी बिना सूखने और बहने के उस पर इकट्ठा होने पाता, तो ३०० इंच गहरा होता। सरकार ने मेह का पानी नापने के लिये लोहे के यंत्र बनवा तहसीलों में रखवा दिये हैं। जब मेह बरसता है तो उसका प्रमाण नितका नित किताब में लिखलिया जाता है॥

इकसठ नदियां इस तरह की हैं, कि जिन में माय बारहों महीने नाव चलती है। बरसात के दिनों में जल चहुँदिश फैल जाताहै। अगले समय में वहां के राजाओं ने पानीके बीच रस्ता जारी रखने को बंध के तौर पर जमीन से तीन चार गज़ ऊंची सड़कें बनाई थीं, इस से ऐसा अनुभव होता है कि उन दिनों में वह देश अच्छा बस्ता था, और आश्चर्य नहीं जो उसी राह से चीनवाले यहां और यहांवाले चीन को आते जाते हों, परंतु अब उन सड़कों पर जंगल जम गयाहै, और शेर भालू चलते हैं। लोहे और कोयले की खान है। नदियों का बालू धोने से सोना भी मिलता है। मटिया तेल कई जगह से निकलता है। उत्तर में जिस जगह ब्रह्मपुत्र दरया हिमालय को काटकर आशाम में आता है, उसका नाम मभु कुठार है, क्योंकि ब्राह्मणों के मत बमूजिब उसे परशुराम ने अपने कुठार से काटाथा। जंगल पहाड़ बहुत हैं, विशेष करके पूर्व और उत्तर में, और उनके बीच बहुतेरी जात के जंगली मनुष्य अर्थात् आबर डफला गारुड़ विजनी खामती मिस्मी महामरी मीरी सिंहफो नागे इत्यादि बसते हैं। धर्म का इन के कुछ ठिकाना नहीं सब चीज़ खाते हैं। तीरों को ज़हर में बुझाते हैं। ग़लीज़ ऐसे कि आबदस्त तक नहीं लेते। चौपायों के खोपड़े काले करके शोभा के निमित्त बंदनवार की तरह अपने घरों में लटकाते हैं। कोई उन में बौध भी हैं। अकसर पेड़ों की छाल का लंगोट और सींक का टोप पहनते हैं, कोई कम्बल भी ओढ़ लेता है। कहते हैं कि इन में गारुड़लोग जो ब्रह्मपुत्र के दक्षिण और सिलहट और मैमनसिंह के उत्तर बसते हैं सांप को भी खाजाते हैं, और कुत्ते के पिल्ले तो उन की बड़ी मिठाई है। पहले उसे पेट भरकर चांवल खिलाते हैं और

फिर उसे जीता आग पर भूनकर भक्षण कर जाते हैं। और जब आपस में तकरार होती हैं तो दोनों आदमी अपने अपने घरमें चटाकर का दरखत लगाते हैं, और इस बात की सपथ करते हैं, कि क़ाबू मिलते ही अपने दुश्मन का सिर उस पेड़के खट्टे फल के साथ खा जावें, और जब अपने दुश्मन का सिर काटलाते हैं, तो क़सम बमूजिब उसे चटाकर के साथ उबाल कर शोरबे की तरह खाजाते हैं, बरन अपने मित्र बांधवों को भी निमंत्रण करते हैं, और फिर उस पेड़ को काट डालते हैं, और जब लड़ाई झगड़े में किसी बंगाली जमींदार का सिर काटलाते हैं, तो उसके गिर्द पहले तो सब मिलकर नाचते गाते हैं, और फिर उसकी खोपरी साफ़ करके घरमें लटकाते हैं बरन अशरफ़ी और बंकनोट की बराबर वहां ये बंगालियों की खोपरियां चलती हैं। सन् १८१५ में कालूमालूपांड़े के जमीदार की खोपरी हज़ार रुपये और इंद्र तअल्लुक़ेदार की खोपरी पांचसौ रुपयेपर चलती थी। वे लोग अपने मुर्दोंको जलाकर बिलकुल राख कर डालते हैं, कि जिस में कोई मनुष्य खोटे रुपये की तरह किसी गारुड़ की खोपरी बंगाली के एवज में देकर उन्हें ठग न लेवे। बिवाह वहां मर्द औरत की रज़ामंदी से होता है, और जो उन में से किसी का बाप उस बिवाह से नाराज़ हो तो सब लोग मिलकर उसे इतना पीटते हैं कि जिस में वह राज़ी होजावे। स्वामी मरने से वहां की स्त्री देवर जेठ को व्याहती हैं, और सारे भाई मर जावें तो श्वशुर से बिवाह करती हैं। मालिक वहां छोटी लड़की होती है। मुर्दे को चार दिन बाद जलाते हैं। जो छोटा सर्दार मरे तो उसके साथ एक गुलाम का सिर काटकर जलाते हैं, और जो कोई बड़े दर्जे वाला मरे तो उसके सब गुलाम मिल कर एक हिंदू को प-

कड़ लाते हैं, उसका सिर काटकर उसके साथ जलाते हैं। आदमी वे लोग मज़बूत और मिहनती, नाकहबूशियों की तरह फैली हुई, आखें छोटी, माथे पर झुर्रियां, भवें लटकी हुई, मुंह बड़ा, होंठ मोटे चिहरा गोल, और रंग उनका गेहुंआं होता है। औरतें नाटी, मंदरी, और मर्दों से भी जियादः मज़बूत होती हैं। और कानों में उनके बीस बीस तीस तीस पीतल के इतने बड़े बड़े बाले पड़े रहते हैं, कि छाती तक लटकते हैं। आशाम के अमीर भी घास फूस के बंगले अथवा छपरों में रहते हैं। आशाम का पश्चिम भाग अब तक भी कामरूप के नाम से पुकारा जाता है, पर शास्त्र में जो सीमा कामरूप देश की लिखी है, उस बमूजिब रंगपुर मैमनसिंह सिल्हट जयंता कचार मनीपुर और आशाम ये सब कामरूपही ठहरते हैं। संस्कृत में कामरूप को प्रागज्योतिष भी कहते हैं। पुरानी पोथियों में इस देश के बड़े बड़े अद्भुत कहानी क़िस्से लिखे हैं नादान आदमी अबतक भी उसे जादू का घर समझते हैं तांत्रिक मत इसी जगह से फैला है। २६ दर्जे ३६ कला उत्तर अक्षांश और ९२ दर्जे ५६ कला पूर्व देशांतर में कामाक्षादेवी का प्रसिद्ध मंदिर है। वहां के आदमियों की सूरत चीनियों से मिलती है। सदर मुक़ाम गोहाट कलकत्ते से ३२५ मील ईशानकोन, जो किसी समय में कामरूप की राजधानी था, और अब जहां साहिब कमिश्नर रहते हैं, ब्रह्मपुत्र के बांएं कनारे पर एक गांव सा बस्ता है। —४०—नैर्ऋतकोन की सीमा और संभलपूर की अजंटी और छोटे नागपुर की कमिश्नरी बांकुड़ा के पश्चिम। यह एक बहुत बड़ा इलाका है। साहिब कमिश्नर के नीचे कई असिस्टेंट रहते हैं, वही उसमें जगह जगह पर आईनी जिले के मजिस्ट्रेट कलक्टरों की तरह कचहरियां करते हैं, अपील उन सब का साहिब

कमिश्नर के पास आता है, वे कलकत्ते से २०९ मील पश्चिम वायुकोन को झुकता बिल्किंसनपुर अथवा छोटेनागपुर में रहते हैं। छावनी डोरंडा में कोस भर दक्षिण है। हद इस इलाक़े की उत्तर को बीरभूम बिहार और मिरज़ापुर के ज़िलों से मिलती है, और दक्षिणको गंजाम तक जो मंदराज हाते का ज़िला है चली गई। पूर्व उस के बाजगुज़ार महाल मेदनीपुर और बर्द्वान है, और पश्चिम बघेलखंड का राज सागर—नर्मदा और नागपुर का इलाक़ा। इस इलाक़े में आबादी कम है और उजाड़ और झाड़ी बहुत, जमीन बीहड़ और पथरीली, पर अकसर जगह तर और उपजाऊ, आब हवाख़राब, सीसा सुरमा लोहा अबरक कोयला जबरजद और हीरे की खान है। नदी का बालू धोने से कुछ सोना भी मिल रहता है। पहाड़ों में गोंद चुआड़ कोल धांगड़ इत्यादि कई जाति के जंगली मनुष्य ऐसे बसते हैं कि न उन के धर्म का कुछ ठिकाना है और न खाने पीने का आदमीयत की बूबास बिलकुल नहीं रखते, और लूटमार बहुत पसंद करते हैं। बहुतेरे उन में से, विशेष करके जो लोग सिरगूजा के पहाड़ों में रहते हैं, बनमानसों की तरह नंगे फिरते हैं, और केवल बन के फल फूल तेंदू महुआ इत्यादि और कंद मूल खाकर गुज़ारा करते हैं, बरन वहांवाले तो उनकी असभ्यता का वर्णन यहां तक करते हैं कि जब उनके रिश्तेदार लोग इतने बूढ़े अथवा रोग से शक्तिहीन होजाते हैं कि चल फिर नहीं सकते तो उन्हें वे लोग काट काट कर खा जाते हैं। इस में जो मुल्क सरकारी बंदोबस्त में कमिश्नरी से संबंध रखता है, उसे छोटा नागपुर मानभूम और हज़ारीबाग़ तीन हिस्सों में बांट कर तीन असिस्टेंटों के ताबे कर दिया है पहले का सदर मुक़ाम लोहार डग्गा

छोटे नागपुर से ४५ मील पश्चिम, दूसरे का पुरुलिया छोटे नागपुर से ७० मील पूर्व, तीसरे का हज़ारीबाग़ छोटे नागपुर से ५० मील उत्तर, वहां सरकारी फ़ौज की छावनी है। हज़ारीबाग़ के पास कई सोते गर्मपानी के ऐसे हैं जिन में गंधक का असर है, और उनके अंदर थर्मामिटर डुबाने से १९० दर्जे तक पारा चढ़ता है। हज़ारीबाग़ से अनुमान दो मंज़िल पूर्व समेत शिखर के पहाड़ पर जैनियों का एक बड़ा तीर्थ और मंदिर है। अजंटी के आधीन नाम को तो ५८ राजा हैं, पर इख्तियार उनको बहुत थोड़े, रुपया मालगुज़ारी का सरकारी खज़ाने में दाखिल करते हैं।-४१-बाजगुज़ार मुहाल नैर्ऋतकोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी के पूर्व, और कटक और बलेश्वर के पश्चिम, जंगल झाड़ी बहुत, आब हवा निहायत ख़राब, कोयला लोहा पेवड़ी खरिया और अबरक की खान है। नदी के बालू में से सोना भी हाथ लगता है, पर बहुत थोड़ा। आदमी असभ्य और प्राय जंगली, राजा इन मुहालों में केवल नाम मात्र हैं, इख्तियार सब साहिब सुपरिंटेंडेंट का है। खंड लोग वहां अब तक अपने देवता के आगे आदमी का बल देते हैं, बरन उनका यह निश्चय है; कि जब तक आदमी को बल चढ़ाकर उसका मांस खेत में गाड़ें, तब तक ग़ल्ला अच्छा पैदा न होगा। मकफ़र्सन साहिब अपने रिपोर्ट में लिखते हैं कि ये लोग अपनी क़ौमका आदमी नहीं काटते आस पास के इलाक़ों से लड़के ले आते हैं, बलदान के समय पहले उनके हाथ पैर की हड्डियां तोड़ डालते हैं, फिर खेतों में गाड़ने के लिये उनके बदन से मांस के टुकड़े काटते हैं। सरकार ने इस बुरे काम को बंद करने के लिये बहुतेरी तदबीरें की हैं। पर वे कमबख्त चोरी छिप्पे आदमियों को काटही डालते हैं।-४२-

नागपुर, नैर्ऋतकोन की सीमा और संभलपुर की अजंटी के पश्चिम। यह बड़ा इलाक़ा नैर्ऋतकोन की तरफ़ हैदराबाद की अमल्दारी से जा मिला है। इस इलाक़े में कुछ हिस्सा सूबै गोंदवाने का आ गया है, बाक़ी सूबै बराड़ है। अकबर के वज़ीर अबुलफ़ज़ल ने नागपुर के राजा को बराड़ का राजा लिखा, कि जिस सबब से अब तक भी उसका वह नाम चला जाता है, पर हक़ीक़त में नागपुर गोंदवाने में है, बराड़ की राजधानी इलचपुर था जो अब हैदराबादवाले के क़ब्ज़े में है। उस समय वे लोग इन इलाक़ों से बहुत कम वाक़िफ़ थे, और ये इलाक़े बादशाहों के क़ब्ज़े में अच्छी तरह नहीं आए थे। अब भी नागपुर के इलाक़े में, विशेष करके पूर्व भाग के दर्मियान, जैसे जैसे जंगल उजाड़ और झाड़ पहाड़ पड़े हैं हम जानते हैं किसी दूसरे इलाक़े में न होंगे, और उन में विशेष करके बसतर की तरफ़ जो अग्निकोन को है, आदमी भी जिन्हें गोंद कहते हैं प्रकृति में बन मानसों से कम नहीं होते। स्त्रियें तो उनकी दो चार पत्ते कमर में लटकाए रहती हैं, पर मर्द नंगे मादर्ज़ाद जंगलों में फिरा करते हैं, घर बार बिलकुल नहीं रखते नाक उनकी चिपटी फैली हुई होंठ मोटे बाल अकसर घूंघरवाले, केवल बन के कंदमूल और फल फूल अथवा शिकार से गुज़ारा करते हैं। गोमांस तक खाते हैं। अपनी देवी के साम्हने आदमी का बल चढ़ाते हैं। उनमें से जो लोग बस्तियों के पास बसगए हैं वे खेती बारी और नौकरी चाकरी भी करते हैं, और अब आदमी बनते चले हैं। ज़मीन वहां की बलंद बीहड़ और अकसर पथरीली है, पहाड़ी नाले खोले और घाटे हर मुक़ाम पर हैं। आब हवा जंगलों की ख़राब, पानी उसमें कहीं कहीं बहुत कम मिलता है। लोहा

इस इलाक़े में कई जगह से निकलता है, और गेरूकी भी खान है। किसी ज़माने में बैरागढ़ की खान से हीरा निकलता था, पर अब बंद हो गया। कहीं कहीं नदियों का बालू धोने से कुछ सोना भी निकल आया करताहै, लेकिन निहायत कम। निदान इस बेआईनी इलाक़े में भी आशाम और छोटे नागपुर की तरह एक कमिश्नर रहताहै, और उसके तहत में पांच डिपुटी कमिश्नर आईनी ज़िले के कलक्टर की तरह पांच ज़िलों में काम करते हैं। पहला कलकत्ते से ६७७ मील पश्चिम २१ अंश ९ कला उत्तर अक्षांस और ७९ अंश ११ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से १००० फ़ुट बलंद सदर मुक़ाम नागपुर में रहता है। गर्मी की शिद्दत वहां बहुत नहीं होती। आदमी शहर में १४०००० बसते हैं, लेकिन गली कूंचे तंग और निहायत ग़लीज़, बरसात में कीचड़ बड़ी हो जाती है, मकान देखने लाइक़ कोई नहीं, जिधर देखो झोंपड़ेही झोंपड़े दिखाई देते हैं। शहर के गिर्दनवाह में दरख़्त बिलकुल नहीं, पटपर मैदान पड़ा है। दक्षिण तरफ़ एक छोटा सा नाला नाग नदी नाम बहता है, इसी से शायद इस शहर का नाम नागपुर रहा। छावनी पासही सीताबलदी की पहाड़ी पर है। दूसरा नागपुर से १५० मील पूर्व रायपुर में रहता है। वहां से १०० मील उत्तर सतपुड़ा पहाड़ के ऊपर जहां से सोन और नर्मदा निकली हैं एक बड़े भारी जंगल में अमरकंटक महादेव का मंदिर हिंदू का तीर्थ है। तीसरा नागपुर से ४० मील पूर्व्व बान गंगा के दहने कनारे भंडारे में रहता है। चौथा नागपुर से ८० मील उत्तर चिंदवारे में रहता है। और पांचवां नागपुर से १०५ मील दक्षिण अग्निकोन को ज़रा झुकता बरदा नदी के बांएं कनारे से ५ मील के तफ़ावत पर चांदा में रहता है।

पंजाब की लेफ्टिनेंट गवर्नरी

अब उन जिलों का बयान किया जाता है जो पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर के तहत में हैं।—१—दिल्ली बलंदशहर के वायुकोन। बादशाही जमाने में इस नाम का एक सूबा गिना जाता था, कि जिसकी हद सूबे लाहौर से मिलती थी। शहर दिल्लीका, जिसे बहुधा शाहजहानाबाद कहते हैं, लाहौर से २५० मील अग्निकोन को जमना के दहने कनारे बसा है। युधिष्ठिर महाराज ने इस जगह इंद्रप्रस्थ बसाया था, और तब से वह स्थान बराबर हिंदुस्तान की राजधानी रहा। जिसने इस देश पर चढ़ाव किया पहले उसी के तोड़ने पर मन दिया, जो बादशाह वहां आया उसने पुराने शहर को तोड़ कर नया अपने नाम से आबाद किया। अब जो शहर मौजूद है अकबर के पोते शाहजहां बादशाह का बसाया है, और इसी लिये उसके नाम से पुकारा जाता है। चारों तरफ़ संगीन ६३६४ गज़ शाहजहानी शहरपनाह है, तेरह दर्वाजे, सोलह खिड़कियां, तीन उन में बंद, बाज़ार क़िले से दिल्ली दर्वाज़े तक तीस गज़ चौड़ा, और लाहौरी दर्वाज़े तक चालीस गज़ चौड़ा होवेगा। नहर जमना की गली गली घूमी है। क़िला लाल पत्थर का ऐन जमना के कनारे बहुत सुंदर बना है। करोड़ रुपया उसकी तैयारीमें खर्चहुआ बतलाते हैं। और उसके अंदर दीवानआम दीवानखास इत्यादि कई मकान संगमर्मर के बहुत उमदा बने हैं। यह वही मकानहै जिस में किसी समय तख़्त ताऊस रखा जाताथा, टवर्नियर साहिब अपनी किताबमें लिखते हैं, कि शाहजहां ने हुक्म दिया था, इस दीवानखास के तमाम दर दीवारों पर अंगूर के गुच्छे बनाए जावें, इस ढब से, कि कच्चे अंगूर की जगह पन्ना और पक्के की जगह एक एक लाल संगमर्मर में जड़ देवें, बरन

एक ताक़ इस तरह का बनकर तैयार भी हो गया था, परंतु फिर औरंगज़ेब का इख़्तियार हो जाने से वह काम जाता रहा। अब यह मकान बेमरम्मत है, जिन हौज़ों में गुलाब और बेदमुश्क भरा जाता था, उन में अब काई जम गई है, और जहां मख़मल और कमख़ाब के फ़र्श पर मोतियों की झालर के शमियाने खड़े होते थे, वहां अब कोई झाड़ू भी नहीं देता, बरन सैकड़ों मन कबूतर और अबाबीलों की बीटें पड़ी हैं। कहते हैं कि औरंगज़ेब के वक़्त में यहां बीस लाख आदमी बसते थे। नादिरशाह ने सन् १७३९ में क़तलआम किया, और फिर मरहठों ने तो इसे ऐसा तबाह कर डाला, कि सन् १८०३ में जब लार्डलेक ने उन लोगों से छीना तो बिलकुल उजाड़ पाया, जो वहां आया सो लूटने ही को आया था, केवल एक यह लेक साहिब उसे लूटमार से बचाने के लिये पहुंचे। सन् १८५४ में १५२००० आदमी उस में गिने गये थे, और हिंदुस्तान के पहले दर्जे के शहरों में गिना जाता है। जामेमस्जिद, जिस में दस लाख रुपया लगा है, इस शहर की सी हिंदुस्तान में तो क्या शायद सारे जहान में इस शान की न निकलेगी। तूल उसका २६१ फ़ुट, कुरसी ३५ ज़ीनों की, मीनार १३० फ़ुट बलंद, इन मीनारों पर चढ़ने से सारा शहर थाली की तरह दिखलाई देता है। हरसुखराय काग़ज़ी का बनाया हुआ जैन मंदिर भी देखने लाइक़ है, संगमर्मर और पच्चीकारी का काम किया है। शहर के बाहर दस दस कोस तक हर तरफ़ खंड़हर और मक़बरे पड़े हैं, खंड़हर कैसे कि जब तैयार हुए होंगे लाखों बरन बहुतों में करोड़ों रुपये लगे होंगे, क़बरें किनकी कि जिन की अर्दली में लाखों सवार दौड़ते होंगे, जो रत्नजड़ित चिलमचियों में पिशाब करते थे अब उन की क़बरों पर कुत्ते मूतते हैं, जो सारे

हिन्दुस्तान में न समाते थे सो अब डेढ़ गज ज़मीन में सोए हैं, जिन-पर मक्खी नहीं बैठने पाती थी उन्हें अब दीमक चाटते हैं। निदान कोड़ियों बादशाह इस शहर के आस पास मिट्टी में दबे पड़े हैं॥

दोहा

इत तुग़लक़ इत इलतमिश इतहि मुहम्मदशाह।
इतहि सिकन्दर सारखे बहुतेरे नर नाह॥ १॥
जो न समाए बाहु बल अटक कटक के बीच।
तीन हाथ धरती तले मीच कियो अब नीच॥ २॥

शहर से अढ़ाई कोस बाहर अकबर के बाप हुमायूं का मक़बरा, जिसकी तैयारी में पन्द्रह लाख रुपया लगा था, और निज़ामुद्दीन औलिया की दर्गाह, अब भी देखने लाइक़ है। शहर से सात कोस पर नैर्ऋतकोन को कुतब साहिब की दर्गाह है, वहां झाल का बंध बांधकर उस पर से चादर झरने नहर और फ़व्वारे निकाले हैं, बरसात में सैर की सुहावनी जगह है, फूलवालों का मेला मशहूर है, वहां शहाबुद्दीनग़ोरी ने महाराज पृथीराज का मंदिर तोड़कर उस के मसाले से कुव्वतुल्इसलाम नाम एक मस्जिद बनानी चाही थी, उमर उसकी पूरी हो गई और मस्जिद अधूड़ी ही रही॥

दोहा

जो आए नूतन रचे घर गढ़ नगर समाज।
पूरे काहू ने नहीं किये जगत के काज॥ १॥

मंदिर की भी कुछ दीवारें जो टूटने से बचीं अब तक उस में खड़ी हैं, पर मूरतों के आकार बिलकुल खंडित कर दिए। यदि यह मस्जिद तैयार होजाती, शायद इतनी बड़ी दुनिया भर में दूसरी न निकलती, और उसके बीच एक कीली अष्टधात की, जिस पर कुछ

पुराने हिन्दी हर्फ़ खुदे हुए हैं सवा पांच फुट मोटी और बाईस फुट ऊंची गड़ी है, मिहरावों पर मसजिद के, जो साठ फुट ऊंची होवेंगी, इस खूबी और सफ़ाई के साथ संगतराशी की है, कि शायद मुहर खोदने में भी कोई न करे, और एक मीनार उस मसजिद का, जो फिर पीछे से शमशुद्दीन इलतमिश ने बनवाया था, २४२ फ़ुट ऊंचा, जिस में चढ़ने के लिये ३७८ सीढ़ियां लगी हैं, अब तक खड़ा है। यह मीनार जिसका तीन दर्जा तो लाल पत्थर और चौथा संगमर्मर का बनाया है, और हर दर्जों पर क़ुरान की आयत बहुत खूबसूरती से खोदी हैं, निहायत खूबसूरत बना है। इतना ऊंचा और साथ ही ऐसा खूबसूरत शायद दूसरा मीनार दुनियां में न निकलेगा। शहर के पास एक मुक़ाम पर जिसे लोग जंतर मंतर कहते हैं, ग्रह नक्षत्रादिकों के देखने के लिये राजा जयसिंह के बनवाये कुछ यंत्र अब तक मौजूद हैं। शहर से बाहर पास ही एक खंड़हरे में, जिसे लोग फ़ीरोजशाह का कोटला कहते हैं, ४८ फ़ुट ऊंची एक ही पत्थर की एक लाट खड़ी है, और उस पर भी वही हर्फ़ और वही बातें खुदी हैं, जो इलाहाबाद की लाट पर हैं। -२-गुड़गांवां दिल्ली के नैर्ऋतकोन को। सदर मुक़ाम गुड़गांवां लाहौर से २६० मील अग्निकोन को है। —३—झझर गुड़गांवें के उत्तर। सदर मुक़ाम झझर लाहौर से २४० मील अग्निकोन को जरा दक्षिण की तरफ़ झुकता हुआ है। —४—रोहतक गुड़गांवें के उत्तर। सदर मुक़ाम रोहतक लाहौर से २२५ मील अग्निकोन दक्षिण को झुकता हुआ, शहर पुराना और टूटा फूटा है। —५—हिसार अथवा हरियाना रोहतक से पश्चिम वायुकोन को झुकता। गाय भैंस उस जिले में अच्छी होती हैं, दूध बहुत देती हैं। एक साहिब ने वहां एक बैल

सवा चार हाथ ऊंचा नापा था, और वह दस मन पानी की पखाल उठाता था। बस्ती बहुधा जाट गूजरों की, पानी कम, सत्तर अस्सी हाथ गहरे कूए खोदने पड़ते हैं। सदर मुक़ाम इसका हिसार लाहौर से २०० मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता हुआ है, किसी वक़्त में वह बहुत बड़ा शहर था, अब उस में दस हज़ार आदमी भी नहीं बस्ते। फ़ीरोज़शाह के महल के खंड़हरे जिस जगह खड़े हैं, वह उस समय शहर का मध्य गिना जाता था। उसी के पास लोहे की एक कीली भी गड़ी है।--६-सिरसा हिसार के वायुकोन। सदर मुक़ाम सिरसा लाहौर से १५० मील दक्षिण है।--७-पानीपत रोहतक के वायुकोन। सदर मुक़ाम पानीपत लाहौर से २२५ मील अग्निकोन को बसा है। वहां बूअलीक़लंदर की दर्गाह है, जिस में कसौटी के खंभे लगे हैं। इस जगह में दो लड़ाइयां बहुत बड़ी बड़ी हुई हैं, पहली सन् १५२५ में अकबर के दादा बाबर और इबराहीम लोदी के बीच, और दूसरी सन् १७६१ में अहमदशाह दुर्रानी और सदाशिवराव भाऊ के बीच, कि जिस से पीछे फिर इतनी फ़ौज किसी लड़ाई के मैदान में अब तक इस मुल्क में इकट्ठी नहीं हुई। कहते हैं कि अस्सी हज़ार सवार पियादे तो अहमदशाह की तरफ़ थे, और पचासी हज़ार मरहठों की तरफ़, और बहीर तो गिनती से बाहर थी, मरहठों के लशकर में सब मिलाकर कम से कम पांच लाख आदमियों की भीड़ भाड़ होगी। पानीपत से २४ मील उत्तर करनाल बीस हज़ार आदमी की बस्ती जमना की नहर के कनारे है, छावनी वहां की मसिद्ध थी पर अब बिलकुल टूटगई। -८-थानेसर सहारनपुर के पश्चिम। सदर मुक़ाम थानेसर, जिसे संस्कृत में स्थाणुतीर्थ और कुरुक्षेत्र कहते हैं, लाहौर से १९० मील

अग्निकोन को सरस्वती के बांएं तीर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है, इसी जगह कौरव पांडव जूझे थे, और महाभारत हुई थी। सरस्वती में अब पानी बहुत कम रहता है। शेख़चुहिली का, जिसे लोग शेख़-चिल्ली कहते हैं, यहां मक़बरा है। कहते हैं कि उस के दर्वाजे पर नीचे तो यह लिखा था कि खुदा के वास्ते ज़रा ऊपर देख, और ऊपर यह लिखा था ऐ बेवक़ूफ़ क्या देखता है, पर अब तो टूटा फूटा सा पड़ा है, यह बात वहां कहीं दिखलाई नहीं देती।–९–अम्बाला थानेसर के उत्तर। सदर मुक़ाम अम्बाला लाहौर से १६० मील अग्निकोन पूर्व को झुकता बड़ी छावनी की जगह है।–१०–लुधियाना अम्बाले के वायुकोन। सदर मुक़ाम लुधियाना लाहौर से १००मील अग्निकोन पूर्व को झुकता सतलज की एक धारा के बांएं कनारे पर बसा है। यहां भी पशमीने का काम बनता है।–११–फ़ीरोज़पुर लुधियाने से पश्चिम। सदर मुक़ाम फ़ीरोज़पुर लाहौर से ४६ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता सतलज के बांएं कनारे पर बड़ी छावनी की जगह है। क़िला भी एक कच्चा पर दुश्मन का दांत खट्टा करने को बहुत पक्का सरकार ने बनवाया है। इन ऊपर लिखे हुए चारों ज़िलों में दरख़्त बहुत कम हैं, कोसों तक सिवाय आक और झड़बेरी के दूसरा कोई पेड़ दिखलाई नहीं देता। फ़ीरोज़पुर की गर्द मशहूर है छनी हुई राख की तरह उड़ती है आंधी में क़यामत का नमूना दिखलाती है। बस्ती बहुधा सिखों की है। पश्चिम के बादशाहों की चढ़ाई और नित की लड़ाई भिड़ाई से यह देश निपट उजाड़ होगया था, पर अब सरकार के साए में फिर आबाद होता चला है। इन ज़िलों में भी पंजाब की तरह कूए में रहट लगा कर पानी निकालते हैं, मोट बैलों से नहीं खिचवाते।–१२–शिमला

हिमालय के पहाड़ों में अम्बाले से नब्बे मील उत्तर पूर्व को झुकता हुआ। लोहा इस ज़िले में कोटखाई के परगने के दर्मियान बहुत निकलता है। सदर मुक़ाम शिमला लाहौर से १५० मील पूर्व अग्निकोन को झुकता हुआ समुद्र से सात हज़ार दो सौ फ़ुट ऊंचे पहाड़ पर बसा है। अम्बाले से पैंतालीस मील पर पहाड़ की चढ़ाई शुरू होती है, वहां पहाड़ की जड़ में कालका नाम एक छोटी सी बस्ती है, बाज़ार गोदाम इत्यादि जगहें बनी हैं, साहिब लोग गाड़ी बग्गी ऊंट पालकी इत्यादि इसी जगह छोड़ देते हैं, और यहां से खच्चर और पहाड़ी कुलियों पर बोझा लादकर घोड़े पर अथवा झम्पान में, कि जिसे पहाड़ी तामजान कहना चाहिये, सवार होजाते हैं, पुरानी सड़क में तो चढ़ाव उतार बहुत पड़ता था, पर अब जो नई सड़क निकली है उस पर लोग कालका से शिमला तक सरपट घोड़ा दौड़ाए चले जाते हैं, बरन अब इस राह से वहां ऊंट और गाड़ी छकड़े भी आने जाने लगे हैं। यह सड़क जब तक रहेगी, वलियम इडवार्ड साहिब का नाम क़ाइम रक्खेगी, उन्हीं की तजवीज़ से यह सड़क बनाई गई है, और उन्हीं के बाइस से यह राह निकली है। पांच पांच सात सात कोस पर डाक बंगले बने हैं, और पानी के झरने क़दम क़दम पर झरते हैं। कालका से पुरानी सड़क की राह नौ मील कसौली चढ़कर, जो समुद्र से सात हज़ार फ़ुट ऊंचा है और जहां गोरों की पलटन रहती है, फिर माय नौ ही मील सबाठू को उतरना पड़ता है। सबाठू समुद्र से ४२०० फ़ुट ऊंचा है, वहां भी गोरे सिपाहियों की छावनी है, और शिमला की कलक्टरी का ख़ज़ाना रहता है। सबाठू से शिमला तक फिर बराबर सत्ताईस मील उतार चढ़ाव है। गर्मी के दिनों में जब कालका में लूएं चलती

हैं, और पंखे से भी जान नहीं बचती, तब दो घंटे की राह कसौली चढ़कर ऊनी और रुईदार कपड़े पहने पड़ते हैं, और आग तापते हैं। हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ भी वहां से नज़र आते हैं। शिमला के पहाड़ पर प्राय तीन सौ कोठियां केलों के जंगलों में, जिसे फ़ारसी वाले सनोबर कहते हैं साहब लोगों के रहने के वास्ते बहुत उमदा बनी हैं। जाड़ों में शिमला ख़ाली रहता है, पर गर्मियों में चार पांच सौ अंगरेजों की भीड़ भाड़ हो जाती है। चीज़ें ऐश की सब यहां मयस्सर, आबहवा की सफ़ाई स्वर्ग से भी शायद कुछ बढ़कर। गर्मी में वहां इतनी सर्दी रहती है, कि जितनी मैदान में पूस माघ के दर्मियान; और जाड़ों में तो वहां सड़कों पर हाथ हाथ दो दो हाथ बर्फ़ पड़ जाती है। बर्फ़ गिरने के वक्त अजब कैफ़ियत होती है, जाड़ों में जिस तरह कुहरा छाता है, उसी तरह पहले तो अंधेरा सा होजाता है, और फिर जैसे रुई के छोटे छोटे फाहे धुनते वक्त उड़ते हैं, उसी तरह बर्फ़ भी गिरने लगती है, यहां तक कि सारे पहाड़ दरख़्त और मकान सफ़ेद होजाते हैं, मानो किसी ने आसमान से सैकड़ों मन कंद या पीसा हुआ सफ़ेद नमक छिड़क दिया है, उस वक्त उस में चलने से बालू की तरह पांव धस्ता है, पर कुछ देर बाद जब वह जमकर पाला होजाती है, तो फिर पत्थर भी उस के आगे नर्म्म है, और चलनेवालों का पैर खूबही फिसलता है, बरन घोड़े के सवारों को तो जान जोखों है। निदान शिमला भी इस हिमालय के पहाड़ में एक अतिरम्य और मनोहर स्थान है।—१३—जालंधर लुधियाने के उत्तर पश्चिम को झुकता हुआ सतलज पार। पानी इस ज़िले में ज़मीन से नज़दीक है, अकसर जगह गज़ भर खोदने से निकल आता है। सदर मुक़ाम जालंधर

लाहौर से ८० मील पूर्व बसा है।—१४—हुशयारपुर जालंधर के पूर्व। सदर मुक़ाम हुशयारपुर लाहौर से ९५ मील पूर्व है।—१५—कांगड़ा हुशयारपुर के ईशानकोन। यह ज़िला बिलकुल हिमालय के पहाड़ों में बसा है। घेघे की बीमारी यहां अकसर होती है। सदर मुक़ाम कांगड़ा, जिसे नगर कोट भी कहते हैं, लाहौर से १३० मील पूर्व ईशानकोन को झुकता एक छोटे से पहाड़ पर बसा है। क़िला वहां का मज़बूती में प्रसिद्ध है, उसके आस पास पर्वतस्थली ने फैलाव ख़ूब पाया है, और पानी के सोते अनगिनत जारी हैं इसलिये धान बहुत उपजता है। महामाया का मंदिर, जिसे वहां देवी का भवन कहते हैं, हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है। तीन चार कोसकी चढ़ाई चढ़कर धर्म्मशाला की छावनी में साहिब लोगों के बंगले हैं, वहां बर्फ़ का पहाड़ बहुत समीप है, गर्मी में भी कांगड़ेवालों को बर्फ़ लेने के वास्ते सात आठ कोस से अधिक नहीं जाना पड़ता। कांगड़े से दो मंज़िल बायुकोन की तरफ़ कोहिस्तान में समुद्र से दो हज़ार फ़ुट ऊंचा नूरपुर बसा है, शालबाफ़ों की दूकान हैं, पर थोड़ी और शाल भी अच्छी नहीं बनती, कांगड़े से ७० मील ईशानकोन पूर्ब्ब को झुकता मणिकर्णिका तप्तकुंड है, उस कुंडका पानी इस क़दर गर्म रहता है, कि जो चावल रूमाल में बांधकर उसमें डाल दो, देखते ही देखते पक पकाकर भात होजाता है। कांगड़े से अनुमान पचीस मील इधर, व्यास नदी के सात मील पार, ज्वालामुखी हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है। शिवालय और देवस्थान वहां कई पक्के बने हैं और कुंडभी निर्म्मल पहाड़ी जल से सुथरे भरे हैं। ज्वालाजीका मंदिर ऐन पहाड़ की जड़में है, उसके कलस और गुम्बज़ पर बिलकुल सुनहरी मुलम्मा किया है। दर्वाज़े पर चांदी के पत्र जड़े हैं, और सभा मंडप में नय-

पाल के राजा का चढ़ाया जिस पर उसका नाम भी खुदा हुआ है एक बड़ा सा घंटा लटकता है। मंदिर के अंदर बीचों बीच में एक कुंड तीन हाथ लंबा डेढ़ हाथ चौड़ा और दो हाथ गहरा बना है, उस कुंड के अंदर वायुकोन की तरफ़ चार पांच अंगुल का चौड़ा एक मोखा है, उसी मोखे के अंदर से आगकी ज्वाला प्राय हाथ भर ऊंची निकलती है, सिवाय इस मोखे के उस कुंडमें आग निकलने के और भी कई छोटे छोटे सूराख़ हैं। कुंड से बाहर उसी रुख़को मंदिर की दीवार के कोने में भी एक मोखा है, उसमें से भी हाथ भर ऊंची एक ज्वाला निकलती है, इसको वहांवाले हिंगलाज की लाट पुकारते हैं। पश्चिम की दीवार में चांदी से मढ़ा एक छोटा सा आला है, उस में भी छोटे छोटे दीए की टेम की तरह आग निकलने के सूराख़ हैं। उत्तर दीवार की जड़में भी इस तरह के कई छेद हैं, पर हिंगलाज की लाट के सिवाय बाक़ी सभों का कुछ ठिकाना नहीं है, कभी कभी बंद भी हो जाती हैं और किसी समय में थोड़े और किसी समय में अधिक तेज़ के साथ जलती हैं। अकसर जब किसी सूराख़ में से आग का निकलना बन्द होजाता है, और उसके मुंह पर जलती हुई बत्ती ले जाते हैं, तो उस में से फिर आग की ज्वाला निकलने लगती है, जैसे किसी झरोखे की राह से हवाकी झकोर आया करती है। उसी तरह इन मोखों से आग की लाटें निकला करती हैं। क्या महिमा है सर्व शक्तिमान जगदीश्वर की, कि बिना ईंधन आग पड़ी दहकती है, और बिना तेल बत्ती दीपक जला करते हैं। मंदिर के बाहर लेकिन उसके हाते के अंदर उसी रुख़ को अर्थात् वायुकोन की तरफ़ एक हाथ भर लंबा चौड़ा छोटा सा पानी का कुंड है, पहाड़ से जो नहर आई है वह उसी कुंड में

होकर बहती है, वहांवालों ने उसका नाम गोरखडिब्बी रखा है, छूने में पानी उस कुंड के भीतर शोरे की तरह ठंढा, पर देखने में अदहन सा खौलता हुआ, और यदि उसके पानी को ज़रा हाथ से हिलाकर एक जलती हुई बत्ती उसके पास ले जाओ, तो फ़ौरन् रंजक की तरह एक आग का शोला सा उड़ जाता है। निदान इन सब बातों से साफ़ मालूम होता है, कि यह आग, अथवा जलती हुई हवा, गंधक हरिताल इत्यादि किसी धातु की खान में उत्पन्न होकर वायुकोन से पहाड़ के नीचे ही नीचे जमीन के अंदर चली आती है, जहां कहीं शिगाफ़ या दरार पाई प्रगट होती हुई कुंड में आकर बिलकुल तमाम हो जाती है। गोरखडिब्बी में पानी के खौलने का भी यही सबब है, कि उस आग का रास्ता पानी के नीचे से गुज़रता है, पानी बहता हुआ है इस कारन गर्म नहीं होता, यदि पानी न होता तो वहां ज्वाला प्रगट होती। मंदिर के अंदर भी कुंड के उत्तर और पश्चिम तरफ़, जो उस जलती हुई हवा के आने का रास्ता है, उस में फ़र्श के पत्थर तपा करते हैं, और दक्षिण और पूर्व के सदा ठंढे रहते हैं। अंगरेज़ी में इस तरह की हवा को जो सदा जलती रहती है हैड्रोजनगैस कहते हैं। जिन्हों ने किमिस्ट्री अर्थात् रसायन विद्या पढ़ी है वे इसके भेद से खूब वाक़िफ़ हैं। यदि किसी शीशी के अंदर थोड़ा सा लोहचुन रखकर उस पर पानी में घुला हुआ सल्फ्युरिकएसिड अर्थात् गंधक का तेज़ाब डालो, तो हैड्रोजनगैस बन जावेगा, और उस शीशी के अंदर से वही चीज़ निकलेगी, कि जो ज्वालाजी में कुंड के मोखे से निकलती है। जैसे वहां पंडे लोग ज्वाला ठंढी होने पर बत्ती दिखला देते हैं, उसी तरह यदि तुम भी उस शीशी के मुंह पर जलती हुई बत्ती ले जाओ, तो जिस तौर पर

ज्वालामुखी में सूराखों से आग की लाटें निकलती हैं, उस शीशी के मुंह पर भी आग जलने लगेगी। बाजे आदमी ऐसी चीज़ें देखकर बड़ा अचरज मानते हैं, बरन उनको सृष्टकर्ता ईश्वर जानकर उनकी पूजा करते हैं, और बाज़े जो उनके भेद से वाक़िफ़ हैं उन्हें भी औरों की तरह स्वाभाविक वस्तु समझकर सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की अद्भुत अपार रचना पर बलिहारी जाते हैं, और उस जगह उसी के ध्यान में मग्न होकर उसी की पूजा करते हैं।–१६–अमृतसर जालंधर के पश्चिम उत्तर को झुकता हुआ व्यास नदी के पार। सदर मुक़ाम अमृतसर सिक्खों का तीर्थ लाहौर से ३५ मील पूर्व ईशानकोन को झुकता बड़े व्यौपार की जगह है, लाख आदमी से ऊपर बसते हैं। शहर के बीच एक सुंदर स्वच्छ जल से भरा हुआ तालाब अमृतसर नाम १३५ क़दम लंबा और इतना ही चौड़ा पक्का बनाहै, और उस तालाब के बीच एक छोटे से संगमर्मर के मकान में, जिसके गुम्बज़ पर सुनहरी मुलम्मा हुआ है, ग्रंथ साहिब अर्थात् सिक्खों के मत की पुस्तक गुरु गोविंदसिंह के हाथ का लिखा रखा है। पहले इस शहर का नाम चक था, जब से गुरु रामदास ने यह तालाब बनाया तब से अमृतसर रहा। शालबाफ़ों की दूकानें बहुत हैं, और सरकारी अमल्दारी के सबब महसूल न लगने से माल पशमीने का बहुधा इसी जगहसे दिसावरों को जाता है। पास ही गोबिंदगढ़ का मज़बूत क़िला बना है, रंजीतसिंह का ख़ज़ाना उसी में रहता था।–१७– बटाला अमृतसर के ईशानकोन। सदर मुक़ाम गुरदासपुर लाहौर से ७५ मील ईशानकोन पूर्व को झुकता है। –१८– हवां लाहौर अमृतसर के पश्चिम दक्षिण को झुकता। बादशाही ज़माने में यही नाम इस सारे सूबे का था। शहर लाहौर,

अथवा लहावर रावी के बांएं कनारे पर समुद्र से ९०० फुट ऊंचा कलकत्ते से ११०० मील और सड़क की राह १३५२ मील (१) वायुकोन को सात मील के घेरे में पक्की शहरपनाह के अंदर बसा है। हिन्दू इस शहर को रामचंद्र के पुत्र लव का बसाया और असली नाम उसका लवकोट बतलाते हैं। बसती उस में अनुमान लाख आदमियों की होगी। दिल्ली की तरह इस शहर के गिर्दनवाह में भी बहुत से खंड़हर और मक़बरे पड़े हैं। शहर से दो मील पर रावी पार शाहदरे में अकबर के बेटे जहांगीर का मक़बरा देखने लाइक़ है। शहर से तीन मील ईशानकोन को बादशाही समय का बना हुआ ४ मील के घेरे में शालामार बाग़ है, रंजीतसिंह को इमारत का शौक़ न था मरम्मत के बदल और भी उसके पत्थर उखाड़कर अमृतसर भिजवा दिये, अब सरकार की तरफ़ से उसकी सफ़ाई हुई है। इस बाग़ में ४५० फव्वारे छुटते हैं, और कई हौज़ संगमर्मर के बने हैं, और उसके पानी के लिये सवा सौ मील से नहर काट लाये हैं। पंजाब के लेफ़्टिनेंट गवर्नर इसी जगह रहते हैं, और पास ही मीयामीर में छावनी भी बहुत बड़ी है।—१९—शैख़ूपुरा लाहौर के पश्चिम रावी पार। सदर मुक़ाम गूजरांवाला लाहौर से ४० मील उत्तर वायुकोन को झुकता हुआ रंजीतसिंह के पुरखाओं की जन्मभूमि है।—२०—स्यालकोट शैख़ूपुरे के उत्तर। सदर मुक़ाम स्यालकोट लाहौर से ६५ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता हुआ चनाब नदी के बांएं कनारे ५ मील हटकर बसा है।—२१—गुजरात स्यालकोट

(१) नक़्शे की नाप से सड़क की नाप में फ़र्क़ पड़ता है, क्योंकि सड़कें सीधी नहीं रहतीं घूम फिर कर जाती हैं। देखो नक़्शे की नाप से हमने मुंगेर को २५० मील कलकत्ते से लिखा है, लेकिन सड़क की राह जाओ तो ३०४ मील पड़ेगा॥

के पश्चिम चनाब पार। सदर मुक़ाम गुजरात लाहौर से ७५ मील उत्तर चनाब के दहने कनारे अढ़ाई कोस के तफ़ावत पर शहरपनाह के अंदर बसा है।–२२–शाहपुर गुजरात के नैर्ऋतकोन। सदर मुक़ाम शाहपुर लाहौर से १२५ मील पश्चिम वायुकोन को झुकता झेलम नदी के बाएं कनारे है। इस जिले को शैख़ूपुरे के साथ जिसका जिकर ऊपर लिखा गया शास्त्र में मद्र देश कहा है।–२३–पिंडदादनख़ां गुजरात के पश्चिम। सदर मुक़ाम झेलम लाहौर से १०० मील वायुकोन उत्तर को झुकता झेलम नदी के दहने कनारे है। मंजिल एक पर पहाड़ में नमक की खान है। छ मील वायुकोन को सवा कोस लंबा रुहतास का मज़बूत क़िला टूटा हुआ बेमरम्मत पड़ा है, दीवार उसकी ३० फ़ुट चौड़ी संगीन है।–२४–रावलपिंडी पिंडदादनख़ां के उत्तर। सदर मुक़ाम रावलपिंडी लाहौर से १६० मील उत्तर वायुकोन को झुकता शहरपनाह के अंदर बसा है। रावलपिंडी से ६० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता अटक का मशहूर क़िला ८०० गज़ लंबा ४०० गज़ चौड़ा सिंध के बाएं कनारे एक पहाड़ी पर मज़बूत बना है, कोई इसे अटक बनारस भी कहता है, क़िला देखने में बहुत अच्छा बना है, पर उसके पास एक पहाड़ उस्से ऊंचा है, इस कारण उसकी मज़बूती में ख़लल पड़ गया, क्योंकि वह उस पहाड़ की मार में है। रावलपिंडी से अग्निकोन को अनुमान १५ मील पर मानिकयाला गांव के पास बौध मत का एक देहगोप सत्तर फ़ुट ऊंचा ३२५ फ़ुट के घेरे में उसी तरह का बना है जैसा काशी में सारनाथ के नज़दीक मौजूद है, और इसके सिवाय उस गिर्दनवाह में और भी पंदरह देहगोप हैं, जेम्स प्रिंसिप साहिब की तरह जेनरल वंतूरा और अबीतबेला ने उन में से दो

देहगोप खुदवाये थे, तो उनके अन्दर से बनारस के देहगोप की तरह राख और हड्डी निकली, और उसके साथ कुछ अशरफ़ी रुपये और पैसे भी मिले, और उन में से कई रुपयों पर रूम के बड़े बादशाह जूलियस् क़ैसर का नाम खुदा था। -२५-पाकपट्टन लाहौर के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता सतलज और रावी के बीच में है। सदर मुक़ाम फ़तेहपुर गूगेरा लाहौर से ८० मील नैर्ऋतकोन रावी के बांएं कनारे है। पाकपट्टन वहां से ४५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता सतलज के दहने कनारे छ मील के तफ़ावत पर बसा है, उस में शेख़ फ़रीद की दरगाह है। -२६-मुल्तान पाकपट्टन के पश्चिम। इस जिले के दक्षिण और पूर्व भाग में रेगिस्तान बहुत है। बादशाही अमल्दारी में उसी नाम के सूबे की राजधानी था, जिसकी हद ठट्ठे और कच्छ तक गिनी जाती थी। सदर मुक़ाम मुल्तान लाहौर से २०० मील नैर्ऋतकोन को चनाब के बांएं कनारे से दो कोस पर चौदह पंदरह हाथ ऊंची शहर पनाह के अंदर बसा है। क़िला उसका मज़बूती में मशहूर है। शेख़ बहाउद्दीन जकरिया का वहां मक़बरा है। रेशमी कपड़े खेस दाराई इत्यादि वहां अच्छे बनते हैं, क़ालीन भी बुने जाते हैं। ज़मीन शहर के गिर्दनवाह में उपजाऊ है।—२७—झंग मुल्तान के वायुकोन। सदर मुक़ाम झंग अथवा झंग सियाल लाहौर से ११५ मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता चनाब के बांएं कनारे पर कोस एक के फ़ासिले से बसा है।—२८—खानगढ़ मुल्तान के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता। सदर मुक़ाम खानगढ़ लाहौर से २२५ मील नैर्ऋतकोन है।-२९-लैया खानगढ़ के उत्तर। सदर मुक़ाम लैया लाहौर से २०० पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता सिंधु नदी के बांएं कनारे पर पांच कोस के

फ़ासिले से बसा है। बरसात में जब दरिया बढ़ता है बारह बारह कोस तक पानी फैल जाता है। बहुत लोग जो दरिया के समीप रहते हैं इसी डर से आठ दस हाथ ऊंचे लट्ठे गाड़कर उस पर अपने छान छप्पर बनाते हैं। शास्त्र में इस का नाम सिंधुसौवीर लिखा है। —३०—देराग़ाज़ीखां खानगढ़ के नैर्ऋतकोन सिंधु पार। इस ज़िलेमें मुसलमानों की बस्ती बहुत है। सदर मुक़ाम देराग़ाज़ीखां लाहौर से २३० मील नैर्ऋतकोनको सिंधु के दहने कनारे पर बसाहै।—३१— देराइसमाईलखां देरैग़ाज़ीखां के उत्तर। इस जिले में बलूच और पठान बहुत और हिंदू अति अल्प। सदर मुक़ाम देराइसमाईलखां लाहौर से २१५ मील पश्चिम सिंधु के दहने कनारे खजूर के दरख़्तों में बसा है। इसी जिले में पिशौर से सैंतीस कोस इधर सिंधु के कनारे सेंधे नमक का पहाड़ है, कि जो अफ़ग़ानिस्तान में सफ़ेद कोह से निकलकर झेलम के कनारे तक चला आया है। जगह देखने योग्य है, दोनों तरफ़ पहाड़ आजाने के कारन दरया बहुत तंग और गहरा हो गया है, धरती बिलकुल लाल, पहाड़ नमक का जिसके नीचे दरया बहता है गुलाबी बिल्लौर सा चमकता, दहने तट पर पहाड़ के ऊपर कालाबाग़ बसा हुआ, नमक के डले खान के खुदे हुए, मनों वज़न में एक एक, ढेर के ढेर लगे रहते हैं, और व्यौपारियों के ऊंट क़तार की क़तार लदे हुए दिखाई देते हैं।—३२— हज़ारा रावलपिंडी के वायुकोन पहाड़ों के अंदर। सदर मुक़ाम हज़ारा लाहौर से १८० मील उत्तर वायुकोन को झुकता हुआ है। —३३—पिशौर हज़ारे के पश्चिम सिंधुपार। यह इस तरफ़ हिंदुस्तान का सब से परला ज़िला है, इस से आगे खैबर घाटे के पार जो शहर से १५ मील है अफ़ग़ानिस्तान का मुल्क शुरू होता है। इस

के चारों तरफ़ पहाड़ है, और बीच में मैदान। मुसल्मान बहुत हैं, और ज़ुबान वहां वालों की पश्तो। सदर मुक़ाम पिशौर अथवा पिशावर जो इस समय हिन्दुस्तान में सब से बड़ी छावनी है लाहौर से सवा दो सौ मील वायुकोन को सिंधुपार ४४ मील के तफ़ावत पर समुद्र से १००० फ़ुट ऊंचा बड़े व्योपार की जगह है, ईरान तूरान अफ़ग़ानिस्तान सब जगह के सौदागर वहां आते हैं। सरा बहुत अच्छी बनी है। शहर के उत्तर एक पहाड़ पर बाला हिसार का क़िला है, लड़ने के गौं का तो नहीं, पर रहने को अच्छा है। गोरखनाथ का मंदिर वहां कनफटे जोगियों का तीर्थ है। शहर से ८ मील पर काबुल की नदी बहती है।–३४–कोहाट पिशौर के दक्षिण। सदर मुक़ाम कोहाट लाहौरसे २१५ मील वायुकोन है। वहां एक क़िस्म का पत्थर होता है उसको पानी में उबाल कर मोमियाई बनाते हैं॥

अवध की चीफ़ कमिश्नरी

नीचे के ज़िले लिखे जाते हैं जो अवध के चीफ़ कमिश्नर के ताबे हैं शास्त्र में इसे उत्तर कोशल कहा है, और बादशाही दफ़्तर में सूबै अवध लिखा जाता था। उत्तर की तरफ़ उसके नयपाल है, और दक्षिण के तरफ़ गंगा बहती है।–१–ज़िला उन्नांव कान्हपुर के पूर्व गंगापार है। सदर मुक़ाम उस का उन्नांव लखनऊ से ३५ मील नैर्ऋतकोन है। –२–लखनऊ उन्नांव के ईशानकोन। सदर मुक़ाम लखनऊ अनुमान तीन लाख आदमी की बस्ती २८ अंश ५१ कला उत्तर अक्षांस और ८० अंश ५० कला पूर्व देशांतर में कलकत्ते से ५७५ मील और सड़क की राह ६१९ मील वायुकोन गोमती के दहने कनारे बसा है। असल नाम इसका लक्ष्मणावती बतलाते हैं, और कितनेही लोग ऐसा भी कहते हैं कि नैमिषारण्य जहां सूतजी

ने साठ हज़ार मुनियों के समाज में पुराण सुनाए थे इसी जगह पर था, अब जहां जात्री जाते हैं और जिसे नीमखार कहते हैं वह जगह गोमती के कनारे लखनऊ से बहुत हटकर है। यद्यपि शहर की गलियां बहुत तंग और ग़लीज़ हैं, पर सड़कें खूब चौड़ी और निहायत साफ़ हैं। यदि किसी ऊंची जगह पर चढ़कर इस शहर को देखो, तो जहां तक नज़र जाती है, दरख्त बाग़ मीनार गुम्बज़ आलीशान मकान और चमकती हुई सुनहरी कलसियां नजर पड़ती हैं। सड़कों के आस पास विशेष करके हुसेनाबाद के निकट हौज़ और फ़व्वारे और संगमर्मर इत्यादि के निहायत खूबसूरत बड़ेबड़े खिलौने बने हुए हैं। शहर निहायत आबाद है, हज्जामों के बदन पर भी दुशाले, हलालखोरों के पैर में भी ज़र्दोजी जूते, जिनके घर में चूल्हे पर तवा नहीं, वे भी बाज़ार में मिरज़ा बने फिरते हैं। दुकानों में सब तरह की चीज़ अच्छी से अच्छी मौजूद रहती है, चार कौड़ी को भी जो लड़के खानचेवालों से दोना लेते हैं, उसमें सारी न्यामतों का मज़ा मिलता है। अंगरेज़ी अमल्दारी से पहले वहां बादशाही मकानों की तैयारी देखकर अक़्ल दंग हो जाती थी, झाड़ फ़ानूस दीवारगीर आइने तसवीर घड़ी खिलौने विलायती कलें जो चीज़ देखिये नादिर, सफ़ाई हद के दर्जे पर, फ़रह बख्श मुबारक मंज़िल इन्द्रासन मोती महल पंज महल शीश महल हुसेनाबाद मूसा बाग़ हैदरबाग़ क़ैसरबाग़ परिस्तान दिलकुशा दौलतखाना कुतुबखाना तारेवाली कोठी, जिस में ग्रह नक्षत्रादिकों के देखने के लिये बहुत बड़ी बड़ी दूर्बीनें पत्थर के खंभों पर लगी थीं सारे मकान देखने योग्य थे। सिवाय इनके और भी बहुत से इमामबाड़े इत्यादि सैर के लाइक़ थे। आसिफुद्दौला के इमामबाड़े की छत एक

सौ बीस फुट लंबी और साठ फुट चौड़ी बिलकुल लदाव की बनी है, खंभे बिना इतनी बड़ी छत शायद दुनिया में दूसरी न निकलेगी। शहर से बाहर जेनरल मार्टीन की कोठी कांस्टेंशिया जिसकी तैयारी में उसका पंदरह लाख रुपया ख़र्च पड़ा था बहुत आलीशान और बेनज़ीर है, और उस दरदीवारों पर गुल बूंटे और तसवीरें बहुत सुंदर बनी हैं। अंगरेज़ी अमल्दारी से पहले इस शहर की सैर मुहर्रम के दिनों में देखनी चाहिये थी कि जब इमामबाड़ों में हज़ारों कंवल कंदील और मोमबत्तियों की रोशनी होती थी बिशेष करके हुसेनाबाद में कि जहां यह नहीं मालूम होता था कि इमामबाड़ा रौशन हुआ या रौशनी का इमामबाड़ा बन गया। यद्यपि लखनऊवाले अपनी तराश ख़राश और बोल चाल के आगे दूसरों को दिहक़ानी गवांर समझते हैं, और कहते हैं कि यह लखनऊ हिन्दुस्तान का नमूना है जो कुछ ज़िंदगी का मज़ा है इसी जगह में है, यदि कुंदैनातराश भी आवे यहां ख़राद पर चढ़ जाता है, पर सच पूछो तो जो आदमी होगा लखनऊ और लखनऊ वालों से अवश्य नफ़रत करेगा, क्योंकि उनके चलन बहुत ख़राब हैं, ईश्वरको भूल कर दुनिया के झूठे मज़े में तन मन से लवलीन रहते हैं, ऐयाशी और ज़नानापन उनकी सूरत से बरसता है, जब बादशाह ही ने नाचने और तबला बजाने पर कमर बांधी तो फिर रैयत की क्या गिनती है, बदकारी को सब जगह छुपाते हैं, पर वहां इसका न करना ऐब है, दिन में कसबियों के साथ बरामदों में बैठे हुए उसी शहर के अमीरों को देखा। गोमती पर पक्का पुल तो पहिले से बना है, और एक पुल किश्तियों का भी रहता है, पर लोहे का पुल अब हाल में तैयार हुआ है। साहिब चीफ़ कमिश्नर इसी जगह रहते हैं, एक नया क़िला बड़ी धूमधाम से तैयार

कर रहे हैं।-३-रायबरेली लखनऊ के दक्षिण। सदर मुक़ाम रायब-रेली लखनऊ से ४६ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता सई के बांएं कनारे बसा है।-४-सुलतांपुर रायबरेली के पूर्व। सदर मुक़ाम सुलतांपुर लखनऊ से ८५ मील अग्निकोन पूर्वको झुकता गोमती के बांएं कनारे बसा है। -५-सलोन रायबरेली के दक्षिण अग्निकोन को झुकता। सदर मुक़ाम परतापगढ़ लखनऊ से ९५ मील अग्निकोन को सई के दहने कनारे है।-६-फ़ैज़ाबाद सुलतां-पुर के उत्तर। सदर मुक़ाम फ़ैज़ाबाद लखनऊ से ७८ मील पूर्व है, इसे बंगला भी कहते हैं शुजाउद्दौला के वक़्त में सूबै अवध की राजधानी था, सन् १७७५ में उसके बेटे आसिफुद्दौला ने लखनऊ को राजधानी बनाया। पास ही सरयू नदी के दहने कनारे अयोध्या अथवा अवध का पुराना शहर हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है। शास्त्र में लिखा है कि मनु ने सब से पहले यही शहर बसाया। किसी समय में वह रामचन्द्र की राजधानी था। बाल्मीक ने उसे अपनी पोथी में १२ योजन (१) लंबा लिखा है। अबुलफ़ज़ल लिखता है कि वह शहर अपने ज़माने में १४८ कोस लंबा और ६६ कोस चौड़ा ब-स्ताथा, यद्यपि यह तो बढ़ावा है, पर इमारतों के निशान दूर दूर तक मिलने से यह बात बखूबी साबित है, कि वह पहिले दर्जे का शहर था। राम लक्ष्मण सीता और हनुमान के मंदिर बने हैं। प्राचीन बड़े बड़े मंदिर और रामचन्द्र के समय की इमारतें जो कुछ रही सही थीं वह मुसल्मानों ने सब तोड़ताड़ कर बराबर कर दीं, बरन उनकी जगह पर मसजिदें बन गईं।—७—गोंडा फ़ैज़ाबाद

(१) कोई तो योजन चार कोस का मानता है, और कोई उस से न्यूनाधिक॥

के वायुकोन उत्तर को झुकता सदर मुक़ाम गोंडा लखनऊ से ६५ मील पूर्व ईशान कोन को झुकता बसा है।-८-बहराइच गोंडे के वायुकोन सदर मुक़ाम बहराइच लखनऊ से ६४ मील उत्तर, वहां सुलतान मसऊद्गाज़ी की दरगाह और रजब सालार का मक़बरा है।-९-मुल्लापुर बहराइच के वायुकोन। सदर मुक़ाम मुल्लापुर लखनऊ से ६१ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता सरयू के दहने कनारे बसा है।-१०-सीतापुर मुल्लापुर के पश्चिम। सदर मुक़ाम सीतापुर लखनऊ से ५३ मील उत्तर बसा है। -११-दरयाबाद सीतापुर के वायुकोन। सदर मुक़ाम दरयाबाद लखनऊ से ४५ मील वायुकोन उत्तर को झुकता हुआ है।—१२—मुहम्मदी दरयाबाद के उत्तर है। सदर मुक़ाम मुहम्मदी लखनऊ से ९० मील वायुकोन उत्तर को झुकता बसा है॥

॥ मंदराज हाता ॥

अब वे ज़िले लिखे जाते हैं जो मंदराज की गवर्नरी के ताबे हैं -१-गंजाम कटक से दक्षिण चिलकिया झील से सिकाकोल नदी तक। समुद्रके तटके निकट धरती उपजाऊ है। सदर मुक़ाम गंजाम मंदराज से ५५० मील ईशानकोन समुद्र के कनारे पर बसा है, और उसके नीचे एक नदी भी उसी नाम की समुद्रसे मिली है। गंजाम से ११० मील नैर्ऋतकोन की तरफ़ सिकाकोल जिसे चिका कूल भी कहते हैं उसी नाम की नदी के बांएं कनारे बसा है, सिपाहियों के रहने की बारकें और साहिब लोगों के कई बंगले भी वहां बने हैं।-२-बिजिगापट्टन गंजाम के नैर्ऋतकोन। यह ज़िला पर्वतस्थली में बसा है। सदर मुक़ाम बिजिगापट्टन जिसे विशाखपट्टन् भी कहते हैं मंदराज से ३९० मील ईशानकोन समुद्र के तट पर बसा है।

आब हवा वहां की खराब है।–३–राजमहेंद्री विजिगापट्टन के नैर्ऋतकोन। सदर मुक़ाम राजमहेंद्रवरं मंदराज से २९० मील ईशान कोन उत्तर को झुकता समुद्र से पच्चीस कोस गोदावरी के बाएं कनारे एक ऊंचे करारे पर बसा है। बाज़ार उसका पटा हुआ दो खंड का है। इन ऊपर लिखे हुए तीनों ज़िलों के पश्चिम भाग में जंगल पहाड़ बहुत हैं, उन में निरे असभ्य आदमी रहते हैं।–४–मछलीबंदर जिसे अंगरेज़ मौसलीपट्टन कहते हैं राजमहेंद्री के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता। इन दोनों ज़िलों का नाम शास्त्र में कलिंग देश लिखा है। सदर मुक़ाम मछलीबंदर मंदराज से २२५ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता समुद्र के तट पर बसा है। बंदर अच्छे होने के कारण तिजारत की जगह है। छींट वहां की मशहूर है ईरान को बहुत जाती है। क़िला कृष्णा नदी की एक धारा के समीप शहर से पौन कोस पर दलदल में बना है। मछलीबंदर से पैंतीस मील उत्तर इछौर का शहर है।—५—गंतूर मछलीबंदर के नैर्ऋतकोन। पेड़ इस ज़िले में कम हैं, मुसाफ़िरों को कहीं कहीं इमली की छाया अच्छी मिलती है। हीरे की खान है, पर अब उस्से कुछ फ़ाइदा नहीं होता। सदर मुक़ाम गंतूर अथवा मुर्तज़ानगर मंदराज से २३० मील उत्तर है। इन ऊपर लिखे हुए दोनों ज़िलों में अर्थात् मछलीबंदर और गंतूर में गर्मी बहुत शिद्दत से पड़ती है, यहांतक कि शीशे टूटजाते हैं और लकड़ीकी चीज़ें इतनी खुश्क हो जाती हैं कि उनके अंदर से कील कांटे झड़ पड़ते हैं कृष्णा के मुहाने पर बालू के पटपर में गर्मियों के दर्मियान थर्मामेटर में १०८ दर्जे पर पारा रहता है।–६–नेल्लूरु गंतूर के दक्षिण। तांबे की खान है। सदर मुक़ाम नेल्लूरु मंदराज से १०० मील उत्तर पन्नार

अथवा पेन्ना नदी के दहने कनारे बसा है। इस नदी का शुद्ध नाम पिनाकिनी है।—७—कडप नेल्लूरु के पश्चिम हीरे की खान है। सदर मुक़ाम कडप जिसका शुद्धोच्चारण कृपा है उसी नाम की नदी के कनारे मंदराज से १४० मील वायुकोन उत्तर को झुकता हुआ है।–८–बल्लारी कडप के पश्चिम वायुकोन को झुकता। सदर मुक़ाम बल्लारी जिसे बलहरी भी कहते हैं मंदराज से २६० मील वायुकोन की तरफ़ हुगरी नदी के बांएं कनारे दो कोस हटकर बसा है। क़िला चौखूंटा एक पहाड़ पर बना है। पास ही छावनी है। बल्लारी से उनतीस मील वायुकोन को तुङ्गभद्रा के दहने कनारे विजयनगर का प्रसिद्ध और पुराना शहर कम से कम आठ मील के घेरे में उजड़ा हुआ पड़ा है। यह शहर एक ऐसे मैदान में है, कि जिसके गिर्द बड़े बड़े ढोके पत्थर के पड़े हैं, बरन किसी किसी जगह में उनके ऐसे ऐसे ढेर लगे हैं कि मानो छोटे छोटे पहाड़ हैं, शहर के बीच में भी कहीं कहीं ऐसे बड़े बड़े पत्थर पड़े हैं कि कई जगह रस्ता उनकी छांव में चलता है, रास्तों में बिलकुल पत्थर का फ़र्श, नहर तालाव और कूए पत्थर काट कर बने हुए, क़िला महल बुर्ज कंगूरे फाटक मंदिर धर्मशाला और मकान बहुत बड़े बड़े पुरानी हिन्दुस्तानी चाल के, दीवार खंभे मिहराव और छत्त सारी चीज़ें निरे पत्थरों की; और वे पत्थर भी इतने बड़े कि समझ नहीं पड़ता बिना कलके बल क्योंकर आदमी उन्हें अपनी जगह से हटा सके, पंद्रह २ फ़ुट के लम्बे चौड़े और मोटे पत्थर उनमें लगे हैं, और बहुत खूबसूरती से उन्हें तराशा और जमाया है, बाज़ार के सिरे पर जो नव्वे फ़ुट चौड़ा है एक शिवाला दस मरातिब का १६० फ़ुट ऊंचा बना है, रामचंद्र के मंदिर में काले पत्थर के खंभों पर बहुत बारीक नक़ाशी की है, शहर के बीचों बीच में एक बहुत उमदा

मंदिर जिसके मकानों की लंबान ४०० फ़ुट और चौड़ान २०० फ़ुट होगी वैष्णवी मतका बना है, उसमें एक रथ निराले पत्थर का धुरी पहिये इत्यादि सब समेत सच्चे रथ की तरह निहायत बारीकी और कारीगरी के साथ बनाकर रखा है। यह शहर कुछ न्यूनाधिक ५०० बरस गुज़रते हैं महाराज बीरबुक्कराय ने बसाया था, और वह उसकी राजधानी था। पहले उसका नाम विद्यानगर था, फिर विजय नगर हुआ। माधवाचार्य जिसने बड़े बड़े ग्रंथ संस्कृत में बनाये हैं इसी राजा का मंत्री था। विजय नगर के साम्हने तुङ्गभद्रा पार इसी तरह दूसरा शहर अन्नागुंडी का उजड़ा हुआ पड़ा है, केवल कुछ थोड़े से आदमी रहते हैं। कहते हैं किसी समय में यहां से वहां तक नदी के दोनों तरफ़ यह एक ही शहर था, और चौबीस मील के घेरे में बसता था। बल्लारी से ४४ मील पूर्व समुद्र से कुछ ऊपर २१०० फ़ुट ऊंचा मिट्टी का क़िला एक पहाड़ पर मज़बूत बना है। -९-चित्तूर कडप के दक्षिण। सदर मुक़ाम चित्तूर अथवा चैतूर मंदराज से ८० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता हुआ है। -१०- मार्काडु अथवा अर्काडु जिसे अर्काट कहते हैं कडप के दक्षिण। इस जिले में चाही ज़मीन बहुत है, क्योंकि ३५९९ गांव के बीच ४००० तालाब और १९००० से ऊपर कूए सिवाय उन नहरों के जो नदी और झरनों से काटकर लाए हैं बने हैं। सदर मुक़ाम अर्काडु, जिसे पंडित लोग अरुकटि भी कहते हैं, सूबे कर्नाटक की पुरानी राजधानी मंदराज से पैंसठ मील पश्चिम पालार नदी के दहने कनारे कि जो गर्मी में सूख जाती है शहरपनाह के अंदर बसा है। क़िला और नव्वाबों के पुराने महल अब खंड़हर हो गए। वहां से १५ मील पश्चिम पालार के उसी कनारे पर इल्लौर का, जिसे बहुधा विल्लूर

कहते हैं, शहर क़िला और छावनी है। अर्काडु से प्राय चालीस मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता ५०० फुट ऊंचे पहाड़ पर झिंजी का मज़बूत क़िला ऊजड़ पड़ा है। झिंजी के पश्चिम एक मंज़िल पर तिरुनमाली में हिंदुओं के मंदिर धर्मशाला और कुंड हैं, उन में बड़े मंदिर का दर्वाज़ा जो पहाड़ की जड़ में बना है बारह मरातिब का २२२ फ़ुट ऊंचा है झिंजी से मंज़िल एक अग्निकोन को त्रिविकेरा गांव के पास बहुत से पेड़ पत्थर होकर पड़े हैं, और खोदने से धरती के अंदर भी निकलते हैं (१) एक पेड़ इस तरह का वहां साठ फ़ुट का लंबा पड़ा है, जड़ उसकी ज़िला देने से यशम और अक़ीक़ से भी अच्छा रूप दिखलाती है। साहिब लोग अकसर उसके माला और गहने बनाते हैं। अर्काडु से ८५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता कड़ालूर का बंदर है, अंगरेज़ों के बंगले भी वहां बहुत से बने हैं।—११—चेंगलपट्टु नेल्लूरु से दक्षिण। ज़मीन अकसर पथरीली। ताड़ के पेड़ बहुत। इस ज़िले को जागीर भी कहते हैं, क्योंकि अर्काडु के नव्वाब ने सन् १७५० और १७६३ में सरकार कम्पनी को बतौर जागीर के दे दिया था। सदर मुक़ाम चेंगलपट्टु जिसे लोग सिंहलपेटा भी कहते हैं मंदराज से ३५ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता एक छोटी सी नदी पर, जो पालार में गिरती है, पहाड़ों के बीच बसा है। क़िला मज़बूत था

(१) जिस पानी में पत्थर के अत्यंत सूक्ष्म परमाणु मिले रहते हैं, उस में लकड़ी पड़ने से काल पाके पत्थर हो जाती है, क्योंकि लकड़ी के परमाणु दिन पर दिन गलते जाते हैं, और पत्थर के परमाणु उनकी जगह पर उस लकड़ी के छेदों की राह इस ढब से बैठते जाते हैं, कि यद्यपि वह लकड़ी से पाषाण हो जाती है, परंतु रंग रूप और रग रेशे उस में उसी लकड़ी के से बने रहते हैं॥

पर अब बेमरम्मत है। मंदराज, जिसका शुद्धोच्चारण मंदिरराज है, और जिसे चीनापट्टन भी कहते हैं, उस हाते की राजधानी कलकत्ते से ८५० मील और सड़क की राह १०६३ मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता ठीक समुद्र के तट पर बसा है। क़िला सेंटजार्ज का बहुत मज़बूत है, यदि फैलाव में फ़ोर्ट विलियम् से छोटा है, पर लड़ाई के गौं का उस्से भी अधिक है। लहरें समुद्र की यहां बेतरह टकराती हैं, बंदर कोई नहीं, जहाजों का ठहरना बहुत मुश्किल बरन अक्तूबर नवम्बर और दिसम्बर में तो तबाह हो जाने का डर लगा रहता है, जब हवा तेज़ चलती है, मुमकिन नहीं कि जहाज़ वाले कनारे आ सकें, या कनारे वाले जहाज़ पर जा सकें, बरन जब हवा मुवाफ़िक़ रहती है तब भी लोगों को जहाज़ तक, कि जो हमेश: कनारे से कुछ तफ़ावत पर लंगर डालते हैं, आने जाने के लिये उसी शहर की नावों पर सवार होना पड़ता है, जहाज़ वालों का मक़दूर नहीं कि अपने बोट उस लहर में खोल सकें, ये नाव हलकी और चमड़े की तरह लचकती रहती हैं, कि जिस में लहरों के ज़ोर से टूटने न पावें, और उनके मल्लाह ऐसे उस्ताद होते हैं, कि लहर पर अपनी नाव चढ़ाकर उस के साथही कनारे पर ला डालते हैं, जरूरत के वक़्त वे मल्लाह लकड़ी के लट्ठों पर जो दो तीन आपस में बंधे रहते हैं सवार होकर चिट्ठी इत्यादि जो पानी से बचाने को अपनी चटाई की टोपियों में रख लेते हैं जहाज तक पहुंचा देते हैं, जब पानी का ज़ोर उन्हें गेंदकी तरह उठाकर दूर फेंक देता है, तो वे तैर कर फिर अपने बेड़े पर आ चढ़ते हैं जब किसी समय ये आदमी की जान बचाते हैं, तो इन्हें सरकार से तग़मा मिलता है। समुद्र के कनारे सरकारी और साहिब लोगों के मकान बहुत उमदा बने हैं चूना वहां कौड़ी जलाकर बनाते

हैं,इस कारन बहुत साफ़ और सफ़ेद होता है। गवर्नमेंटहौस के नज़-दीक करनाटक के नव्वाब का बनवाया चिपाक बाग़ है। सड़क साहिब लोगों के हवा खाने की सुन्दर बनी है। दोनों तरफ़ सायादार पेड़ों के लगे रहने और अंगरेज़ों के बाग़ और बंगलों के होने से फूलों की मीठी मीठी सुगन्ध हर तरफ़ से चली आती है। यद्यपि अच्छे बंदर या कोई बड़ी नदी के न होने के कारन यह शहर कलकत्ते और बंबई की तरह तिजारत की जगह नहीं है, पर तौ भी चीज़ें सब तरह की मिल जाती हैं। सन् १८०३ में शहर से ईन्नौर नदी तक एक नहर १०५६० गज़ लंबी ऐसी खोदी गई कि उसमें नाव भी चल सकती है। सिपाही पलटन के वहां बंगाल हाते की बनिसबत छोटे और कमज़ोर होते हैं, पर चुस्ती चलाकी और क़वाइद में इन से भी अधिक हैं। मंदराज के गवर्नर कमांडरिंचीफ़ सुप्रिमकोर्ट और सदर निज़ामत व दीवानी के जज और बोर्डआफ़ रेवन्यू के साहिब लोग इसी जगह रहते हैं। सन् १६३९ में विजय नगर के राजा श्रीरंगराइल ने इस शर्त से अंगरेज़ों को मंदराज में क़िला बनाने की इजाज़त दी थी, कि वह क़िला उसके नाम से श्रीरंगरायपट्टन पुकारा जाय, पर इन्हों ने क़िले का नाम तो सेंटजार्ज रखा और शहर जो बसाया उस का नाम वहां के कारदार ने स्वामी की अवज्ञा करके अपने बाप चिनापा के नाम पर चीनापट्टन रखा। अब इस शहर में गिर्दनवाह समेत सात लाख आदमी बसते हैं। मंदराज से ४८ मील नैर्ऋतकोन को कुंजवरंका शहर है, जिस का असली नाम शास्त्र में कांचीपुर लिखा है। वहां बाज़ार में दोनों तरफ़ नारियल के पेड़ लगे हैं। शिव का एक बहुत बड़ा मंदिर बना है, उस मंदिर के भीतर एक धर्मशाला है जिसमें हज़ार

खंभे बतलाते हैं, सीढ़ी के दोनों तरफ़ दो हाथी रथ समेत पत्थर के बने हैं, दर्वाजे पर चढ़ने से दूर दूर के जंगल झील और पहाड़ दिखलाई देते हैं। कोस एक के तफ़ावत पर विष्णुकुंजी अथवा विष्णुकांची में वरदराज विष्णु का मंदिर नक़ाशी और कारीगरी में इस से भी बढ़कर है, दर्वाज़े के आगे एक खंभा तांबे का सुनहरी मुलम्मा किया हुआ गड़ा है। मंदराज से पैंतीस मील दक्षिण समुद्र के तट पर महाबलिपुर में कई जगह पहाड़ के पत्थर काटकर गुफ़ा मंदिर और मूर्त्तें वैष्णव मत की पुराने समय की बनी हुई मौजूद हैं, देखने योग्य हैं। वहांवाले कहते हैं, कि शहर पुराना महाबलिपुर बिलकुल समुद्र में डूब गया, और देखने से भी वहां ऐसा मालूम होता है कि समुद्र का जल दिन पर दिन तट की तरफ़ हटता आता है। यदि यही हाल रहेगा तो ये मंदिर इत्यादि भी कुछ दिन में जलमग्न हो जायंगे। मंदराज से अस्सी मील वायुकोन को पहाड़ों में त्रिपतिनाथ का बड़ा प्रसिद्ध मंदिर है। मंदराज से ४० मील नैर्ऋतकोन को पालार नदी के बांएं कनारे वालाजाह नगर बड़े व्यौपार की जगह है।–१२–शेलं अर्काडु के नैर्ऋतकोन। पहाड़ ५००० फ़ुट तक समुद्र से ऊंचे हैं और इसी कारन वहां गर्मी बहुत नहीं पड़ती। सदर मुक़ाम शेलं मंदराज से १७० मील नैर्ऋतकोन है। –१३-तिरुच्चिनापल्ली शेलं के दक्षिण अग्निकोन को झुकता हुआ। सदर मुक़ाम तिरुच्चिनापल्ली मंदराज से १९० मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता कावेरी के दहने कनारे शहरपनाह के अंदर एक पहाड़ी पर बसा है। बाहर बहुत बड़ी छावनी है। शहर के साम्हने कावेरी के एक सुन्दर टापू में जो १३ मील लम्बा होवेगा श्रीरंगजी का बड़ाभारी मंदिर बना है, उसकी बाहर की दीवारका घेरा प्राय चार

मील होवेगा, उसके दर्वाज़े में तैंतीस फुट लंबे और पंद्रह फुट दौर के मोटे पत्थर के खंभे लगे हैं, इस दीवार के अंदर साढ़े तीन तीन सौ फ़ुट के तफ़ावत पर एक के अंदर एक फिर छ दीवारें और हैं, पचीस पचीस फुट ऊंची, और चार चार फुट मोटी, और उन में चारों दिशा को चार चार दर्वाज़े लगे हैं। निदान इन सात दीवारों के अंदर श्रीरंगजी का मंदिर है, उसके गुम्बज़ पर सुनहरी मुलम्मा किया है, और उन सब दीवारों के बीच बीच में मकान दुकान देवालय और धर्मशाला बनी हैं। एक धर्मशाला इतनी बड़ी है कि जिस में हज़ार खंभे लगे हैं। अंगरेज़ लोग चौथी दीवार के आगे नहीं जाने पाते, पर पंडे लोग श्रीरंगजी की पालकी और छत्र जो निरे सोने के बने हैं और रत्न जटित आभूषण बाहर लाकर दिखला देते हैं।—१४—तंजाउरू जिसे तंजौर अथवा तंजावर और तंजनगर भी कहते हैं, और संस्कृत पुस्तकों में चोलदेश के नाम से लिखा है, तिरुचिनापल्ली के पूर्व। बर्दवान के बाद ऐसा उपजाऊ कोई दूसरा जिला नहीं है। नहरें जो कावेरी से काट काट कर हर तरफ़ ले गए हैं, उन से खूबही अन्न पैदा होता है, और आबादी में भी इस ज़िले को मानों बंगाले का एक टुकड़ा समझना चाहिये, सदर मुक़ाम तंजौर मंदराज से १८० मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता कावेरी के दहने कनारे दक्षिण में संस्कृत विद्या के लिये बहुत प्रसिद्ध स्थान और पहिले दर्जे का शहर गिना जाता है। क़िला और शहरपनाह अच्छी मज़बूत, खाई गहरी पत्थर में से काटी हुई, मकान सुथरे रास्ते सीधे और चौड़े, मंदिर बहुतायत से, उन में एक मंदिर तो महादेव का क़िले के अंदर १९९ फुट ऊंचा पत्थर का ऐसा उमदा बना है कि शायद उस साथ का शिख-

रदार मंदिर इस मुल्क में दूसरा न निकलेगा, उस मंदिरके सभा-मंडप में एक नंदी काले पत्थर का आठ हाथ ऊंचा बहुत तुहफ़ा बना है। कम्बुकोनम् जिसे कोई कुंभाकोलम् भी कहता है तंजाउरू के पूर्ब्ब कावेरी के मुहानों में। सदर मुक़ाम नागौर अथवा नगर मंद-राज से १६० मील दक्षिण समुद्र के तट पर बसा है, व्यौपार की जगह है, माल के जहाज़ आते हैं। वहां एक चौखूंटा मीनार १५० फ़ुट ऊंचा है, पर मालूम नहीं कि किस काम के लिये बनाया गया था, और किस ने बनवाया। कोम्बुकोनम् अथवा कुंभघोन का पुराना शहर वहां से ३५ मील पश्चिम वायुकोन को झुकता कावेरीकी दो धारा के बीच चोलबंशी राजाओं की क़दीम राजधानी है। वहां चक्रेश्वर के मंदिर के आगे कुंड पर बारहवें बरस अथवा रामस्वामी के लिखने बमूजिब तीसवें बरस माघ के महीने में बड़ा भारी मेला हुआ करता है।-१६-मथुरा, जिसे अंगरेज़ मदुरा और बहुत लोग मीनाक्षी भी कहते हैं, तंजौर के नैर्ऋतकोन। ज़मीन ऊंची नीची दलदल और बहुधा जङ्गल और पर्वतस्थली है। दलदल के समीपस्थ बस्तियों की आब हवा ख़राब है। वहां एक क़ौम तोतियार है, वे लोग भाई भतीजे चचा इत्यादि सारे कुनबे के लोग मिलकर एकही स्त्री से बि-वाह कर लेते हैं। सदर मुक़ाम मथुरा मंदराज से २६५ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता कुमारी अंतरीप से १३० मील व्यागारू नदी के दहने कनारे शहरपनाह के अंदर बसा है। कचहरी के पास एक सुन्दर तालाब है, और उसके मध्य में एक देवालय है। शहर के रास्ते बहुत चौड़े, मंदिर अगले समय के कई बहुत बड़े और ऊंचे बने हैं। महल टूटगये केवल एक गुम्बज ३० गज़ चौड़ा बच रहाहै। मथुरा से अनुमान ७५ मील अग्निकोन को रामेश्वर का टापू, जहां

व्यागारू नदी समुद्र से मिली है। उस्से थोड़ी ही दूर पूर्व,तट से एक मील के तफ़ावत पर, ग्यारह मील लम्बा छ मील चौड़ा, हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। धरती रेतल है, खेती बिलकुल नहीं होती, छोटे छोटे बबूल के जंगलों से घिरा हुआ मंदिर सेतबंध रामेश्वर महादेव का संगीन बहुत बड़ा प्राचीन समय का चमत्कारी बनाहै। मुसलमान बादशाहों की अमल्दारी वहां तक न पहुंची इस कारन ढहने से बच गया, दर्वाज़ा इस मंदिर का सौ फ़ुट ऊंचा है और उस में चालीस फ़ुट ऊंचे एक एक पत्थर के दासे लगे हैं, बस इसी से उस मंदिरकी इमारत का हाल दर्याफ़्त करलो। महादेव को सिवाय गंगा के और किसी जगह का जल नहीं चढ़ता। मंदिर से ९ मील समुद्र के तट पर पामबन का बन्दर है, वहां यात्री लोगों की नौका आकर लगती हैं, सड़क वहां तक बिलकुल फ़र्स की हुई, गली बाज़ार चौड़े, धर्मशाला अच्छी अच्छी, वहां के पंडे ने अपनी हवेली के हाते में अंगेरज़ी चाल का एक बंगला तैयार किया है, उस पर से दूर दूर तक समुद्र, और लंका की तरफ़ वे पत्थर और पहाड़, जिसे हिंदू लोग रामचन्द्र का बनाया पुल कहते हैं, पानी में एक काली सी लकीर की तरह दिखलाई देता है। पहले वह सेत समूचा था, सन् १४८४ तक लोग उसके ऊपर से आते जाते थे, पर अब समुद्र की लहरों के धक्के से जा बजा टूट गया है। हिंदू लोग इस सेत को करामात समझते हैं, पर हम उस में कोई बात करामात की नहीं देखते, क्योंकि लंका और हिन्दुस्तान के बीच जो साठ मील चौड़ी खाड़ी पड़ी है, पानी उस में ऐसा छिछला है, कि जहाज़ नहीं निकल सकते, घूमकर अर्थात् लंका के पूर्व तरफ़ से जाते हैं। रामेश्वर के टापू और हिन्दुस्तान के बीच, और मन्नारू के टापू और लंका

के दर्मियान, जो सेत टूटने से छोटी मोटी नाव निकल जाने के रस्ते होगये, वहां भी पानी पांच फुट से अधिक गहरा नहीं रहता, और मन्नारु और रामेश्वर के बीच तो पानी इतना कम है, कि जब समुद्र की लहर हटती है, तो बिलकुल रेता दिखलाई देने लगता है। निदान इसी रेते के बीच में एक पहाड़ का करारा सा निकल आया है, और उस पर बड़े बड़े ढोके पत्थरों के पड़े हैं, उसी को वहांवाले रामचन्द्र का सेत कहते हैं, उसके अंत से लंका के तट से समीप मन्नारु का टापू १८ मील लंबा और अढ़ाई मील चौड़ा है, गढ़ भी उस में एक बना है, और वह समुद्र की खाड़ी जो लंका और हिन्दुस्तान के बीच में पड़ी है, उसी टापू के नाम से पुकारी जाती है।–१७–तिरुनेल्लुवलि मथुरा के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता। इस ज़िले में पर्वत कम हैं, पर जंगल उजाड़ बहुत, बिशेष करके पूर्व भाग में। सदर मुक़ाम तिरुनेल्लुवलि मंदराज से ३५० मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता कुमारी अंतरीप से ५९ मील है। तिरुनेल्लुवलि से पूर्व समुद्र के तट पर तूतिकोरिन में ग़ोतेख़ोर लोग सीप से मोती निकालते हैं।–१८–कोयम्मुत्तूर मथुरा से वायुकोन। यह ज़िला प्राय ९०० फुट समुद्र से ऊंचा होगा, पर सब जगह बराबर नहीं कहीं इस में न्यून और कहीं अधिक। जंगल उजाड़ बहुत है। लोहे और गोदन्त की खान हैं। यहां के लोग सांड़ की पूजा करते हैं, और जब सांड़ मरते हैं तो बड़ी धूम धाम से गाड़े जाते हैं। सदर मुक़ाम कोयम्मुत्तूर मंदराज से २७० मील नैर्ऋतकोन है। उतकमंद वहां से ४० मील वायुकोन नीलगिरि के पहाड़ पर समुद्र से कुछ ऊपर ७००० फुट ऊंचा साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है। बहुत सी कोठी और बंगले बन गये हैं, गर्मी वहां बिलकुल नहीं व्यापती। पास ही उन

पहाड़ों में एक झील भी सुंदर छ सात मील के घेरे में पानी से भरी है। ऊपर लिखे हुए ये सातों जिले अर्थात् शेलं से कोयम्मुत्तूर तक द्राविड़ देश में गिने जाते हैं, और इसी द्राविड़ का नाम शास्त्र में दण्डकारण्य भी लिखा है।—१९—मलीबार जिसे मलय और तिरिया राज और केरल भी कहते हैं, और कोयम्मुत्तूर के पश्चिम घाट उतर कर समुद्र तक चला गया है। इस ज़िले में बन और पर्बत बहुत हैं, और नदी नाले भी इफ़रात से मिट्टी लाल सुरख़ी की तरह, किसी किसी पहाड़ी नदीका बालू धोने से सोना भी हाथ लगताहै। यहां के जमीदार इकट्ठा होकर गांवमें नहीं बसते, बरन अपने अपने खेत के पास बहुधा अलग अलग मकान बनाकर रहते हैं, पर मकान इनके सुथरे और साफ़ होते हैं। बारबर्दारी यहां अकसर मज़दूर करते हैं, बैल लादने लाइक़ नहीं होते। जात का बड़ा बचाव है, ब्राह्मण शूद्र का स्पर्श नहीं करते बरन उन्हें अपने समीप भी नहीं आने देते, पर नायर अर्थात् शूद्र जाति की स्त्रियों का रखना ऐब नहीं समझते। यहां नायर लोग दस बरस की उमर में शादी करते हैं, पर स्त्री को अपने घर नहीं बुलाते, खाने पहनने को दिया करते हैं, और वह अपने बाप के घर रहा करती और जिस मर्द को चाहती है अपने पास बुलाती है, और यही कारन है कि वहां के आदमी अपने बाप का नाम नहीं जानते, और बहन के पुत्र को वारिस बनाते हैं। मा घर की मालिक है, और माके पीछे बड़ी बहन। जब कोई मरता है तो उसकी बहनों के लड़का लड़की उसका माल असबाब बांट लेते हैं। हक़ीक़त में बेवक़ूफ़ हैं वहां वे मर्द, जो बिवाह करते हैं। औरतें सुंदर होती हैं, पर अफ़सोस कि इतनी बेवफ़ा। इस जिले के आदमी प्राय डेढ़ लाख क्रिस्तान हैं। यह भी याद रखना चाहिये कि केरल

देश, जिसका हमने वर्णन किया है। घाटों के नीचे नीचे उत्तर तरफ़ चंद्रगिरि नदी तक चला गया है, और कल्लीकोट और तेल्लिचेरी ये दोनों ज़िले भी जिन का आगे वर्णन होता है इसी देश में गिने जाते हैं, और यही सारी बातें उन में भी मौजूद हैं। सदर मुक़ाम इस ज़िले का कोची मंदराज से ३५५ मील नैर्ऋतकोन समुद्र के तट पर बसा है।—२०—कल्लीकोट मलबार के उत्तर। सदर मुक़ाम कल्लीकोट मंदराज से ३३५ मील नैर्ऋतकोन पश्चिम को झुकता समुद्र के तट पर बसा है। यह वही जगह है जहां पहले ही पहल फ़रंगियों का जहाज़ आकर लगा था।—२१—तेल्लिचेरी कल्लीकोट के उत्तर। सदर मुक़ाम तेल्लिचेरी अथवा तालचेरी मंदराज से ३४० मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता समुद्र के तट पर बसा है। —२२—मंगलूर अथवा कानड़ा, जिसे वहांवाले तुलव कहते हैं, तेल्लिचेरी के उत्तर। इस में मलबार से भी अधिक पहाड़ हैं। गाय बैल वहां के बड़ी बकरी से ज़ियाद: बड़े नहीं होते। ज़मींदार इस ज़िले में भी मलबार की तरह अपने खेतों के पास घर बनाकर रहते हैं। वहां जैन लोग बहुत हैं और क्रिस्तान भी अधिक हैं। टीपू के बाप हैदर ने बहुतों को क़तल किया था। कहते हैं कि ६०००० क्रिस्तान पकड़ के मैसूर को ले गया था, उन में से केवल १५००० लौटे। सदर मुक़ाम मंगलूर, जिसे कोडिआल बंदर भी कहते हैं, मंदराज से ३७५ मील पश्चिम समुद्र के तट पर है।—२३—हौनोर मंगलूर के उत्तर गोवे तक, जो पुर्टगीज़ों (१) के दख़ल में है। यह भी ज़िला तुलव देश में गिना जाता है, और सारी बातें वैसी ही रखता है॥

(१) पुर्टगाल के रहनेवालों को पुर्टगीज़ कहते हैं॥

बम्बई हाता

अब बम्बई हाते के जिले लिखे जाते हैं —१—धारवार गोवे के पूर्व। सदर मुकाम धारवार, जिसे मुसल्मान नसराबाद कहते हैं, बम्बई से २८५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकताहै। धारवार से पचास मील उत्तर गोकाक के पास गतपर्व नदी एक जगह पहाड़ में १७४ फुट ऊंचे पत्थर से चादर के तौर पर गिरती है, बरसात में इस चादर की चौड़ान १६९ गज़ से कम नहीं होती, महादेव का वहां एक मंदिर है, और जंगल भी आस पास में सुंदर है, वह स्थान उदासीन जनों के मन को बहुत लुभाता है।—२— बेलगांव धारवार के वायुकोन। आब हवा अच्छी। सदर मुक़ाम बेलगांव बम्बई से २४५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता। क़िला मज़बूत बनाहै। खंदक़ पहाड़ में से कटी है। सरकारी फ़ौज की छावनी है।—३—कोकण, जिसे कोङ्कण, और कङ्कन भी कहते हैं, बेलगांव के वायुकोन। जंगल पहाड़ और नदी नालों से भरा है। सदर मुक़ाम रत्नगिरि बम्बई से १४० मील दक्षिण समुद्र के कनारे है।—४—ठाणा कोकण के उत्तर। सदर मुक़ाम ठाणा साष्टी के टापू में, जिसे वहांवाले झालता और शास्तर और अंगरेज़ सालसिट कहते हैं, बम्बई से बीस मील ईशानकोन उत्तर को झुकता हुआ समुद्र के तट पर बसा है। क़िला भी बना है। २०० गज़ चौड़ी समुद्र की खाड़ी उस टापू को ज़मीन से जुदा करती है। ठाणा से कोस तीन एक पर किनेरी के दर्मियान इस टापू में किसी समय पहाड़ काटकर जो बौध मत वालों ने गुफ़ा और मंदिर बनाये थे, उन में दो मूर्त्ति बुध की बीस बीस फुट ऊंची अब तक मौजूद हैं, और एक खंभे पर कुछ पुराने हर्फ़ भी खुदे हुए हैं।—५—बम्बई का टापू साष्टी टापू के दक्षिण।

थोड़े दिन हुए कि यह टापू पानी और जंगल झाड़ियों से ऐसा छा, रहा था, कि अगले लोग उसकी आब हवा की ख़राबी यहां तक लिख गये हैं कि इस टापू में आकर कोई मनुष्य तीन बरस से अधिक न जीयेगा, अब वही बम्बई सरकार के प्रताप से ऐसा आबाद और साफ़ हो गया कि आब हवा सफ़ाई दौलत और पार्सियों की चालाकी अक़ल और अच्छे स्वभाव के कारन बहुत लोग कलकत्ते से भी उसे श्रेष्ठ समझते हैं। कोई तो कहता है कि वहां जो बम्बादेवी है उसी के नाम पर इस टापू का नाम बम्बई रखा गया, और कोई इस का असल नाम बमूबहिया बतलाता है। बमूबहिया का अर्थ पुर्टगाली भाषा में अच्छी खाड़ी है। पहले यह टापू पुर्टगीज़ों के दख़ल में था, सन् १६६१ में जब उनके बादशाह ने अपनी लड़की इंगलिस्तान के बादशाह को ब्याही तो यह टापू यौतक में दिया। पहले ये दोनों टापू जुदा जुदा थे, और इन के बीच में चार सौ हाथ समुद्र की खाड़ी थी, दक्षिण तरफ़ का टापू ९ मील लंबा और अढ़ाई मील चौड़ा था, और उत्तर तरफ़ साष्टी का टापू १८ मील लम्बा और १३ मील चौड़ा था, पर अब उन दोनों के बीच में बंध बंधजाने से एक ही हो गए। धरती इन टापुओं की पथरीली है, इमारत में काठ बहुत लगाते हैं, अंगरेज़ों की कोठियों में भी बहुधा काठ के खंभे और तख़्तों का फ़र्श रहता है। सिपाही पलटनों के यदि नाप में पांच फ़ुट तीन इंच से ऊंचे नहीं होते, पर लड़ाई में मिहनती हैं। बम्बई हाते के गवर्नर कमांडरिंचीफ़ बोर्ड आफ़ रेवन्यू सुप्रिम कोर्ट और सदर निज़ामत और दीवानी के जज इसी जगह में रहते हैं। क़िला मज़बूत और इस ढब का बना है कि समुद्र तीन तरफ़ से मानो उसकी खाई हो गया है। ज़ुबान यहां गुजराती बहुत बोलते हैं, और उस से उतर

कर मरहठी और कोकणी, और उन से उतर कर फिर और सब बोली जाती हैं। यहां पारसी लोग बहुत रहते हैं, और बड़े धनाढ्य हैं। औरतें उनकी अकसर पतिव्रता, कस्बी उस क़ौम में कोई नहीं। जब ईरान में मुसल्मानों का अमल हुआ तो इन के पुरखा वहां से भागकर यहां आ बसे। ये लोग अब तक उसी तौर से सूर्य और अग्नि को पूजते हैं, सबेरे नित्य सूर्योदय के समय सबके सब समुद्रके कनारे मैदानमें जाकर जो सूर्यको सिजदा करते हैं, वह कैफ़ियत देखने लाइक़है। इन लोगोंके दख़्मे अर्थात् मुर्देरखने के मकान वहां पांचसे ऊपर हैं, सब से बड़ा दख़्मा चौफेर दीवार से घिरा अनुमान पचास गज़ के घेरे में एक खुला हुआ मकान है, और उसके बीच में एक कूआ है, जो पारसी मरता है उसे एक चादर में लपेट कर उस मकान के अंदर रख आते हैं, निदान मांस तो उसका कव्वे और गिध नोच ले जाते हैं, हड्डियां जो रह जातीं हैं उन्हें उस कूए में डाल देते हैं। एक कुत्ता भी वहां बंधा रहता है, और उनका यह निश्चय है कि शैतान उस मुर्दे की जान पकड़ने को वहां आता है और वह कुत्ता भूंक कर उसे भगा देता है। यह भी उन का मत है कि जिस मुर्दे की दहनी आंख गिध पहले खावे वह अच्छा है, और जिस मुर्दे के मुंह में से रोटी जो मरने के बाद रख देते हैं कुत्ता खींच ले जावे उसको स्वर्ग प्राप्त होने में कुछ संदेह नहीं। कूए को हड्डियों से साफ़ करने के वास्ते उस मकान के नीचे से एक सुरंग लगी रहती है, कि जिस में वह कूआ भरने न पावे। अमीर लोग अपने कुनबे के लिये बहुधा ऐसा एक जुदा मकान बनवा रखते हैं। बम्बई कलकत्ते से ९५० मील पश्चिम ज़रा नैर्ऋतकोन को झुकता और सड़क की राह ११८५ मील पड़ता है। बम्बई के क़िले से सात मील और कोकण के क-

नारे से पांच मील गोरापुरी का टापू, जिसे अंगरेज एलिफ़ेंटा आइल कहते हैं, छ मील के घेरे में है। एलीफ़ेंट अंगरेज़ी में हाथी को कहते हैं, और वहां उतरने की जगह पहाड़ पर एक पत्थर का हाथी इतना बड़ा कि सच्चे हाथी से तिगुना ऊंचा बना था, इसी कारन यह नाम रहा, अब वह हाथी टूट गया है। इस टापू में किसी समय पहाड़ काट कर अद्भुत मंदिर बने हैं। बड़ा मंदिर उस में मिले हुए मकानों के साथ २२० फ़ुट लम्बा और १५० फ़ुट चौड़ा है, और २६ उसमें खंभे हैं, बीच में एक बहुत बड़ी त्रिमूर्ति १५ फ़ुट ऊंची रखी है, अ-र्थात् एकही मूर्तिमें ब्रह्मा विष्णु और शिव तीनों के चिहरे बनाये हैं, दहनी तरफ़ एक मकान में महादेव की अर्धंगी मूर्ति १६ फ़ुट ऊंची बनी है, सिवाय इन के और भी बहुत मूर्तें इन त्रिदेव और इन्द्रानी इत्यादि की बनी हैं। जगह देखने लाइक़ है पर बहुत बेमरम्मत, कहीं कहीं टूट भी गई हैं। जहां किसी ज़माने में ब्राह्मणों के सिवाय कोई पांव भी रखने न पाता होगा, वहां अब सांप बिच्छुओं की दहशत से कोई जाना भी नहीं चहता।—६–पूना ठाणा के पूर्व। पर्वत और नदी नाले उस में बहुत हैं। आब हवा अच्छी है। ज़मींदार क़द के नाटे होते हैं। सदर मुक़ाम पूना बम्बई से ७५ मील अग्नि कोन समुद्र से २००० फ़ुट ऊंचा एक पटपर मैदान में मूता नदी के दहने कनारे बसा है। बाज़ार चौड़ा, मकानों में लकड़ी का काम बहुत, बस्ती लाख आदमी से ऊपर, साड़ी रेशमी वहां अच्छी बुनी जाती है। २५ मील वायुकोनको एक खड़े पहाड़पर लोहगढ़ का क़िला मज़-बूत बना है, और पानी का उस में बहुत आराम है। पूना से ३० मील वायुकोन उत्तर को झुकता कारली गांव के पास पहाड़ काट कर बौध मत के मंदिर जो बने हैं, वे देखने लाइक़ हैं, बड़ा मंदिर

१२६ फुट लम्बा और ४६ फुट चौड़ा है, उसमें बुध की मूरतें और स्त्री पुरुष और हाथियों की सूरतें तरह बतरह की खोदी हैं। पूना के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता अनुमान ५० मील और समुद्र के तटसे २५ मील पश्चिम घाट में महाबलेश्वर का पहाड़ जो समुद्र से ४५०० फुट ऊंचा है, साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है। बलंदी के बाइस सदा शीतल रहा करताहै, बहुत से बंगले बन गये हैं, गर्मी भर बम्बई हाते के बहुतेरे साहिब बरन गवर्नर बहादुर भी उसी जगह आकर निवास करते हैं, कृष्णा नदी उसी जगह से निकली है, इसलिये हिन्दू लोग उसे तीर्थस्थान मानतेहैं।—७—सितारा पूना के दक्षिण। सदर मुक़ाम सितारा बम्बई से १३० मील अग्निकोन दक्षिण को झुकता प्राय आठ सौ फुट ऊंचे खड़े पहाड़ पर मज़बूत क़िला है, और पहाड़ के नीचे शहर बस्ता है, शहर से कोस एक पर छावनी है। सितारे से ३० मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता पश्चिम घाट के २००० फुट ऊंचे एक खड़े पहाड़ पर वास्मोटाह नाम एक मज़बूत क़िला बना है। सितारे से १०० मील पूर्व अग्निकोन को झुकता भीमा नदी के दहने कनारे पंडरपुर हिंदुओं का तीर्थ है, वहां वैष्णवी मत का एक मंदिर बना है। सितारे से १४० मील अग्निकोन बीजापुर अथवा विजयपुर शहरपनाह के अंदर बसा है, वह किसी समय में दखन के बादशाहों की राजधानी था, और फिर दिल्ली के तहत में एक सूबा रहा। उस वक्त उस में ९८४००० घर और १६०० मसजिद बतलाते हैं, यद्यपि यह केवल बढ़ावे की बात है, और कदापि बुद्धिमानों के मानने योग्य नहीं, तथापि उसके आस पास दूर दूर तक खंडहर और मकानों के निशान जो अब तक मौजूद हैं देखने से यह बात साबित है कि वह शहर

किसी ज़माने में बहुत बड़ा बस्ता था। इस शहर का गिर्दनवाह दिल्ली के गिर्दनवाह से बहुत मिलताहै, जैसे वहां शहर के बाहर कुतब साहिब तक हर तरफ़ खंड़हर और मक़बरे दिखलाई देते हैं, उसी तरह विजयपुर के गिर्द भी टूटे फूटे मकान और मक़बरे नज़र पड़ते हैं। दूर से उसके गुम्बज़ और मीनारों के नज़र आने पर यही मालूम होता है कि किसी बहुत बड़े शहर में पहुंचे पर दर्वाज़े के अंदर क़दम रखो तो हर तरफ़ खंड़हर दिखलाई देने लगते हैं, क़िला टूटा, महल फूटा,मस्जिद मक़बरे ढहे, दूकान मकान गिरेहुए, दीवार बेमरम्मत, फाटक सड़े गले, शहरपनाह का घेरा आठ मील का, दर्वाज़े सात, मुहम्मदशाह का मक़बरा जिसका गुम्बज़ १५० फ़ुट बुलंद, और जिसमें आवाज़ ऐसी गूंजती है कि मानो दूसरा आदमी बोलता है, नौबाग़ की बावली, जामे मस्जिद, इब्राराहीम आदिलशाह की मस्जिद जो सत्तर लाख रुपया लगकर बनी थी, और मक़बरा जिस के गिर्द सारी क़ुरान इस खूब सूरती से खुदी है और उस पर सोने का काम और रंगामेज़ी ऐसी की है कि शायद अच्छी अच्छी किताबों का लोहपर भी वह काम न मिलेगा, देखने लाइक़ है। बाज़ार अब भी, जो कुछ कि बाक़ी रह गया है, तीन मील लम्बा पचास फ़ुट चौड़ा और बिलकुल फ़र्श किया हुआ है। एक जगह में, जिसे हलालखोर की बनाई हुई बतलाते हैं, पत्थर की ज़ंजीरें लटकती हैं, लोहे की सांकल के तौर पर बनी हुई, और जोड़ उसमें कहीं नहीं। क़िले पर मलिकुलमैदान नाम एक पीतल की तोप रखी है कि जिस में तैंतीस मन तीन सेर का गोला समाता है, हम जानते हैं कि इतनी बड़ी तोप सारी दुनिया में दूसरी न निकलेगी।—८—शोलापुर सितारा के पूर्व। धरती उपजाऊ। सदर मुक़ाम शोलापुर बम्बई

से २३० मील अग्निकोन शहरपनाह के अंदर है। क़िला मज़बूत और छावनी बड़ी है।—९—अहमदनगर पूना के ईशानकोन। धरती ऊंची और पहाड़ी मौसिम मोतदल। सदर मुक़ाम अहमद नगर, जो बादशाही अमल्दारी में उसी नाम के सूबे की राजधानी था, बम्बई से १२५ मील पूर्व शहरपनाह के अंदर बसा है। क़िला पाव कोस के तफ़ावत पर संगीन बना है।—१०—नासिक अहमदनगर के वायुकोन। सदर मुक़ाम नासिक बम्बई से ९५ मील ईशानकोन को गोदावरी के बांएं कनारे उसके उद्गम के पास बसा है। हिंदुओं का तीर्थ है। ब्राह्मण बहुत बसते हैं। कहते हैं कि रामचन्द्र ने इस जगह शूर्पनखा की नाक काटी थी इसी कारन इसका नाम नासिक रहा। शहर से पांच मील पर एक पहाड़ में पत्थर काटकर गुफ़ा की तरह पुराने समय के बौधमती मंदिर बने हैं, उन में कुछ अक्षर भी प्राचीन खुद रहे हैं। नासिक से २० मील नैर्ऋतकोन को त्रिम्बक का क़िला पहाड़ के ऊपर मज़बूत बना है, और नीचे शहर बस्ता है। गोदावरी इसी पहाड़ से निकली है, हिंदुओं का तीर्थस्थान है।—११—खानदेश नासिक के उत्तर और सातपुड़ा पहाड़ के दक्षिण जो भीलों के रहने की जगह है। वे नाटे काले प्राय नंगे भागलपुर के पहाड़ियों से मिलते हुए धनुषबान लिये रहते हैं, और सब कुछ खाते पीते हैं, मुर्दों को ज़मीन में गाड़ते हैं, और ज़ात पूछो तो अपने तईं हिंदू असल रजपूतबचा बतलाते हैं। यद्यपि इस ज़िले में जंगल पहाड़ और मैदान तीनों हैं, परंतु निर्मल जल के सोते जो पहाड़ों से निकलकर तापी नदी में गिरते हैं बहुत शोभायमान हैं। बादशाही वक़्त में यह एक सूबा गिना जाता था। सदर मुक़ाम धूलिया बम्बई से २०० मील ईशानकोन को पौंजरा नदी के कनारे

बसा है। धूलिया से १०० मील पूर्व ईशानकोन को झुकता असीरगढ़ अथवा आसेरगढ़ का क़िला ७५० फुट ऊंचे पहाड़ पर, जिस में १०० फ़ुट तो ऊपर का निरा दीवार की तरह खड़ा है, ११०० गज लंबा ६० गज चौड़ा निहायत मजबूत बना है, पानी भी उसके अंदर बहुत है। इन ऊपर लिखे हुए ज़िलों में, जो बम्बई के गवर्नर के ताबे हैं, एक तो वह मुल्क ही दुर्गम है, और तिस में मरहठों के वक्त में पहाड़ों के शिखर पर क़िले इतने बनाये थे, कि एक आदमी ने एक जगह खड़े होकर एक दिन के रस्ते के अन्दर बीस किले गिने, पर सरकार ने बे काम और लुटेरों की पनाह समझ कर बहुत से तुड़वा दिये, और बाक़ी बे मरम्मत पड़े हैं।—१२—सूरत खानदेश के पश्चिम। पूर्व और दक्षिण पहाड़ बाक़ी मैदान, शहर सूरत का बम्बई से १७५ मील उत्तर तापी के बांएं कनारे पर छ मील के घेरे में शहरपनाह के अंदर बसा है। तीन तरफ़ शहरपनाह और चौथी तरफ़ तापी से घिरा है। नदी के कनारे एक छोटा सा क़िला भी है। वहां जैनियों ने जानवरों के लिये एक अस्पताल बनायाहै, जिस में जूं और खटमलों को जो उस में छोड़े जाते हैं खून पिलाने के लिये फ़क़ीरों को कुछ देकर इस बात पर राजी कर लेते हैं कि वे वहां रात भर चारपाई से बंधे हुए पड़े रहैं और जूं खटमल उन्हें काटा करें। किसी वक्त में यह शहर जब सूबै खानदेश की राजधानी था बड़ी रौनक़ पर था, बम्बई के बसने से उसकी रौनक़ घट गई, अब भी डेढ़ लाख से ऊपर आदमी बसते हैं। छावनी बहुत बड़ी है। यहां तक अर्थात् नर्मदा के दक्षिण जो ज़िले बम्बई हातेके ताबे हैं शास्त्र में प्राय इन सब को महाराष्ट्र देश कहते हैं।—१३—भडौंच सूरत के उत्तर। बम्बई हाते में यह ज़िला बहुत आबाद और उपजाऊ

गिना जाताहै। सदर मुक़ाम भड़ौंच जिसका असली नाम भृगुगोश थ बम्बई से २१५ मील उत्तर और समुद्र से २५ मील नर्मदा के दहने तट एक ऊंचे से स्थानमें बसाहै, पर अब कुछ वीरान और बेरौनक़सा है। यहांभी जैनियों ने जानवरों के लिये अस्पताल बनाया है, और उसका नाम पिंजरापौल रखाहै, जो जानवर मांदा और शक्तिहीन होता है उसे वहां रखते और पालते हैं।—१४-खेड़ा भड़ौंच के उत्तर गाइकवाड़की अमल्दारी से बहुत बेडौल मिलचुल रहा है, अकसर इसके हिस्से चारों तरफ़ ग़ैर अमल्दारियों से घिर गएहैं। सदर मुक़ाम खेड़ा बम्बई से २८० मील उत्तर दो छोटी छोटी नदियों के संगम पर शहरपनाह के अंदर बसा है। शहर के अंदर जैनियों का एक बड़ा मन्दिर है, लकड़ी का काम उस में अच्छा किया है। कोस एक के तफ़ावत पर नदी पार छावनी है।—१५-अहमदाबाद खेड़े के उत्तर। शास्त्र में सौराष्ट्र इसी देश को लिखा है लोग अब सोरठ कहते हैं। सदर मुक़ाम अहमदाबाद बम्बई से ३०० मील उत्तर सांभरमती के बांएं कनारे शहर पनाह के अंदर बसा है। किसी ज़माने में यह शहर इसी नाम के सूबै की बहुत आबाद राजधानी था, तीस मील के घेरे में अब तक भी पुरानी इमारतों के निशान मौजूद हैं, मरहठों ने तबाह कर दिया था, अब फिर सरकार के साये में आबाद होता चला है। लाख आदमी से ऊपर बसते हैं। वहां की जामेमस्जिद में यह एक अजीब बात है कि जो उसकी मिहराब पर धक्का लगाओ तो मीनार थरथरा उठे और एक मस्जिद निरे संगमर्मर की बनी है, उस में सीप चांदी हाथीदांत और क़ीमती पत्थरों का काम किया है। किसी ज़माने में कमख़ाब वहां का मशहूर था, पर अब वैसा और उतना नहीं बनता।—१६-सिंध समुद्र से सिंधु नदी के दोनों

कनारे बहावलपुर की अमल्दारी तक चला गया है। मुंज-अंतरीप इस इलाके की समुद्र के तटमें पश्चिम सीमा है। इसको जिला न कह कर एक कमिश्नरी कहना चाहिये, क्योंकि उसके लिये एक कमिश्नर मुक़र्रर है, और कमिश्नरके नीचे तीन असिस्टंट बतौर कलेक्टर मजिस्ट्रेट के तीन जिलों में, अर्थात् हैदराबाद करांची और सिकारपुर में; काम करते हैं। इस इलाके में उजाड़ और रेगिस्तान बहुत है, और कहीं कहीं छोटे छोटे पहाड़भी हैं, परन्तु सिंधु नदी की तटस्थ धरती खूब उपजाऊ है। लोहे की खान है। मुसल्मान जट और बलूची बहुत बसते हैं। बलूची वहां के बड़े बदज़ात हैं। किसी समय यह मुल्क बहुत आबाद था, निशान मकान और क़बरों के अकसर जगह मिलते हैं, पर अब तो मुद्दतों की बद अमली से यह हालहो गया है कि बहुधा मंजिलों तक गांव भी नहीं मिलते। ये लोग सिक्खों की तरह बाल बढ़ाते हैं, और पगड़ी इतनी बड़ी शायद दुनिया में कोई नहीं बांधता, कितनों ही की पगड़ी अस्सी गज़ से भी अधिक लंबी होती है, औरतें सुन्दर, फ़क़ीर बहुत। सदर मुक़ाम हैदराबाद सिन्धु की उस धाराके जिसका नाम फुलाली है दहने कनारे पर बसा है। क़िला एक पहाड़ी पर पक्का बना है। सिन्धु की बड़ी धारा वहां से तीन मील पश्चिम हैं छ मील उत्तर मियानी के पास सन् १८४३ में जेनरल नेपियर साहिब ने २८०० सिपाहियों से बाईस हजार बलूचियों को शिकस्त दी थी। हैदराबाद से अनुमान पचास मील दक्षिण जरा नैर्ऋतकोन को झुकता सिंधु के दहने कनारे पर ठट्टे का पुराना शहर है, किसी समयमें निहायत आबाद और बड़े व्यौपार की जगह था, पर अब उसमें बीसहज़ार आदमीभी नहीं निकलेंगे, हर तरफ़ मुसल्मानों के मक़बरे और खंड़हरों के ढेर नजर पड़ते हैं। अब

उस शहर की आबादी के बदल पचास मील पश्चिम हटकर करांची बंदर ने रौनक पाई है, और दिन पर दिन बढ़ता जाता है, माल के सब जहाज़ अब उसी में आकर लगते हैं। करांची से ९ मील ईशानकोन को गर्म पानी के सोते हैं। हैदराबाद से २१० मील दक्षिण सिकारपुर भी बड़े व्यापार की जगह है। हैदराबाद से दो सौ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता सिंधु के एक टापू में छोटी सी, पहाड़ी पर बकर अथवा भक्खर का क़िला है, दीवार उस में कच्ची पक्की ईंटों की दुहरी बनी हैं, क़िले के दोनों तरफ़ अर्थात् सिंधु के दोनों कनारों पर रोड़ी और सक्कर दो शहर बस्ते हैं, रोड़ी बांएं कनारे माय आठ हज़ार आदमियों की बस्ती बे रौनक़ और टूटा फूटा सा है, और सक्कर उस से भी घटकर है। हैदराबाद के अग्निकोन को जहां लोनी नदी रन में गिरती है उसी के पास दक्षिण रन और उत्तर रेगिस्तान के जंगल से घिरा हुआ पार्कर के परगने में मगर नाम पांच सौ झोपड़ों की बस्ती है, किसी समय में वहां १०००० आदमी बस्ते थे, निदान यह जगह जैनियों के तीर्थ की है, बहुतेरे यात्री उस रेगिस्तान के सफ़र की तकलीफ़ें उठा कर वहां गौड़ी पार्श्वनाथ की मूर्ति के दर्शन को आते हैं, मूर्ति वह सफ़ेद पत्थर की हाथ भर से कुछ अधिक ऊंची है, माथे और आंखों में जवाहिर जड़ा है, गौड़ी इस वास्ते नाम रहा कि पहले वह बंगाले में गौड़ के दर्मियान थी। यह मूर्ति वहां के ज़मीदारों के इख़्तियार में है, ज़मीन में गाड़कर अथवा बालू में छुपा रखते हैं, जब यात्रियों से अच्छी तरह पुजा लेते हैं तब दर्शन कराते हैं, पर रास्ते की तकलीफ़ से अब वहां यात्री लोगों का जाना कम हो गया, इसलिये उन्होंने यह क़ाइदा बांधा है कि जब यात्रियों के आने की ख़बर सुनते हैं तो अकसर मूर्तिही को वहां से तीन

मंज़िल बरे मेंड़वाड़े गांव में जो रन के तट पर बसा है उठा लाते हैं ॥

——❀——

हिन्दुस्तानी अमल्दारी

निदान जितने मुल्क में सरकार अंगरेज़ की अमल्दारी है, अर्थात् जिसका पैसा सरकारी ख़ज़ाने में आता है, और जहां दीवानी फ़ौजदारी की कचहरियां सरकार की तरफ़से मुक़र्रर हैं, उतने का तो बर्णन हो चुका, अब जो शेष रहा वह हिन्दुस्तानियों के क़ब्ज़े में है। यद्यपि उन में से बहुतेरे राजा और नव्वाब पुराने अहदनामों के अनुसार नाम के लिये स्वाधीन कहलाते हैं, परन्तु बस्तुतःसब के सब सरकार की दी हुई जागीरें खाते हैं, क्योंकि राज्य की जड़ सेना है, सो किसी के पास नहीं, एक नयपालवाले ने पंदरह हज़ार जंगी सिपाही रख छोड़े हैं, इसी कारन हम अब भी उसको स्वाधीन राजा पुकारते हैं। बहुत ग्रंथकारों ने इन रजवाड़ों को पुराने अहदनामों के बमूजिब स्वाधीन और पराधीन मानकर उन्हीं अहदनामों के लिखे हुए दर्जों के अनुसार बर्णन किया, पर जो कि अहदनामे बहुधा बदलते रहते हैं और शर्तें उनकी समय के फेरफार से सदा घटा बढ़ा करती हैं, हम उस नियम को छोड़कर पहले उत्तराखण्ड और फिर मध्यदेश और उस्से पीछे दक्षिण के रजवाड़ों को लिखते हैं, पर जिन सब रजवाड़ों का अहवाल आगे लिखा जाता है, उनके सिवाय यदि किसी जगह का कोई राजा नव्वाब या रईस सुन्ने में आवे, तो समझना चाहिये कि वह ज़मीदार या मुआफ़ीदार है, अर्थात् या तो सरकार अथवा किसी और राजा को कर देता है, या उनकी दी हुई मुआफ़ी खाता है, दीवानी फ़ौजदारी का इख़्तियार कुछ नहीं रखता, और उनके इलाक़ों का ज़िकर नहीं ऊपर लिखे

हुए जिलों में आगया, या नीचे लिखे हुए रजवाड़ों में आ जावेगा। निदान उत्तराखण्ड में—१—राज नयपाल है। उसे पश्चिम में काली नदी जो मानसरोवर के दक्षिण हिमालय से निकल सरयू में गिरती है कमाऊं के सरकारी इलाके से, और पूर्व में कंकई नदी जो हिमालय से निकल दूसरी नदियों से मिलती मिलाती गंगा में जा गिरती है शिकम के राज से जुदा करती है, उत्तर में उस के हिमालय पार तिब्बत का मुल्क है, और दक्षिण में पहाड़ों से नीचे कुछ दूर तो अवध का इलाका और फिर सूबे बिहार और बंगाले के सरकारी जिले हैं। ४६० मील लंबा और ११५ मील चौड़ा है, बिस्तार उसका ५४५०० मील मुरब्बा होवेगा। दक्षिण तरफ़ पहाड़ोंके नीचे दस बारह कोस जो मैदान का मुल्क है, उसे तराई कहते हैं। तराई के ऊपर अर्थात् उत्तर को, दस दस बारह बारह कोस तक पहाड़ हैं, उन पहाड़ों को चढ़कर बड़ी बड़ी लंबी चौड़ी दूने मिलती हैं, ऐसी कि जिन में कोसों तक सिवाय मिट्टी के पत्थर देखने को भी नहीं, फिर उनके उत्तर हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ हैं। ज़बर्जद सोनामखी लोहा सीसा तांबा रांगा गंधक हरिताल और सिन्दूर की खान है। नदियों का बालू धोने से कुछ सोन भी मिल जाताहै। दूध वहां गाय का बहुत मीठा और चिकना होता है। रहनेवाले असली वहां के सूरत में चीनियों से मिलते हैं राजा और ठाकुर लोग अपने तईं उदयपुर के राना की औलाद में समझते हैं। मकान और गलियां बस्तियों की निहायत ग़लीज़ रहती हैं, मानों जगह साफ़ रखना जानते ही नहीं। मांस खाने की इतनी चाह रखते हैं कि बलिदान के समय लहू तक पी जाते। चांवल और लहसन बहुत खाते हैं। लड़ाई में दिलेर और खूब मज़बूत हैं। आमदनी बत्तीस

लाख रुपया साल है। पचास बरस भी नहीं बीते कि इन लोगों ने कांगड़े तक पहाड़ों में अमल कर लिया था, और उस क़िले को जा घेरा था, परंतु सन् १८१५ ईसवी में जेनरल अक्टरलोनी साहिब ने उनकी फ़ौज को सतलज इस पार मलौन के क़िले में ऐसी शिकस्त दी कि वे लोग फिर अपनी असली हद में आ गये, तब से पैर बाहर नहीं निकाला। वहां के राजा के निशान पर हनूमान का चिह्न है। लौंडी गुलाम वहां अब तक बिकते हैं। वहां के राजा का वज़ीर जरनैल जंगबहादुर कुछ दिन हुए इंगलिस्तान को गया था, इस कारन उसने बड़ा नाम पाया, और यह वज़ीर बहुत होशयार और अक़लमंद है, इंगलिस्तान में जो जो अच्छे बंदोबस्त बालकों की शिक्षा और राज्य के शासन इत्यादि को देख आया है, उनमें से बहुत सी बातें धीरे धीरे नयपाल में भी यथाशक्ति जारी करना चाहता है। क्याही अच्छी बात हो कि हमारे राजा और रईस भी इंगलिस्तान की सैर का चाव करें और अपनी प्रजा का भला चाहें। राजधानी नयपाल की काठ मांडू, जिसका शुद्ध नाम काष्ठ मंदिर है, २७ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश पूर्ब देशांतरमें एक दून के दरमियान, जो प्राय २२ मील लंबी और बीस मील चौड़ी होवेगी, और जिसका किसी समय में झील होना पत्थरों के निशान और वहांवालों की पोथियों से साफ़ साबित है, बंगाले के मैदान से प्राय ४८०० फ़ुट ऊंचा बिशनमती नदी के पूर्ब तट पर जहां वह बाघमती से मिली है बसा है। पुरानी पोथियों में उसका नाम गूंगुलपट्टन लिखा है। घर ईंट लकड़ी और खपरैल के, पर सब के सब खराब और नाकारे, राजा के रहने का मकान भी कुछ देखने लाइक़ नहीं है। पास ही उसके तुलसी भवानी का मंदिरहै,

मूर्त्ति के बदल उस में यंत्र लिखा है, राजा रानी राजगुरु और पुजारी के सिवाय गैर आदमी अंदर नहीं जाने पाता। रज़ीडंट भी नयपाल के इसी काठमांडूमें रहते हैं। प्रसिद्ध बर्फ़ी पहाड़ जो वहां से दिखलाई देता है, उसका नाम धैवन, समुद्र से कुछ ऊपर २४६०० फुट ऊंचा है। चंद्रगिरि जो काठमांडू के पास है, कुछ कम ८५०० फुट ऊंचाहोवेगा। काठमांडू से दो मील दक्षिण पूर्वको झुकता बाघमती नदी के पार ललितपट्टन अनुमान २५००० आदमियों की बस्ती है, और काठमांडू की अपेक्षा इसकी इमारत फिरभी कुछ दुरुस्त है काठमांडूसे आठमील पूर्व अग्निकोन को झुकताहुआ भातगांव अनुमान १२००० आदमी की बस्ती है, पुराना नाम उसका धर्मपत्तन था; ब्राह्मण उस में बहुत हैं और महाराज के महल भी बने हैं। काठमांडू से ४१ मील पश्चिम वायुकोन को झुकती पहाड़ पर एक बस्ती गोरखानाम २०० घरों की नयपाल के वर्त्तमान राजाओं की क़दीम जन्मभूमि है, और इसी कारन बहुधा नयपालियों को विशेष करके साहिब लोग गोरखिये और गोरखाली भी कहते हैं, गोरखनाथ का वहां एक मंदिर बनाहै। हिमालय के पहाड़ों में गंडक नदी के बांएं तटसे अति निकट मुक्तिनाथ हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है, वहां सात गर्म सोते हैं कि जिनसे पानी निकलकर नारायणी नदी के नाम से गंडक में गिरता है, उन में से अग्निकुंड का सोता बहुत अद्भुत है, वह एक मंदिर के अंदर पहाड़ से निकलता है, और उसके पानी पर अग्नि की ज्वाला दिखलाई देती है, कारन इसका वही समझना चाहिये जो ज्वालामुखी में गोरखडिब्बी के लिये लिख आये हैं। काठमांडूसे आठ मंज़िल उत्तर दिशा के बर्फ़िस्तान में नीलकंठ महादेव का एक तीर्थ स्थान है, वहां भी गर्म

पानी का कुंड है ।--२--कश्मीर वा जम्बू । रावी और सिंधु नदी के बीच माय सारा कोहिस्तान इसी इलाके में गिनना चाहिये, बरन हिमालय पार लद्दाख़ का मुल्क भी, जो हिंदुस्तान की हद से बाहर और तिब्बत का एक भाग है, अब इस इलाक़े के साथ महाराज गुलाबसिंहके बेटे रनबीरसिंहके पासहै, और इस हिसाबसे यह राज़ वायुकोन से अग्निकोन की तरफ़ अनुमान साढ़ेतीनसौ मील लंबा और ईशान से नैर्ऋतकोन को अढ़ाई सौ मील चौड़ा होवेगा। विस्तार पचीस हज़ार मील मुरब्बा है । हद उस की उत्तर और पूर्व को चीन की अमल्दारी, और पश्चिम को अफ़ग़ानिस्तान और दक्षिण को पंजाबके सरकारी ज़िले और चंबा और बिसहर के छोटे छोटे पहाड़ी रजवाड़ों से मिली है । इन में कश्मीर की दून पोथी और किताबों में बहुत प्रसिद्ध है, और सच है कि उसका जहां तक तारीफ़ कीजिये सब बजा है, और दुनियां में जितनी प्रशंसा है कश्मीर के लिये सब रवा है जहान के पर्दे पर कदाचित् इस साथ का दूसरा स्थान हो तो हो सक्ता है, पर इस बात का हम मुचलका लिख देते हैं कि उससे बिहतर कोई दूसरी जगह नहीं है, क्योंकि होही नहीं सकती । मानो विधाता ने सृष्टि की सारी सुन्दर वस्तुओं का वहां नमूना इकट्ठा किया है । यह कश्मीर हिमालय के बीच में पड़ा है, जैसे कोई बादामी थाली हो इस तरह पर यह स्थान चौफेर हिमाच्छादित पर्वतों से घिर रहा है, और बीच में ७५ मील लंबा ४० मील चौड़ा सीधा मैदान बट्टाढाल है । पहाड़ों समेत यह मैदान अनुमान ११० मील लंबा और ६० मील चौड़ा है । पुरानी पुस्तकों में लिखा है कि किसी समय में यह सारा इलाक़ा पानी के अंदर डूबा हुआ था, और उस झील को सतीसर कहते थे । लोहे तांबे

और सुरमे की इस इलाके में खान है। दरख़्त सायादार और मेवों के इस इफ़रात से हैं, कि सारे इलाके को क्या पहाड़ और क्या मैदान एक बाग़ हमेशा बहार कहना चाहिये। कोई ऐसी जगह नहीं जो सब्ज़े और फूलों से खाली हो, सब्ज़ा कैसा मानों अभी इसपर मेह बरस गया है, पर ज़मीन ऐसी सूखी कि उस पर बेशक बैठिये सोइये मजाल क्या जो कपड़े में कहीं दाग़ लग जावे, न कांटा है न कीड़ा मकोड़ा, न सांप बिच्छू का वहां डर है, न शेर हाथी के से मूज़ी जानवरों का घर। जहां बनफ़शा गाय भैंसों के चरने में आता है, भला वहां के सब्ज़ःज़ारों का क्या कहना है, मानों पथिकजनों के आराम के लिये किसी ने सब्ज़ मखमल का बिछौना बिछा रखा है, और उन के बीच लाल पीले सफ़ेद सैकड़ों क़िस्म के फूल इस रंग रूप से खिले रहते हैं कि जी नहीं चाहता जो उन पर से निगाह उठाकर किसी दूसरी तरफ़ डालें। कहीं नर्गिस है और कहीं सोसन, कहीं लाला है और कहीं नस्तरन, गुलाब का जंगल, चंबेली का बन। मकान की छतें वहां तमाम मिट्टी की बनी हैं, बहार के मौसिम में उन पर फूलों के बीज छिड़क देते हैं, जब जंगल में हर तरफ़ फूल खिलते हैं, और मेवों के दरख़्त कलियों से लद जाते हैं, शहर और गांव भी चमन के नमूने दिखलाते हैं। लोग दरख़्तों के नीचे सब्ज़ों पर जा बैठते हैं, चाय और कबाब खाते हैं, नाचते गाते हैं, एक आदमी दरख़्त पर चढ़कर धीरे धीरे उन्हें हिलाता है, तो फूलों की बरखा होती रहती है, इसी को वहां गुलरेज़ी का मेला कहते हैं। पानी भी वहां फूलों से खाली नहीं कमल और कमोदनी इतने खिले हैं, कि उनके रंगों की आभा से हर लहर इन्द्रधनुष का समा दिखलाती है। भादों के महीने में जब मेवा पकता है तो

सेव नाशपाती के लिये केवल तोड़ने की मेहनत दरकार है, दाम उन का कोई नहीं मांगता, जंगल का जंगल पड़ा है, और जो बाग़ों में हिफ़ाज़त के साथ पैदा होती हैं, वह भी रुपये की तीन चार सौ से कम नहीं बिकतीं। नाशपाती कई क़िस्म की होती है बटंक सब से बिहतरहै। इसी तरह सेव भी बहुत प्रकारके होते हैं। बरसात बिलकुल नहीं होती। पहाड़ इसके गिरद इतने ऊंचे हैं, कि बादल जो समुद्र से आते हैं, उन के अधो भाग ही में लटकते रह जाते हैं, पार होकर कश्मीर के अंदर नहीं जा सकते। जाड़ों में दो तीन महीने बर्फ़ खूब पड़ती है, और सर्दी भी शिद्दत से होती है यहांतक कि झीलों पर पाले के तख़्ते जम जाते हैं, और वहां के लोग कांगडियों में, जो जालीदार डब्बे की तरह मिट्टी की अंगेठियां होती हैं, आग सुलगा· कर गले लटकाये रहते हैं जिस में छाती गर्म रहे, बाक़ी नौ दस महीने बहार है न गर्मी न जाड़ा, और धूल गर्द और लू और आंधी का तो क्या होना था वहां गुज़रा मई और जून में दो चार छींटे मेह के भी पड़ जाते हैं। झेलम अथवा बितस्ता इस इलाक़े के पूर्व से निकलकर पश्चिम को इस मज़े से बहती चली गई है, कि मानो ईश्वर ने जैसी वह भूमि थी वैसी ही उसके लिये यह नदी रची, न बहुत चौड़ी न सकड़ी, जल गहरा मीठा ठंढा और निर्मल, न उस में ऐसा तोड़ कि नाव को खतरा हो न ऐसा बंधा हुआ कि जिस में गंदा हो जावे, न यह दरया कभी बहुत बढ़ता है न घटता, कनारे भी न ऊंचे हैं न बहुत नीचे, कहीं हाथ कहीं दो हाथ, परंतु बालू का नाम नहीं, पानी के लबतक फूल खिले हुए हैं, और दरख़्त सायादार और मेवादार दुतरफ़ा इतने खड़े हैं, और उनकी टहनियां इतनी दूर तक पानी पर झुकी हैं कि नाव में बैठकर आरामसे छाया ही

छाया में चले जाओ और बैठेही बैठे मेवे तोड़ो और खाओ। कहीं बेदजमनू पानी में झुके हैं कहीं चनार जो बहुत बड़े दरख़्त और जिनकी छांव बहुत घनी और ठंढी होती है पन्ने का चतर सा बांधे खड़े हैं। कहीं सफ़ेदे के दरख़्त जो सरव की तरह सीधे और उस में भी अधिक ऊंचे और सुंदर होते हैं क़तार की क़तार जमे हैं, और कहीं उनके बीच में गांव और क़स्बे बस्ते हैं। दर्या के बाढ़ की दहशत न रहने से वहां वाले अपने मकानों की दीवारें ठीक पानी के कनारे से उठाते हैं, जिस में नाव उनके दर्वाज़ों पर जा लगे। नाव की सवारी यहां बहुत है, और उसी से सारे काम निकलते हैं। सब मिलाकर इस इलाक़े में अनुमान दो हज़ार नाव चलती होंगी, पर नाव भी कैसी, सुबुक हलकी साफ़ ख़ूबसूरत हवादार, नाम उनका परंदा, यथानामस्तथागुणः। बैरीनाग अर्थात् जिस जगह से यह नदी निकली है, वह भी दर्शनीय है एक पहाड़ की जड़से मेवों के जंगल के दर्मियान एक अठकोन पचीस फ़ुट गहरा कुंड है, घेरा उसका अनुमान अढ़ाई सौ हाथ होगा, पानी ठंढा और निर्मल, मछलियां बहुत, गिर्द इमारत बादशाही बनी हुई, निदान इस कुंड में पानी उबलता है, और उस से जो नहर बहती है, वहीं आगे जाकर और दूसरे सोतों से मिल के वितस्ता हो गई है। दो चार ब्राह्मण उस जगह पर रहा करते हैं, क्योंकि हिंदुओं का तीर्थ है, स्थान बहुत एकांत रम्य और मनोहर है। सिवाय इन के उस इलाक़े में और भी बहुतेरे कुंड और सोते हैं, जिन से नदी और नहरें इस इफ़रात से बहती हैं, कि सारी खेतियां जो बहुधा धान की होती हैं उन्हीं के पानी से सींचते हैं। छोटे कुंड को वहां नाग और बड़ों को डल कहते हैं। तीर्थ भी हिंदुओं के वहां कई एक हैं, पर सब में प्रसिद्ध श्रीनगर से

आठ मंज़िल उत्तर दिशा को बर्फ़ के पहाड़ों में ज्योतिर्लिंग अमरनाथ महादेव के दर्शन हैं। बरस भर में एक दिन श्रावण की पूर्णिमा को उनका दर्शन होता है, बड़ा मेला लगता है,। रस्ता बहुत बिकट है, अंत में सात आठ कोस बर्फ़ पर चलना पड़ता है, कपड़ा पहन कर वहां कोई नहीं जाने पाता, एक मंज़िल पहले से नंगे हो जाते हैं, अथवा भोजपत्र की लंगोटी बांध लेते हैं। मंदिर मूर्त्ति वहां कुछ नहीं है एक गुफ़ा सी है, उस में पहाड़ की बर्फ़ ढलकर पिंडी सी बन जाती है, उसी को महादेव का लिंग मानकर पूजा करते हैं। उस गुफ़ा के अंदर कबूतर भी रहते हैं, जब यात्रियों का शोर गुल सुनते हैं, तो घबरा कर बाहर निकल जाते हैं। वहां वालों का यह निश्चय है, कि साक्षात् महादेव पार्बती कबूतर बनकर उनको दर्शन देते हैं। श्रीनगर के अग्निकोन को एक दिन की राह पर मटन साहिब नाम एक कुंड हिंदुओं का तीर्थ है, उसके गिर्द इमारतें बनी हैं, तवारीख़ों से मालूम हुआ कि किसी समय में वहां सूर्य का एक बहुत बड़ा मंदिर था, और असली नाम उस स्थान का मार्तंड है, खंड़हर उस मंदिर का अब तक भी खड़ा है, वहां वाले उस को कौरव पाण्डव कहते हैं, स्थान देखने योग्य है। पास ही एक बहुत पुराना गहरा कूआ है, मुसल्मान उस को हारूत और मारूत का क़ैदख़ाना समझते हैं, और चाह बाबिल के नाम से पुकारते हैं। कश्मीरियों के निश्चय अनुसार मटन साहिब में श्राद्ध करने से गया बराबर पुण्य होताहै। इस इलाक़े के दर्मियान अकसर जगह पुराने समय की इमारतें मुसल्मानों की तोड़ीहुई दिखलाई देती हैं, वहांवाले उन्हें पांडवों की बनाई बतलाते हैं, पर बहुधा उन में से बौध राजाओं की हैं। श्रीनगर के वायुकोन अनु-

मान तीन दिन की राह पर रूसलू के गांव में एक कुण्ड है, जब पहाड़ों पर बर्फ़ गलती है, तो ज़मीन के नीचे ही नीचे उस कुंड में इस ज़ोर से पानी की बाढ़ आती है, कि भंवर सा पड़ जाता है, और जो कुछ लकड़ी घास उसकी थाह में रहताहै सब पानी पर तिरने और घूमने लगता है, नादान ख़याल करते हैं, कि पानी में देवता उतरा। श्रीनगर से चालीस मील वायुकोन पश्चिम को झुकता निच्छीहमा गांवके पास एक ज़मीन का टुकड़ा है, वह सदा गर्म और जलता रहता है, वहांवाले उस ज़मीन को सुहोयम पुकारते हैं, मालूम होता है कि उस ज़मीन के नीचे गंधक हरिताल इत्यादि से किसी चीज़ की खान है। लोग यहां के परम सुंदर लेकिन दग़ाबाज़ और झूठे परले सिरे के, लड़ाक भी बड़े होते हैं, विशेष करके स्त्रियें भटियारियों से भी अधिक लड़ती हैं, पैर में सूप बांध बांधकर और हाथ में मूसल ले लेकर झगड़ती हैं। बस्ती वहां मुसल्मानों की है, हिंदू जितने हैं सब के सब भ्रष्ट, मुसल्मानों की छुई रोटी खाने में कुछ भी दोष नहीं समझते। ये कश्मीरी दूसरे मुल्कों में आकर पंडित और ब्राह्मण बनजाते हैं, और वहां मुसल्मान का पकाया खाना खाते हैं। कारीगर यहां के प्रसिद्ध हैं, और शालबाफ़ तो यहां के से कहीं नहीं होते। शाल पर यहां की आब हवा का भी बड़ा असर है, क्योंकि यही कारीगर यदि इस इलाक़े से बाहर जाकर बुनें, कदापि वैसी शाल उन से नहीं बुनी जावेगी, पर इन शालबाफ़ों को वहां दो चार आने रोज़ से अधिक हाथ नहीं लगता, महसूल बड़ा है, जितने रुपये का माल तैयार होता है, उतना ही उस पर शालबाफ़ों से महसूल लिया जाता है। अब वहां सब मिलाकर चार पांच हज़ार दूकानें शालबाफ़ों की

होवेंगी, हमिल्टन साहिब के लिखने बमूजिब एक ज़माने में सोलह हज़ार गिनी जाती थीं। पश्मीना जिस से ये शाल बुने जाते हैं कश्मीर में नहीं होता, तिब्बत से आता है। वे छोटी छोटी लंबे बालों वाली बकरियां जिनके बदन पर पश्मीना होता है सिवाय तिब्बत के दूसरी जगह नहीं जीतीं। केसर वहां साल भर में सत्तर अस्सी मन पैदा होता है। श्रीनगर कश्मीर की राजधानी है। यह शहर ३३ अंश २३ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश ४७ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से ५५०० फ़ुट ऊंचा वितस्ता के दोनों किनारों पर चार मील लंबा बसा है, और शहर के बीच में से यह नदी इस तरह पर निकली है, कि लोग अपने मकान की खिड़की और बरामदों में बैठे हुए उससे पानी खींच लेते हैं। यहां इस नदी का पाट डेढ़सौ गज़ से अधिक है। एक कनारे से दूसरे कनारे जाने के लिये सात पुल काठ के बने हैं। जब किसी को किसी के यहां जाना होता है, बेतकल्लुफ़ किश्ती पर बैठकर चला जाता है, दूसरी सवारी की इहतियाज नहीं पड़ती। गलियां तंग और गलीज़, हम्माम बहुत। नहाने के लिये दर्या कनारे पानी पर काठ के संदूक़ से बने हैं, कि जब चाहो एक जगह से खोल कर दूसरी जगह ले जाओ, जिस को दर्या में नहाना होता है, वह उन्हीं के अन्दर पर्दे के साथ नहा लेता है। इमारत ईंट और काठ की, खिड़कियों में जालियां चोबी बहुत अच्छी बनीहुई, और उनके अंदर बर्फ़ के दिनों में ठंढी हवा रोकने के लिये बारीक क़ाग़ज़ लगा देते हैं, शीशा नहीं मिलता। शहर के उत्तर कनारे पर अढ़ाई सौ फ़ुट ऊंचा हरीपर्बत नाम एक छोटा सा पहाड़ है, उस पर एक छोटा सा क़िला बना है, ऊपर चढ़ने से शहर और डल दोनों की सैर बख़ूबी दिखलाई देती है। हाकिम के

रहने के मकान शहर के दक्षिण तरफ़ वितस्ता के कनारे क़िले के तौरपर बुर्ज देकर बने हैं, उसे शेरगढ़ी कहते हैं। बादशाही मकानों का अब कहीं पता भी नहीं लगता, जहां दौलतसरा अर्थात् जहांगीर के महलों का निशान देते हैं, वहां अब धांन की खेतियां होती हैं, एक दर्वाज़े के पत्थर पर जो बाक़ी रहगया है, फ़ारसी शैर खुदे हैं, उनके पढ़ने से मालूम होताहै, कि किसी समय में वहां नागर नगर नाम क़िला बनाया गयाथा, और उसके ख़र्च के लिये, सिवाय कश्मीर की आमदनी के जो बिलकुल उसी में बन चुकने तक लगा की, एक करोड़ दस लाख रुपया बादशाह ने अपने ख़ज़ाने से भेजा। नसीम नशात और शालामार यह तीनों बाग़ उस वक़्के जो अब तक डल के कनारे मौजूद हैं, उन में से नसीम में तो जहां बादशाह घोड़ा फेरते थे केवल हज़ार अथवा बारह सौ दरख़्त बड़े बड़े चनारों के खड़े हैं, और नशात और शालामार ये दोनों बाग़ ऊजड़ पड़े हैं। फ़व्वारे टूटे हुए, मकान गिरे हुए, हौज़ों में पानीकी जगह सूखी काई जमी हुई, क्यारियों में फूल के बदल खेती बोई हुई यह हालहै उन बाग़ों का, जिनमें जहांगीर नूरजहां के गले में हाथ डालकर दोनों जहान से बेख़बर फिरा करता था, और जिनको पृथ्वी पर स्वर्ग का नमूना बतलाते थे। सारे जहान की ख़ूबियों का ख़ुलासा कश्मीर, और कश्मीर की ख़ूबियों का ख़ुलासा डल है। यह झील निर्मल जल की जो निहायत गहरी है प्राय दस मील के घेरे में होवेगी। दो तरफ़ उसके पहाड़ है लेकिन पांच पांच सात सात कोस के तफ़ावत से, और दो तरफ़ श्रीनगर का शहर बसा है। नालों के वसीले से वह वितस्ता से मिली हुई है, कनारों पर बाग़ हैं, बीच बीच में टापू, उन में अंगूर बेदमजनू इत्यादि सुंदर पेड़ों के

अंदर लोगों के मकान, तख़्तों पर खीरे खरबूज़े की खेतियां, (१) मुर्ग़ाबियां कलोलें करती हुई कहीं नाव कमलों के बीच से होकर निकलती हैं, और कहीं अंगूर और बेदमजनू की कुंजों के नीचे ही नीचे चली जाती है। जुमे के रोज़ क्या ग़रीब और क्या अमीर नाव में बैठ कर सैर के लिये डल में जाते हैं, इन्हीं टापुओं में चाय रोटी खाते हैं, नाच गाने का भी शग़ल रखते हैं, यह कैफ़ियत देखने की है, लिखने की कदापि लेखनी को सामर्थ्य नहीं। अगले लोग जो कश्मीर की तारीफ़ में यह बात लिख गये हैं, कि बूढ़ा भी वहां जाने से जवान हो जाता है, सो इतना तो वहां अवश्य देखने में आया कि मन उसका जवानों का सा हो जाता है, जैसे रेगिस्तान में जेठ बैसाख के झुलसे हुए मनुष्य को यदि कहीं बसंत ऋतुकी हवा लगजावे तो देखो उसका मन कैसा बदल जावेगा, और तिस में कश्मीर की हवा के आगे तो और जगह का बसंत ऋतु भी नर्क ऋतु है। जो लोग निर्जन एकांत रम्य और सुहावने स्थान चाहते हैं, उनके लिये कश्मीर से बढ़कर दूसरी जगह कोई भी नहीं है॥

---

(१) डल के कनारे जहां पानी छिछला रहता है, घास पत्ते बहुत जमते हैं। वहां के आदमी उन सब घास पत्तों को जड़से काट देते हैं। और जब वे पानी पर इकट्ठा होकर तिरने लगते हैं, तो उनको आपस में बांधकर ऐसा मज़-बूत कर देते हैं कि जिस में फिर बिखरने न पावें, और ऊपर थोड़ी थोड़ी सी मिट्टी रखकर खीरे खरबूज़े तरबूज़ इत्यादि के बीज बो देते हैं, सिवाय बीज बोने के और कुछ भी मिहनत नहीं करनी पड़ती, जब फल लगता है तो जाकर तोड़ लाते हैं। चौड़ान उस तख़्ते की दो गज़ रहती है, और लंबान का कुछ ठि-काना नहीं, पानी पर नाव की तरह फिरा करते हैं॥

दोहा ॥

स्वर्गलोक यदि भूमि पर तौहै याही ठौर।
जो नाहीं या भूमि पर याते सरस न और॥ १॥

कश्मीर स्वर्ग है परंतु बिलफैल राक्षसों के क़ब्ज़े में, क्योंकि वहां के लोग महाराज के ज़ुल्म से बहुत तंग हैं। अदना सा ज़ुल्म उसका यह है कि जमींदारों से आधा अन्न तो बटाई करके लेता है, और आधा उन से मोल ले लेता है। जो बाज़ार में मन भर का भाव है तो वह दो मन के हिसाब से लेवेगा, परंतु इस पर भी ज़मीदार का गला नहीं छुटता, उसका मक़दूर नहीं कि बोने को बीज दूसरी जगह से ख़रीद सके, जो बाजार में मन का भाव है तो उसे बीस सेर के भाव राजा की दुकान से लेना पड़ेगा! और फिर तमाशा यह कि उन लोगों से बेगार में नौकरी ली जाती है, कितने जमीदार राजा की बतक पालकर और उनके अंडे छावनी में बेच के रुपया राजा के ख़ज़ाने में दाख़िल करते हैं, और कितने ही उसके फ़ाइदे के लिये जंगल से घास लकड़ी काटकर बाज़ार में बेचते हैं। जितने वहां पेशेवाले हैं सब पर महसूल मुक़र्रर है, ठीकेदार वसूल करता है। यदि धोबी को धुलाई का टका हवाले करो, तो उस में से एक पैसा राजा का हो चुका, रंडी अगर कसब करके एक रुपया कमावे आठ आना महाराज का हक़ है। महाराज ने घाटियों पर पहरे बैठा दिये हैं, कि कोई आदमी उसके ज़ुल्म से भागकर बाहर न जाने पावे। रुपया उसकी टकसाल से जो निकलता है, आधा उस में चांदी और आधा तांबा रहता है। इन कश्मीरियों ने तो अब तक उसका गला काट डाला होता, पर उसने उन्हें फांसा दे रखा है, कि जो कोई उसकी गुनाह करेगा वह सरकार अंगरेज़ी

से सज़ा पावेगा। महाराज नरबीर सिंह को हम स्वाधीन नहीं कह सकते, क्योंकि वह हर साल कुछ दुशाले और घोड़े इत्यादि सर-कार में नज़राना दाखिल करता है। आमदनी उसकी सब मिला कर अनुमान प्राय करोड़ रुपया की होवेगी, पचीस लाख तो केवल कश्मीर से आता है, कि जिस में आठ लाख शाल का महसूल और लाख से ऊपर पेशेदारों का कर है, निदान इस पचीस लाख में केवल बारह लाख धरती की जमा, और बाक़ी बिलकुल मह-सूल और नज़राना है। जम्बू श्रीनगर से १०० मील दक्षिण, जहां से कोहिस्तान शुरू होता है, एक छोटी सी पहाड़ी पर बसा है। न वहां पीने को पानी अच्छा मिलता है, और न कोई अच्छा साया-दार दरख़्त है, थूहर और कांटों से हर तरफ़ घिरा है, वहांवाले इन झाड़ झंखाड़ों को मज़बूती का बाइस समझते हैं, पर सन् १८४५ में सिखों की फ़ौज ने वह जगह सहज में जा घेरी थी। जम्बू से तेइस कोस के फ़ासिले पर पुरमंडल में गुलाबसिंह ने महादेव का एक मंदिर अच्छा बनाया है, शिखर पर उसके तमाम सुनहरी मु-लम्मा है। श्रीनगर से ९० मील दक्षिण चनाब के बांएं कनारे एक खड़े पहाड़ पर रिहासी का मज़बूत क़िला बना है, गुलाबसिंह का ख़ज़ाना उसी में रहता है।-३-शिकम पश्चिम तरफ़ कंकई नदी उसे नयपाल से, और पूर्व तरफ़ तिष्टा भुटान से, जुदा करती है, दक्षिण को कुछ दूर तक नयपाल और कुछ दूर तक सरकारी इलाक़ा है, और उत्तर को हिमालय पार चीन की अमल्दारी है। अनुमान ६० मील लंबा और ४० मील चौड़ा है। बिस्तार १६०० मील मुरब्बा है। नयपाल के मुल्क से बहुत मिलता है, लोग वहां के जिन्हें लपचा कहते हैं सब कुछ खाते पीते हैं, यहां तक कि गोमांस से

भी पर्हेज़ नहीं करते। तीरों को ज़हर में बुझाते हैं। बौध मतवाले बहुत हैं। राजधानी शिकम, जिसे दमूजंग भी कहते हैं, २७ अंश १६ कला उत्तर अक्षांस और ८८ अंश ३ कला पूर्व देशांतर में झमीकूमा नदी के कनारे पर बसा है। दार्जिलिंग का पहाड़ जो समुद्र से ७००० फ़ुट ऊंचा है इस राज के अग्निकोन में पड़ा है, सरकार ने उसे साहिब लोगों के हवा खाने के वास्ते राजा से ले लिया, और अब उस पर बहुत से बंगले बन गए हैं, दानापुर की छावनी से दार्जिलिंग सीधा ८४ और सड़क की राह १०५ मील है।-४—भुटान। यद्यपि हम लोग हिमालय पार पर्वतस्थली में लहासे से लेकर लद्दाख पर्यन्त तिब्बत के सारे मुल्क को भुटान अथवा भोट कहते हैं परंतु अंगरेज बहुधा इसी इलाक़े को भोट के नाम से लिखते हैं, जिसका यहां बर्णन होता है। जानना चाहिये कि यह इलाक़ा शिकम के पूर्व हिंदुस्तान के ईशानकोन में हिमालय के दर्मियान सौ कोस से अधिक लंबा और प्राय पचास कोस चौड़ा चीन के तावे है। हमिल्टन साहिब मद्र देश इसी का नाम बतलाते हैं। बरसात बहुत नहीं होती। टांगन वहां के मशहूर हैं, जिन पहाड़ों में वे होते हैं, उनका नाम टांगस्थान है। आदमी बड़े मज़बूत, छ फ़ुट तक लंबे, रंग सांवला, बदन गठीला आंखें छोटी पर नोकें निकली हुई, भौं बरौनी और दाढ़ी मूंछे बहुत कम और हलकी, घेघे की बीमारी में बस्ती का छठा हिस्सा फसा हुआ, तीर उनके ज़हर में बुझे हुए, खाना आटा गोश्त चाय नमक और मक्खन इकट्ठा पानी में उबला हुआ, मज़हब बौध, राजा धर्मराजा साक्षात् भगवान बुधका अवतार कहलाता है, और जो आदमी उसके नीचे मुल्क का कारोबार करता है उसे देवराजा पुकारते हैं। राजधानी उसकी

तसीसूदन २७ अंश ५ कला उत्तर अक्षांस और ८९ अंश ४० कला पूर्व देशांतर में पहाड़ों के बीच बसा है। राजा के रहने का गढ़ सात मरातिब का चौखूंटा संगीन बना है, उसका हर एक मरातिब पंद्रह फ़ुट से कम ऊंचा नहीं है, और उसके ऊपर सुनहरी मुलम्मे का बड़ा सा तांबे का एक छत्र चढ़ा है। बैद हकीमों की वहां बड़ी कम्बख़्ती है, जो दवा राजा को देते हैं चाहे वह जुल्लाब हो और चाहे कुछ और बला पहले उस में से बैदको पिलाते हैं, यदि हम वहां के हकीम होते तो राजा के लिये सदा अच्छी अच्छी मीठी माजून याक़ूत और नोशदारुओं ही का नुसख़ा लिखा करते चाहे उसे हैज़ा होता चाहे सरसाम और चाहे वह चंगा होता चाहे मरजाता उसी शाम। क़ाग़ज़ वहां का मज़बूत होता है, अक्सर सुनहरी रंग कर कैंची से कतर के कलाबत्तून की जगह कपड़े के साथ बुनकर पहनते हैं। तसीसूदन से चालीस मील दक्षिण चूका के क़िले के पास तेहिंच्यू नदी पर लोहे की जंजीर का पुल बना है वहां वाले उसे देवताओं का बनाया समझते हैं।—५— चंबा सुकेत और मंडी ये तीनों पहाड़ी राज कश्मीरके अग्निकोन चनाब और सतलजके बीच में हैं। चंबे का इलाक़ा रावी के दोनों तरफ़ महाराज रनबीरसिंह की अमल्दारी से कांगड़े के सरकारी जिले तक चला गया है। आमदनी उस की लाख रुपया साल से कम है। राजधानी चम्बा ३२ अंश १७ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ५ कला पूर्व देशांतर में रावी के दहने कनारे बहुत रम्य और सुहावने स्थान में बसा है। सुकेत सतलज से १२ मील दहने कनारे पर ३१ अंश २७ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ५८ कला पूर्व देशांतर में बसा है। सतलज के कनारे गर्म पानी का

एक सोता है, वहां वाले उसे तत्तापानी कहते हैं, पानी के साथ गंधक भी जमीन से निकलती है। इसकी आमदनी अस्सी हजार रुपये साल अनुमान करते हैं, और मंडी जो इन तीनों में सब से बड़ा है, अर्थात् साढ़े तीन लाख रुपये साल की आमदनी का मुल्क गिना जाता है, सुकेत और सरकारी जिले कांगड़े के बीच में पड़ा है। लोहे और नमक की खान है, पर नमक अच्छा नहीं होता। राजधानी मंडी ३१ अंश ४० कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ५३ कला पूर्व देशांतर में व्यासा नदी के बांएं कनारे बसा है। वहां से २५ मील वायुकोन व्यासा के बांएं कनारे १५०० फ़ुट ऊंचे एक पहाड़ पर कमलागढ़ का क़िला बहुत मज़बूत बना है। मंडी से १० मील मैदान की तरफ़ रैवालसर हिंदुओं का तीर्थ है, बरन वहां की यात्रा के लिये बौधमती भोटिये भी आते हैं। हाल उसका यह है कि पहाड़ों के बीच में प्राय पाव कोस के घेरे में निर्मल जल से भरी हुई एक झील है, नहाने के लिये पश्चिम कनारे पर एक छोटा सा पक्का घाट बना है, उस झील के अंदर सात बेड़े तिरते हैं, देखने में वे हूबहू छोटे २ टापू मालूम होते हैं, पर वहां वाले उन को बेड़ा ही पुकारते हैं, घास पत्ते बरन बेलबूटे नरकट वँगरैया इत्यादि भी उन पर जम गए हैं, लेकिन सब से बड़ा दस हाथ से अधिक लंबा नहीं है, जब वे कनारे पर आकर लगते हैं, तब यदि कोई पानी में ग़ोता लगाकर उन बेड़ों के पेंदों को जांचे और ऊपर नीचे अच्छी तरह से निगाह करे तो बख़ूबी मालूम हो जायगा कि उन सब बेलबूटों की जड़ आपस में इस तरह मज़बूत गुथी हुई हैं, और आंधी पानी से उन पर कंकर मिट्टी भी इतनी पड़ गई है, कि देखने में तो वे पत्थर की शिला से मालूम होते हैं, और तिरने में स्वभाव

काठका रखते हैं। जानना चाहिये कि बहुतेरे ऐसे पेड़ होते हैं जिन की जड़ें आपस में गुथी रहती हैं, और अक्सर मिट्टी भी इस प्रकार की होती है कि जब गर्मी में सूखकर पपड़ा जाती है और फिर बरसात में पानी की बाढ़ आती है तो उन पेड़ों की जड़ आपस में गुथी रहने के कारन वह तख़्ते का तख़्ता ज़मीन से जुदा होकर पानी में तिरने लगता है। देखो अमरीका में मक्सीको शहर के पास ऐसे बड़े बड़े बेड़े पानी पर तिरते हैं, कि उन पर खेतियां होती हैं और बाग़ और छप्पर बनाते हैं। फ़रासीस में सेंटउमर के पास जो बेड़े तिरते हैं उन पर गाय बैल चरते हैं। कश्मीर में भी झीलों के दरमियान बेड़ों पर खेतियां बोते हैं। निदान जो कोई वहां कुछ दिन रहे तो बख़ूबी देख सकता है कि वे बेड़े हवा और पानी के ज़ोर से वहां तिरा करते हैं, और कभी कभी जब कनारे पर जा लगते हैं तो यात्रियों की निगाह बचाकर पंडे लोग भी उन्हें धक्का दे देते हैं। लोगों का यह कहना सरासर झूठ है कि रैवालसर में पत्थर के पहाड़ तिरते हैं, और पंडों के बुलाने से यात्रियों की पूजा लेने को कनारे चले आते हैं। —६—सतलज और जमना के बीच पहाड़ी राजा राना और ठाकुरों के इलाक़े। इन में कहलूर सिरमौर और बिसहर ये तीन तो अनुमान लाख लाख रुपये साल की आमदनी के रजवाड़े हैं, और बाक़ी बारह ठकुराइयों के राना तीस हज़ार से लेकर तीन सौ रुपये साल तक की आमदनी रखते हैं। कहलूर की राजधानी बिलासपुर ३१ अंश १९ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ४५ कला पूर्व देशांतर में सतलज के बांएं कनारे सुन्दर मनोहर जगह में समुद्र से १५०० फ़ुट ऊंचा बसा है। बिलासपुर के पश्चिम दो दिन की राह पर सतलज के कनारे प्राय तीन हज़ार फ़ुट ऊंचे एक पहाड़ के

ऊपर नयनादेवी का मंदिर है, मैदान से पहाड़ पर चढ़ने को अनुमान चार हज़ार के लग भग सीढ़ियां कहीं पहाड़ काट कर और कहीं पत्थर जोड़कर बनाई हैं, मंदिर से अजब कैफ़ियत नज़र पड़ती है, एक तरफ़ अम्बाले और सरहिंद का मैदान और दूसरी तरफ़ हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ और नीचे दूर तक सतलज का बहना। सिरमौर की राजधानी नाहन ३० अंश ३० कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश ४५ कला पूर्ब देशांतर में समुद्र से ३००० फ़ुट ऊंचा जमना से बीस मील बांएं कनारे है। बिसहर का इलाक़ा सतलज के कनारे कनारे हिमालय पार चीन की हद से जा मिला है। राजधानी उसकी रामपुर ३१ अंश २७ कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश ३८ कला पूर्ब देशांतर में समुद्र से ३३०० फ़ुट ऊंचा सतलज के ठीक बांएं कनारे पर बहुत तंग और बुरी जगह में बसा है। पहाड़ वहां ऐसे ऊंचे नीचे और दरख़्तों से ख़ाली कि वह कदापि आदमी के बसने की जगह न थी ज़बर्दस्ती जा बसे हैं। रामपुर में अलवान के तौर पर पशमीने की सफ़ेद चादरें बीस बीस रुपये को बहुत अच्छी बनती हैं, तारीफ़ उसके नर्म और गर्म होने की है, साहिब लोग बहुत पसंद करते हैं, और बिलायत को ले जाते हैं। कनावर का पर्गना इस राज में बहुत अच्छा है, साहिब लोग बरसात में शिमला से हवा खाने को उसी तरफ़ जाते हैं, बरफ़ के ऊंचे पहाड़ आड़े आ जाने के कारन कश्मीर की तरह वहां भी बरसात नहीं होती, आब हवा निहायत अच्छी, यहां अबतक भी पांडवों की तरह बहुत से भाई एक ही औरत से शादी कर लेते हैं, और इन पहाड़ों में औरत के वास्ते एक ख़ाविंदको छोड़ कर दूसरे के पास चले जाना ऐब नहीं समझते, ऐसी कम मिलेंगी जिन्हों ने दो तीन बार अपने ख़ाविंद

नहीं बदले। शिमला से नीचे पहाड़ियोंका यह भी एक अजब दस्तूर है कि जहां उनका लड़की लड़का छ सात महीनेका हुआ तो उसे सुबह होते ही गांव के पास पेड़ों की छाया में पानी के झरनों के नीचे ऐसी जगह में लेजाकर सुला देते हैं, कि उस झरने का पानी झारी की धार की तरह ठीक उस की चांदी पर गिरा करता है, निदान एक दो औरतों की निगहबानी में गांव के सारे लड़के वहां पानी के तले दिन भर सोए रहते हैं यदि इस प्रकार पानी का नालुआ नित उन के सिर पर न दिया जाय कदापि न सोवें, और सिर खुजलाते खुजलाते मरजावें।—७—गढ़वाल बिसहर की हद से मिला हुआ जमना और गंगा के बीच ४५०० मील मुरब्बा के बिस्तार में अनुमान लाख रुपये साल की आमदनी का मुल्क है। राजा टीहरी में रहता है, वह ३० अंश २३ कला उत्तर अक्षांस और ७८ अंश २८ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से २२०० फुट ऊंचा गंगा के बांए कनारे बसा है॥

निदान उत्तराखंड के रजवाड़े तो हो चुके अब मध्य देश के रजवाड़े लिखे जाते हैं—१—बघेलखंड इलाहाबाद और मिरज़ापुर के दक्षिण शोणनद के दोनों तरफ़ विंध्य की पर्वतस्थली में बसा है। उत्तर दक्षिण और पूर्व सूबै इलाहाबाद और बिहार के सरकारी जिले हैं और पश्चिम में उसके बुंदेलखंड का इलाक़ा है। बिस्तार उसका दस हज़ार मील मुरब्बा, और आमदनी बीस लाख रुपया साल। इस राज में नदियों का पानी कई जगह ऐसे ऊंचे ऊंचे पहाड़ों से गिरता है कि वह देखने योग्य है, उन जंगल और पहाड़ों में इस पानी के गिरने का शब्द और जलकणों का हवा में उड़ना विरक्त जनों के मनको बहुत सुख देता है।

बीहर का झरना प्राय सवा सौ गजकी ऊंचान से जल की एक धारा होकर गिरता है, इस में कोस एक के तफ़ावत पर टोंस का पानी गिरता है, यद्यपि ऊंचान में तो वह सत्तर गज से अधिक नहीं है पर धार उस के जल की जब फूलर्टन साहिब ने सिप्तम्बर महीने में देखी थी बीस गज चौड़ी और तीन गज मोटी थी। राजधानी रेवा जिसे रीवां कहते हैं बिछिया नदी के दहने कनारे २४ अंश ३४ कला उत्तर अक्षांस और ८१ अंश १९ कला पूर्व देशांतर में बसा है। राजा के रहने का क़िला संगीन ठीक नदी के तट पर बना है।—२—बुंदेलखंड, पूर्व उस के रेवा है, और पश्चिम ग्वालियर की अमल्दारी और झांसी की कमिश्नरी, उत्तर और दक्षिण को सूबै इलाहाबाद के सरकारी जिलों से घिरा हुआ है। यह इलाक़ा सारा विंध्य की पर्वतस्थली में बसा है, आकाश से कोई बुंदेलखंड को देखे तो उसके पहाड़ों का उतार चढ़ाव ठीक समुद्र की लहरों की तरह नज़र पड़ेगा, पर दो हज़ार फ़ुट से अधिक ऊंचा उन में कोई नहीं है। लोहे की खान है। इस इलाक़े में दतिया उरछा चारखाड़ी छतरपुर अजयगढ़ पन्ना समथर और बिजावर ये आठ तो छ हज़ार मील मुरब्बा के बिस्तार में रजवाड़े हैं, और बाक़ी चौबीस के क़रीब बहुत छोटे छोटे जागीरदार हैं। २५ अंश ४३ कला उत्तर अक्षांस और ७८ अंश २५ कला पूर्व देशांतर में दतिया पक्की शहरपनाह के अंदर बसा है, बीचमें राजा के महल हैं, आमदनी इलाक़े की दस लाख रुपया साल। दतिया से ७५ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता टीहरी उरछा के राजा की राजधानी है, आमदनी इस इलाक़े की सात लाख रुपया साल राजा के टीहरी में आ रहने से उरछा जो दतिया और टीहरी

के बीच में बेत्वा के बांएं कनारे पुरानी राजधानी था वीरान हो गया। दतिया से ७५ मील पूर्व अग्निकोन को झुकता चारखाड़ी एक पहाड़ी के नीचे बसा है, क़िला उस पहाड़ी पर अधबना रह गया है, शहर के बीच राजा के रहने के मकान हैं, और बाहर चौगिर्द जंगल खड़ा है, आमदनी चार लाख रुपया साल। दतिया से ८० मील अग्निकोन छतरपुर तीन लाख रुपये साल की आमदनी का इलाक़ा है। दतिया से १२० मील अग्निकोन पूर्व को झुकता अजयगढ़ सवातीन लाख रुपये साल की आमदनी का इलाक़ा है। दतिया से ११० मील अग्निकोन पन्ना एक पथरीले मैदान में बसा है, हीरे की खान है, अकबर के वक्त में उसकी पैदा आठ लाख रुपये साल अनुमान की गई थी, पर अब बहुत कम है, सारे इलाक़े की आमदनी मिलकर चार लाख रुपया होता है। दतिया से ३० मील ईशानकोन समथर साढ़े चार लाख रुपये साल की आमदनी का इलाक़ा है, और दतिया से १०० मील अग्निकोन दक्षिण को झुकता हिजावर सवादो लाख रुपये साल की आमदनी रखता है।—३—ग्वालियर अथवा सेंधिया की अमल्दारी। उत्तर को वह सूबे अकबराबाद के सरकारी ज़िले और धौलपुर और करौली के इलाक़ों से मिला है, और पूर्व को उसके बुंदेलखंड भूपाल और सागर नर्मदा के सरकारी ज़िले हैं। पश्चिम सीमा पर जयपुर कोटा उदयपुर परतापगढ़ बांसवाड़ा और बड़ोदे के इलाक़े हैं, और दक्षिण की तरफ़ हैदराबाद और इंदौर की अमल्दारी से मिल गया है। दक्षिण को यह राज नर्मदा पार बरन तापी पार तक चला गया है, पर राजधानी इसकी नर्मदा वार मध्यदेश में पड़ी है, इस कारन इसे मध्यदेश ही के रजवाड़ों में लिख दिया। बिस्तार उसका तैंतीस

हज़ार मील मुरब्बा है, और आमदनी अठत्तर लाख रुपये साल। दक्षिण भाग बिंध्य के पर्वतों से आच्छादित है, और उन में, बहुधा नर्मदा के तट पर, भील लोग बस्ते हैं। अंगरेज़ी अमल्दारी से पहले नित की लूटमार और आपस में लड़ाई रहने के कारन उजाड़ बहुत हो गया है, जंगल झाड़ी हर तरफ़ दिखलाई देते हैं। खान से लोहा निकलता है। धरती मालवे की प्रसिद्ध उपजाऊ है, कहावत मशहूर है। धरती मालव गहर गंभीर। मग मग रोटी पग पग नीर। मिट्टी काली बरसात के बाद पानी सूखने पर जगह जगह से फट जाती है, इस कारन घोड़ों को सड़क से बाहर चलने में पैर टूट जाने का बड़ा खतरा रहता है। राजधानी ग्वालियर २६ अंश १५ कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश १ कला पूर्व देशांतर में एक पहाड़ी के नीचे बसा है। उस पहाड़ी पर जो ३४२ फ़ुट वहां से ऊंची है एक बहुत मज़बूत क़िला प्राय पौन कोस लंबा बना है, जल के टांके उस में बहुत बड़े बड़े हैं। सन् १७८० में जब मेजर पोफ़म् साहिब ने सरकार के हुक्म बमूजिब इस क़िले को घेरा था तो उन को उस पर किसी तरफ़ से भी चढ़ने की राह न मिली, लेकिन एक चोर जो उस क़िले में चोरी को जाया करता था उन से मिल गया, और अपना रास्ता बतलाया, यद्यपि वह आदमी के जाने का न था केवल बंदर लंगूर जाते थे, पर पोफ़म् साहिब अपनी सारी फ़ौज को रातही रात में उस राह चढ़ा ले गये, और क़िला फ़तह किया। इस शहर को लश्कर भी कहते हैं, कारन यह कि पहले सेंधिया की राजधानी उज्जैन थी, और उसका लश्कर सदा चढ़ाई और लड़ाई पर रहता था, पर जब से उसके लश्कर का देरा ग्वालियरमें पड़ा, फिर वहां से न हिला, और वही मुक़ाम छावनी और राजधानी हो गया। पास ही

सुवर्णरेखा नदी के पार मुहम्मदग़ौस के मक़बरे में मीयांतानसैन, जो अकबर का बड़ा मशहूर कलावंत था गड़ा है और उसकी क़बर पर एक इमली का दरख़्त है। बेवक़ूफ़ों का यह निश्चय है कि जो उस इमली की पत्ती चबावे आवाज़ उसकी बहुत मीठी हो जावे। उज्जैन बहुत पुराना शहर है, शास्त्र में इसका नाम उज्जयनी और अवन्ती लिखा है, वह समुद्र से १७०० फ़ुट ऊंचा १३ अंश ११ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश ३५ कला पूर्व देशांतर में सिमा नदी के दहने कनारे ग्वालियर से २६० मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता बसा है, इमारतों में लकड़ी का काम बहुत है, पर घाट पक्के नदी के दोनों तरफ़ सुहावने बने हैं, ज़मीन खोदने से दूर दूर तक पुरानी आबादी के निशान मिलते हैं। यह शहर महाराज विक्रमादित्य के समय में बड़ी रौनक़ पर था, और बादशाही ज़माने में सूबै मालवा की, जिसे संस्कृत में मालव देश कहते हैं, राजधानी रहा। पंडित ज्योतिषी शास्त्र की रीति से अपने देशांतर का हिसाब इसी शहर से करते हैं, शहर के बाहर राजा जयसिंह के बनवाए ज्योतिष सम्बन्धि बेधशाला और यंत्र अब तक भी टूटे फूटे पड़े हैं। जिस मकान को भर्तृहरि की गुफ़ा बतलाते हैं, किसी पुरानी हवेली का एक हिस्सा जो मिट्टी के तले दब गई है मालूम होता है। महाकाल—महादेव का मंदिर इस जगह में बहुत प्रसिद्ध है, पर जो मंदिर विक्रमादित्य के समय का बना था वह शमशुद्दीन इलतमिश ने जो सन् १२१० में तख़्त पर बैठा था तुड़वा डाला। शहर से चार मील उत्तर कालियादह गांव के पास सिमा के टापू में बादशाही वक़्त का एक पुराना मकान बना हुआ है, गर्मियों में रहने की बहुत अच्छी जगह है, नदी का पानी उसके हौज़ फ़व्वारों में

होता हुआ बहता है उज्जैन से प्राय अस्सी मील नैर्ऋतकोन बाग़ नाम एक छोटी सी बस्ती है, उस में कोस दो एक पर किसी ज़माने में पहाड़ के पत्थर काटकर गुफा के तौर पर चार मंदिर बौधमत के बने हैं, देखने योग्य हैं, एक का चौक उन में से ८४ फुट मुरब्बा नापा गया है। ग्वालियर के दक्षिण बेत्वा अथवा बेत्वंती नदी के दहने कनारे भिलसा, जिसका असली नाम विल्वेश और भद्रावत भी बतलाते हैं, शहरपनाह के अंदर अनुमान ५००० घर की बस्ती है। वहां दो देहगोप अर्थात् गुम्बज् बौध लोगों के बनाए उसी तरह के मौजूद हैं, जैसा बनारस के जिले में सारनाथ के पास लिखा गया है। भिलसावाले उन्हें सास बहू की भीत और सुमेरु का नमूना कहते हैं। बाड़ा ४२ फुट ऊंचा है, और १२० फुट का व्यास रखता है। छोटे का व्यास कुल ४८ फुट है। महाराज चन्द्रगुप्त ने उनकी पूजा के लिये कुछ धरती दान दी थी, यह बात पुराने पाली अक्षरों में उन के पत्थरों के ऊपर खुदी है। ग्वालियर से चार सौ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता बुर्हानपुर तापी के दहने कनारे एक सुंदर मैदान में शहरपनाह के अंदर जिसका घेरा अनुमान बारह मील का होगा बसा है, इमारत में लकड़ी का काम बहुत, चौक सुथरा, राज बाज़ार चौड़ा, नहर गली गली घुमी हुई, धनाढ्य बहुतेरे मुसल्मान, अरबों की सूरत और वही पोशाक, नदी के कनारे पर बादशाही महल और क़िले के निशान अब तक नमूदार हैं। किसी समय में यह खानदेश के सूबे की राजधानी था। ग्वालियर से चालीस मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता काली सिंध के दहने कनारे पहाड़ के नीचे नरवर का पुराना शहर बसा है, और पहाड़ के ऊपर क़िला है,

किसी समय में वह निषध देश के राजा नल की राजधानी था। ग्वालियर से २६० मील नैर्ऋतकोन नीमच की छावनी है और उसी तरफ़ ३८५ मील पर चम्पानेर अथवा पवनगढ़ का क़िला एक खड़े पहाड़ पर जो २५०० फ़ुट से कम ऊंचा नहीं है बहुत मज़बूत बना है, पहाड़ के नीचे किसी समय में कई कोस तक चम्पानेर का शहर बस्ता था, पर अब उजाड़ और जंगल है, खंड़हरों में शेर और भील रहते हैं। बड़ोदा वहां से कुल बाईस मील नैर्ऋतकोन को रहजाता है।—४—भूपाल पूर्व को सागर नर्मदा के सरकारी ज़िले और बाक़ी तीन तरफ़ ग्वालियर के राज से घिरा है। यह हिस्सा मालवे का पठानों के दख़ल में है। जंगल पहाड़ इस में भी ग्वालियर के दक्षिण भाग से हैं। बिस्तार सात हज़ार मील मुरब्बा, और आमदनी बाइस लाख रुपया साल है। सन् १८२० में इस इलाक़े के दर्मियान ३४१६ गांव आबाद और ७१४ ऊजड़ गिनेगये थे। शहर भूपाल का जहां नव्वाब रहता है २३ अंश १७ कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश ३० कला पूर्व देशांतर में पक्की शहरपनाह के अंदर बसा है। यह शहर सूबै मालवा और गोंदवाने की हद पर राजा भोजके मंत्री ने अपने नाम पर बसाया था। शहर के नैर्ऋतकोन एक पहाड़ी पर पक्की गढ़ी बनी है, और उस गढ़ी के नैर्ऋतकोन पर साढ़े चार मील लंबा और डेढ़ मील चौड़ा एक तालाब है। मकान शहर के अक्सर टूटे फूटे रौनक़ कहीं नहीं। भूपाल से २० मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकती सिहोर में सरकारी फ़ौज की छावनी है, साहिब अजंट उसी जगह रहते हैं।—५—इंदौर अथवा हुलकर की अमल्दारी। यह भी इलाक़ा कुछ दूर तक नर्मदा के पार चला गया है। पूर्व उस के

ग्वालियर की अमल्दारी, उत्तर को ग्वालियर और धार और देवास के दो छोटे छोटे रजवाड़े, पश्चिम में बड़ोदा और दक्षिण में खानदेश के सरकारी ज़िले। लंबान चौड़ान इस इलाक़े की नापना कठिन है, क्योंकि बीच बीचमें दूसरे इलाक़ों से बहुत बे तरह मिल गया है, विशेष करके ग्वालियर से। कहते हैं कि जब हुलकर और सेंधिया के बीच मुल्क बंटा, तो उन्हों ने उसे चुंदरी बांट बांटा, अर्थात् चुंदरी की तरह एक पर्गना सेंधिया ने लिया तो दूसरा हुलकर ने और दूसरा हुलकर ने लिया तो तीसरा फिर सेंधिया ने, निदान इसी कारन एक अमल्दारी के गांव दूसरी के बीच में आ गये हैं। बिस्तार उसका आठ हज़ार मील मुरब्बा से कम नहीं है, और आमदनी बाइस लाख रुपया साल। झाड़ पहाड़ इस अमल्दारी में बहुत हैं। क्योंकि विंध्य का तटस्थ है, और भीलों का विंध्य मानो घर है। राजधानी इंदौर २२ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ५० कला पूर्व देशांतर में समुद्र से २००० फ़ुट ऊंचा एक ढालुवे मैदान में पेड़ों के बीच बसा है, थोड़ी थोड़ी सी दूर पर पहाड़ दिखलाई देते हैं, उचानके सबब गर्मी बहुत नहीं होती, बाज़ार चौड़ा है, पर इमारत चोबी, और देखने लाइक़ उन में कोई भी नहीं। साहिब रज़ीडण्ट इन्दौर में रहते हैं। सरकारी फ़ौज की छावनी इन्दौर से दस मील दक्षिण मऊ में पड़ी है। इन्दौर से अनुमान चालीस मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता नर्म्मदा के दहने कनारे महेशर बसा है, वहांवाले उसे महेशवती और सहस्रबाहु की बस्ती भी कहते हैं, क़िले के अंदर अहिल्याबाई के रहने के महल, और नदी कनारे नहाने को सुंदर पक्के घाट बने हैं। महेशर से पांच मील पूर्व नर्मदा के उसी कनारे पर कच्ची शहरपनाह के अंदर मंडले-

शर एक बड़े व्यौपार की जगह है, क़िला भी छोटा सा पक्का बना है। मंडलेशर से थोड़ी ही दूर पूर्व नर्मदा के दहिने कनारे पर ओंकारनाथ महादेव का मंदिर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है, घाट भी स्नान के लिये पक्के बहुत अच्छे बने हैं, मंदिर के पास एक पहाड़ी पर दो वीरान क़िले हैं, जिन्हें वहांवाले मानधाता और मुचकुंद के बनाये बतलाते हैं, उनके अंदर बाहर बहुत से खंभे चौखट देवताओं की मूरतें और तरह बतरह की सूरतें सब पत्थर की टूटी फूटी इतनी पड़ी हैं, कि उनके देखने से साबित होता है, कि वह जगह बहुत पुरानी है, और किसी समय में खूब आबाद थी, मुसल्मानों की बदौलत इस नौबत को पहुंची।—६—धार और देवास यह दोनों छोटे छोटे रजवाड़े हुलकर और सेंधिया की अमल्दारी के बीच में पड़े हैं। धार तो एक हज़ार मील मुरब्बा के बिस्तार में १७९ गांव पौने पांच लाख रुपये साल की आमदनी का इलाक़ा है, और देवास कुछ न्यूनाधिक चार लाख साल का होगा। धारकी राजधानी धारानगर, जो किसी समय में महाराज भोज के रहने की जगह थी, २२ अंश ३५ कला उत्तर अक्षांश और ७५ अंश २४ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से १९०० फ़ुट ऊंचा एक कच्ची शहरपनाह के अंदर बसा है, और क़िला शहर से अलग एक ऊंची सी ज़मीन पर बना है, भोज सम्बत् ५४१ में एक बहुत बड़ा राजा हो गया है, संस्कृत का ऐसा क़द्रदान विक्रम के पीछे कोई नहीं हुआ, एक २ श्लोक पर उसने लाख लाख तक रुपये दिये हैं, और बहुतेरे ग्रंथ उसके समय के बने अबतक मौजूद हैं, वह आप भी बड़ा पंडित था, और कहते हैं कि उसकी राजधानी में बहुत कम ऐसे लोग थे जो संस्कृत न जानते, मार्शमेन साहिब अपने भारतवर्षीय इतिहास में लिखते हैं कि इस

राजा को कुल सात सौ बरस हुए। देवास के इलाक़े की राजधानी देवास छ हज़ार आदमियों की बस्ती २२ अंश ५९ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश १० कला पूर्व देशांतर में बसा है। धार से अनुमान १५ मील दक्षिण ज़रा अग्निकोन को झुकता माथ २००० फुट समुद्र से ऊंचा एक पहाड़ पर मांडू का क़िला और शहर उजड़ा हुआ पड़ा है अकबर के वक़्त में यह शहर बहुत लंबा चौड़ा बस्ता था, अब भी नापने से उसकी शहरपनाह जो बाक़ी है २८ मील होती है, पर बिलकुल जंगल, शेर और भीलों के रहने की जगह है, बाज़ बहादुर का मकान, दो तालाबों के बीच जहाज़ का महल, जामे मसजिद, हुसैनशाह का संगमर्मर का मक़बरा इस क़िले में यह सारे मकान देखने लाइक़ हैं। —७—बड़ोदा अथवा गाइकवाड़ का राज हुलकर और सेंधिया की अमल्दारी के पश्चिम समुद्र पर्यंत, और उदयपुर और सिरोही के दक्षिण नर्मदा तक, पर इसके बीच में बहुत जगह सरकारी ज़िले भी आ गए हैं। यह इलाक़ा सूबे गुजरात में है, जिसे संस्कृत में गुर्ज्जर देश कहते हैं। बिस्तार उसका चौबीस हज़ार मील मुरब्बा से कम नहीं है। यद्यपि जंगल पहाड़ भीलों से भरे हैं, पर तौ भी मुल्क आबाद और धन की बहुतायत है, बिशेष करके राजधानी के आस पास। काठियावाड़ अर्थात् काठियों का देश जो गुजरात के मायद्वीप का मध्य भाग है बिलकुल जंगल पहाड़ों से भर रहा है, पर पहाड़ अक्सर नीचे और दरख़्तों से खाली, धरती रेतल, वहांवाले अपना नाम काठी होने का यह कारन बताते हैं, कि जब पांडव लोग दुर्योधन से दाव हारकर बारह बरस के लिये वहां आकर छुपे, और पता लगने पर दुर्योधन ने उनको वहां से ज़ाहिर करने के लिये यह तदबीर ठहराई, कि उस देश की गौ हर

ले जावे, जो क्षत्री होगा अवश्य गौ बचाने को साम्हने आवेगा, पर ऐसा बुरा काम अर्थात् गौ का चुराना उसके आदमियों से किसी ने स्वीकार नहीं किया, तब कर्ण ने अपनी छड़ी जमीन पर मारी, और उस्से एक आदमी पैदा हुआ, काठ की छड़ी से पैदा हुआ इसलिये उसका नाम काठी रहा, और कर्ण ने उसे बर दिया जा तुझको और तेरी औलादको भगवान के घर से चोरी मुआफ़ है, चोरी का पाप और कलंक नहीं लगेगा। निदान ये काठी सूर्य को, जिसे कर्ण का बाप समझते हैं, बहुत मानते हैं, अपने सब काग़ज़ों की पेशानी पर उसकी तसवीर लिखते हैं, और चोरी डकैती को बुरा नहीं समझते, बदमाशों ने क्या कहानी रची है ! औरतें सुंदर होती हैं। बैल गुजरात के प्रसिद्ध हैं। आमदनी अनुमान सत्तर लाख रुपया साल की होवेगी। अक़ीक़ की उस में खान है। राजधानी बड़ोदा २२ अंश २१ कला उत्तर अक्षांश और ७३ अंश २३ कला पूर्व देशांतर में शहरपनाह के अंदर बिश्वमित्र नदी के बाएं कनारे बसा है। उस नदी पर पक्का पत्थर का पुल बना हुआ है। बस्ती उसकी लाख आदमियों से अधिक है। बाज़ार चौड़ा और चौपड़ के डौल का, इमारतों में काम अक्सर काठ का। साहिब रज़ीडंट के रहने की जगह है। इस गुजरात में और भी बहुत से नव्वाब और राजा हैं, पर उन के इलाक़े निहायत छोटे, यहां तक कि बहुतेरे उनमें से एक ही गांव के मालिक हैं, और सिवाने उनके आपस में मिले जुले, इसलिये हमने उन सब को इसी अमल्दारी के साथ रखना मुनासिब समझा, बहुतेरे तो उन में से अब तक महाराज गाइकवाड़ को कर देते हैं, पर कोई सरकार की हिमायत में भी आ गया है। गुजरात की पश्चिम सीमा पर द्वारका का टापू है, हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है, द्वारका

के मंदिर को जो एक सौ चालीस फुट ऊंचा है जगत खूंट भी कहते हैं, मूर्ति रणछोड़जी की जो आदि थी उसको कोई छ सौ बरस गुजरता है मुसल्मानों की दहशत से पंडे लोग गुजरात में डाकौर के दर्मियान जो गुजरात की पूर्व अलंग में भड़ौंच के साम्हने खंभात की खाड़ी पर घोघेबंदर के पास है ले आए, और वहां नई स्थापन की, उसे भी वहां न रख सके और पास ही एक छोटे से टापू में जिसे शंकुद्वार कहते हैं और जहां पहले शंकुनारायण की पूजा होती थी उठा ले गए, निदान अब प्राय डेढ़ सौ बरस से एक और नई मूर्ति बनाई है। यात्री लोग गोमती नदी में स्नान करके मूर्ति के दर्शन करते हैं, फिर १८ मील पर रामडा अथवा अरामराय में जाकर लोहे के तप्तमुद्रा से शंख चक्र गदा पद्म के चिन्ह अपने बाजू पर लेते हैं गोपी चन्दन, जिस से वैष्णव लोग तिलक देते हैं, इसी जगह एक तालाब से निकलता है। असली द्वारकापुर बंदर से जिसे सुदामापुर भी कहते हैं तीस मील बतलाते हैं, और कहते हैं, कि समुद्र में डूबी है। बड़ोदे से १७० मील वायुकोन उत्तर को झुकती हुई बन्नास नदी के बांए कनारे देसा में सरकारी छावनी है। गुजरात के प्रायद्वीप की दक्षिण सीमा के ऊपर समुद्र के कनारे हरिना कपिला और सरस्वती इन तीन नदियों के संगम पर जूनागढ़वाले नव्वाब की जागीर में पट्टन सोमनाथ बसा है। किसी जमाने में वह बहुत बड़ा शहर था, और ज्योतिर्लिंग सोमनाथ महादेव का वहां मंदिर था, उसके ५६ खंभों में जवाहिर जड़े थे, और सोने की दीवटों में दीये जलते थे, और कई मन सोने की जंजीरों में घंटे लटकते थे, दो हजार पुजारी पांच सौ कंचनी और तीन सौ गवैये इस मंदिर की सेवा करते थे। सन् १०२५ में मह-

मूदगज़नवी ने वहां से प्राय दस करोड़ रुपये का माल लूटा, और मूर्त्ति को भी तोड़ा, एक टुकड़ा ग़ज़नी की मसजिद के ज़ीने में जड़ दिया, और दूसरा बग़दाद में ख़लीफ़ा को तुहफ़ा भेजा। अब वह पुराना मंदिर तो खंड़हर पड़ा है, परंतु पास ही अहिल्याबाई ने एक नया मंदिर बनाकर फिर महादेव स्थापन किया है। सन् १८४२ में सरकारी फ़ौज ग़ज़नी से महमूदशाह के मक़बरे का जो संदली किवाड़ उतार लाई, और अब आगरे के क़िले में रखा है, वह किवाड़ इसी सोमनाथ के मंदिर के फ़ाटक से महमूद ले गया था। पट्टन सोमनाथ के पास ही वह मैदान हैं, जहां यादव लोग आपस में लड़कर कट मरे थे, और सरस्वती के तीर उस पीपल का पता देते हैं, जहां कृष्णचंद्र के पैर में व्याधे ने तीर मारा था। पट्टन सोमनाथ से उत्तर अनुमान चालीस मील की राह पर जूनागढ़ के पास, जो नव्वाब की जागीर है, समुद्र से २५०० फ़ुट ऊंचे रेवताचल पर्वत पर, जिसे गिरनार और गिरनगर भी कहते हैं, जैनियों का बड़ा भारी मंदिर और तीर्थ है। चढ़ने के लिये पहाड़ पर सीढ़ियां बनी हैं। दूर दूर से वहां उस मत के यात्री आते हैं। गिरनार पर्वत की जड़ से ४ मील और जूनागढ़ से कोस आध एक पूर्व पहाड़ के एक टुकड़े पर मगध देश के राजा महाराज अशोक का उसी पाली भाषा और अक्षर में जो प्रयाग के शिलास्तंभ पर है यह हुक्म खुदा हुआ है, कि उसके सारे राज्य में और यवन राजा अन्तिओकस और तलमि के राज्य में भी सब जगह मनुष्य और पशु पक्षियों के वास्ते दवाई खाने अर्थात् अस्पताल बनाये जावें, और उनके सुख के लिये थोड़ी थोड़ी दूर पर कूए खोदकर सड़क के दोनों तरफ़ दरख़्त लगाये जावें। इस लिप से ऐसा मालूम होता है कि यवन

राजा अन्तिओकस और मिसर देशके राजा तलमिफ़िलदेलफ़ सदा योनिसस के साथ, जैसा कि यूनानी किताबों में लिखा है, महाराज अशोक की बड़ी दोस्ती थी। कटक के जिले में भवानेश्वर के पास धवली गांव में भी पहाड़ के एक टुकड़े पर यही हुक्म खुदा है। खंभात नव्वाब की जागीर बड़ोदे से ३५ मील पश्चिम समुद्र की खाड़ी के कनारे मही नदी के मुहाने पर बसा है। आगे समुद्र उसकी दीवार से टकराता था, अब डेढ़ मील पीछे हट गया है। जब अहमदाबाद गुजरात की राजधानी था, तो खंभात उसका बंदर था, माल के जहाज़ उसी जगह लगते थे। अहमदाबाद की रौनक़ घटने से अब वह भी बिगड़ गया, नव्वाब को इस जागीर से साल में तीन लाख रुपया वसूल होताहै।–८–कच्छ बड़ोदेके पश्चिम वायुकोन को झुकता हुआ। यह इलाक़ा टापू की तरह सबसे निराला बसा है। दक्षिण को उसे समुद्र की खाड़ी गुजरात से जुदा करती है, पश्चिम को सिंधुकी एक धारा उसे सिंध से जुदा करती है, और बाक़ी दोनों तरफ़ वह रनसे घिराहै, कि जो उसे उत्तरको सिंधुके सरकारी जिलों से, और पूर्व को गुजरात से जुदा करता है। कच्छ से पहिले अब कुछ हाल इस रन का सुन लेना चाहिये, असल इसकी संस्कृत का शब्द अरण्य मालूम होताहै, जिसका अर्थ जंगल उजाड़ है, पर यह तो जंगल नहीं बरन खारे पानी का एक दलदलहै, बिस्तार उसका आठ हज़ार मील मुरब्बासे कम नहीं, बरसात में तो वह सारा जल मग्न हो जाता है, पर दूसरी ऋतों किसी जगह छिछली झीलें होती हैं, और किसी जगह अगम्यनमक के दलदल, किसी मुक़ाम पर बालू के टीले नमकसे ढके हुए, और किसी स्थान पर घास भी जमी हुई जिसमें गाय भैंस इत्यादि पशु चरते हैं। मालूम होता है कि यह किसी समय में समुद्र था, पानी

हट गया इस कारन रन होगया। यहां जो नमक पैदा होताहै उसके महसूल में सरकार भी हिस्सेदार है। नमक के जमे हुए तख़्ते बर्फ़िस्तान की तरह कोसों तक नज़र पड़ते हैं, और उन पर जब सूरज चमकता है तो महा अद्भुत और चमत्कारी तमाशे दिखलाई देते हैं, अर्थात् छोटी छोटी घास और झाड़ियां जो उस पर जमी रहती हैं बड़े बड़े भारी ऊंचे पेड़ों के जंगल दिखलाई देती हैं, कभी वह जंगल हिलते और झकोरे खाते हैं, कभी अलग अलग हो जाते हैं, और कभी फिर इकट्ठा, कभी ऐसा देख पड़ता है कि लश्कर और फ़ौजें मैदान में चली जाती हैं, और कभी गढ़ और क़िले उठते बनते और बिगड़ते नज़र आने लगते हैं, कारन दृष्टि के ऐसा धोखा खाने का इन जगहों में बिना उस विद्या की पुस्तकें पढ़े समझ में आना कठिन है इस लिये यहां नहीं लिखा, इन्हीं तमाशों को संस्कृत में गन्धर्व नगर और वहां के रजपूत सीकोट कहते हैं। रन के कनारों पर गोरखर अर्थात् जंगली गधे अक्सर मिलते हैं, घरेलू गधों से मज़बूत होते हैं, साठ साठ सत्तर सत्तर का झुण्ड इकट्ठा फिरा करता है, और वहां की नमकीन घास को बड़ी चाह से खाता है। निदान कच्छ का इलाक़ा पहाड़ी धरती में बसा है। पूर्व से पश्चिम को १६० मील लंबा और रन समेत उत्तर से दक्षिण को ९५ मील चौड़ा है। इस इलाके के पहाड़ किसी समय में ज्वालामुखी थे, अर्थात् उन में से आग निकलती थी, क्योंकि अब तक भी उन के पास वे सब धातें पड़ी हैं, जो आग के साथ पहाड़ों से निकलती हैं। धरती रेतल पथरीली और बहुधा ऊसर, पानी कम और अक्सर खारा, वृक्ष बहुत थोड़े कहीं कहीं बस्ती के पास नीम पीपल बबूल और खजूर देख पड़ते हैं, बड़ इमली और आम बहुत थोड़े, लोहे कोयले और फिटकिरी की खान

है। आदमी वहां के बड़े दग़ाबाज़, बरन कहावत हो गई है कि जो ऋषी मुनी भी कच्छ का पानी पायें शैतान बन जायें। आमदनी उस की आठ लाख रुपये साल से अधिक नहीं। पालकी और रथ पर वहां सिवाय राजा के और कोई नहीं चढ़ने पाता है। धरती रेतल, और सड़क अच्छी न होने के कारन गाड़ियां कम चलती हैं सवारी ऊंट और घोड़े की बहुत है। राजधानी भुज २३ अंश १५ कला उत्तर अक्षांस और ६९ अंश ५२ कला पूर्व देशांतर में एक पहाड़ की बग़ल में जिस पर गढ़ बने हैं बसा है। उत्तर दिशा से दूर पर यह शहर बहुत बड़ा मालूम देता है, और सफ़ेद सफ़ेद मकान मसजिद और मन्दिर खजूर के पेड़ों में बड़ी शान से चमकते हैं, पर नज़दीक आने से वह रौनक़ और बात बाक़ी नहीं रहती। राजा के महल क़िले के अन्दर हैं, और उनकी गुम्ज़ियों पर ऐसा रोगन चढ़ाया है, कि वह चीनी सा मालूम होता है। बीस हज़ार आदमियों से ऊपर उस में बस्ते हैं, और कारीगर वहां के सोने चांदी की चीज़ें अच्छी बनाते हैं। भुज से ३५ मील दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता समुद्र के तट पर मंडवी बंदर बड़े व्यौपार की जगह है।—९—सिरोहा बड़ोदे की अमलदारी के उत्तर। पूर्व उसके उदयपुर, और पश्चिम और उत्तर। को जोधपुर। बिस्तार तीन हज़ार मील मुरब्बा, और आमदनी अनुमान एक लाख रुपया साल है। राजधानी इस छोटे से इलाक़े की सिरोही २४ अंश ५२ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश १५ कला पूर्व देशांतर में है। सिरोही से १८ मील नैर्ऋतकोन को आबू का पहाड़ जिसे अर्बुदाचल भी कहते हैं समुद्र से पांच हज़ार फ़ुट ऊंचा है। जल की बहुतायत, झील सुन्दर, जंगल और हरियाली हर तरफ़, हवा ठंढी, मानों हिमालय का नमूना दिखलाता

है। गर्मी में आस पास की छावनियों के बहुत साहिब लोग वहां हवा खाने आते हैं, बिशेष करके रोगी, कोठी बंगले उस पर कितने ही बनगए हैं, और बनते जाते हैं। अचलेश्वर महादेव की पूजा होती है, और जैनियों के दो मंदिर वहां संगमर्मर के बहुत उ-मदा बने हैं, नक़ाशी का काम उन पत्थरों पर निहायत बारीकी के साथ किया है, पत्थर को मानों शीशा और हाथीदांत बना दिया है, सवा सवा लाख रुपये की लागत के तो उन मन्दिरों में एक एक ताक बनें हैं, जगह क़ाबिल देखने के है, नक़ाशी के काम का ऐसा मन्दिर हिन्दुस्तान में दूसरा नहीं निकलेगा। टाड साहिब अपनी किताब में लिखते हैं, कि ताजगंज का रौज़ा छोड़कर सारी दुनिया में कोई ऐसी इमारत नहीं है कि जो आबूके मंदिरों की बराबरी कर सके। जो फूल पत्ते इन मंदिरों में पत्थर काटकर निकाले हैं अंगरेज़ लोग भी इंगलिस्तान में इससे बिहतर नहीं बना सकते। ये करोड़ों रुपये लागत के मंदिर कुछ न्यूनाधिक हज़ार बरस गुज़रते हैं एक साहूकार ने बनाये थे।—१०—उदयपुर अथवा मेवाड़। पश्चिम उसे अर्बली पहाड़ सिरोही और जोधपुर से जुदा करता है, अजमेर का सरकारी जिला उत्तर को है, दक्षिण की तरफ़ बड़ोदा डूंगरपुर बांसवाड़ा और परतापगढ़ पड़ा है, और पूर्ब सीमा उसकी बूंदी और सेंधिया की अमल्दारी से मिली है। यद्यपि इलाक़ा कुछ बहुत बड़ा नहीं है, पर कुल और दर्जे में उदयपुर का राना हिन्दुस्तान के सब राजाओं से बड़ा गिना जाता है, मुसल्मानों की सल्तनत के पहले जिन दिनों में उनका इख़्तियार था, सारे राजा उन्हीं से गद्दी नशीनी का तिलक लेते थे, और वे उनके माथे पर अपने पैर के अंगूठे से तिलक करते थे। मार्शमेन साहिब अपनी किताब में उदयपुर के

रानाओंको ननिहाल के संबंध से क्रिस्तानके जने लिखते हैं, क्योंकि नौशेरवां ने रूम के क्रिस्तान बादशाह मारिस की बेटी ब्याही थी, और फिर उसकी बेटी उदयपुर के राना को आई। इस इलाक़े का बिस्तार ११६०० मील मुरब्बा है, और आमदनी अनुमान १२५०००० । धरती पहाड़ी, रास्तों में बहुधा घाटे और झाड़ियां। लोहे तांबे जस्ते और गंधक की खानहै। राजधानी उदयपुर २४ अंश ३५ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश ४४ कला पूर्व देशांतर में पहाड़ों के घेरे के अंदर समुद्र से २००० फुट ऊंचा बसा है। शहर के पश्चिम तरफ़ एक झील है, और उसके बीच में राना का महल जग मंदिर संगमर्मर का और बाग़ बहुत उमदा बनाहै। सिवाय इसके एक और झील राज समुद्र नाम पहाड़ों के बीच बारह मील के घेरे में शहर से पच्चीस मील उत्तरको है, उस में ३ मील लंबा संगमर्मर का बंध बांधा है, झील में उतरने के लिये बराबर ज़ीने लगे हुएहैं, और ज़ीनों पर ज़ीनत के लिये बड़े बड़े हाथी उसी पत्थर के तराश कर लगा दिये हैं, पूर्व तरफ़ एक पहाड़ पर महल बना है। उदयपुर से २२ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता बन्नास नदी के दहने कनारे श्रीनाथजी का प्रसिद्ध मंदिर, जिसे लोग नाथद्वारा भी कहते हैं, हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है। चित्तौड़ अथवा चीतौड़ का क़िला ७० मील उदयपुर के पूर्व ईशानकोन को झुकता हुआ पुरानी तवारीखों में बहुत मशहूर है। आगे वही राजधानी था। यह क़िला एक पहाड़ पर जो दीवार की तरह खड़ा है और जहां खड़ा न था वहां संगतराशों ने सौ सौ फ़ुट तक ऊंचा छील कर दीवार की तरह खड़ा कर दिया है बारहमील के घेरे में बना है, उस पर जाने के लिये आध कोस की चढ़ाई का एक ही रास्ता है, और उस रास्ते में छ दर्वाज़े पड़ते हैं,

दर्वाज़ा क़िले का बहुत ऊंचा और पुराने हिन्दुस्तानी डौल का बना है, मुसल्मानों की इमारतों से कुछ भी नहीं मिलता, उसके अन्दर कई शिवाले और छोटे छोटे महल बहुत उमदा बने हैं, नक़्क़ाशी उन के पत्थरों पर देखने लाइक़ है, औरंगज़ेब के पोते अज़ीमुश्शान ने उसमें एक मकान मुसल्मानों की वज़ा का बनाकर उसका नाम फ़तेह महल रखा है, पानी के कुंड उस क़िले में बहुत इफ़रात से हैं, गिनती में चौरासी हैं, पर बारह उन में से बारहों महीने भरे रहते हैं, सब से अधिक देखने लाइक़ बस्तु वहां दो कीर्तिस्तंभ अर्थात् मीनार हैं, छोटा तो टूट गया पर बड़ा चौखुंटा नौ मरातिब का १२२ फ़ुट ऊंचा मीरांबाई के पति राना कुंभका बनाया संगमर्मर का अभी तक खड़ा है, उसके अंदर हर जगह महादेव पार्बती की मूर्ति बनाई है, और बहुत उमदा नक़्क़ाशी का काम किया है, चढ़ने को उस में सीढ़ियां हैं, ऊपर चढ़ने से दूर दूर तक नज़र जाती है, क़िले का आदमियों से ख़ाली और सुनसान होना हर तरफ़ टूटी हुई इमारतों का नज़र पड़ना, क़िले के अंदर और पहाड़ के तले दस दस बारह बारह कोस तक जंगल उजाड़ का दिखलाई देना, और किताबों के लिखे हुए इस क़िले के पुराने हाल का याद आना, दिल को अजब एक इबरत लाता है। इसी क़िले के अंदर राजा भीम की पद्मिनी रानी सारे रनवास के साथ सन् १३०३ में अलाउद्दीन बादशाह के ज़ुल्म से अपना सत बचाने के लिये सती हुई थी, और इसी क़िले के अंदर रानी किरणवती सन् १५३३ में बहादुरशाह गुजरातवाले की दहशत से तेरह हज़ार स्त्रियों के साथ आग में जली थी, और बत्तीस हज़ार रजपूत केसरिये बागे पहिन कर लड़ाई में कटे थे, और इसी क़िले के अंदर सन् १५६७ में जब अकबरने आकर घेरा था उसके

क़िलेदार जयमल के मरने पर क़िलेवालों ने जौहर किया था, कि जिस में तीस हज़ार आदमी मारे गये। अब यह क़िला बिलकुल बेमरम्मत बीरान पड़ा है, इसकी आबादी के लिये लाखों ही आदमियों की फ़ौज चाहिये। क़िले के नीचे चीतौड़ का शहर जो अब केवल एक क़सबा रह गया है बस्ता है।—११—डूंगरपुर बांसवाड़ा और परतापगढ़ यह तीनों छोटे छोटे माय दो दो लाख रुपये साल की आमदनी के उदयपुर के दक्षिण सेंधिया और गाइकवाड़ की अमल्दारी के बीच में पड़े हैं। डूंगरपुर का बिस्तार एक हज़ार मील मुरब्बा, उस से पूर्व परतापगढ़ का बिस्तार १५०० मील मुरब्बा, उन दोनों के दक्षिण बांसवाड़े का बिस्तार भी १५०० मील मुरब्बा अनुमान करते हैं। डूंगरपुर के इलाक़े की राजधानी डूंगरपुर २३ अंश ५४ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश ५० कला पूर्व देशांतर में बसा है, उसकी झील का बंध संगमर्मर के ढोकों से बांधा है। परतापगढ़ के इलाक़े की राजधानी परतापगढ़ २४ अंश २ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश ५१ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से १७०० फ़ुट ऊंचा शहरपनाह के अंदर बसा है, उसके चौगिर्द नाले खोले और जंगल उजाड़ बहुत हैं, चार कोस के फ़ासिले पर देवला नाम एक क़िला है। बांसवाड़े के इलाक़े की राजधानी बांसवाड़ा २३ अंश ३१ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश ३२ कला पूर्व देशांतर में शहरपनाह के अंदर बसा है, शहर के बाहर एक पक्का तालाब है गिर्द उसके पीपल और इमली की घनी २ छांव, उस से आगे एक पहाड़ पर क़िले के बुर्ज हैं जो किसी समय वहां के राजा के रहने की जगह थी।—१२—बूंदी उदयपुर के पूर्व कोटे के पश्चिम और जयपुर के दक्षिण, निदान इन तीनों अ-

मल्दारियों से यह इलाक़ा घिरा हुआ है। विस्तार उसका २२०० मील मुरब्बा, आमदनी अनुमान दस लाख रुपये साल। राजधानी बूंदी २५ अंश २८ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ३० कला पूर्व देशांतर में बसी है। एक हिस्सा उसका नया और दूसरा पुराना कहलाता है। नई बूंदी शहरपनाह के अन्दर है, और वह शहरपनाह पहाड़ों पर जाकर जो प्राय ४०० फुट ऊंचे होवेंगे क़िले और महलों से मिल गई है। शहर का पुराना डौल, मंदिरों की बहुतायत, चौक की फ़राख़ी, होज़ों में फ़व्वारों का छुटना, शहर के पास ही एक सुंदर झील का होना आंखों को बहुत भला मालूम होता है, विशेष करके बाज़ार जो महलों के साम्हने है। पुरानी बूंदी नई बूंदी के पश्चिम है। शहर से उत्तर पहाड़ के घाटे में बहुत सुंदर सुंदर तालाब और राजा के महल और बाग़ और छतरियां बनी हैं, विशेष करके सुखमहल जो ऐन झील के बंध पर बनाया है, और जहां से बरसात के दिनों में पानी की चद्दर गिरा करती है।—१३—कोटा उसकी सरहद उत्तर में बूंदी के सिवाय कुछ थोड़ी जयपुर से भी मिली है, बाक़ी सब तरफ़ सेंधिया की अमल्दारी है। विस्तार उस का साढ़े छ हज़ार मील मुरब्बा। आमदनी अनुमान पैंतालीस लाख रुपये साल, पर इस में से तिहाई मुल्क सरकार ने वहां के दीवान राजराना ज़ालिमसिंह की औलाद को दिलवा दिया, क्योंकि उस ने लड़ाइयों के वक़्त जब राजा महज़ नाबालिग़ था बड़ी बड़ी ख़ैरख़ाहियां की थीं। वे लोग अब झालरापाटन में जो कोटे के दक्षिण अग्निकोन को झुकता कुछ न्यूनाधिक ५० मील होगा रहते हैं। यह भी शहर अब बहुत ख़ासा आबाद हो गया है, जयपुर की तरह चौपड़ का बाज़ार और गलियां निकली हैं, शहरपनाह भी

मज़बूत है। राजधानी कोटा २५ अंश १२ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ४५ कला पूर्व देशांतर में चम्बल के दहिने कनारे शहर पनाह के अन्दर बसा है। खाई शहरपनाह के गिर्द पहाड़ काटकर खोदी है। शहर आबाद है, पर नामी जगह राजा के महलों के सिवाय और कोई नहीं। ये ऊपर लिखे हुए दोनों रजवाड़े अर्थात् बूंदी और कोटा हाड़ौती में गिने जाते हैं।—१४—टोंक बूंदी के उत्तर जयपुर की अमल्दारी से घिरा हुआ। आमदनी उसकी अनुमान दस लाख रुपया साल होवेगी। यह इलाक़ा नव्वाब मीरखां की औलाद के क़ब्ज़े में है। राजधानी टोंक २६ अंश १२ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ३८ कला पूर्व देशान्तर में बसा है। दो तरफ़ उसके पहाड़ हैं, और तीसरी तरफ़ पत्थर की दीवार कि जिस को पहाड़ों पर ले जाकर उन से मिला दिया है, पास ही एक छोटी सी झील है। नव्वाब के मकान बन्नास नदी पर जो शहर के उत्तर बहती है बने हैं। कुछ थोड़ी सी ज़मीन नव्वाब की सिरौंज के साथ जिसका असली नाम शेरगंज है कोटे और ग्वालियर की अमल्दारी के बीच में, और नीम बहेड़ा मेवाड़ के दर्मियान है। सब मिलाकर उस इलाक़े का बिस्तार अठारह सौ मील मुरब्बा होता है।–१५–जयपूर अथवा ढूंढार, टोंक बूंदी कोटा और करौली के उत्तर, और बीकानेर और अलवर के दक्षिण, पूर्व को उसके भरथपुर है, और पश्चिम को सरकारी ज़िला अजमेर का और किशनगढ़ और जोधपुर की अमल्दारियां। यह इलाक़ा १७५ मील लम्बा और १०० मील चौड़ा है। बिस्तार पंदरह हज़ार मील मुरब्बा धरती रेतल और बहुधा लोनी। उत्तर भाग में शेखावाटी के दर्मियान पहाड़ भी छोटे छोटे बहुत हैं, पर आब हवा अच्छी। तांबे और फिटकिरी

की खान है। आमदनी अनुमान पचासी लाख रुपया साल है, पर इस में चालीस लाख रुपया जागीर और कृष्णार्पण में जाता है। रुपया अशरफ़ी राजा की टकसाल से निहायत चोखा निकलता है। राजा यहां का अपने तईं रामचन्द्र की औलाद और उन्हीं का जानशीन बतलाता है। राजधानी जयपुर अथवा जयनगर कुछ ऊपर लाख आदमी की बस्ती है। राजा जयसिंह सवाई का बसाया २६ अंश ५५ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश ३७ कला पूर्व देशांतर में पक्की शहरपनाह के अन्दर बसा है। यह शहर अपनी क़िता और वज़ा में सब से निराला है। दक्षिण के सिवाय तीनों तरफ़ पहाड़ों से घिरा है, और उन पहाड़ों पर क़िले बने हैं, दक्षिण तरफ़ भी जिधर मैदान पड़ता है शहर से कुछ फ़ासिले पर मोती डूंगरीका क़िला बहुत मज़बूत बना है। यह शहर तीन मील लम्बा डेढ़ मील चौड़ा बालू के मैदान में बसा है। बाज़ार चौपड़ का बहुत चौड़ा और तीर की तरह सीधा, बरन गलियां भी चौपड़ के खानों की मिसाल सब सीधी आपस में मुक़ाबिल और ऐसी कोई नहीं जिस में गाड़ी न जा सके, दूकानें ऊंची खूबसूरत और एक सी, मकान जाली झरोखों से आरास्ता, गुम्ज़ियों पर सुनहरी कलसियां चढ़ी हुई, चूना उनका ऐसा सफ़ेद साफ़ और चमकदार कि संगमर्मर भी उसके आगे पानी भरे, सब के सब बराबर एक क़तार में लैन डोरी डालकर और दाग़बैल लगाकर बनाये हैं, अब मक़दूर नहीं कि कोई अपना मकान उस लैन से बाहर बढ़ा सके, यदि बढ़ावे या घटावे तो उसी दम राज का गुनहगार ठहरे, मन्दिर सरावगियों के लाखों रुपये की लागत के बने हैं, ठाकुरद्वारे भी अच्छे अच्छे इफ़रात से, कहते हैं कि यह शहर जयसिंह ने एक फ़रंगी कारीगर

इटाली के रहनेवाले से बनवाया था। महल महाराज के चौथाई शहर रोके खड़े हैं, और निहायत उमदा बने हैं, बाग़ हौज़ फव्वारे मकान तसवीरें सब देखने लाइक़ हैं, गोविंददेवजी का मंदिर महलों के अन्दर है, दर्बार का क़रीना अब तक भी पुरानी हिन्दुस्तानी चाल पर चला जाता है, मशालची और कहारं भी बिना खूंटेदार पगड़ी और जामा पहने हुए महलों के दर्वाज़े पर नहीं जाने पाता, और यदि कोई आदमी दुशाला और रूमाल दोनों साथ ओढ़कर वहां जावे तो दर्बान उन में से उसी दम एक चीज़ उतार कर ज़ब्त कर लेता है, ऐसा ही उन्हें राजा का हुक्म है। बारह बरस की उमर तक वहां के राजा को कोई मर्द नहीं देखने पाता, रनवास में रहा करता है। औरतें यहां की बहुत शौक़ीन वज़ादार और मर्दों के शिकार में होशयार होती हैं। आदमी झूठे। बर्तन वहां बालू से मलकर कपड़े से पोंछ डालते हैं, पानी से कदापि नहीं धोते। कबूतर दूकान्दारों से दाना पाने के कारन बाजार में इतने इकट्ठा रहते हैं, कि पांव तले दब जाने की दहशत हुआ करती है। बरसात में तो बड़े आराम की जगह है, नंगे पांव सारे बाज़ार फिरकर घर में चले आओ, फ़र्श पर कीचड़ का दाग़ न लगेगा, क्योंकि ज्योंही मेह पड़ता है बालू सोख लेता है, पहाड़ों पर भी सबज़ी जम जाती है और झरने हर तरफ़ जारी होते हैं, पर गरमी में निहायत तकलीफ़ है, जब धूप से बालू तप जाता है तो भाड़ में चनों की तरह पैर भुनने लगते हैं, और बालू भी कैसा कि जिस में पिंडली तक धस जावे। तीन मील पूर्ब अग्निकोन को झुकता पहाड़ के बीच गलता में सुन्दर मन्दिर और पानी के कुण्ड बने हैं, बरसात में सैर की जगह है। शहर से चार मील पर पहाड़ों में आमेर उस राज की

पुरानी राजधानी है, वहां भी महाराज के महल निहायत उमदा बने हैं, विशेष करके शीशमहल जिसके झरोखों में रंगीन शीशे अत्यन्त खूबसूरती से लगाए हैं। क़िला आमेर का पहाड़ के ऊपर बहुत बड़ा और मज़बूत है, उसके अन्दर कुए की तरह कई खत्ते हैं, जिसे वहां वाले खाश कहते हैं, जिस आदमी से राजा नाराज़ होता है उस में डाला जाता है, और जव की रोटी और खारा पानी खाने पीने को पाता है, खाश के अन्दर से जीता बिरला ही निकलता है, ग़ैर आदमी उस क़िले के अन्दर नहीं जाने पाता, साहिब लोगोंने भी अब तक उसे नहीं देखा। क़िले इस अमल्दारी में बहुत हैं पर रणथंभौर का क़िला जयपुर से ७५ मील अग्निकोन सब में मज़बूत है, उसके अन्दर भी ग़ैर आदमी अथवा साहिब लोग नहीं जाने पाते। यह वही क़िला है जिसके अन्दर सन् १२९८ में हमीर चौहान अलाउद्दीन ख़िलजी में लड़कर बड़ी बीरता के साथ मारा गया, और उसके रनवास की सारी रानियां, मुसल्मानों की ज़ियादती से बचने के लिये चिता में आग लगाकर जलीं, जयपुर से साठ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता बिराट के पास एक पहाड़ पर महाराज अशोक की आज्ञानुसार वही धर्म लिपि खुदी है, जो इलाहाबाद के शिलास्तंभ पर है, केवल इतना अधिक है, कि वेद मुनियों ने बनाये। राजा जयसिंह विद्या की बड़ी क़दर करता था, ब्रजभाषा ने उसी के समय में रौनक पाई, बिहारी को सतसई के दोहरों के लिये वह एक एक अशरफ़ी देता था, बनारस दिल्ली मथुरा उज्जैन और जयपुर उसी ने पांचों जगह में ज्योतिष संबंधि बेधशाला और यंत्र बनवाये हैं।—१६—करौली उत्तर और पश्चिम जयपुर की अमल्दारी से घिरा हुआ, और दक्षिण को ग्वालियर, और पूर्व को धौलपुर

से मिला हुआ। बिस्तार उसका उन्नीस सौ मील मुरब्बा आमदनी पांच लाख रुपया साल। राजधानी करौली २६ अंश ३२ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ५५ कला पूर्व देशांतर में पुश्पेरी नदी के तट पर बसा है। क़िला राजा के रहने का शहर के बीच में है।—१७—धौलपुर पश्चिम करौली, दक्षिण ग्वालियर, उत्तर भरथपुर, पूर्व सरकारी ज़िला आगरे का। बिस्तार सवा सोलह सौ मील मुरब्बा। आमदनी सात लाख रुपया साल। राजधानी धौलपुर २६ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश ४४ कला पूर्व देशांतर में चंबल के बांएं कनारे कोस आध एक के तफ़ावत पर बसा है।—१८—भरथपुर दक्षिण धौलपुर, उत्तर अलवर, पश्चिम जयपुर, पूर्व आगरा और मथुरा के सरकारी ज़िले। बिस्तार दो हज़ार मील मुरब्बा। आमदनी बीस लाख रुपया साल। रूपवास के परगने में लाल पत्थर की खान है, इमारत के वास्ते दिल्ली आगरे इत्यादि आस पास के शहरों में बहुत जाता है। राजधानी भरथपुर २७ अंश १७ कला उत्तर अक्षांस और ७७ अंश २३ कला पूर्व देशांतर में कच्ची शहरपनाह के अन्दर माय आठ मील के घेरे में बसा है। शहरपनाह बहुत चौड़ी और ऊंची है, यदि मरम्मत अच्छी तरह रहे तो तोप के गोलों से हर्गिज़ उसको सदमा नहीं पहुंच सकता, जो गोला आवेगा उसी में रहजावेगा, पत्थर की दीवार से कच्ची दीवार का ढाहना बहुत मुशकिल है, बहुतेरी ऐसी जगह हैं जहां सख़्ती से नर्मी ज़ियादः काम आती है। शहरपनाह के गिर्द खाई भी खुदी है, और झीलें इस तरह की हैं कि यदि उनके बंध काट देवे तो शहर से बारह कोसों तक पानी ही पानी हो जावे, दुश्मन की फ़ौज को कभी खड़े रहने की भी जगह न मिले। शहर के

बीच में पक्का क़िला है, उस में राजा रहता है। क़िले के गिर्द ऐसी चौड़ी खाई है, कि अच्छी ख़ासी एक छोटी सी नदी मालूम होती है। भरथपुर से कोस आठ एक पर डीग में महाराज का बाग़ बहुत उमदा और लाइक़ देखने के है, मकान भी उस में अच्छे अच्छे बने हैं, और नहर फ़व्वारे और चादरें इफ़रात से हैं. एक बारहदरी में जिसे मच्छी भवन कहते हैं, इतने फ़व्वारे लगे हैं, कि दर दीवार खंभे हर जगह से पानी निकलता है, और उनकी फ़ुहार ऐसी उड़ती है कि जब सूरज उनके साम्हने रहता है तो उसकी किरणों से उस मकान के अंदर उन फ़ुहारों में दो इन्द्र धनुष बहुत रंगीन और चटकीले बन जाते हैं। राजा वहां का अभी बालक है इस कारन मुल्क का इन्तिज़ाम साहिब अजंट करते हैं। क़िला बयाने का भरथपुर के दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता हुआ एक दिन के रस्ते पर प्रसिद्ध है, किसी समय में बहुत बड़ा शहर था, और आगरा आबाद होने के पहिले यही शहर उस सूबे की राजधानी था, बरन सिकन्दरलोदी ने उसे अपना पायतख़्त किया। क़िला पहाड़ पर मज़बूत बना है, कुंड पानी के ऐसे गहरे हैं कि उन में घड़ियाल तैरते हैं, बीच से एक लाट पत्थर की खड़ी है उस पर कुछ पुराने हर्फ़ भी खुदे हुए हैं, और महलों के खंभे पर दो थापे पंजों के लगे हैं, वहां वाले बतलाते हैं कि जब बादशाही फ़ौज का चढ़ाव हुआ तो रानियों ने जौहर किया, और यह एक रानी ने उस समय आप अपने लहू से थापे लगाए थे।–१९–अलवर अथवा माचेड़ी दक्षिण भरथपुर, और जयपुर और पश्चिम केवल जयपुर, बाक़ी दोनों तरफ़ मथुरा और गुड़गांवें के सरकारी जिलों से घिरा है। बिस्तार इसका ३५०० मील मुरब्बा। जंगल पहाड़ बहुत हैं। वह इलाक़ा जिसे तवारीख़ों में मेवात

के नाम से लिखा है इसी अमल्दारी में आगया, केवल थोड़ा सा भरथपुर के राज में है। आमदनी अठारह लाख रुपया साल। कुछ न्यूनाधिक पैंतालीस बरस का अर्सा गुज़रता है कि वहां के राजा को यह जुनून सूझा कि जैसे मुसल्मानों ने किसी ज़माने में हिन्दुओं को सताया था उसी तरह वह उनको सताने लगा, बहुत से मुसल्मान मुल्लाओं के नाक कान काटकर फीरोज़पुर के नव्वाब के पास भेज दिये, क़बरें सारी खुदवाडालीं और हड्डियां गधों पर लदवाकर अपने इलाके से बाहर फिकवा दीं, और मसजिदें ढहाकर उनके पत्थरों पर तेल सेंदुर चढ़ा भैरव बना दिया। राजधानी अलवर २० अंश ४४ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ३२ कला पूर्व देशांतर में एक पहाड़ के तले बसा है, और उस पहाड़ पर जो वहां से प्राय १२०० फ़ुट ऊंचा होवेगा एक क़िला बना है।—२०—किशनगढ़ पूर्व और दक्षिण जयपुर, और उत्तर और पश्चिम जोधपुर और अजमेर के सरकारी ज़िले से घिरा हुआ है। विस्तार ७०० मील मुरब्बा। आमदनी तीन लाख रुपया साल। राजधानी किशनगढ़ २६ अंश ३७ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश ४३ कला पूर्व देशांतर में शहरपनाह के अन्दर बसा है।–२१–जोधपुर अथवा माड़वाड़ पूर्व जयपुर सरकारी ज़िला अजमेर का और उदयपुर से, दक्षिण उदयपुर सिरोही और बड़ोदे से, पश्चिम सिंध और जैसलमेर से, और उत्तर जैसलमेर और बीकानेरसे घिरा हुआहै। अनुमान अढ़ाई सौ मील लंबा और डेढ़ सौ मील चौड़ा और बिस्तार में पैंतीस हज़ार मील मुरब्बा होवेगा। ज़मीन बिलकुल रेगिस्तान है, कूए बहुत गहरे खोदने पड़ते हैं, तिसमें भी पानी खारा निकलता है। संस्कृत में रेगिस्तान को जहां पानी न हो मरु-भूमि कहते हैं, इसी

कारन इस इलाके का नाम माड़वाड़ रहा। सीसे और संगमर्मर की खान है। आमदनी सत्तरह लाख रुपया साल। ऊंट और बैल अच्छे होते हैं, दो दो सौ रुपए तक की बैल की जोड़ी बिकती है, और ऊंटों को वहां अकसर हल में भी जोत देते हैं। आदमी वहां के अफ़यून बहुत खाते हैं, यहां तक कि पान इलायची की तरह अपने मुलाकातियों की तवाज़ो अफ़यून की गोलियों से करते हैं। राजधानी जोधपुर अनुमान ८०००० आदमी की बस्ती २६ अंश १८ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश पूर्व देशांतर में छ मील के घेरे में बसाहै, क़िला बहुत मज़बूत है।–२२–बीकानेर दक्षिण जोधपुर, और जयपुर उत्तर बहावलपुर और पटियाला, पश्चिम जैसलमेर, और पूर्व सरकारी ज़िला हरियाने का। बीक़ानेर और जैसलमेर और बहावलपुर की अमल्दारीयों के बीचमें बड़ाभारी रेगिस्तान का मैदान पड़ा है, कि जिसके दर्मियान सैकड़ों कोसके घेरों में नाम को भी बस्ती नहीं मिलती, पानी के बदले मृगतृष्णा का जल, अथवा कहीं कहीं बड़े बड़े जंगली तरबूज़ होते हैं, उन्हीं से मुसाफ़िर लोग अपनी प्यास बुझा लेते हैं। क्या महिमा है सर्व शक्तिमान जगदीश्वर की जहां देखने को भी बूंद भर पानी नहीं मिलता, वहां बालू में आप से आप ऐसे रसीले फल पैदाकर दिये हैं। धरती इन दोनों इलाक़ों की अर्थात् बीकानेर और जैसलमेर की रेतल है, सौ सौ दो दो सौ हाथ गहरे कूए खोदने पड़ते हैं। खेती ज्वार बाजरे के सिवाय और चीज़ोंकी बहुत कम, दरख़्तों का नाम नहीं, बाग़ कौन जानता है, करील फोक झड़बेरी और आक तो अलबत्ता दिखलाई देते हैं, नदी नाले क़सम खाने को भी इन इलाक़ों में नहीं हैं। लंबान इसकी डेढ़ सौ मील से ऊपर और चौड़ान प्राय सवा सौ मील

बिस्तार सत्तर हज़ार मील मुरब्बा, और आमदनी साढ़े छ लाख रुपया साल। राजधानी बीकानेर २७ अंश ५७ कला उत्तर अक्षांस और ७३ अंश २ कला पूर्व देशांतर में शहरपनाह के अन्दर बसा है, बग़ल में क़िला भी ऊंचा और दीदारू बना है।—२३—जैसलमेर पूर्व बीकानेर, पश्चिम सिंध, उत्तर बहावलपुर, दक्षिण जोधपुर। बिस्तार बारह हज़ार मील मुरब्बा। इस में बीकानेर से भी बढ़कर रेगिस्तान और उजाड़ है। बस्ती फ़ी मील मुरब्बा सात आदमी की भी नहीं पड़ती। आमदनी अनुमान एक लाख रुपया साल। राजधानी जैसलमेर २६ अंश ४३ कला उत्तर अक्षांस और ७० अंश ५४ कला पूर्व देशान्तर में बसा है। जोधपुर के रस्ते में गर्मियों के दर्मियान यहां से तीन मंजिल तक बिलकुल पानी नहीं मिलता, मुसाफ़िर लोग मशकें भरकर ऊंटों पर अपने साथ रख लेते हैं। ये ऊपर लिखे हुए पंदरहों इलाक़े अर्थात् सिरोही से जैसलमेर तक राजपुताने में गिने जाते हैं, और सब के सब अजमेर की अजण्टी के ताबे हैं।–२४–बहावलपुर दक्षिण जैसलमेर और बीकानेर, उत्तर पंजाब के सरकारी ज़िले, पश्चिम सिंध, और पूर्व बीकानेर और पटियाला। यह इलाक़ा सतलज और सिन्धु के कनारे कनारे तीन सौ दस मील तक लम्बा चला गया है, और चौड़ान में एक सौ दस मील है, बिस्तार प्राय बीस हज़ार मील मुरब्बा होवेगा। नदियों के तटस्थ तो भूमि उपजाऊ है, पर दक्षिण की तरफ़ निरा बालू का मैदान उजाड़ पड़ा है। आमदनी अनुमान पंदरह लाख रुपया साल। नव्वाब के रहने की जगह बहावलपुर २९ अंश १९ कला उत्तर अक्षांस और ७१ अंश २९ कला पूर्व देशांतर में सतलज के बांए कनारे पर कच्ची शहरपनाह के अन्दर

प्राय बीस हज़ार आदमियों की बस्ती है। यहां सतलज को गर्रा पुकारते हैं। मकान इस शहर में कच्ची ईंटों के बहुत हैं, लुंगी और रेशमी खेस वहां अच्छे बनते हैं, ऊंट भी वहां के चालाक होते हैं। बहावलपुर से ५० मील दक्षिण रेगिस्तान में देवरावल अथवा दे-रावल का मज़बूत क़िला है, नव्वाब का ख़ज़ाना उसी में रहता है। बहावलपुर से पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता अनुमान तीस मील के तफ़ावत पर पंजनद के बांएं कनारे जो सतलज का चनाब के साथ मिलने पर वहां नाम पुकारते हैं ऊच का पुराना शहर बसा है।-२५- अम्बाले की अजण्टी के ताबे रजवाड़े बहावलपुर के पूर्व। यह इ-लाक़े पश्चिम और दक्षिण तरफ़ कुछ दूर तक बीकानेर की अमल्दारी से मिले हैं, बाक़ी सब तरफ़ सरकारी ज़िलों से घिरे हैं। इन में सब से बड़ा इलाक़ा महाराजै पटियाले का जो सिखों की क़ौम में हैं बहावलपुर की हद से लेकर पहाड़ों में शिमला की छावनी तक चला गया है, उसके बीच बीच में दूसरे इलाक़े इस ढब से आगए हैं लम्बान और चौड़ान अनुमान करना बहुत कठिन है, यदि बटिंडे से शिमला तक इस अमल्दारी को नापो तो १७५ मील होती है, परन्तु बिस्तार उसका साढ़े चार हज़ार मील मुरब्बा से अधिक नहीं है। आमदनी बीस लाख रुपये साल की होवेगी। राजधानी पटि-याला ३० अंश १६ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश २२ कला पूर्व देशांतर में कच्ची शहरपनाह के अन्दर बसा है, बीच में क़िला है, उसके अन्दर महाराज के रहने के महल अच्छे अच्छे बने हैं। शहर से पांच छ कोस के तफ़ावत पर बहादुर गढ़ का क़िला और उसमें महल जो महाराज ने अब बनवाए हैं देखने लायक़ हैं। बहा-वलपुर की हद की तरफ़ लुधियाने से ७५ मील नैर्ऋतकोन को

बटिंडे का किला रेगिस्तान के मैदान में बहुत मज़बूत बना है, खज़ाना महाराज का उसी में रहता है, इस के गिर्दनवाह को लखी—जंगल कहते हैं, घोड़ों की चराई के लिये वहां कोई चालीस कोस के घेरे में बहुत अच्छी जगह है। पटियाले से ३५ मील उत्तर सरहिंद जो बादशाही ज़माने में एक बहुत बड़ा आबाद शहर था अब वीरान पड़ा है, खंडहर पुरानी इमारतों के दूर दूर तक दिखलाई देते हैं, पर बस्ती अच्छे क़सबे के बराबर भी नहीं है। इस अमल्दारी के दर्मियान शिमला की राह में पहाड़ों के नीचे कालका से दो कोस इधर पिंजौर के बीच औरंगज़ेब बादशाह के कोकाफ़िदाईखां का बाग़ बहुत नादिर बना है, वहां पहाड़ से जो पानी का सोता आता है उसी को उस बाग़ के फ़व्वारों का खज़ाना बना दिया है, निदान इस पहाड़ के पानी की बदौलत उस बाग़ में सैकड़ों फ़व्वारे चादरें और नहरें आप से आप रात दिन जारी रहती हैं, कहीं हौज़ों के बीच में बारहदरियां बनी हैं, और कहीं बारहद-रियों के बीच में हौज़ बने हैं। पिंज़ौर जगह बहुत रम्य और सुहा-वनी है, पर बर्सात में वहां की हवा बिगड़ जाती है। बाक़ी रजवाड़े जिन के रईसों को अपने इलाक़े में दीवानी फ़ौजदारी का इख़्तियार हासिल है, इस अजंटी में नाभा जींद मालैरकोटला फ़रीदकोट मम-दौत बूड़िया छिछरौली और रायक़ोट हैं। विस्तार इन सब का तेईस सौ मील मुरब्बा से अधिक नहीं है। इन में नाभा जींद और मालै-रकोटला यह तीनों तो तीन तीन लाख रुपए साल की आमदनी के हैं और बाक़ी सब इलाक़े बहुत छोटे छोटे हैं। मालैरकोटला फ़रीद-कोट और ममदौत में मुसलमानों की अमल्दारी है, यह तीनों रईस नव्वाब कहलाते हैं। नाभा पटियाले से पंद्रह मील पश्चिम वायुकोन

को झुकता, जींद पटियाले से सत्तर मील दक्षिण, मालैरकोटला पटियाले से पैंतीस मील वायुकोन, फ़रीदकोट पटियाले से १०५ मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता, ममदौत पटियाले से १३० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता, बूढ़िया पटियाले से ६० मील पूर्व अग्निकोन को झुकता, छिछरौली पटियाले से ६० मील पूर्व और रायकोट पटियाले से ४० मील ईशानकोन को बसा है।—२६—कपूरथला अथवा सिखराजा आलूवालियें का इलाका सतलज और व्यासा के बीच चारों तरफ़ पंजाबके सरकारी ज़िलों से घिरा हुआ, आमदनी दो लाख रुपया साल, राजधानी कपूरथला ३१ अंश २४ कला उत्तर अक्षांस और ७५ अंश २१ कला पूर्व देशांतर में व्यासा नदी के बांएं कनारे दस मील हटकर बसा है।—२७—रुहेलों का रामपुर मुरादाबाद और बरेली के सरकारी ज़िलों से घिरा हुआ। बिस्तार सात सौ मील मुरब्बा। आमदनी दस लाख रुपया साल। रामपुर नव्वाब के रहने की जगह २८ अंश ४९ कला उत्तर अक्षांस और ७८ अंश ५२ कला पूर्व देशांतर में कौशिल्या नदी के बांएं कनारे बसा है।—२८—मनीपुर ब्रह्मपुत्र के पार हिन्दुस्तान की पूर्वहद पर है। पश्चिम और उत्तर सिलहट और आशाम के सरकारी ज़िलों से, और पूर्व और दक्षिण बर्म्हा की अमल्दारी से मिला हुआ है। बिस्तार साढ़े सात हज़ार मील मुरब्बा। आमदनी लाख रुपए साल से कम है। मुल्क जंगल पहाड़ों से भरा हुआ है, और पहाड़ चार हज़ार फ़ुट तक ऊंचे हैं। लोहे की खान है। आदमी वहां के खसिये जिनकी सूरत और बोली भोटियों से मिलती है प्राय जंगली से हैं। नागे वहां बहुत बसते हैं, देवी के उपासक हैं, और आदमी का बल देते हैं। राजधानी मनीपुर २४ अंश ३० कला उत्तर अक्षांस और ९४

अंश ३० कला पूर्व देशांतर में उसी नाम की नदी के दहने कनारे बसा है। इसे अंगरेज कसाइयों का मुल्क कहते हैं क्योंकि बम्हींवाले उन्हें काशी पुकारते हैं और बंगाली उन्हें मघालु कहते हैं, पर वे अपना नाम मोइते बतलाते हैं॥

अब इस से आगे नर्मदा पार दक्षिण के इलाके लिखे जाते हैं—१-हैदराबाद, यह बड़ा इलाक़ा तापी नदी से लेकर जहां वह सेंधिया की अमलदारी से मिलता है दक्षिण में तुङ्गभद्रा और कृष्णा नदी तक चला गया है। ईशानकोन की तरफ़ बरदा नदी प्राणहत्या में और प्राणहत्या गोदावरी में मिलकर इस इलाके को नागपुर के इलाके से जुदा करती है, और बाक़ी सब तरफ़ वह बंगाल बम्बई और मंदराज हाते के सरकारी जिलों से घिरा हुआ है। जिस ज़मीन का नाम संस्कृत में तैलंग देश है वह बहुत सी इस इलाके के अन्दर आ गई है। यह इलाक़ा २८० मील लंबा और ११० मील चौड़ा और प्राय लाख मील मुरब्बा बिस्तार रखता है। बादशाही अमलदारी में यह एक सूबा गिना जाता था, पर अब उसकी हद्दों में बड़ा फ़र्क़ पड़ गया क्योंकि बिदर और औरंगाबाद के सूबों के हिस्से भी दाखिल हो गये हैं। ज़मीन बलंद उपजाऊ और पहाड़ी है, पर पहाड़ ऊंचा कोई नहीं, हवा मोतदिल, बेइंतिज़ामी के सबब ज़मींदार कंगले, और ज़मीन बहुधा परती, जहां किसी समय में सुंदर नगर बस्ते थे वहां अब गीदड़ रोते हैं। मुल्क डेढ़ करोड़ रुपये से ऊपर का है, पर इंतिज़ाम अच्छा न होने के सबब नव्वाब के ख़ज़ाने में अब इसका आधा रुपया भी नहीं आता। वहां के नव्वाब के पास एक पलटन औरतों की है, नाम उसका ज़फ़रपलटन, वरदी और क़वाइद अंगरेजी पलटन के सिपाहियों की सी, तन-

खाह पांच पांच रुपया महीना । ये औरतें जो सिपाहियों का काम करती हैं, गारदनी कहलाती हैं । सन् १७९५ में जब वहां के नव्वाब ने दौलतराव सेंधिया से लड़कर शिकस्त खाई थी, तो उस लड़ाई में करदला के मैदान के दरमियान दो पलटनें इन गारदनियों की मामा वर्णन और मामा चंबेली के ज़ेर हुक्म उसके साथ थीं, और बहरसूरत वह नव्वाब के सिपाहियों से कुछ बुरा नहीं लड़ीं । राजधानी हैदराबाद अथवा भागनगर १७ अंश १५ कला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश ३५ कला पूर्व देशांतर में मूसा नदी के दहिने कनारे जिस पर पक्का पुल बना हुआ है पक्की शहर पनाह के अन्दर चार मील लंबा तीन मील चौड़ा बसा है । रस्ते तंग और फ़र्श भी उन में बुरा, बस्ती उस में अनुमान दो लाख आदमियों की है । नव्वाब के महल और कई एक मस्जिदें देखने लायक़ हैं । छ मील पश्चिम एक पहाड़ पर गोल कुंडे का प्रसिद्ध मज़बूत क़िला है, वहां नव्वाब का ख़ज़ाना रहता है । तीन मील उत्तर सिकन्दराबाद में सरकारी फ़ौज की बहुत बड़ी छावनी है, कि जो नव्वाब की हिफ़ाज़त के वास्ते बमूजिब अहदनामों के वहां रहती है, ख़र्च उस का नव्वाब देता है और उस के सहज में वसूल हो जाने के वास्ते बराड़ का इलाक़ा अपनी अमल्दारी के वायुकोन में सरकार के सिपुर्द कर दिया है । सरकार की तरफ़ से एक साहिब रज़ीडंट उस दरबार के वास्ते मुक़र्रर है । हैदराबाद के वायुकोन की तरफ़ प्राय तीन सौ मील के फ़ासिले पर औरंगाबाद का शहर, जो मुसल्मानों की बादशाहत में उस नाम के सूबै का राजधानी था, और फिर बहुत दिन तक हैदराबाद के नव्वाब का भी राजधानी रहा, अब वीरान सा होगया, अब और बेरौनक़ पड़ा है । साठ हज़ार आ-

दमी से अधिक नहीं बसते पुराना नाम उस का गर्क है, पहाड़ से काटकर शहर में पानी की नहर लाये हैं, हर तरफ़ साफ़ पानी से भरे हुए हौज़ और उन में फ़व्वारे छुट रहे हैं, बाजार लम्बा चौड़ा, औरंगज़ेब के महल खंडहर, एक तरफ़ को उसकी बेटी का मक़बरा संगमर्मर के गुम्बज़ का और एक फ़क़ीर की क़बर है, उसमें बहुत से हौज़ चादरें और फ़व्वारे बने हुए हैं। औरंगाबाद से सात मील वायुकोन को दौलताबाद का मशहूर क़िला है, यह क़िला महादेव की पिंडी की तरह एक खड़े पहाड़ पर बना है, प्रायः ५०० फ़ुट वहां से ऊंचा और चारों तरफ़ से बेलाग है, उस पहाड़ का अधोभाग प्राय एक तिहाई तक छील छील कर दीवार की तरह सीधा कर दिया है, राह चढ़ने की उस पर किसी तरफ़ भी नहीं, पहाड़ के गिर्द खाई है, और फिर खाई के गिर्द तिहरी दीवार, उन तीनों दीवारों के बाहर शहर बसता है, और शहर के बाहर फिर शहरपनाह है, क़िले के अन्दर जाने के लिये सुरंग की तरह पहाड़ के अन्दर ही अन्दर पत्थर काटकर सीढ़ियां बनाई हैं, जैसे किसी मीनार पर चढ़ते हैं उसी तरह उसमें भी मशाल बालकर जाना होता है, पहले तो वह रास्ता ऐसा तंग है कि आदमी को झुककर दुहरा हो जाना पड़ता है, पर फिर तीन गज़ चौड़ा और तीन गज़ ऊंचा है, बीच बीच में एक आदमी के जाने लाइक़ ज़ीने काटकर पानी लाने के लिये खाई तक रस्ते बना दिये हैं, ज़ख़ीरे रखने के वास्ते बड़े बड़े तहख़ाने बने हैं, और फिर जहां वह रास्ता पूरा उसके मुंह पर एक बड़ा भारी लोहे का तवा रखा है, कि यदि शत्रु इस रास्ते में भी आ घुसे तो उस तवे को उसके मुंह पर डालकर आग फूंक दें, जिस में मारे गर्मी के वह उसी रास्ते में भुनकर कबाब हो जावे, क़िले के

अन्दर एक मीनार १६० फ़ुट ऊंचा बना है, पहाड़ की चोटी पर जहां नव्वाब का निशान खड़ा है एक तोप पीतल की १८ फ़ुट लंबी बारह सेर के गोलेवाली रखी है, क़िले के अन्दर कई एक पानी के कुण्ड हैं, मालूम नहीं कि यह क़िला किस ज़माने में और किस ने बनाया, पर जब पहाड़ छीलने और सुरंग काटने की मिहनत पर ख़याल करते हैं, तो अक़्ल भी हैरान सी रह जाती है, लड़कर इस क़िले को फ़तह करना कठिन है, केवल क़िलेवालों की रसद बन्द करने से हाथ आ सकता है। पहले इस जगह का नाम देवगढ़ था, चौदहवीं सदी के शुरू में मुहम्मद तुग़लक़शाह दिल्ली उजाड़कर वहां वालों को देवगढ़ में बसाने के लिये ले गया था, और उसका नाम दौलताबाद रखकर अपनी राजधानी मुक़र्रर किया, पर फिर अन्त में उसे दिल्ली ही को आना पड़ा। दौलताबाद से सात मील वायु-कोन को इल्लूरू गांव के पास, जिसे अंगरेज़ लोग इलोरा कहते हैं, और किसी समय में संगीन शहरपनाह के अन्दर अच्छा ख़ासा शहर बसता था, कोई एक मील लम्बे अर्धचन्द्राकार पहाड़ को काटकर महा अद्भुत मन्दिर बनाए हैं। पहाड़ में काटे हुए जिन सब मंदिरों का बर्णन इस पुस्तक में हुआ है ये इल्लूरूवाले मन्दिर उन सब से अधिक उत्तम हैं, उनकी ख़ूबी देखने ही से समझ में आ सकती है, इस जगह केवल कैलास जिस्में निहायत उमदा काम किया है, और बड़े मंदिर का बिस्तार मात्र लिख देते हैं..................फ़ुट

कैलास का दर्वाजा ऊंचा..१४
रास्ता दर्वाजे के अन्दर जिस्में दुतरफ़ा मकान बने हैं लम्बा......४२
भीतर का चौक..........लम्बा......................................२४७
चौड़ा...१५०

बड़ा मंदिर दर्वाज़े से पिछली दीवार तक लम्बा..............१०३
चौड़ा..६१
ऊंचा..१८

आदिनाथसभा जगन्नाथसभा परशुरामसभा इन्द्रसभा लंका तीनलोक नीलकण्ठ दुखघर जनवासा रावन की खाई इत्यादि और सब मन्दिरों में भी इन दोनों के सिवाय निहायत बारीकी और कारीगरी के साथ तरह तरह की मूर्तें और सुन्दर सुन्दर सूरतें बनाई हैं, और तमाशा यह कि ये सारे मन्दिर एक उसी पत्थर के पहाड़ को काटकर निकाले हैं बड़ा आश्चर्य्य वहां इस बात से आता है कि उत्तर तरफ़ के मंदिर तो जैन और दक्षिण के बौध और बीचवाले शैवमत के बने हैं। विश्वकर्मा की सभा में एक बहुत बड़ी बुध की मूर्ति रखी है, वहांवाले उसे विश्वकर्मा बतलाते हैं, कैलास में मध्य महादेव का लिंग है, बाक़ी चारों तरफ़ और सब देवता हैं, जैन मंदिर में नंगी मूर्त्ति दिगम्बरी आमनाय वालों की बनी हैं। बरसात में जब पहाड़ों से झरने झरते हैं, और कुण्ड सब भर जाते हैं, तो यह जगह बड़ी बहार दिखलाती है। मालूम नहीं कि यह मंदिर किसने और किस समय में बनाये थे, पर बड़ा ही रुपया खर्च पड़ा होगा। दौलताबाद से छ मील इल्लूरू के रास्ते में ४५० फ़ुट ऊंचे उसी पहाड़ के घाटे पर जिस्मे मंदिर काटे हैं शहरपनाह के अन्दर रौज़ा नाम एक बस्ती है, यद्यपि अब वीरानी पर है तौ भी स्थान सुहावना है, वहां सय्यद जैनुलआबिदीन और औरंगज़ेब बादशाह की क़बरें हैं, सिवाय इन के और भी ज़ियारतगाहें कई हैं। हैदराबाद से ७३ मील वायुकोन को खाई और शहरपनाह के अन्दर जिसका दौर छ मील होवेगा बिदर का

पुराना शहर बसा है । बादशाही अमल्दारी में उसके साथ उसी नाम का एक सूबा गिना जाता था और शास्त्रों में उसका नाम विदर्भ लिखा है, पर बहुत लोग नागपुर को विदर्भ मानते हैं। वहां के हुक्के रकाबी आबखोरे इत्यादि रूप जस्त के प्रसिद्ध हैं, और उस शहर के नाम से बिदरी कहलाते हैं । अमीर बरीद का मक़बरा वहां देखने लाइक़ है । हैदराबाद से १३५ मील उत्तर वायुकोन को झुकता गोदावरी के बांएं कनारे नांदेड में, जो किसी समय उस नाम के सूबे की राजधानी था, सिख लोगों का तीर्थ है। गुरु गोविंदसिंह उसी जगह मारा गया था । औरंगाबाद के उत्तर ईशानकोन को झुकता हुआ तिरपन मील पर अजन्ती अथवा अजयंती के घाटे के पास पहाड़ खोद कर गुफ़ा के तौर किसी जमाने के मंदिर बने हुए हैं, देखने लाइक़ हैं । अजंती से पचीस मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता हुआ असाई अथवा असृस्ये का गांव है, वहां सन् १८०३ में जनरल विलिज़ली ने ४५०० सिपाहियों से महाराजै नागपुर और दौलतराव सेंधिया दोनों की इकट्ठी फ़ौज को जो ३०००० से कम न थी शिकस्त दी थी।—२—मैसूर, हैदराबाद के दक्षिण, चारों तरफ़ सरकारी जिलों से घिरा हुआ २०० मील लंबा और १५० मील चौड़ा विस्तार में सैंतीस हज़ार मील मुरब्बा है । यह इलाक़ा पूर्व और पश्चिम दोनों घाटों के बीच समुद्र से बहुत ऊंचा चबूतरे की तरह पड़ा है । जो कोई उस इलाक़े में जाना चाहे, पहले उसे घाटों पर चढ़ना होगा, पर सब जगह से बराबर बट्टाढाल नहीं है, कहीं १८०० फ़ुट कहीं २००० कहीं २५०० कहीं इस्से भी न्यूनाधिक ऊंचा है, और फिर इस बलंदी पर भी ऊंचे ऊंचे पहाड़ हैं, शिवगंगा का पहाड़ जो सबसे बड़ा है ४६०० फ़ुट ऊंचा

है। इसी ऊंचाई के कारण यहां की आबहवा बहुत अच्छी है, और मौसिम एतिदाल के साथ रहता है, बरन सदा बहार है। जंगल भी बड़े बड़े हैं, बहुधा खजूर के। धरती अकसर लाल और पथरीली। लोहे की खान है। दीमक बहुत होते हैं, यहां तक कि घर में तसवीर लगाओ और थोड़े ही दिनों उसकी खबर न लो तो केवल शीशा ही दीवार में चिपका रहजायगा, काग़ज़ और चौकठा बिलकुल नदारद, पर ऊंचे पहाड़ों पर नहीं होते। वहां के हिन्दू दान देने से दान लेने में अधिक पुण्य समझते हैं, यहां तक कि जब बीमार होते हैं, तो कितने ही मन्नत मानते हैं, कि जो अच्छे होजांय तो इतने दिन भीख की रोटी खाकर जीयें, और जब किसी से गांव में तकरार होजाती है तो गधा मारकार रास्ते में डाल देते हैं, उसी दिन वह सारा गांव वीरान होजाता है, यदि वह गधा मारने वाला भी उसी गांव में रहता हो तो उसे भी अपना घर छोड़ना पड़ेगा, क्योंकि वहांवाले जिस गांव में गधा मारा जाय फिर उसमें नहीं बसते। आमदनी इस इलाके की सत्तर लाख रुपया साल है। राजधानी मैसूर, जिसका शुद्ध नाम महिशासुर अथवा महिशुर बतलाते हैं, १२ अंश १९ कला उत्तर अक्षांस और ७६ अंश ४२ कला पूर्व देशांतर में लाल मिट्टी की शहरपनाह के अन्दर बसा है। क़िला अंगरेज़ी तौर का बहुत बड़ा बना है, और उसी के अन्दर राजा के महल हैं। थोड़े ही फ़ासिले से एक ऊंची ज़मीन पर अजंटी का मकान है। क़िले के पास से पहाड़ तक जो शहर से पांच मील पर १००० फ़ुट का ऊंचा होवेगा एक बड़ा तालाब है और उस पहाड़ की चोटी पर साहिब अजंटने एक बंगला बनवाया है, वहां से बहुत दूर दूर तक की सैर दिखलाई देती है, पहाड़ की बगल में सोलह

फुट ऊंचा एक पत्थर का नन्दी बहुत उमदा बना है। राजा के यहां हाथियों के रथ हैं, एक उन में इतना बड़ा जिस में दो सौ आदमी सवार होते हैं, सड़कें वहां की बहुत चौड़ी हैं। मैसूर से नौ मील उत्तर कावेरी के टापू में श्रीरंगपट्टन जो टीपूसुलतान के वक्त में उस मुल्क की राजधानी था शहरपनाह के अन्दर बसा है, पास ही एक बाग़ में टीपू और उसके बाप हैदरअली का मक़बरा संगमूसा का बना है, उसके महल शहर के अंदर जो अब टूटे फूटे पड़े हैं, कुछ देखने योग्य नहीं हैं बाजार सीधा और चौड़ा है, पर गलियां ख़राब, श्रीरंगनाथ जी का मंदिर और बड़ी मसजिद देखने लायक़ है, दो पुल निरे पत्थर के कावेरी की दोनों धारा में बने हैं, दोनों हिन्दुस्तानी डौल पर हैं, मिहराब किसी में नहीं, एकही एक पत्थरके चौखुंटे खंभे तराश कर पानी में खूब मज़बूती के साथ खड़े करदिये हैं, और फिर उनपर पत्थर की सिला पाट दी हैं, उत्तर की धारा में जो पुल बना है उस में सरसठ सरसठ खंभों की तीन क़तार खड़ी हैं, और दक्षिण धारावाले पुलपर से पानी की नहर भी आई है। बंगलूर का शहर श्रीरंगपट्टन से सत्तर मील ईशानकोन की तरफ़ समुद्र से ३००० फुट ऊंचा लाल मिट्टी की शहरपनाह के अन्दर बसा है। बाज़ार चौड़ा दुतरफ़ा नारियल के दरख़्त लगे हुए, क़िला बहुत मज़बूत, खाई गहरी पहाड़ में कटी हुई, कोस एक पर सरकारी फ़ौज की छावनी है। साहिब अजएट वा कमिश्नर के रहने का यही सदर मुक़ाम है। बंगलूर से ३६ मील उत्तर ईशानकोन को झुकता चिकाबालापुर है, कि जहां मिसरी और क़न्द निहायत उमदा बनता है, पर मंहगा बहुत चिकाबालापुर से अनुमान अस्सी मील बायुकोन को चितलदुर्ग अथवा

चित्रदुर्ग का क़िला, जिसे वहां वाले सीतलदुर्ग भी कहते हैं, पहाड़ों के झुण्ड पर जो ८०० फ़ुट तक ऊंचे हैं बहुत मज़बूत बना है, दीवार के अन्दर दीवारें और दरवाज़ों के अन्दर दरवाज़े कोई ऐसी जगह बिना रोके नहीं छोड़ी जिधर से दुश्मन हल्ला कर सके, पानी इफ़रात से, फ़ौज इस में सरकारी रहती है। इस गिर्दनवाह में भी लोग बंगाले की तरह चरख पूजा करते हैं, अर्थात् अपनी पीठ लोहे की हुक से छेदकर महादेव के साम्हने बांस में लटकते और चर्खी की तरह घूमते हैं। बंगलर से बीस मील पश्चिम नैर्ऋतकोन को झुकता सुवर्ण दुर्ग एक पाव कोस ऊंचे खड़े पहाड़ पर बहुत मज़बूत क़िला बना है। मैसूर से ४० मील ईशानकोन को, जिस जगह कावेरी दो धारा होकर शिवसमुद्र अथवा सीवनसमुद्र का टापू बनाती है, जिस पर किसी समय में गंगपारा अथवा गोंगगोदपुर का शहर बस्ता था, उसका जल सौ फ़ुट से लेकर दो सौ फ़ुट तक के ऊंचे पत्थरों से कई धारा होकर इस ज़ोर शोर के साथ चद्दरों की तरह नीचे गिरता है कि जब उसके आस पास के मनोहर जंगल पहाड़ों पर और उस स्थान के निर्जल एकान्त होने पर नज़र करो विशेष करके बरसात के दिनों में तो शायद ऐसी रम्य और सुहावनी दूसरी जगह दुनियां में मुश्किल से मिलेगी। हमने यह इलाक़ा मैसूर का रजवाड़ों में इसलिये लिखा है कि आमदनी वहां की सरकारी ख़ज़ाने में नहीं आती, हुकूमत का ख़र्च काटकर बिलकुल वहां के राजा को दे दी जाती है, पर इतना याद रखना चाहिये कि राजा को मुल्क के बन्दोबस्त में कुछ भी इख़्तियार नहीं है, यह काम साहिब कमिश्नर और उनके असिस्टेंटों के सिपुर्द है, अजण्टी और कमिश्नरी दोनों काम एक ही साहिब करते हैं, और कुड़ग का

इलाक़ा भी जो मैसूर और कानडे के बीच में पड़ा है, और वहां के राजा की सर्कशी के सबब सरकार की ज़ब्ती में आ गया, इसी कमिश्नर के ताबे है, वहां मरकाडे में जो समुद्र से ४५०० फुट ऊंचा है, उसका एक असिस्टेंट रहता है। कुडग सारा जंगल पहाड़ों से भरा है, और वहांवालों का चलन मलवारियों से बहुत मिलता है।-३-कोची अथवा कच्छी, जिसे अंगरेज़ लोग कोचीन कहते हैं, मैसूर के दक्षिण। उस के पश्चिम को समुद्र है, और दक्षिण को त्रिवाङ्कोडू की अमलदारी से मिला है, बाक़ी दोनों तरफ़ सरकारी ज़िले हैं। बिस्तार उसका प्राय दो हज़ार मील मुरब्बा। पहाड़ों की जड़ में तो ताड़ केले और आम के पेड़ों में ज़मींदारों के घरहैं, और ऊपर बड़ेबड़े भारी दरख़्तों के जंगल हैं।ईसाई और यहूदी इस इला-क़े में बहुत रहते हैं यहां तक कि गांव के गांव उन्हीं के बस्ते हैं। उस तरफ़ के बेवक़ूफ़ लोग कोची और त्रिवाङ्कोडूके आदमियोंको जादूगर खयाल करते हैं। आमदनी वहां की प्राय पांच लाख रुपया साल। राजधानी कोची जिसका ज़िकर मलबार के ज़िले में हुआ है सरकार के क़ब्ज़े में है। -४-त्रिवाङ्कोडू अथवा तिरुवनंतपुर। उत्तर उस के कोची दक्षिण और पश्चिम को समुद्र, पूर्ब की तरफ़ सरकारी ज़िले मथुरा और तिरुनेल्लूवालि के। लंबान अनुमान १४० मील और चौड़ान ४० मील। बिस्तार पांच हज़ार मील मुरब्बा है। पहाड़ों पर बड़े भारी जंगल हैं, पानी की इफ़रात से खेतों में अन्न बहुत पैदा होता है, और सब्ज़ा हर तरफ़ दिखलाई देता है। चाल यहां की मलयालवालों से बहुत मिलती है, स्त्री बिलकुल मालिक रहती हैं, खाविंद का इख्तियार कुछ भी नहीं। मनुष्य यहां के बहुधा झूठे और बदकार। प्राय लाख आदमियों के उस इलाक़े में क्रिस्तान

हैं। आमदनी चालीस लाख रुपया साल। इस इलाक़े में खारे पानी के दर्मियान एक जानवर जलचर सील की क़िस्म से और ऊदबिलाव से मिलता हुआ चार फ़ुट लंबा मुंह गोल कान छोटे गर्दन मोटी पैर के पंजे बतक की तरह जुड़े हुए बाल तेलिये बदन और दुम मछली की तरह होता है, शायद लोगों ने उसी को देखकर कहानियों में जलमानसों की बात बनाली। राजधानी त्रिविंद्रम् ८ अंश ९ कला उत्तर अक्षांश और ७९ अंश ३७ कला पूर्व देशांतर में बसा है, उसी में राजा के रहने का क़िला और मकान अंगरेज़ी तौर का और रज़ीडंटी है।—५—कोलापुर हैदराबाद के पश्चिम। चारों तरफ़ सरकारी ज़िलों से घिरा और उन के साथ ऐसा मिला हुआ कि उसका लंबान चौड़ान बतलाना कठिन है। बिस्तार साढ़े तीन हज़ार मील मुरब्बा है। यह इलाक़ा कुछ तो घाट के पहाड़ों में है और कुछ घाट से नीचे। आमदनी पंदरह लाख रुपया साल है। राजधानी कोलापुर १६ अंश १९ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश २५ कला पूर्व देशांतर में पहाड़ों के बीच एक नदी के समीप बसा है। क़िला कुछ मज़बूत नहीं है, लेकिन शहर से दस मील के तफ़ावत पर वायुकोन को पवनगढ़ और पिनौलगढ़ के क़िले ३०० फ़ुट ऊंचे पहाड़ के ऊपर अलबत्ता मज़बूत बने हैं, पिनौलगढ़ साढ़े तीन मील के घेरे से कम नहीं है।-६-सावंतवाड़ी कोलापुर के नैर्ऋतकोन की तरफ़ और गोवे के उत्तर, पश्चिम घाट और समुद्र के बीच में, प्राय हज़ार मील मुरब्बा का बिस्तार रखता है। धरती बीहड़ पहाड़ी और ऊसर, जंगल बहुत, खेतियां हलकी, आमदनी दो लाख रुपया साल है। राजधानी वाड़ी १५ अंश ५६ कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश पूर्व देशांतर में बसा है, पर राजा के

नालाइक होने के सबब इंतिज़ाम इस इलाके का बिलफैल सरकार करती है, जो कुछ रुपया हुकूमत के खर्च से बचता है वह राजा को मिलता है ॥

सिवाय सरकारी और हिंदुस्तानी अमल्दारियों के जिनका ऊपर बर्णन हुआ कुछ थोड़ी थोड़ी सी जमीन इस हिंदुस्तान में फ़रासीस डेनमार्क और पुर्टगाल के बादशाहों के दखल में है। फ़रासीस के दखल में पटुचेरी कारीकाल और चंदरनगर है। पटुचेरी का सुंदर शहर जिसे अंगरेज़ पांडिचेरी कहते हैं दक्षिण में पालार और कावेरी के मुहानों के बीच समुद्र के तट पर ११ अंश ५५ कला उत्तर अक्षांस और ७९ अंश ५१ कला पूर्व देशांतर में मंदराज से ८५ मील एक बालू के मैदान के दर्मियान बसा है, और कारीकाल १० अंश ५५ कला उत्तर अक्षांस और ७९ अंश ४४ कला पूर्व देशांतर में मंदराज से १५० मील दक्षिण तंजाउरू के पूर्व ईशान कोन को जरा झुकता हुआ समुद्र के तट कावेरी के मुहाने पर है, और चन्दरनगर बंगाले से २२ अंश ५१ कला उत्तर अक्षांस और ८८ अंश २९ कला पूर्व देशांतर में कलकत्ते से बीस मील उत्तर गंगा के दहने कनारे पर पड़ा है। पटुचेरी फ़रासीसियों ने सन् १६७४ में वहां के हाकिम से मोल लिया था, और चन्दरनगर सन् १६८८ में औरंगजेब से उन्हें मिला था। ९२ गांव पटुचेरी के साथ हैं, और १०७ गांव कारीकाल के इलाके में, और कुछ थोड़े से गांव चंदरनगर के भी आस पास हैं, सिवाय इस के कुछ थोड़ी थोड़ी ज़मीनें और भी चार पांच शहरों में हैं। आमदनी इन सब की सन् १८३८ में ३७९६६३ रुपये साल की हुई थी, और आदमी इस अमल्दारी के अन्दर सन् १८४० में कुछ ऊपर एक लाख सत्तर हजार गिने

गये थे, उन की हिफ़ाज़त के वास्ते दो कम्पनी सिपाहियों की मुक़र्रर हैं। गवर्नर फ़रासीसियों का पटुचेरी में रहता है। वहां सूत कातने की एक कल फ़रासीस से बहुत अच्छी आई है, उससे बहुत ग़रीबों का गुज़ारा होता है। सिवाय इसके वहांवालों ने एक कारख़ाना ऐसा मुक़र्रर किया है, कि उसमें जो मुहताज क्रिस्तान उस जगह का जाकर मिहनत करे उसे खाने को मिलता है, और दो चार पैसे भी रोज़ दिये जाते हैं, फिर जब वे चीज़ें जो उन से बनाते हैं बिक जाती हैं, तो उनका फ़ायदा रुपये में बारह आना उन्हीं लोगों को मिलताहै, और बीमारी में भी उनकी ख़बर ली जाती है, निदान इस कारख़ाने की बदौलत बहुतेरे आदमी भीख मांगने से बचते हैं, और हलाल की रोटी खाते हैं यदि और शहरों के लोग भी मिलकर ऐसे कार-ख़ाने खड़े करें तो दीन दुखियों का क्या ही उपकार हो॥

डेनमार्क के बादशाह के दख़ल में तिरकम्बाड़ी कारीकाल से ६ मील उत्तर समुद्र के तट कावेरी की एक धारा के मुहाने पर १० अंश ६७ कला उत्तर अक्षांस और ७९ अंश ५४ कला पूर्व देशां-तर में मंदराज से १४५ मील दक्षिण तेरह गांव के साथ है। आदमी उस में सन् १८३५ में २३१८३५ गिने गये थे। अठारह बीस बीघे ज़मीन इस बादशाह की बलेश्वर में भी है॥ पुर्टगालवाले बादशाह के दख़ल में गोवे का इलाक़ा सावंतबाड़ी के दक्षिण और कानड़ा के उत्तर पश्चिमघाट और समुद्रके बीच में ६३ मील लम्बा और १६ से ३३ मील तक चौड़ा है। आमदनी वहां की सब मिलाकर नौ लाख रुपया साल है। राजधानी पुरानी अर्थात् गोवा जो १५ अंश ३० कला उत्तर अक्षांस और ७४ अंश २ कला पूर्व दे-शांतर में बम्बई से २५० मील दक्षिण अग्निकोण को झुकता बसा

था अब बिलकुल बे रौनक़ और वीरान सा पड़ा है, गवर्नर पुर्टगीजों का गोवे से ५ मील पश्चिम समुद्र के तट पर पंजिम में रहता है, और अब वही उस इलाक़े की राजधानी हो गया है, वहां किवाड़ों में शीशे की जगह सीप लगाते हैं, और पालकी की जगह पहाड़ियों की तरह बांस में झोली बांधकर उसी में बैठते हैं, और उसको दो आदमी सिर पर उठाते हैं, नाम इस सवारी का डएडी है ॥

निदान इस भारतबर्ष में जो सब देश प्रदेश और नदी पर्बत हैं थोड़ा बहुत उन सब का बर्णन हो चुका, यदि उन्हें किसी नक़शे में देखो तो साफ़ नज़र पड़ जायगा कि ऊपर (१) अर्थात् उत्तर में सिंधु नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र तक सरासर हिमालय पहाड़ की श्रेणी चली गई है जिस में उत्तर खएड के सुन्दर ठंढे और अतिरम्य मनोहर मुल्क बस्ते हैं। शास्त्र में भी उसकी बड़ी प्रशंसा की है, उदासीन जनों के चित्त को उस से अधिक प्यारा दूसरा कोई स्थान नहीं है। इन पहाड़ों की जड़ में कोई तीस चालीस मील चौड़ा बड़े भारी घने जंगलों से घिरा हुआ वह स्थान है। जिसे तराई कहते हैं, गर्मी और बरसात में इस तराई की हवा विशेष करके नयपाल से नीचे नीचे ऐसी बिगड़ जाती है कि बहुधा पशु पक्षी भी अपनी जान बचाने के लिये वहां से निकल भागते हैं। बांएं हाथ अर्थात् पश्चिम जो जोधपुर जैसलमेर बीकानेर और सिंध और बहावलपुर के वे हिस्से जो सतलज और सिंधु के कनारों से दूर हैं

---

(१) अंगरेज़ी क़ाइदे बमूजिब नक़शे पर हर्फ़ सदा उसकी उत्तर अलंग ऊपर रखकर लिखते हैं, इसलिये जब नक़शे को दीवार में सीधा लटकाओगे उस की उत्तर अलंग ऊपर और दक्षिण नीचे होगी, और पूर्ब दहने और पश्चिम बांए हाथ पड़ेगी ॥

रेगिस्तान के पटपर मैदान में बसे हैं, जहां पानी भी कम और तृण बीरुध का भी अभाव, जिधर देखो समुद्र की लहरों की तरह बालू के टीले दिखलाई देते हैं। जब गर्मियों में लुएँ चलती हैं और आंधियां आती हैं, और वह बालू गर्म होकर हवा में उड़ती है, तो मानो बदन पर छर्रे बरसने लगते हैं, देखते ही देखते वे टीले उड़ कर एक जगह से दूसरी जगह इकट्ठा होजाते हैं, अकसर आदमी इस तरह के खतरे में आए हैं, और रेत के नीचे दबकर मर गये हैं। वहां सिवाय ऊंट के और किसी भी सवारीका गुज़र नहीं होसकता, बहुधा मुसाफिर लोग रात को तारों के निशान से चलते हैं, नहीं तो रेगिस्तान में सड़क पगडंडी बस्ती पेड़ इत्यादि चीजों का आसरा और पता कुछ भी नहीं मिलता, केवल कहीं कहीं फोक झड़बेरी आक और करील अवश्य नज़र पड़जाते हैं। अरबली पहाड़, जो सिरोही और जोधपुर को उदयपुर सरकारी जिले अजमेर और किशनगढ़ से जुदा करता शेखावाटी और अलवर की अमलदारी में होता हुआ दिल्ली के पास जमना के कनारे तक चला गया है, इस मरु देश की पूर्व सीमा है। दहने हाथ अर्थात् पूर्व की तरफ़ सूबे बंगाला समुद्र और हिमालय के बीच सीधा बट्टाढाल, जिस्मे पहाड़ तो क्या कहीं पत्थर का रोड़ा भी देखने को नहीं मिलता, नदियों की बहुतायत से ऐसा सेराब है कि बरसात में प्राय आधे से अधिक जलमग्न होजाता है। आबादी बहुत, धरती उपजाऊ परले सिरे की, धान हरतरफ़ लहलहाते हैं, । पूर्व भाग में बम्र्हा की सरहद पर ऐसे सघन और अगम्य जंगल पड़े हैं, कि जैसा उत्तर में इस देश को हिमालय से बचाव है वैसा ही इधर इन जंगलों की मानों दीवार खड़ी है, शत्रु उस राह से कदापि नहीं आ सकता। निदान यह बं-

गाले का मैदान नदियों से सिंचा हुआ गंगा के दोनों तरफ़ हिमालय और विंध के बीच हरिद्वार तक चला गया है, और गंगा यमुना के बीच जो देश पड़ा है उसे अन्तरवेद और दुआबा भी कहते हैं, और यही दो चार सूबे अर्थात् दिल्ली आगरा अवध और इलाहाबाद यथार्थ मध्यदेश अर्थात् असली हिंदुस्तान है। वायूकोन में सिखों का मुल्क पंजाब है, जिसके पांचो दुआबे जिन जिन नदियों के बीच में पड़े हैं उन दोनों नदियों के नाम के हर्फ़ों से पुकारे जाते हैं, जैसे व्यासा और सतलज के बीच में दुआबैवस्तजालन्धर, व्यासा और रावी के बीच में दुआबैबारी, रावी और चनाब के बीच में दुआबैरचना, झेलम और चनाब के बीच में दुआबैजच, और झेलम और सिंधु के बीच सिंधुसागर दुआब। मध्य में बिन्ध्याचल के तटस्थ नर्मदा और शोण के कनारों पर, और फिर शोण के कनारे से सूबै उड़ेसा और नागपुर की अमलदारी के बीच गोदावरी तक, वे सब जंगल और झाड़ झंखाड़ और उजाड़ हैं जिनमें भील गोंद धांगड़ कोल चुवाड़ और संठाल इत्यादि असभ्य अर्धबनमानस तुल्य प्राय जंगली मनुष्य बसते हैं। नीचे नर्म्मदा पार दक्षिणदेश पूर्व और पश्चिम घाटों के बीच एक चबूतरा सा उठा हुआ, ज्यों ज्यों दक्षिण गया ऊंचा होता गया, यहां तक कि मैसूर की धरती प्राय तीन हज़ार फ़ुट समुद्र से बलन्द है, और बलंदी के सबब वहां मौसिम भी अच्छा रहता है, गर्मी की शिद्दत नहीं होती। यह ऊंचा देश दोनों घाटों के बीच कृष्णा नदी से दक्षिण बालाघाट कहलाता है, और घाटों से उतरकर समुद्र की तरफ़ जो नीचा देश है वह पाईघाट। असल में कर्नाटक उसी बालाघाट का नाम था, पर अब अंगरेज़ लोग पाईघाट को भी उसी नाम से पुकारते हैं, और कृष्णा

के मुहाने से कावेरी के मुहाने तक समुद्र के तटस्थ देश को कारोमंडल भी कहते हैं। कारोमण्डल चौलमण्डल का अपभ्रंश है, कि जो नाम अब तक भी वहांवालों की ज़ुबान पर जारी है (१) इस कनारे समुद्र के निकट धरती बिलकुल रेतल और ऊसर है। कृष्णा पार दक्षिणदेश में मुसलमानों का राज्य पक्का न जमने के कारण वहां अबभी बहुतेरी बातें असली हिंदू धर्म की देख पड़ती हैं, मन्दिर औ शिवालय बहुत बड़े बड़े प्राचीन बने हुए, धर्मशाला और सदावर्त हरतरफ़ मुसाफ़िरों के लिये, ब्राह्मण वेदपाठी और अग्निहोत्री जगह जगह इफ़रात से, और नाम नगर और ग्रामों के अहमद महमूद पर कोई नहीं वही पुराने हिंदी चले जाते हैं। यद्यपि हिसाब से प्राय दो तिहाई मुल्क अर्थात् प्राय सात लाख मील मुरब्बा अब भी हिन्दुस्तानियों के दख़ल में है, परन्तु वो आबादी और आमदनी में सरकारी मुल्क के आधे हिस्से की भी बराबरी नहीं कर सकता। सरकारी अमलदारी में नौ करोड़ आदमी बसते हैं, हिन्दुस्तानी अमलदारी में कुल पांच करोड़। सरकार के यहां तीस करोड़ रुपया तहसील होता है, हिन्दुस्तानियों को ग्यारह करोड़ भी पल्ले नहीं पड़ता। यह केवल नियत की बर्कत है, और इंतिज़ाम की ख़ूबी॥

---

(१) रामस्वामी अपनी किताब में लिखता है कि कारोमण्डल कारीमलाल का अपभ्रंश है, और क़ारीमलाल उस गांव का नाम है जो पुर्टगालवालों ने पहले ही पहल उस कनारे पर देखा था॥

इति

नक़्शा हिन्दुस्तान के रजवाड़ों के बिस्तार और आमदनी का वर्णमाला के क्रम से।

संख्या	नाम इलाक़े का		बिस्तार मील मुरब्बा	आमदनी साल में
१	अंबाले की अजण्टी	....	२३००	
	जींद	....		३०००००
	पटियाला	....	४५००	२००००००
	मालैरकोटला	....		३०००००
२	अलवर	....	३५००	१८०००००
३	इन्दौर	....	८०००	२२०००००
४	उदयपुर	....	११६००	१२५००००
५	कच्छ (तूल १६० अर्ज़ ६५ मील)			८०००००
६	कपूरथला	....		२०००००
७	करौली	....	१९००	५०००००
८	कश्मीर	....	२५०००	१००००००
९	किशनगढ़	....	७००	३०००००
१०	कोची	....	२०००	५०००००
११	कोटा	....	६५००	४५०००००
१२	कोलापूर	....	३५००	१५०००००
१३	गढ़वाल	....	४५००	१०००००
१४	ग्वालियर	....	३३०००	७८०००००
१५	चम्बा	....		१०००००
१६	जयपुर	....	१५०००	८५०००००
१७	जैसलमेर	....	१२०००	१०००००
१८	जोधपुर	....	३५०००	१७०००००
१९	टोंक	....	१८००	१००००००

संख्या	नाम इलाक़े का		बिस्तार मील मुरब्बा	आमदनी साल में
२०	डूंगरपुर	....	१०००	२०००००
२१	त्रिवाङ्कोडू	....	५०००	४००००००
२२	देवास	....		४०००००
२३	धार	....	१०००	४७५०००
२४	धौलपुर	....	१६२५	७०००००
२५	नयपाल	....	५४५००	३२०००००
२६	पर्तापगढ़	....	१५००	२०००००
२७	बघेलखण्ड	....	१००००	२००००००
२८	बड़ोदा	....	२४०००	७००००००
२९	बहावलपुर	....	२००००	१५०००००
३०	बांसवाड़ा	....	१५००	२०००००
३१	बीकानेर	....	१७०००	६५००००
३२	बुंदेलखण्ड	....	१००००	
	दतिया	....		१००००००
	उरच्छा	....		७०००००
	चारखाड़ी	....		४०००००
	छतरपुर	....		३०००००
	अजयगढ़	....		३२५०००
	पन्ना	....		४०००००
	समथर	....		४५००००
	विजावर	....		३२५०००
३३	बूंदी	....	२२००	१००१०००
३४	भरतपुर	....	२०००	२००००००
३५	भुटान (तूल १०० मील अर्ज़ ५० मील)			

संख्या	नाम इलाक़े का		बिस्तार मील मुरब्बा	आमदनी साल में
३६	भूपाल	....	७०००	२२०००००
३७	मनीपुर	....	७५००	१०००००
३८	मैसूर	....	३७००	७००००००
३९	मंडी	....		३५००००
४०	रामपुर	....	७००	१००००००
४१	शिक्रम	....	१६००	
४२	सतलज और जमना के बीच के रजवाड़े			
	कहलूर	....		१०००००
	बिसहर	....		१०००००
	सिरमौर	....		१०००००
४३	सावन्तवाडी	....	१०००	२०००००
४४	सिरोही	....	३०००	१०००००
४५	सुकेत	....		८००००
४६	हैदराबाद	....	१०००००	१५००००००

अनुक्रमणिका

दूसरा हिस्सा

फ

ब

॥ इति ॥

भूगोल हस्तामलक

OR

THE EARTH AS [A DROP OF] CLEAR WATER IN HAND

IN THREE VOLUMES

तीन जिल्दों में

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत नव्वाब लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार

राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द (३) ने बनाया

BY

RAJA SIAVAPRASAD, C.S.I.

॥ मस्त ॥

बैठकर सैर मुल्क की करनी यह तमाशा किताब में देखा

VOLUME I.

पहली जिल्द

PART III.

तीसरा हिस्सा

इलाहाबाद गवर्नमेंट के छापेख़ाने में छापा गया

विद्यार्थियों के लाभ के लिये

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा

मार्च सन् १८९७ ई०

CONTENTS

OF THE

THIRD VOLUME.

तीसरे भाग का सूचीपत्र

नक़शों का सूचीपत्र

भूगोल हस्तामलक

तीसरा भाग

लंका अथवा सिंहलद्वीप

ईश्वर ने जिस तरह और सब चीज़ें इस भारतवर्ष के लिये अच्छी से अच्छी बनाई, एक टापू भी उसके वास्ते बहुत सुन्दर रचा है। नक़्शा देखने से मालूम होगा कि जैसे किसी धुगधुगी में आवेज़ा लटकता है उसी सूरत से यह सिंहल का टापू हिन्दुस्तान के दक्षिण तरफ़ पड़ा है। शास्त्र में इसका नाम लंका और सिंहल द्वीप लिखा है, मुसल्मान सरन्दीप और सीलान पुकारते हैं, और अंगरेज़ उसे सीलोन कहते हैं। इस टापू के लंका होने में कुछ सन्देह नहीं है, क्योंकि सेतबन्ध रामेश्वर के साम्हने है, और सेत उसी से जाकर मिलता है, और प्राचीन यूनानी ग्रंथों में इसका नाम टापरोवेन अर्थात् रावन का टापू लिखा है (१) फिर सिवाय इन बातों के दूसरा कोई टापू उधर ऐसा है नहीं जिसे लंका ख़याल करें, फ़रंगियों के जहाज़ों ने सारा समुद्र छान डाला, और जो कहो कि शास्त्र में लंका के दर्मियान सोने का कोट और बिभीषण का राज लिखा

---

(१) कोई कोई ऐसा भी कहते हैं कि टापरोवेन ताम्रपर्णी का अपभ्रंश है, बौद्ध लोगों के पुराने ग्रंथों में इस टापू का नाम ताम्रपर्णी ही लिखा है।

है, तो हम यह पूछते हैं कि क्या उसी शास्त्र में काशी को भी सोने की नहीं लिखा, अथवा साक्षात महादेव को वहां का राजा नहीं कहा। निदान लंका २७० मील लम्बा और २४५ मील चौड़ा ७५० मील के घेरे में एक टापू है। कुछ ऊपर ८००० फुट तक ऊंचे उस में पहाड़ हैं। नदी सब से बड़ी महावलि गंगा है, प्राय २०० मील लम्बी, और उस में नाव बेड़े चलते हैं। लोहे और फिटकिरी की वहां खानें हैं, और माणक लसनिया नीलम कटैला गोमेदक बिल्लौर नदियों के बालू में मिलता है। नमक भी वहां बनता है, दारचीनी बहुत होती है, और निहायत उमदा, क़हवा इलायची और कालीमिर्च की भी इफ़रात है। जंगलों में वहां के हाथी इतने होते हैं, कि एक अंगरेज़ ने दो बरस के शिकार में चार सौ हाथी मारे, मज़बूती और चालाकी में वहां का हाथी सब जगह मशहूर है। हुमा पक्षी भी, जिसके परों की कलगियां बादशाह टोपियों में लगाते हैं, वहां बहुत होते हैं। समुद्र के कनारे ग़ोतेख़ोर सरकार की तरफ़ से मोती निकालते हैं, सन् १८३५ में ३८०००० रुपये इन मोतियों के नीलाम से सरकारी ख़ज़ाने में आये थे, उस में पहले ९ साल की आमदनी का पड़ता फैलाने से १४५०००० रुपया साल पड़ता है, शंख भी समुद्र से वहां बहुत निकलते हैं। आब हवा बहुत अच्छी, मौसिम मोतदल। आदमी वहां सिंहली मलबारी और मुसल्मान इन तीनों क़िस्म के बहुत हैं, सिंहली मालूम होते हैं कि वहां के असली रहनेवाले और हिन्दुस्तानियों से मिलकर पैदा हुए हैं। मत उनका बौध, सीधे सच्चे ग़रीब मिलनसार और ख़ूबसूरत, ब्रम्हा और हिन्दुस्तानवालों से मिलते हुए, बोली उनकी जुदी है, पर ग्रंथ उन के प्राकृत अथवा संस्कृत में लिखे हैं। मलवारिगों का

मज़हब शैव और चालचलन उन के अपने देश के से, पर अकसर अब अंगरेज़ी तरीक़ा इख़्तियार करते चले हैं, कुरसी मेज़ लगाकर खाते हैं, और अपनी स्त्रियों के साथ मजलिसों में नाचते हैं। इस्कूल सन् १८३३ में १७ तो सरकार की तरफ़ से और ९९४ पादरी इत्यादि लोगों की तरफ़ से गिने गये थे। एक क़ौम वहां विड्स लोगों की है जो भील गोंद चुवाड़ों की तरह जंगल पहाड़ों में रहा करते हैं, और बन के फल फूल और कंदमूल अथवा शिकार से अपना गुज़ारा करते हैं, अंगरेज़ लोग उन्हें वहां के असली भूमिये ठहराते हैं। सिंहलियों की तवारीख़ बमूजिब जो बहुधा ठीक मालूम होती है यह टापू राजा विजय सूर्यबंशी ने सन् ईसवी से प्राय ५४३ बरस पहले वहां के असली भूमियों से छीना था, और श्री विक्रमराजसिंह उसके घराने में आख़िरी राजा हुआ, जो सन् १८१५ ईसवी में अंगरेज़ों के हाथ से निकाला गया। पहले वहां के राजा ने अरब और मलवारियों के हल्लों से बचने के लिये पुर्टगीज़ों की मदद चाही थी पर जब पुर्टगीज़ों ने उसी को ज़ेर करना चाहा, तो उसने डचलोगों को बुलाया, उन्हों ने भी धीरे धीरे उसका मुल्क दबाना शुरू किया, लेकिन जब फ़रंगिस्तान में डच लोगों ने अंगरेज़ों के साथ लड़ने पर कमर बांधी, तो सन् १७९६ में अंगरेज़ों ने उन्हें इस टापू से भी बेदख़ल करदिया, और जब वहां वालों ने अपने राजा के ज़ुलम से तंग होकर विशेष इस बात से कि उसने अपने मंत्री के लड़के उन्हीं की मा के हाथ से उखली में कु-टवाए अंगरेज़ों की हिमायत में आना चाहा तो सरकार ने भी मज़-लूम समझकर उनकी अभिलाषा पूरी की, और सन् १८१५ में राजा को निकालकर सारा टापू अपने क़बज़े में करलिया, तब से वह बराबर इंगलिस्तान के बादशाह के दख़ल में चला आता है आ-

मदनी वहां की सब मिलाकर तेंतीस लाख रुपया साल है। फ़ौज चार पलटन गोरे की और एक मलबारियों की रहती है। राजधानी कोलम्ब जहां गवर्नर रहता है। ६० अंश ५७ कला उत्तर अक्षांस और ८० अंश पूर्व देशांतर में उस टापू के पश्चिम बग़ल मंदराज से ३६८ मील दक्षिण है, क़िला ठीक समुद्र के तट पर अच्छा मज़बूत बना है, तोपें उसपर तीन सौ चढ़ी हुई हैं। आदमी उस शहर के अंदर सन् १८३२ में ३२००० गिने गये थे, सूरत शहर की अंगरेज़ी छावनियों से बहुत मिलती है। कोलम्ब से ६० मील ईशान कोन कांडी के दर्मियान, जहां उस टापूके पुराने राजा रहते थे, एक मंदिर के अंदर पिंजरे की तरह लोहे के कटहरे में सोने के छ ढकनों से ढका हुआ एक दांत रखा है, और उन छओं ढकनों के ऊपर एक सातवां ढकना पीतल का घंटे की सूरत ढका है, और फिर उसके ऊपर अनुमान डेढ़ लाख रुपये का ज़ेवर और जवाहिरात रखा है। उस लोहे के कटहरे, में ज़िसके अंदर ये सब चीज़ हैं, ताला बंद रहता है, और कुंजी उसकी हाकिम के पास रहती है, क्योंकि सिं-हलियों का यह निश्चय है कि वह दांत बुध का है, और जिसके पास रहे वही उस टापू का राजा होवे, सरकार ने इस दूरंदेशी से कि कोई बदमाश उसे लेकर बलवा न उठावे अपने क़बज़े में रखा है, जब साल में एक बार मेला होता है तो साहिब कलेक्टर ताला खोलकर लोगों को दर्शन करा देते हैं। कोलम्ब से ४५ मील पूर्व अग्निकोन को झुकता हमालल पहाड़ के ऊपर, जिसे अंगरेज़ आ-दम का शिखर कहते हैं, और समुद्र से ७००० फ़ुट ऊंचा है, एक पत्थर की चटान पर आदमी के पैर का निशान बना है, पर दो फ़ुट लम्बा। सिंहली लोग कहते हैं कि वह बुध के पैर का निशान है, और

ब्रह्मा
अमरपुर
आवा
यंडाबू
ऐरावती नदी
बंकाक
स्याम की खाड़ी
पूलोपिनांग
कम्बोज

बुध उसी जगह से स्वर्ग को चढ़ा था, और मुसल्मान उसको आदम के पैर का बतलाते हैं, और कहते हैं, कि वह उसी जगह स्वर्ग से गिरा था ॥

बम्र्हा

यह मुल्क जो एशिया के अग्निकोन की तरफ़ हिंदुस्तान के पूर्व है ९ अंश से २६ अंश उत्तर अक्षांस तक और ९२ अंश से १०४ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। असल नाम उस मुल्क का वहां के आदमी म्रन्मा पुकारते हैं, और ब्रह्मा बम्र्हा और बर्मा इत्यादि सब उसी म्रन्मा का अपभ्रंश है। पश्चिम तरफ़ उसके हिंदुस्तान और बंगाले की खाड़ी, और पूर्व तरफ़ उसकी सरहद कम्बोज देश जिसे अंगरेज़ कम्बोडिया कहते हैं और चीन के मुल्क से लगी है, उत्तर को उसके चीन है, और दक्षिण स्याम और समुद्र और मलाका है। लंबान उसकी प्राय एक हज़ार मील और चौड़ान प्राय छ सौ मील और बिस्तार अनुमान १९४००० मील मुरब्बा गिनाजाता है। आदमी उसमें ७४ फ़ी मील मुरब्बा अर्थात् १४०००००० बस्ते हैं। दक्षिण तरफ़ अर्थात् समुद्र के निकट तो इस इस मुल्क में मैदान है, और उत्तर भाग में बिलकुल जंगल और कोहिस्तान। नदियों में ऐरावती सब से अधिक मशहूर है, वह तिब्बत के पूर्व से निकलकर १८०० मील बहने के बाद कई धारा होकर समुद्र से मिलता है, उसमें नाव बहुत दूर तक चलती है। और उसके पानी से कनारे की खेतियों को भी बड़ा फ़ाइदा है, अमरपुर के नज़दीक १४ मील लंबी एक झील बहुत गहरी है, और उसके चारों तरफ़ पहाड़ों के होने से बहुत रम्य और सुहावनी मालूम होती है। ग़ल्लों में वहां चावल बहुत इफ़रात से पैदा होता है, और उसी का बड़ा खर्च है। चाय इस मुल्क में

खराब होती है। केवल तर्कारी और अचार बनाने के काम में वहां के आदमी लाते हैं। सागौन की जंगलों में इफ़रात है। टांगन वहां से बिहतर कहीं नहीं होता, गाय भैंस का दूध वहां कोई नहीं पीता, शेर और हाथियों का जंगल पैगू के नज़दीक है, लेकिन गीदड़ उस विलायत भर में नहीं। खान से उस मुल्क में सोना चांदी माणक नीलम लोहा रांगा सीसा सुरमा गंधक हरिताल संखिया कहरुबा कोयला और कई क़िस्म के क़ीमती पत्थर बहुतायत से निकलते हैं। अमरपुर के नजदीक संगमर्मर की बहुत उमद: खान है, लेकिन उस पत्थर से सिवाय देवताओं की मूर्ति के और कुछ नहीं बनेपाता, सब से ज़ियाद: रुपया इन खान की चीज़ों में राजा को नफ़्त अर्थात् मटियातेल से वसूल होता है, लोग उसको ज़मीन से तीस तीस पुर से गहरे कूए खोद कर निकालते हैं, वह वहां चराग़ जलाने के काम में आताहै। मौसिम वहां भी हिंदुस्तान के से हैं, लेकिन एतिदाल के साथ, अर्थात् न तो वहां कभी ज़ियाद: जाड़ा पड़ता है, और न कभी सख्त गर्मी होती है। राजधानी वहां की अइनूवा जिसे अंगरेज़ आवा और वहांवाले रत्नपुर भी कहते हैं २१ अंश ४५ कला उत्तर अक्षांस और ९६ अंश पूर्व देशांतर में ऐरावती के बांएं कनारे बसा है, उसकी शहरपनाह दस गज़ ऊंची, और बहुत गहरी और चौड़ी खाई से घिरी हुई है। क़िला चौखूंटा २४०० गज़ लम्बा और चौबीस ही सै गज चौड़ा है। मकान बिलकुल काठ के हैं, ईंट का घर सिवाय राजा के और कोई नहीं बनाने पाता। शहर में एक मन्दिर बौध मतका बहुत खूब सूरत और आलीशान है, और उस मन्दिर के अन्दर एक मूर्ति गौतम की आठ गज़ ऊंची एक संगमर्मर की बैठी हुई बनी है। आदमी उसमें प्राय ३०००० बसते हैं। लोग वहां के

खुशदिल तेज़ मिज़ाज और बेसबरे होते हैं, हिंदुस्तानियों की तरह सुस्त और आलसी नहीं होते। औरतें वहां की शर्म और परदा नहीं करतीं, और घर का सारा काम और मिहनत उन्हीं के ज़िम्में है, मर्द मज़े से बैठे पान चबाया और हुक्का पिया करते हैं, हक़ीक़त में उन औरतों की ज़िन्दगी लौंड़ी और बांदियों से भी बत्तर है, मिहनत मज़दूरी के सिवाय वहां के आदमी अपनी बहू बेटियों से कस्ब भी करवाते हैं, और इस बात से शर्म नहीं खाते, वरन जो औरत जितना ज़ियाद: रुपया कमालाती है उतनाही अपने घरवालों में नाम पाती है। सूरत शकल में वहां के आदमी चीनियों से मिलते हैं, औरतें गोरी होती हैं, लेकिन भद्दी, मर्द नाटे गठीले, हजामत नहीं बनाते दाढ़ी मूछों के बाल मुचने से उखाड़ डालते हैं, सुरमा और मिस्सी मर्द औरत दोनों लगाते हैं। शादी कम उमर में नहीं करते, और एक औरत से अधिक नहीं ब्याहते। जाति भेद उन लोगों में नहीं है, और मत बुध का मानते हैं, जीव की हिंसा करनी उस मज़हब के बिरुद्ध है, परन्तु वे लोग बेखटके मास मछली खाते हैं, और शराब भी पीते हैं। पुनर्जन्म का निश्चय रखते हैं, और अपने मुर्दों को आग में जलाते हैं। ज़ुबान उन लोगों की मुश्किल है, और किसी दूसरी से नहीं मिलती। हर्फ़ भी उन के गोल गोल खास एक तरह के हैं, और हिन्दी की तरह बांएं से दहनी तरफ़ लिखे जाते हैं। पोथियां उनकी तालपत्र पर लिखी रहती हैं, और कभी कभी सोने के पत्रों पर लिखते हैं। कविताई और शास्त्र उस भाषा में भी बहुत हैं, और कई उनकी मज़हबी पोथियां प्राकृत बोली में लिखी हैं। मुलम्मे का काम वे लोग खूब करते हैं, और धात और मिट्टी के बर्तन और रेशम के कपड़े और संगमर्मर की मूर्तें और ज-

हाज़ भी अच्छा बनाते हैं। रुपये पैसे की जगह वहां चांदी और सीसे का क़ुर्स चलता है। बाहर की आमदनी में अंगरेज़ी बनात और कपड़े और हथियार और धातु के बरतन और रेशमी रूमाल बहुत ख़र्च होते हैं, और निकासी के माल में सागौन इत्यादि क़ीमती लकड़ियों की वहां बड़ी पैदा है, सिवाय इसके वे लोग रुई कहरुवा हाथीदांत जवाहिर पान और एक क़िस्म की चिड़यों के घोसले जो उस देश के आदमी बहुत मज़े के साथ खाते हैं, चीनियों को देते हैं, और उसके बदले रेशम धात के बरतन मखमल मुरब्बे और सोने के तबक़ उन से लेते हैं। तहसील में वहां का राजा जो कुछ कि मुल्क में पैदा होता है और जो कुछ कि बाहर से आता है सब का दसवां हिस्सा लेता है, और वहां का यह आईन है कि जब कोई लड़ाई या हंगामा आ पड़े तो मुल्क के सारे मर्द राजा की चाकरी में हाज़िर होवें, और इसी बाइस से वहांका राजा बड़ाभारी लश्कर मैदान में ला सकता है, लेकिन ऐसी गवर्दल की भरती को हम फ़ौज नहीं कह सकते। नाव भी लड़ाई की वहां के राजा ने बहुतसी तयार कर रखी हैं, उन पर अकसर सुनहरा काम किया हुआ है। और पानी में बहुतही जल्द चलती हैं। यद्यपि धर्मशास्त्र तो वहां भी मनु का जारी है, परन्तु मुआमले मुक़द्दमों में बड़ी बेइंसाफ़ी होतीहै, ऐसा कोई मुजरिम नहीं जो मक़दूर मुवाफ़िक़ नज़राना अदाकरने से रिहाई न पा सके। यह भी इस मुल्क का आईन है कि राजसंबंधी जो बात कही जावे उस के साथ सोने का शब्द ज़रूर कहना चाहिये, जैसे हमको कहनाहै कि राजा के कान तक यह बात पहुँची अथवा राजा की नाक में इतर की ख़ुशबू गई तो अवश्य कहना पड़ेगा कि सोने के कानतक यह बात पहुँची और सोने की नाक में

इतर की खुशबू गई। वहां के राजा का निशान हंस है। सब से जियादा तअज्जुब की बात इस राज में यह है, कि राजा की सवारी का जो सफ़ेद हाथी है, उसका भी दरजा राजा के बराबर समझा जाताहै, उस हाथी का दरबार जुदाही लगता है, और उसके वज़ीर दीवान मुन्शी मुतसद्दी नक़ीब चोबदार अलग नौकर हैं, जो एलची वकील कारदार इत्यादि राजा के दरबार में जाते हैं, उनको इस हाथी के साम्हने भी मुजरा बजा लाकर नज़र दिखलानी पड़ती है, उसके रहने का मकान राजा के महल से कुछ कम नहीं, ज़र दोज़ी मख़मल की गद्दी उसके सोने के वास्ते बिछाई जाती है, और रत्न जटित सोने के बरतनों में उसका खाना पीना होता है, इतरदान पानदान और पीकदान भी उसके साम्हने रहता है। वहां का राजा आदमी के कंधे पर उसके मुँह में रूमाल की लगाम देकर घोड़े की तरह सवार होता है !! कहते हैं कि उस देश के पहले राजा मगध अर्थात् बिहार से वहां गये थे, और इस बात को वे लोग कुछ कम अढ़ाई हज़ार बरस बीते बतलाते हैं। सन् १८२४ में सरहद पर उन लोगों के ज़ियादतियों के सबब क़रीब ५००० सिपाहियों के सरकारी फ़ौज का चढ़ाव हुआ था, और दो बरसतक बराबर लड़ाई होती रही, यद्यपि नया और अजनबी मुल्क होने के सबब सरकारी फ़ौज को सख़्तियां बहुत झेलनी पड़ीं लेकिन आख़िर जब दुश्मन के आदमियों को शिकस्त देती हुई और फ़तह के निशान उड़ाती हुई आवा से कुल दो मंज़िल के तफ़ावत पर यंडाबू में जा दाख़िल हुई, तो नाचार राजा ने पैग़ाम सुलह का भेजा, सरकार ने भी उससे जुर्माने के तौर पर एक करोड़ रुपया लड़ाईका ख़र्च और टेनासेरिम अर्थात् मौलमीन का इलाक़ा हमेशः के वास्ते इस क़ौल के साथ फिर कभी ब्रह्मा का

राजा सरहद पर कुछ जियादती न करे और सरकारी रअय्यत से जो उसके मुल्क में व्यौपार के वास्ते जावे सिवाय मामूली महसूल के और कुछ जियादा तलबी न करे लेकर अपनी फ़ौज उसके मुल्क से हटाली। सन् १८५१ में वहां के राजा के सिर में फिर खुजली आई, अर्थात् जब अहदनामे के बरख़िलाफ़ उसके नाज़िम ने रंगून में सरकारी रअय्यत के जहाज़वालों को तंग करके उन से ज़बरदस्ती रुपये लिये, और गवर्नर जेनरल बहादुर ने उन जहाज़वालों का रुपया लौटवाने के लिये और उस नाज़िम को सज़ा देने के लिये राजा को ख़त लिखा, तो उसने दोनों से एक काम भी न किया। नाचार सरकार ने फ़ौज भेजी, और वह मुल्क भी समुद्र के तटस्थ जो आराकान और मौलमीन के बीच उसके क़बज़े में था अपने दख़ल में कर लिया, न उसके पास समुद्र के तटस्थ कोई जगह रहेगी, न वह फिर सरकारी जहाज़वालों पर ज़ियादती कर सकेगा। निदान बर्म्हा में आराकान तो सरकार के पास पहले ही से था, और मौल मीन सन् १८२४ की लड़ाई में लिया था, अब इस नये मुल्क अर्थात् रंगून पैगू इत्यादि के हाथ आने से बर्म्हा के राज्यका पूर्व भाग चटगांव से लेकर मलाका की हद तक बंगाले की खाड़ी के तटस्थ बिलकुल सरकार अंगरेज़ बहादुर का होगया। यह सरकारी बर्म्हा तीन कमिश्नरियों में बटा है, उत्तर आराकान की कमिश्नरी, दाक्षिण मौलमीन की, और बीच में पैगू का और इन कमिश्नरियों के नीचे मजिस्ट्रेट कलेक्टरों की तरह डिपुटी कमिश्नर और असिस्टेंट मुक़र्रर हैं। आराकान का कमिश्नर आवा से दो सौ मील नैर्ऋतकोन आकयाब में रहता है, मौलमीन का कमिश्नर आवा से चार सौ मील दक्षिण अग्निकोन को झुकता मौलमीन में रहता है, और पैगू का कमिश्नर

आवा से तीन सौ मील दक्षिण पैगू में रहता है। पैगू से साठ मील दक्षिण ऐरावती के दहने कनारे रंगून में एक मंदिर सोमदेव का अष्ट-कोण ३६१ फ़ुट ऊंचा बना है, और उसके शिखर पर लोहेका छत्र सुनहरी मुलम्मा किया हुआ पचास फ़ुट घेरे का चढ़ा है, यह मंदिर बौधमती देहगोप की तरह अन्दर से ठोस है, और दर्वाज़ा उस में कहीं नहीं ॥

स्याम

यह मुल्क जिसको बर्म्हा के आदमी स्यान और शान पुकारते हैं १० अंश से १९ अंश उत्तर अक्षांस और ९९ से १०५ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। हदें उसकी उत्तर और पश्चिम तरफ़ बर्म्हा, दक्षिण तरफ़ स्यामकी खाड़ी और पूर्वतरफ़ कम्बोज से मिलीं हैं। प्राय ६५० मील लंबा और प्राय ३६० मील चौड़ा। विस्तार १५५००० मील मुरब्बा। आबादी फ़ी मील मुरब्बा १९ आदमी के हिसाब से २९४५००० आदमी की। यह मुल्क दो पहाड़ों के दर्मियान एक बड़ा मैदान है, और उसके बीच में मीनम नदी बहती है। बरसात में अकसर जगह दलदल होजाने के बाइस आबहवा वहां की खराब रहती है,परन्तु ज़मीन उपजाऊ जो जो चीज़ें बंगाले में पैदा होती हैं वे सब यहां भी हो सकती हैं, बरन चावल तो इस इफ़रातसे शायद सारी दुनियां में कहीं पैदा न होता होवेगा, सिवाय इस के इलायची दारचीनी तेजपात कालीमिर्च और अगर भी बहुत होता है। मेवों में मंगोस्तीन आम से भी अधिक सुस्वाद है, इस से बढ़कर दुनियां में कोई मेवा अच्छा नहीं होता। गीदड़ और खरगोश का उस मुल्क में अभाव है। खान से वहां हीरा नीलम माणक यशम लोहा रांगा सीसा तांबा और सुरमा निकलता है, और नदियों का

रेत धोने से सोना भी मिलता है, चुम्बुकका वहां एक पहाड़ है। राजधानी इस मुल्क की बंकाक है, वह शहर १३ अंश ४० कला उत्तर अक्षांस और १०१ अंश १० कला पूर्व देशांतर में मीनम नदी के दोनों कनारोंपर बसा है। बाज़ार वहां का बिलकुल पानी के ऊपर है, बांस के बेड़े बनाकर उन्हीं पर दूकानदार रहते हैं, और अपना माल बेचते हैं, बरन मकान भी जो लोग नदी के तीर बनाते हैं तो ज़मीन से बांस और शहतीरें गाड़कर इतना ऊंचा रखते हैं कि बरसात में दर्या चढ़ने से डूब न जावे, मकान सब काठ के होते हैं, और उन में जाने के वास्ते सीढ़ी ज़रूर चाहिये। उस शहर में सड़क बिलकुल नहीं है, लोग घोड़े गाड़ियों की बदल एक एक छोटी सी नाव अपने घरों में बंधी रखते हैं, उसी से सब काम निकल जाते हैं। बस्ती इस शहर की प्राय ४०००० आदमी के है। नामी मन्दिर इस शहर का दो सौ फ़ुट ऊंचा होवेगा। चाल चलन और मज़हब इस मुल्कवालों का बर्म्हा के आदमियों से बिलकुल मिलता है। नाख़ून ये लोग बढ़ने देते हैं तराशते नहीं, और बैद उनके यदि बीमार को आराम न हो तो उस से कुछ भी नहीं लेते। ज़ुबान इनकी ज़ुदी है, और गाने बजाने का बड़ा शौक़ रखते हैं। ये लोग तिजारत के वास्ते अपने देश से बाहर नहीं जाते, ग़ैर मुल्क के आदमी बाहर से भी माल लाते हैं और वहां का भी माल बाहर लेजाते हैं। राजा ख़ुद तिजारत करता है, बिना उसकी आज्ञा के रांगा हाथी दांत सीसा इत्यादि का कोई भी सौदा नहीं करसकता। वहां के आदमी सोने के तबक़ ख़ूब बनाते हैं, और बुरी भली बारूत भी अपने काम लाइक़ तयार कर लेते हैं, यहां का राजा लड़ाई के वास्ते अपनी रअय्यत को उसी तरह जमा करसकता है कि जैसे बर्म्हा में दस्तूर है॥

जिसे वहां के आदमी मलयदेश कहते हैं १ अंश २२ कला उत्तर अक्षांस से लेकर ९ अंश तक चला गया है। वह तीन तरफ़ समुद्र से घिरा है, और चौथी तरफ़ अर्थात् उत्तर को उसका नाम डमरू-मध्य बर्म्हा के मुल्क से मिलाता है। लम्बान उसकी माय ८०० मील और चौड़ान माय १२० मील होवेगी। इस मुल्क में छोटे छोटे कई राज हैं। लौंग जायफल कालीमिर्च चन्दन सुपारी और चावल वहां इफ़रात से होता है, मंगोस्तीन मेवों का राजा है। भेड़ी बैल और घोड़े कम होते हैं, पर भैंस बहुत। रांगा खान से निकलता है, और नदियों का बालू धोने से सोना भी मिलता है। आब हवा मोतदिल, और ख़ास मलाका के ज़िले की तो बहुत ही अच्छी और निरोगी है, अकसर साहिब लोग बीमारी में वहां हवा खाने के वास्ते जाते हैं, पर धरती उपज़ाऊ नहीं है। आदमी वहां के मलाई कहलाते हैं, और लूट मार में बड़े चालाक और दिलेर हैं, समुद्र में जाकर जहाज़ों को लूट लेते हैं, सिवाय इसके कीना भी दिल में बड़ा रखते हैं, और जब कभी घात पाते हैं दुश्मन से बिना बदला लिये नहीं छोड़ते, परदेसियों के साथ अकसर दग़ाबाज़ी कर जाते हैं, पर सभी एक से नहीं हैं, कितने ही उनमें सच्चे और मिलनसार भी होते हैं। पहाड़ों के दर्मियान एक क़ौम जंगली इस तरह की बस्ती है, कि उसकी सूरत हब्शियों से मिलती है, रंग काला होठ मोटे नाक चिपटी बाल घूंघरवाले मगर क़दमें बहुती नाटे डेढ़ गज़ से अधिक ऊंचे नहीं होते नंगधिड़ंग जंगलों में फिरा करते हैं, और फल फूल कन्द मूल अथवा शिकार से अपना पेट भरते हैं। इस मुल्क के आदमी जूआ बहुत खेलते हैं, विशेष करके मुर्ग़ की लड़ाई में, यहां तक कि अपने जोरू लड़के और बदन के कपड़े तक हार देते हैं। अफ़यून बहुत

खाते हैं, और बाज़े वक़्त उसके नशे में दीवाने बनकर बड़ी खराबियां करते हैं। हाकिम वहां का सुलतान कहलाता है, क़ौम का सुन्नी मुसलमान है। सन् १२७६ तक वहां के राजा हिन्दू थे। ज़ुबान में उनकी बहुत से शब्द अरबी और संस्कृत के मिले हुए हैं, और हर्फ़ उनके अरबी से मुवाफ़िक़ हैं। जहाज़ और किश्तियां वे लोग बहुत अच्छी बनाते हैं। लौंग जायफल काली मिर्च मोम बेंत साग़ू रांगा हाथी दांत वहां से दिसावरों को जाता है, और अफ़यून रेशम इत्यादि वहां बाहर से आता है। राजधानी वहां की मलाका २ अंश १४ कला उत्तर अक्षांस और १०२ अंश १२ कला पूर्व देशांतर में समुद्र के तट पर बसा है, यह शहर ख़ास मलाका के ज़िले के साथ सरकार के क़बज़े में है। बिस्तार उस ज़िलेका प्राय ८०० मील मुरब्बा होवेगा सन् १५१० में उसे पुर्टगालवालों ने मुसल्मानों से लिया था, सन् १६४० में उसे डच लोगोंने फ़तह किया, अब सन् १७९५ से अंगरेज़ों के क़बज़े में है। मलाका के अग्निकोन १२० मील के तफ़ावत से सिंहपुर और वायुकोन २४० मील के तफ़ावत से पूलोपिनांग ये दोनों टापू भी सरकार के दख़ल में और मलाका की गवर्नरी के ताबे हैं। सिंहपुर २६ मील और पिनांग १५ मील लंबा है। सिंहपुर की आब हवा बहुत अच्छी है। अंगरेज़ पिनांग को वेल्स के शाहज़ादे के नाम से पुकारते हैं, और हिन्दुस्तानी इन टापुओं को कालापानी कहते हैं, भारी गुनहगार बंधुए क़ैद रहने के वास्ते इन टापुओं में भेजे जाते हैं। आब हवा अच्छी होने के कारण कितनेही साहिब लोग वहां जा रहे हैं, और बहुतेरी कोठियां और बाग़ और बँगले बन गये हैं॥

———

वहां के बादशाह के क़बजे तीन मुल्क हैं कोचीन, टांकिंग अथवा येनम, और कम्बोज जिसे अंगरेज़ कम्बोडिया कहते हैं। कम्बोज ८ अंश से १५ अंश उत्तर अक्षांस तक, औ कोचीन ८ अंश से १८ उत्तर अक्षांस तक, और टांकिंग १८ अंश से २३ अंश उत्तर अक्षांस तक, १०५ और १०९ अंश पूर्व देशांतर के बीच चला गया है। उत्तर तरफ़ उसके चीन है, दक्षिण और पूर्व समुद्र और, पश्चिम को उसकी सरहद स्याम ब्रह्मा और चीन से मिली है। बिस्तार इन मुल्कों का प्राय डेढ़ लाख मील मुरब्बा है, और आबादी फ़ी मील मुरब्बा ९३ आदमी के हिसाब से १३९५०००० आदमी की। इस विलायत में मैदान और पहाड़ दोनों हैं। नदी सब में बड़ी कम्बोज की है, चीन के मुल्क से निकलकर सात सौ कोस बहने के बाद समुद्र में गिरती है। पैदाइश वहां भी उन्हीं मुल्कों की सी होती है कि जिनका बयान ऊपर लिखागया। बैल वहां बहुत कम, हल भैंसों से चलाते हैं, भेड़ा और गधा बिलकुल नहीं होता, हाथी बहुत बड़े होते हैं। खान से लोहा चांदी और सोना निकलता है। धरती उपजाऊ है, साल में दो फ़सलें धान की पैदा होती हैं। ह्यू वहां के बादशाह की दारुस्सलतनत एक नदीके किनारेपर बसाहै, और क़िले के अंदर बहुत खासा बादशाही महल और एक मंदिर बना है। कहते हैं कि वह क़िला बहुत मज़बूत है, और दो हज़ार तोपें उस पर चढ़ी हुई हैं। आदमी वहां के नाटे और गठीले और चालाक और मज़बूत होते हैं, पायजामा पगड़ी और आधी जांघ तक के लंबी आसतीनवाले कुरते पहिनते हैं, बाल लंबे और जूड़ेके तौर पर बँधे रहते हैं, औरतें सिरपर टोपी रखती हैं, जूता कोई नहीं पहिनता, मिहनतका काम अकसर औरतों के हिस्से में आता है, यहां तक कि बेचारियां हल जोतती हैं और नाव

खेती हैं, मिस्सी से दांत काले और पान से होठ लाल मर्द और औरत दोनों रखते हैं, हाथी का गोश्त ये लोग बहुत मज़े से खाते हैं। ज़ुबान वहां की चीन से मिलती है, और मज़हब बुध का मानते हैं। जब किसी का कोई मरता है तो उसे दो बरस तक संदूक़ में बंदकरके घर में रख छोड़ते हैं, और नित्य उसके साम्हने गाना बजाना हुआ करता है भोग भी चढ़ाते हैं, और लोग भी उसके दर्शनों को आते हैं, फिर दो बरस बाद उसको बड़ी धूमधाम से ज़मीन में गाड़ते हैं। कारीगर वहां के चीनियों की तरह बहुत चालाक और होशियार हैं, विशेषकरके रेशम तयार करने में। आमदनी वहां बनात और छींट शोरा गंधक सीसा चाय रेशम अफ़यून और गर्म मसालों की है, और निकास वहां से रेशम घासके कपड़े सीप की चीजें चटाई हाथी दांत कचकड़ा आबनूस दारचीना इत्यादि का होता है। फ़ौज वहांके बादशाह की माय पचास हज़ार होवेगी, सिवाय इसके जब काम पड़े तो वह अपने मुल्क के सारे आदमी अठारह बरस से साठ बरस तक की उमरके बेगार में चाहे जिस ख़िदमत पर भेजसकता है, और आदमी वहां के बादशाह की आज्ञा बिना अपने मुल्क से कहीं बाहर नहीं जा सकते। किसी ज़माने में यह मुल्क चीन के बादशाह के ताबे था॥

चीन

साबिक़ में इस मुल्क के दर्मियान ज़िले ज़िले के जुदाजुदा राजा थे, और हमेशः आपस में लड़ा भिड़ा करते पहला बादशाह जिसने उन सब छोटे छोटे राजाओं को अपने बस में करलिया चीन हुअङ्ती था कि जिसको माय दो हज़ार बरस गुज़रते हैं, इस बादशाह के संतान चीनबंशी कहलाये, और उसी बंश से वह मुल्क चीन कहलाया।

चीन
ए शि या ई रू स
पेकिन
फार्मोसा
चीनकी खाड़ी

वहांवालों के उच्चारण में यह शब्द त्सिन है कि जिसको अरबवाले सीन बोलते हैं, और अंगरेजी में चायना कहते हैं। यह मुल्क २१ अंश से ५५ अंश उत्तर अक्षांस तक और ७० अंश से १४२ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। उसके पश्चिम तरफ़ तूरान, पूर्व तरफ़ पासिफ़िक समुद्र, उत्तर तरफ़ एशियाई रूस, और दक्षिण तरफ़ हिमालय का पहाड़ बम्र्हा और कोचीन का मुल्क है। लंबान उसकी पूर्व से पश्चिम को माय ४७०० मील और चौड़ान उत्तर से दक्षिण को माय २००० मील है, और बिस्तार कुछ न्यूनाधिक ५०००००० मील मुरब्बा होवेगा। यद्यपि वस्तुतः इस बिस्तार के दर्मियान चार मुल्क बसते हैं, अर्थात् असली चीन तिब्बत तातार जिसे महाचीन भी कहते हैं और कोरिया का मायद्वीप, लेकिन एक बादशाह के आधीन रहने के कारण अब यह सब एक ही नाम से अर्थात् चीन का मुल्क पुकारा जाता है। असली चीन उत्तर तरफ़ तातार से मिला है, और उस के पूर्व और दक्षिण पासिफ़िक समुद्र की खाड़ियां हैं, नाम उन का पीली नीली और चीन की खाड़ी है, और दक्षिण कोचीन और बम्र्हा से, और पश्चिम बम्र्हा और तिब्बत से घिरा है, और २१ से ४१ अंश उत्तर अक्षांस तक और ९७ अंश ४२ कला से १२२ अंश ५३ कला पूर्व देशान्तर तक चला गया है। उस में १८ सूबे हैं, बहुतेरे उनमें सूबै बंगाला से भी बड़े और अधिक आबाद हैं। तिब्बत हिमालय के उत्तर है, उसी पहाड़ की तराई से ८१ अंश से लेकर १०० अंश पूर्व देशांतर तक और २८ अंश से ३५ अंश उत्तर अक्षांस तक चला गया है, वह लंबा पूर्व से पश्चिम माय १३००० मील और चौड़ा उत्तर से दक्षिण ४५० मील है। तातार जो ३५ अंश से ५५ अंश उत्तर अक्षांस तक और ७२ अंश से १४२ अंश पूर्व देशान्तर तक चला

गया है प्राय २५०० मील लम्बा और १००० मील चौड़ा होवेगा, उत्तर तरफ़ अलताई का पहाड़ उसको रूस से जुदा करता है, दक्षिण तरफ़ तिब्बत है, पश्चिम में तूरान पड़ा है, और पूर्व को असली चीन और समुद्र से घिरा है। कोरिया का प्रायद्वीप जो असली चीन के ईशानकोन की तरफ़ ३४ और ४३ उत्तर अक्षांस और १२४ और १३० पूर्व देशान्तर के बीच में पड़ा है प्राय ७००० मील लम्बा और २०० मील चौड़ा होवेगा, और तीन तरफ़ समुद्र से और चौथे अर्थात् उत्तर की तरफ़ तातार से घिरा है। सिवाय इन मुल्कों के बहुत से टापू भी पासही पासिफ़िक समुद्र में फ़ार्मोसा और लीऊ कीयू इत्यादि वहां के बादशाह के दखल में हैं, यहां तक कि उसकी रऐयत उसको खुशामद की राह से दस हज़ार टापुओं का मालिक पुकारती है। यह मुल्क दुनियां के सारे मुल्कों से अधिक आबाद है, तीस करोड़ आदमी उसमें बस्ते हैं कि जो दुनियां की बस्ती का प्राय तीसरा हिस्सा होता है, और फ़ी मील मुरब्बा ६० आदमी पड़ते हैं, लेकिन इन तीस करोड़ से तिब्बत तातार और कोरिया में पूरे करोड़ भी नहीं बस्ते और असली चीन की आबादी फ़ी मील मुरब्बा २७७ आदमी का अनुमान करते हैं। यह राज इतना पुराना है कि उसकी इब्तिदा से कोई भी पक्की खबर नहीं देता, अंगरेज़ लोग खयाल करते हैं कि तूफ़ान से थोड़े ही दिनों बाद यह सल्तनत खड़ी हुई, हिन्दू के शास्त्रों में भी इस मुल्क का चरचा बहुत जगह लिखा है, और दूसरी क़ौमों की पुरानी किताबों में भी जहां कहीं उसका बयान है बड़ाई और मान ही के साथ किया है। इस देश के आदमी खेती करना रेशम बुनना प्राचीन समय से जानते हैं, चुम्बक का गुण उन्हीं लोगों ने प्रकट किया। विद्या अभ्यास में वे लोग बहुत दिल देते हैं, गांव गांव में

बादशाह की तरफ़ से इस्कूल मुक़र्रर हैं, उन में लिखना पढ़ना हिसाब और नीति शास्त्र सिखलाया जाता है, और लड़कों को आठ बरस की उमर होतेहीं उनके मा बाप वहां भेज देते हैं, उस मुल्क में ग़रीब और अमीर लिखना पढ़ना सब जानते हैं। इक़सीर और कीमियागरी इस वाहियात की बुनियाद भी उसी मुल्क से उठी बतलाते हैं। उत्तर और पश्चिम तरफ़ यह मुल्क कोहिस्तान है, बाक़ी सब जगह बराबर मैदान, और नदी नाले और नहरों के पानी से बिलकुल सिंचा हुआ। कोरिया के मध्य में पहाड़ों की एक श्रेणी है, दक्षिण भाग तो उपजाऊ और आबाद है, पर उत्तर वह प्रायद्वीप बिलकुल ऊसर और वीरान है। तातार की धरती आस पास की विलायतों के बनिस्बत बहुत बलन्द है, और मैदान उसके दर्मियान बहुत बड़े बड़े। शामू का पटपर जिसे कोबी अथवा गोवी भी कहते हैं प्राय १४०० मील लम्बा है, और उस में अक्सर काला रेगिस्तान है। तातार की धरती बहुधा वीरान और पटपर पानी से ख़ाली है। ज़मीन तिब्बत की भी तातार की तरह बलन्द है, पर इस में मैदान कम और कोहिस्तान बहुत, और दरख़्तों से दोनों ख़ाली, इस मुल्क में आबादी बहुत कम है, और ग़ल्ला भी थोड़ा पैदा होता है, कैलास का पहाड़, जिसे हिन्दू लोग महादेव के रहने की जगह बतलाते हैं, हिमालय का टुकड़ा तिब्बत के मुल्क में समुद्र से तीस हज़ार फ़ुट ऊंचा है, वहां के पहाड़ अकसर बहुत ऊंचे और बारहों महीने बर्फ़ से ढके रहते हैं। चीन और बर्म्हा के बीच में हिमालय की शाखा समुद्र तक चली गई है, ज्यों ज्यों पूर्व को बढ़ी नीची होती गई। नदियां चीन में बहुत हैं, लेकिन हुअंगहो और याङ्क्सीकायङ्गमशहूर और बड़े दर्या हैं। हुअंगहो तो तिब्बत और तातार के बीच

राथिको पहाड़ से निकलकर २६०० मील बहने के बाद समुद्रमें गिरती है, और याङ्त्सकायङ तिब्बत से निकलकर २२०० मील बहने के बाद नान्किङ शहर से कुछ दूर आगे बढ़ कर हुअंगहो से मिल जाती है। इन में बहुतेरी छोटी छोटी नदियों का पानी आताहै और इन से कितनी ही नहरें काटी गई हैं, कि जिनसे खेतियां भी सींची जाती हैं, और तरी का रास्ता भी किश्तियों के आने जाने के वास्ते खुला रहताहै। बादशाही नहर कांटनके पाससे पेकिन तक प्राय आठ सौ मील लंबी होयगी, चौड़ी एक सौ फुट है, और गहरी ६॥ फुट। आमुर नदी जिसे साघालियन भी कहते हैं २००० मील तातार में बहकर साघालियन के टापू के साम्हने समुद्र से मिलगई है। झीलें चीनके मुल्क में बहुत सुथरी सुहावनी निर्मल नीर से भरी हुई रम्य और मनोहर स्थानों में हैं, विशेष करके पयंगकी झील, कि जिसके चारों तरफ़ पहाड़ और जंगल पड़ा है। तातार में नोरजैसां झील १५० मील लंबी और ४० मील चौड़ी, और पलकसी झील २०० मील लंबी और १०० मील चौड़ी है। तिब्बत में कैलास और हिमालय के बीच मानसरोवर और रावणह्रद जिन्हें वहांवाले मापाा अथवा मानतलाई और राकसताल कहते हैं दो झील हैं, मानसरोवर प्राय १५ मील लंबा और ११ मील चौड़ा है और वैदिक और बौध दोनों मजहबवालों का तीर्थ है। धरती चीन की उपजाऊ है, वहां के आदमी खेतों के सींचने और खात से दुरुस्त करने में बड़ी मिहनत करते हैं। चावल इफ़रात से पैदा होता है, और बहुधा उस मुल्क के आदमियों की वही खुराक़ है फ़सल इस की साल में दो और कहीं कहीं तीन भी पैदा करलेते हैं, गेहूं इत्यादि अन्न और तरह बतरह के फल फूल भी अच्छे पैदा होते हैं, पर सब से जियादः

क़ीमती चीज ख़ास उस मुल्क की पैदाइशों में चाय है। दो प्रकार के पेड़ वहां ऐसे पैदा होते हैं, कि उन में से दो चीजें मोम और चर्बी की तरह निकलती हैं, और बत्ती बनाने के काम आती हैं। कपूर के पेड़ भी वहां बहुत होते हैं, काट काट कर घास के साथ लोहे के देगों में उनका मुंह बंद करके आग पर चढ़ा देते हैं। कुछ देर में काफ़ूर उन दरख्तों के पत्ते और टहनियों से जुदा होकर घास में जम जाता है (१) जंगलों में चीन के हाथी गैंड़े अरने शेर जंगली बैल और हिरन इत्यादि की बहुतायत से हैं, और घरेलू जानवरों में घोड़े कुत्ते सूवर मुर्गी और बतक़ इत्यादि गिने जाते हैं। कस्तूरिये हिरन याक अर्थात् सुरागाय भेड़ी शाल की बकरी और जंगली गधे तिब्बत में होते हैं, और गोरखर तातार में। खान से चीन में सोना चांदी तांबा लोहा पारा और कई प्रकार के जवाहिर निकलते हैं। कोरिया में सोने चांदी दोनों की खान है। और समुद्र से मोती निकालते हैं। तिब्बत में नमक सुहागा और शंगर्फ़ की खान है, और सोना भी कई जगहों से निकलता है। उत्तराखंड इस मुल्क का सर्द है, पर आब हवा दक्षिण की भी जो गर्मसेर है अच्छी बतलाते हैं। तातार के दर्मियान गर्मी के दिनों में शिद्दत से गर्मी और जाड़ों में सख्त जाड़ा पड़ता है। तिब्बत में जाड़ा हद्द से ज़ियादः पड़ता है, और हवा वहां की निहायत खुश्क है। चीन की दारुस्सल्तनत का नाम पेकिन अथवा पेचिन है, वह शहर ४० अंश उत्तर अक्षांस और ११७ अंश

---

(१) सुमित्रा और बर्मिओं के टापुओं में दरख्तों के पिड़ों के अंदर गुदे की जगह कपूर रहता है, चीर कर निकाल लेते हैं, आग पर नहीं चढ़ाना पड़ता।

पूर्व देशांतर में पच्चीस मील के घेरेका बसता है, और उसकी शहर पनाह तीस फुट ऊंची है, दरवाजे उसमें नौ बहुत खूबसूरत हैं, और उसके अंदर बादशाही महल बड़े शानदार बने हैं, रास्ते चौड़े और सीधे हैं, और नहर उनके दर्मियान से बहती है। लार्डमेकार्टनी साहिब इस शहरमें तीस लाख आदमीकी आबादी अनुमान करते हैं। चोरी न होने के वास्ते वहां हुक्महै कि शाम बाद बिना रौशनी लिये कोई घर से बाहर न निकले। शहर के बीचोंबीच एक तालाब कोस एक लम्बा और कुछ कम चौड़ा बहुत उमदा बना है, उसके चारों तरफ़ बेदमजनू के दरख्त लगे हैं, और बीच में एक टापू है, उसपर एक मं-दिर बना है, और पुल उस तालाब के ऊपर संगमर्मर का बांधा है। तातार में यार्क़न्द पेकिन से २४०० मील पश्चिम और काशग़र यार्क़न्द से १५० मील वायुकोन को मशहूर है। तिब्बत का बड़ा शहर लासा पेकिन से १८०० मील नैर्ऋतकोन है, लामा गुरु उसी जगह रहता है, वह शहर माय चार मील लम्बा और एक मील चौड़ा है। शहर के बीच में एक बहुत बड़ा मन्दिर बना है, उस पर तमाम सोने का काम हुआ है। आदमी की बनाई हुई तअज्जुब की चीज़ों से इस मुल्क में एक बहुत बड़ी दीवार है, यह दीवार असली चीनकी उत्तर हद्द पर है, पन्दरह सौ मील अर्थात् साढ़े सात सौ कोस से अधिक लंबी और बीस फ़ुटसे लेकर तीस फ़ुट तक ऊंची है और चौड़ी भी इतनी है कि उसके ऊपर छ सवार बराबर रकाबसे रकाब मिलाकर चल सकते हैं, और सौ सौ गज़ के तफ़ावत पर बुर्ज रखे हैं, जहां पहाड़ और दर्या दर्मियान में आगये हैं वहां भी इस दी-वारको उन पर पुल डालकर लेगये हैं, अर्थात् खड और नदियोंपर पुल बनाया है और फिर पुलके ऊपर दीवार उठाई है। चीनी का

मीनार यङ्गतुसीकायङ के दहने कनारे नान्‌किङ् के शहर में अष्टकोन दो सौ फुट ऊंचा बना है, उसका व्यास अर्थात् दल ४० फुट होगा और नौ उस में मरातिब हैं, ऊपर चढ़ने के लिये ८८४ सीढ़ियां लगी हैं। वहांवाले उस की लागत अस्सी लाख बतलाते हैं (१) आदमी असली चीन के खुदपसंद कायर कपटी हासिद् शक्की कीनःवर चालाक मिहनती मुतहम्मिल हलीम और खुश अख़लाक़ होते हैं। चिहरे उन के ज़र्द पेशानियां बलन्द आंखें छोटी और बाल काले। औरतों के पैर के पंजों का छोटा होना इस मुल्क की ख़ास और मशहूर बातों से है, जितना जिस औरत के पैर का पंजा छोटा होता है उतनी ही वह खूबसूरत गिनी जाती है, यहां तक कि उस मुल्क में ज़नाने जूते चार इंच से अधिक लम्बे नहीं बनते, यह रस्म वहां हज़ार बरस से निकली है। कहते हैं कि एक दफ़ा औरतों ने मिलकर बादशाहपर हमला किया था, तभी से यह आईन जारी हुआ, छोटी ही उमर में उन के पैर के पंजे ऐसे कसकर पट्टियों से बांध रखते हैं; कि फिर बड़े होने पर वे बढ़ने नहीं पाते, और यही कारन है कि यद्यपि वहां की औरतें पर्दा नहीं करतीं, जाली झरोखों में मुँह खोले बैठी रहती हैं, पर तौ भी घर से बाहर कम नज़र पड़ती हैं, क्योंकि पंजा पैर का छोटा रहने से चलना फिरना उन को बहुत कठिन है। लड़कियों को वहांवाले भी रजपूतों की तरह हलाक करडालते हैं, पर बहुत कम। मज़हब चीनियों का बौध है, गोश्त चीन के बादशाह की अमलदारी में सब खाते हैं। देवी देवतों की वहां हिन्दुस्तान से भी ज़ियादती है ऐसा पहाड़ दून जंगल

---

(१) सुनते हैं कि बदमाशों ने बलवा करके अब इस मीनार को बिलकुल ढाह डाला॥

जिला घर और दूकान कोई नहीं कि जिसका एक जुदा देवता मुक़र्रर न हो बरन गरजना चमकना बरसना आग अन्न, दौलत जन्म मृत्यु सीतला नदी झील चिड़ियें मछली जानवर इत्यादि के भी अलग अलग देवता हैं, एक पादरी बढ़ावे की राह से कहता है कि चीनियों के देवता दर्या के बालू से भी अधिक हैं। वे लोग ज्योतिष और यंत्र मंत्र में भी बड़ा निश्चय रखते हैं, बौध मत के अनुसार पुनर्जन्म का होना सत्य मानते हैं, और हिंसा करना बहुत बुरा जानते हैं। उस मत में नीचे लिखे हुए पांच महावाक्य हैं। हिंसा मत करो १। चोरी मत करो २। झूठ मत बोलो ३। शराब मत पीयो ४। और जो साधु संत बनो तो बिवाह न करो ५। मुसल्मान भी उस अमल्दारी में बहुत रहते हैं। तातार के आदमी खूंख़ार लड़ाक आज़ादमनिश और शिकार दोस्त हैं, घोड़े बहुत रखते हैं, उन का गोश्त भी खाते हैं, और घोड़ियों का दूध बड़े स्वाद के साथ पीते हैं। वे गांव और शहरों में नहीं बस्ते जहां अच्छी चराई और नज़दीक पानी पाते हैं उसी मुक़ाम पर कुछ दिनों के वास्ते अपनी भेड़ी बकरी और शकट लेजाकर ख़ेमे खड़े कर देते हैं, कोई उन में से अपने मुर्दों को आग में जलाता है कोई मिट्टी में गाड़ता है कोई कुत्तों को खिला देता है, और कोई काट काट कर आपही खा जाता है। तिब्बत के आदमी मिहनती और संतोषी हैं, लेकिन आदमीयत की बूबास कम रखते हैं, वे हमेश: गर्म कपड़े पहनते हैं, गर्मी में केवल ऊनी और जाड़ों में पोस्तीन समेत। चीनके आदमी तीरंदाज़ी में उस्ताद हैं, कुर्सियों पर बैठते हैं। और मेज़ पर खाना खाते हैं, कांटे की जगह दो पतली पतली सलाइयां हाथीदांत अथवा सोने चांदी की रखते हैं, उसी से उठा उठाकर खाना खाते हैं, हाथ नहीं लगाते। खाना बहुत क़िस्म का पकाते हैं, रीछ के पंजे, घोड़े के सुम,

चौपायों के खुर, और चिड़ियों के घोसलों तक उन के शोरवे में काम आते हैं, बिरली चीज़ दुनियां में ऐसी होवेगी कि जिसको चीन के आदमी नहीं खाते। अमीरों के मकान की दीवारें साटिन इत्यादि क़ीमती कपड़ों से मढ़ी रहती हैं, और उन पर नीति के वचन बहुत खूबसूरती के साथ लिखे रहते हैं! औरतें सिर के ऊपर बालों का जूड़ा बांध कर उन में फूल लगाती हैं। यद्यपि वहां बिधवा औरतों को दूसरी शादी करने का इख़्तियार है, लेकिन तौ भी न करना बड़ी इज्ज़तकी बातहै। मसहरी में वहां के ग़रीब ज़मींदारभी सोते हैं। चाय और तंबाकू वे लोग बहुत पीते हैं, यहां तक कि हर शख़्स एक ज़रदोज़ी बटुआ तंबाकू से भराहुआ कमर में रखताहै, बरन औरतें भी तंबाकू पीती हैं। पोशाक वहांवालों की लंबी आस्तीन वाला कुरता पाजामा पोस्तीन और चुग़ा है, लेकिन टोपियां मरदों की इतनी चौड़ी होती हैं कि मेंह पानी में छतरी की कुछ ऐसी इहतियात नहीं पड़ती। पंखी एक छोटीसी सदा सब के हाथ में रहती है, बांएं हाथ के नाख़ून वहां के आदमी नहीं तराशते बढ़ने देते हैं, कि जिस में लोग उनको मिहनती मज़-दूर न समझें, पतंग उड़ाने का बड़ा शौक़ रखते हैं, लाखों आदमी वहां अपने घरबार समेत किश्तियों हीं पर गुज़ारा करते हैं, और रात दिन जल ही में डेरा रखते हैं, एक क़िस्म की चिड़िया को ऐसा साधते हैं कि वह पानी में से मछली पकड़ कर उन्हें ला देती है, इन चिड़ियों के गले में छल्ले पड़े रहते हैं जिसमें मछलियों को निगलने न पावें, जब हज़ारों चिड़ियें इस तरह की एक बारगी छु-टती हैं तो देखते ही देखते शिकारी के साम्हने मछलियों का ढेर लग जाता है। सती अगले ज़माने में चीन और तातार के दरमि-यान होती थीं, अब यह ख़राब रसम बहुत दिनों से मौक़ूफ़ हो गई।

पीला रंग वहां के बादशाह का है, अर्थात् इस रंग का कपड़ा सिवाय बादशाह के और कोई नहीं पहिन्ने पाता, जिस किसी के पास इस रंग का कपड़ा दिखलाई देवे उसको जरूर शहज़ादों से खयाल करना चाहिये। चीनी लोग अपने मुरदों को जमीन पर रख के ऊपर से क़बर बना देते हैं, अकसर वहां के आदमी अपने बुजुर्गों की लाश को मसाले लगाकर मुद्दत तक संदूक के दरमियान घर में रख छोड़ते हैं, जो हो वहां के आदमी अपने पुरखा और पित्रों को ल्क़्त मानते हैं, और मुद्दतों तक याद रखते हैं। इल्म की क़दर होने के बाइस वहां के आदमी पढ़ने लिखने में बड़ी मिहनत करते हैं, भिसकानर लिखती है कि एक ग़रीब का लड़का जो दिन भर अपने मा बाप का पेट भरने के वास्ते उद्यम करता था और इतना भी मक़दूर न रखता था कि रात को चिराग़ जलाने के लिये तेल बाज़ार से ख़रीद लावे तो वह क्या काम करता कि जंगल से जुगनू पकड़ लाता और उनको बारीक कपड़े में रखकर उन्हीं की रौशनी से किताब पढ़ा करता, और इसी तरह पढ़ते पढ़ते कुछ दिनों में ऐसा फ़ाज़िल हुआ कि बादशाह ने उसको अपना वज़ीर बनाया, निदान वहां विद्या का बड़ा प्रचार है, बिरला ऐसा होगा जो लिखना पढ़ना न जाने। जब से तातारियों ने चीन को फ़तह किया वहांवाले उन के हुक्म बमूजिब सारे सिर के बाल मुड़वाकर केवल एक पतली सी पैर तक लंबी चोटी रखते हैं। चीन में सिपाही की बनिस्बत मुंशी की इज्ज़त बहुत जियादः है, और वहांवाले महाजन और सौदागर की बनिस्बत किसान और जमींदारों की बड़ी क़दर करते हैं, यहां तक कि साल में एक दिन खुद बादशाह अपने हाथ से हल जोतताहै, और उस दिन को बड़ा त्योहार मानते हैं। जब बादशाह मरजाता

है तो सारे मुल्क के आदमी सौ दिन तक मातम रखते हैं, और कोई काम खुशी का नहीं करते। वहां के हाकिम जब बाहर निकलते हैं, उन के जलेब में जल्लाद और कोड़े बर्दार और जंजीरवाले आगे चलते हैं, यदि रास्ते में किसीको कुछ बुरा काम करते हुए पाते हैं, तो उसी दम और उसी मुक़ाम पर उसे सज़ा दे देते हैं। रुपये अशरफ़ियों के बदल वहां चांदी सोने के कुर्स (१) और छेदवाले (२) तांबे के पैसे चलते हैं। तिब्बतवालों की ज़ुबान वही है जिसे भोटिया बोली कहते हैं, पर शास्त्र उन के बहुधा प्राकृत भाषा में लिखे हैं। ये लोग अपनी विद्याकी जड़ काशी बतलाते हैं। चीनियों की भाषा में भूगोल खगोल बैदक काव्य अलंकार इत्यादि सारी विद्या मौजूद हैं, और तवारीख़ अर्थात् इतिहास तो उनके यहां सारी क़ौमो से बढ़कर है। शब्द उन के समस्त एकाक्षरी हैं, अर्थात् प्रत्येक शब्द के वास्ते एक जुदा अक्षर मौजूद है, और इसी कारण उन की बर्णमाला में ८०००० अक्षर गिने जाते हैं, इन में २१४ तो असली हैं, और बाक़ी संध्यक्षर अथवा युक्ताक्षर हैं, और इसी वास्ते ग़ैर मुल्कवालों को उन की ज़ुबान का लिखना पढ़ना सीखना बहुत मुश्किल है। वहांवालों के लिये गांव गांव में इस्कूल मुक़र्रर हैं, छ बरस धर्मशास्त्र कंठ करनेमें जाता है, और छ बरस में व्याकरण काव्य अलंकार और इबारत लिखना

---

(१) कुर्स सौ सौ पचास पचास तोले के और इस से न्यूनाधिक भी होते हैं सूरत उनकी नाव की तरह॥

(२) पैसों के बीच में छेद रहता है और उनको एक रस्सी में माला की तरह पिरो रखते हैं, जिनको जितने पैसे देने होते हैं उतने पैसों पर गिरह देकर रस्सी काट देते हैं॥

सीखते हैं, निदान बारह बरस बाद वे परीक्षा देने के योग्य होते हैं और हर ज़िले में तीन साल के बीच दो बार परीक्षा ली जाती है, जो विद्यार्थी इस पहली परीक्षा में पूरे उतरते हैं वे उस सूबे के जिस में वह ज़िला होता है हाकिम के पास दूसरी परीक्षा के लिये भेजे जाते हैं, और जो विद्यार्थी उस हाकिम की परीक्षा में जचते हैं उन को वह एक एक सार्टीफ़िकट देकर बड़े सूबेदार के पास भेज देता है, इस तीसरे स्थान में बड़ी कड़ी परीक्षा होती है, पहले सारे विद्यार्थि- यों की तलाशी लेलेते हैं कि जिस में उन के पास कोई लिखा हुआ काग़ज़ या किताब न रहे, और फिर एक एक को जुदा जुदा कोठरी में बंद करदेते हैं, वहां वे प्रश्नों का उत्तर लिखकर दूसरों के साथ मिल न जाने के लिये उन पर चिन्ह मात्र कर देते हैं नाम लिखने की मनाही है कि जिस में परीक्षक किसी की तरफ़दारी न करे, निदान इस तीसरी परीक्षा में जो निपुण ठहरता है उसे पहले दर्जे का विद्यार्थी कहते हैं, और वह नीले रंगका कपड़ा सियाह गोट लगा हुआ पह- नता है, और अपनी टोपी पर एक चांदी की चिड़िया रखता है, चौथी परीक्षा सूबे के सदरमुक़ाम में तीसरे साल बादशाह के दीवान और उस सूबे के सारे हाकिमों के साम्हने होती है, कोठरियों पर पहरे तैनात रहते हैं, यदि प्रश्नों का उत्तर लिखने में एक अक्षर की भी भूल रहे तो परीक्षकलोग उस काग़ज़ को फेंक देते हैं, और उस में से विद्यार्थी का निशान काटकर दर्वाज़ेपर चिपका देते हैं, जिस में विद्यार्थी को इस बात की खबर भी पहुँच जाय और सभा के सामने लज्जित भी न होना पड़े, जो विद्यार्थी इस चौथी परीक्षा से पारहुए उन के मानो भाग्य जागे उन के नाम टिकटों पर लिखकर शहर में हर तरफ़ लटकाए जाते हैं, हाकिम उन के मा बाप और रिश्तेदारों

को बुलाकर बड़ी खातिर करते हैं, उमराव उन की दावत करते हैं, और खिलत देते हैं, फिर उन को वहांवाले क्यूजिन अर्थात् श्रेष्ठजन पुकारते हैं, और वे ऊदेरंग का कपड़ा कालीगोट लगाकर पहनते हैं, और टोपी पर सोने की चिड़िया रखते हैं, उन को सब तरह के सरकारी उहदे मिल सकते हैं, और यदि वे बुद्धि और विवेक के साथ काम करें थोड़ेही दिनों में धनवान और बड़े आदमी बन जाते हैं, पर चौथी परीक्षा के ऊपर दो दर्जे और भी रखे हैं, जो क्यूजिन लोग उन दर्जों के पाने की चाह रखते हैं उन्हें पेकिन में जाना पड़ता है, और वहां उनकी परीक्षा तीसरे साल राजधानी के बड़े पाठशाला हानलिनकालिज में ली जाती है, प्राय दसहज़ार क्यूजिन, जो परीक्षा देने के लिये आते हैं, उन में से प्राय तीन सौ पक्के ठहरते हैं, और तब उन तीन सौ की परीक्षा बादशाह के साम्हने ली जाती है, इस आखिरी परीक्षा में जो जीते वह अपने मन की मुराद को पहुंचे, डंके निशान के साथ बड़े जुलूस से शहर में घुमाते हैं, और उसी दम हानलिनकालिज में भरती होजाते हैं, वज़ीरी इत्यादि बड़े उहदे खाली होने पर उन्हीं को मिलते हैं, और इस बन्दोबस्त से गांव के कारदारों को भी सारा धर्मशास्त्र जिसके बमूजिब काम करना पड़ता है कण्ठ याद रहता है। हिक्मत और कारीगरी चीनियों की मशहूर है, यद्यपि वे लोग अबतक धूएं के जहाज़ और गाड़ियां और टेलिग्राफ़ अर्थात् तार की डाक इत्यादि काम की चीज़ें और तरह बतरह की कलें जो इंगलिस्तान में तयार होती हैं बनानी नहीं जानते, पर तौ भी बारीकी सफ़ाई नज़ाकत और खूबी में वहां के कारीगरों की किसी मुल्क के भी आदमी बराबरी नहीं करसकते। ये लोग छापना और बारूत बनाना और चुम्बक को काम में लाना

अर्थात् दिशा देखने के लिये कम्पास इत्यादि तयार करना उस में भी पहले जानते थे कि जब से वह फ़रंगिस्तान में ईजाद हुए। बर्तन चीनी के स्वच्छ और सुन्दर होते हैं (१) यह हिक्मत चीनियों ने बारह सौ बरस से पाई है। क़ंदीलें चीन की मशहूर हैं, निहायत उमदा रंग बरंग की बड़ी हिक्मत से तयार करते हैं, और इस को मकान की सजावट में पहली चीज समझते हैं, जो क़ंदील दर्वाजे पर लटकाई जाती है उस्पर मकान के मालिक का नाम भी बहुत खूब सूरती के साथ लिखा रहता है आगे ये लोग शीशा बनाना नहीं जानते थे, लेकिन अब यह फ़न भी उन लोगों ने फ़रंगियों से सीख लिया। इस बातमें वहां के आदमी बड़े उस्ताद हैं कि जैसी चीज़ देखें वैसी ही बना लेवें, एक फ़रंगिस्तान का सौदागर बड़ा क़ीमती मोती बेचने के लिये उस मुल्क में ले गया था, वहां के आदमी हर रोज़ उस मोती के देखने को आया करते, एक दिन एक चीनी ने कई सौ रुपये बयाने के देकर उस मोती की डिबिया पर मुहर कर दी, और यह क़रार किया कि जब बिलकुल रुपया दूंगा मोती ले जाऊं- गा, ग़रज़ वह चीनी फिर न आया, और उस सौदागर के जहाज़ खुलने का दिन पहुंचगया, यद्यपि मोती न बिका पर तौभी उसका मन निश्चिन्त था, क्योंकि बयाने में उसका राहखर्च से भी अधिक रुपया मिलगया था, निदान जब घर आकर उस चीनी की मुहर को तोड़कर मोती डिबिया से बाहर निकाला, और एक जौहरी को

(१) वहां एक तरह का पत्थर होता है, उसको एक प्रकार के मिट्टी के साथ कि वह भी ख़ास उसी मुल्क में होती है मिलाकर ये बर्तन बनाते हैं॥

बेचने के वास्ते देने लगा तो मालूम हुआ कि वह मोती झूठा है, चीनी ने हथ फेर कियो, सच्चा मोती तो उड़ा लिया और वैसा ही मोती झूठा बनाकर उस डिबिया में रख दिया। वहां के आदमी हाथीदांत पर ऐसी नक़ाशी करते हैं कि गोले के अन्दर ही अन्दर दूसरे जालीदार गोले तराशते और उन पर नक़ाशी करते चले जाते हैं। यद्यपि बारूत का बनाना ये लोग बहुत दिनों से जानते थे, परंतु तोप का ढालना डेढ़ ही सौ बरस से सीखा है। चाय रेशम नानकीन कपड़ा चीनी के बर्तन शक्कर दारचीनी काफर काग़ज हाथीदांत और कचकड़े की चीजें और खिलौने इत्यादि वहां से दिसावरों को जाते हैं। पौने सात लाख मन चाय हरसाल कांटन से जहाजों पर लदती है। छींट बनात कपड़े ऊद बिलाव के चमड़े गैंडे के खाग मोर के पर और शंख इत्यादि अंगरेजी और हिन्दुस्तानी चीजें अकसर तिब्बत की राह भी चीन में पहुंचती हैं। तिब्बत से पश्मीना कश्मीर में आता है, और फिर वहां से शाल दुशाले बनकर चीन को जाते हैं। यद्यपि चीन के आदमी अपनी तवारीखों में बहुत पुराने ज़मानों का हाल लिखते हैं, लेकिन जिनपर कि एतमाद हो सकता है वह इकतीस सौ बरस से इधर के हैं कि जब चौ बादशाह और कानफ्यूशियस हकीम पैदा हुए, प्राय ८०० बरस वहां की बादशाहत चौ के खानदान में रही, परंतु उस समय खंड खंड के जुदा जुदा राजा थे बादशाह केवल नाम को था, चीन बादशाह ने उन सब को अपने अधीन किया, और तातारियों के हमले से बचने के वास्ते वह बड़ी दीवार बनाई कि जिसका हाल ऊपर लिख आये हैं, प्राय सौ बरस बादशाहत उसके खानदान में रहकर फेर हान के बंश में आई। सन् ६२२ से ८९७ तक तांग के खान-

दान में रही, फिर ५३ बरस बदअमली रहकर सुंग के घराने में आई। तेरहवीं सदी के अखीर में मुग़लों ने उस विलायत को फ़तह किया, और ८५ बरस अपने क़बज़े में रखा। काबलेखां चंगेजखां का पोता इस खानदान में बड़ा नामी हुआ। सन् १३६६ से सन् १६४४ तक यह सल्तनत फिर चीनियों के हाथ में अर्थात् मिंग के खानदान में रही। सन् १६४४ में तातारियों ने उसे दबाया, और शंची नाम उनका बादशाह वहां के तख़्त पर बैठा, तब से अब तक उसी घराने में वह सल्तनत चली आती है, और चीन और तातार दोनों विलायतों की एक ही बादशाहत गिनी जाती है। इन तातारी बादशाहों ने बिलकुल चालचलन और तरीक़े चीनियों के इख़्तियार करलिये, इस बाइस से वह बादशाह उनको परदेशी नहीं मालूम होते। इन लोगों का यह आईन है कि परदेशी को अपने मुल्क में नहीं आने देते, केवल एक बंदर कांटन का ग़ैर मुल्क के सौदागरों के वास्ते मुक़र्रर था, उसी मुक़ाम पर फ़िरंगिस्तान के भी सब सौदागर लोग आकर चीनियों के साथ लेन देन किया करते थे, अंगरेज़ लोग अफ़यून की तिजारत से बड़ा फ़ाइदा उठाते थे, और बादशाह के यहां से अफ़यून बेचने की इन लोगों को मनाही थी, क्योंकि इसके खाने से उसकी रअय्यत का नुक़सान था, और सब लोग अफ़यूनी हुए जाते थे, नाचार जब अंगरेज़ अफ़यून बेचने से न रुके तो उसने सन् १८३९ में उनके जहाज़ों की तलाशी लेकर माथ बीस हज़ार अफ़यून के संदूक़ दरया में डुबा दिये, उसको सरकार अंगरेज़ी की क़ुदरत और ताक़त मालूम न थीं, वह तब तक दुनियां में अपने से अधिक बरन बराबर भी किसी को नहीं समझता था, निदान इस जियादती का बदला लेने के वास्ते कई एक

दुखानी (१) और जंगी जहाज कुछ फ़ौज के साथ सरकार की तरफ़ से चढ़ गये, और बाद बहुत सी लड़ाइयों के यह सरकारी फ़ौज फ़तह फ़ीरोज़ी के निशान उड़ाती हुई नानुकिङ शहर में दाखिल हुई, और क़रीब था कि दारुस्सल्तनत पेकिन को लेलेवे, परंतु उनतीसवीं अगस्त १८४२ को बादशाह के मोतमदों ने आकर बमूजिब सरकारकी तजवीज़की हुई शर्तों के सुलह करली, और सुलहनामे पर दस्तख़त कर दिये, इस सुलहनामे की रूसे चीन के बादशाह को हाङ्काङ का टापू हमेशः के वास्ते अंगरेज़ों के हवाले करदेना पड़ा, और एक बंदर कांटन की जगह पांच बंदर अर्थात् कांटन एमायफ़ूचूफ़ू निङपो और शांघे उन के वास्ते खोलना और चार करोड़ साढ़ेबहत्तर लाख रुपया लड़ाई का खर्च और अफ़यून का नुक़सान अदाकरना पड़ा। एक साहिब जो उस लड़ाई में मौजूद थे चीनियों की जवांमर्दी और लड़ने का हाल इस तरह पर बयान फ़र्माते हैं, कि जब सरकारी फ़ौज की किश्तियां एक क़िले के नज़दीक पहुंची कि जो दर्या कनारे था तो क्या देखते हैं कि उस क़िले के सब आदमी बाहर दर्या कनारे आकर बड़े बड़े काग़ज़ के अज़दहे और देव अंगरेज़ी फ़ौज को दिखला दिखला कर कलों के ज़ोर से उन के हाथ और मुंह हिलाते हैं, निदान जब सरकारी फ़ौज ने देखा कि उनके पास न तोप है न कोई दूसरा हथियार केवल लड़कों की तरह खिलौनों से डराना चाहते हैं तो उन के लड़कपन पर रहम खाकर सिपाहियों ने फ़ौरन् कारतूसों से गोलियां दांत से काट काटकर निकाल डालीं और खाली बंदूकें छोड़ीं, आवाज़ की भी बंदूक़ की उन पर ऐसी दहशत ग़ालिब हुई

(१) दुखानी जहाज़ उसे कहते हैं जो धूंएं के ज़ोर से चलता है॥

कि सब के सब एक लहज़े में काफूर हो गये। बादशाह वहां का शहंशाह कहलाता है, मुसल्मान उसको ख़ाक़ां और फ़ग़फूर कहते हैं (१) और रऐयत उसको अपने बाप की तरह जानती है, और बाप के नाम से पुकारती है। अंगरेज़ लोग वहां के सर्दारों को मैंडरिन कहते हैं। तिब्बत का मालिक लामा गुरु कहलाता है, लेकिन वह केवल पूजने के वास्ते है, चीनी लोग उसको साक्षात बुध का अवतार मानते हैं, और कहते हैं कि वह अमर है, जब उसका बदन बुढ़ापे से जीर्ण होता है तो शरीर बदल लेता है, पर अंगरेज़ लोग इस बात को केवल उसके कार्दारोंका फ़रेब समझते हैं, और इसतौर पर ख़याल करते हैं, कि जब लामा गुरु मरजाता है तो उसके कार्दार किसी तुर्त के जनमें हुए लड़के को लाकर गद्दीपर बैठा देते हैं और फिर उसको ऐसे ढब से सिखाते पढ़ाते हैं, कि वह सारी बातें पहले लामाओं के वक्त की बतलाने लगता है, और उसके चेले और शिष्य उन को करामात समझकर निश्चय मान जाते हैं। सन् १७८३ में जब कप्तान टर्नर साहिब सरकार की तरफ़ से सफ़ीर अर्थात् दूत बन कर तिब्बत को गये थे तो उस वक्त लामा की उमर कुल अठारह महीने की थी, लेकिन कप्तान साहिब अपनी किताब में लिखते हैं कि मुलाक़ात के वक्त वह बड़े गौरव और प्रतिष्ठा के साथ मसनद पर बैठा रहा, और बराबर इन की तरफ़ मुतवज्जिह रहा, जब कप्तान साहिब कुछ बात कहते तो जवाब में वह इस अंदाज़ से गर्दन हिलाता कि जैसे कोई बड़ा आदमी किसी बात को समझकर इशारा

---

(१) फ़ग़फूर का असल बगपूर है, अर्थात् भगवान का बेटा, बग प्राचीन फारसी भाषा में भगवान को और पूर पुत्र को कहते हैं॥

करे, जब कप्तान साहिब का पियाला चाय से खाली होता तो वह भवें चढ़ाकर और सिर हिलाकर चिल्लाता और अपने आदमियों को चाय देने का इशारा करता, वरन एक सोने के पियाले से कुछ मिठाई निकाल कर अपने हाथ से कप्तान साहिब को दी। लामा जो शरीर छोड़ता है सुखलाकर और उसपर चांदी की खोल चढ़ाकर मंदिर में पूजा के वास्ते रखदेते हैं। मुल्क का कारबार उसका नायब जिसे राजा कहते हैं करता है, लेकिन हक़ीक़त में इख़्तियार बिलकुल उस सूबेदार का है कि जो चीन के बादशाह की तरफ़ से वहां रहता है। आईन और इंतिज़ाम चीन का एशिया के सब मुल्कों से बिहतर है, वहां का बादशाह चार वज़ीर रखता है, और उनके नीचे छ महकमे हैं, पहले महकमे के हाकिमों का यह काम है कि हर एक उहदे पर उसके लाइक़ आदमी मुक़र्रर करें और देखें कि हर एक उहदेदार अपना अपना काम बखूबी अनजाम देता है, दूसरे के ज़िम्मे माल का काम है, तीसरे का काम यह है कि लोगों का चाल तरीक़ा और दस्तूर दुरुस्त रखे, चौथे के ज़िम्मे लश्कर है, पांचवें के ज़िम्मे सज़ा देना गुनहगारों को, और छठे महकमे के हाकिम इमारत और सड़क दुरुस्त रखते हैं, सिवाय इन महकमों के दारुस्सल्तनत में हानलिन नाम एक बड़ा पाठशाला है, जबतक वे लोग जो ज़िले के इस्कूलों में विद्या उपार्जन करते हैं इस मदरसेवालों के साम्हने परीक्षा में नहीं उतरते कोई बड़ा उहदा नहीं पाते। रिशवत लेने की सज़ा वहां फांसी है। वहां कुछ यह दस्तूर नहीं है कि अमीर ही के लड़के या बादशाह के संबंधी बड़े कामों पर मुक़र्रर हों, वरन जो मनुष्य जैसा पढ़ा लिखा होता है और इस्कूल में जिस दर्जे की परीक्षा देता है उसी दर्जे का उसको काम मिल जाता है, चाहे वह ग़रीब से ग़रीब ज़मींदार का लड़का क्यों न हो। यह

भी वहां का आईन है कि यदि किसी ने फांसी दिये जाने का अपराध किया हो, और उसके मा बाप बूढ़े हों, और उनके कोई दूसरा बेटा या पोता सोलह बरस से जियाद: का न हो, तो उसका अपराध सरकार से क्षमा होता है, निदान वहां मा बाप की बड़ी इज्ज़त और क़दर है, एक आदमी ने अपनी मा पर हाथ चलाया था सो उसने बादशाह के हुक्म से उसी दम फांसी पाई, और उसका घर ढाहा गया, और उसकी स्त्री और उस ज़िले के हाकिम को भी सज़ा मिली, सच मा बाप का ऋण लड़का लड़कियों पर ऐसा ही है कि यदि हम लोग अपनी जान तक भी उनकी नज़र करें तो उनके ऋण से कदापि अदा न हों। वहां का यह भी आईन है कि जब साल पूरा होने को एक दिन बाक़ी रहे तो सब लोग अपना हिसाब किताब फ़ैसल करके जिस किसी का जो कुछ देना दिलाना हो दे ले डालें, यदि कोई उस दिन अपना क़र्ज़ अदा न करे तो लेनदार को इख्तियार है जो चाहे उस पर ज़ियादती करे, बादशाह उसकी नालिश फ़र्याद हर्गिज़ नहीं सुनता, इसी वास्ते वहां के आदमी किफ़ायती होते हैं, वाहियात में रुपया नहीं उड़ाते। यह भी वहां का एक दस्तूर है कि यदि कोई बात किसी आदमी से बेजा या गुनाह की बनजावे तो उस आदमी के साथ उस ज़िले के हाकिम को भी थोड़ी बहुत सज़ा मिलती है, क्योंकि बादशाह कहता है कि यदि हाकिम उस आदमी को नीति और धर्मशास्त्र अच्छी तरह समझा देता तो वह ऐसा अपराध क्यों करता, बरन यदि कभी किसी हाकिम के ज़िले में कुछ ज़ियाद: खराबी पड़जाती है तो उस महकमे के हाकिम तक बादशाह की खफ़गी में पड़ते हैं कि जिसके ज़िम्मे हर एक उहदे पर उस उहदे के लाइक़ आदमी मुक़र्रर करने का काम है, और इसी वास्ते गांव

गांव के हाकिम प्रत्येक अमावाश्या के दिन लोगों को धर्मशास्त्र पढ़कर सुनाते हैं, और साल में एक बार ज़िले का हाकिम गांव गांव के हाकिमों को जमाकरके इसी तरह उपदेश देता है। इस धर्मशास्त्र की पुस्तक में चीनियों की आईन बमूजिब पिता माता की सेवा करना पित्रों को मान्ना, आपस में मेल मुवाफ़क़त रखना, किसानी और ज़िमींदारी को सब में अच्छा काम जान्ना, किफ़ायत और मिहनत के फ़ाइदे, विद्या अभ्यास का फल, बादशाह की आज्ञाकारी, ऐसी बातें लिखी हैं। उदाहरण के लिये कुछ थोड़ा सा हाल मेल और मुवाफ़क़त रखने के बिषय में उनके धर्मशास्त्र से तर्जुमा करके इस जगह लिखते हैं, बादशाह तुम लोगों को हुक्म देता है कि आपस में मेल और मुवाफ़क़त रखो जिस से लड़ाई झगड़े और नालिश फ़र्याद यहां से दूर रहे, इस हुक्म को अच्छी तरह दिल देकर सुनो, तुम्हारे रिश्तेदार और वाक़िफ़कारों में बहुतेरे आदमी बूढ़े भी होंगे, और बहुतेरे तुम्हारे हमसबक़ और हमजोली, जब शाम सुबह तुम बाहर जाते हो यह मुमकिन नहीं किसी से तुम्हारी मुलाक़ात न हो, या किसी को तुम न देखो, गांव उसको कहते हैं जिस में कई घर बसें, इन में ग़रीब भी होते हैं और दौलतवाले भी, कोई तुम से बड़े हैं, कोई छोटे, और कोई बराबर। एक पुराने आदमी ने खूब अक़्लमंदी की बात कही है कि ऐसी जगहों में जहां बूढ़े भी रहते हैं और कम उमर भी वहां मुनासिब है कि कम उमर ज़ियादः उमर वालों की ताज़ीम करें, इस बात का हर्गिज़ ख़याल न करें कि वे ग़रीब हैं या अमीर और पंडित हैं या मूर्ख, केवल उमर का लिहाज़ रखें, यदि दौलतमंद होकर तुम ग़रीब से मुँह फेरोगे अथवा ग़रीब होकर अमीरों पर डाह खाओगे तो इस बात से हमेशा के वास्ते तुम्हारे

दिलों में फ़र्क़ बना रहेगा, बादशाह कि जो तुम लोगों को हद से ज़ियाद: प्यार करता है, नालिश फ़र्याद और मुआमले मुक़द्दमों से बहुत नाराज़ है, और जो कि वह दिल से तुम्हारी खुशी और बिहबूदी अर्थात् आपस की मुवाफ़क़त चाहता है, वह आप तुम्हें उपदेश देता है, कि जिस में तुम्हारे दर्मियान बैर बिरोध न पैद होवे, तुम लोगों ने बादशाह का इरादा बख़ूबी समझ लिया, तुम को उचित है कि उसके अनुसार काम करो, और यदि तुम उसके अनुसार काम करोगे इस आज्ञाकारी से तुम्हारा अनंत उपकार होगा, और मुझे निस्संदेह निश्चय है कि तुम उसके अनुसार काम करोगे, इसलिये अब तुम घर जाकर बादशाह की अभिलाषानुसार काम करो और अपने पिता अर्थात् बादशाह के मन प्रसन्न होने के कारन हो। फ़ौज चीन के बादशाह की गिन्ती के लिये प्राय १०००००० होवेगी, परंतु काम की सिपाह वही ८०००० जंगी और जर्रार आदमी हैं जो तातार के मुल्क से भरती हुए हैं। आमदनी वहां के बादशाह की ६००००००००से अधिक नहीं और इससे मालूम होता है कि वहां की रऐयत को महसूल बहुत कम देना पड़ता है॥

जपान

चीन के पूर्व २६ अंश ३५ कला और ४९ अंश उत्तर अक्षांस के दर्मियान जपान के टापू हैं। नींफ़न सिटकाफ़ और क्यूस्यू ये तीन तो बड़े हैं और बाक़ी छोटे हैं, सब में बड़ा नीफ़न कुछ ऊपर ८००मील लंबा और ९० से लेकर १७० मील तक चौड़ा है। बिस्तार तीनों टापुओं का नब्बे हज़ार मील मुरब्बा से अधिक नहीं है। आबादी उस मुल्क में तीन करोड़ आदमी की अनुमान करते हैं। जंगल उजाड़ कहीं

नहीं, गांव से गांव मिल रहे हैं। ज़मीन बहुधा कोहिस्तान और पथरीली है, ऊंचे पहाड़ों की चोटियों पर बर्फ़ पड़ी रहती है, और कई एक उन में से ज्वालामुखी भी हैं। नदी और झीलें बहुत हैं, परंतु छोटी छोटी। धरती यद्यपि उर्वरा नहीं है लेकिन किसानों की मिहनत से अन्न बहुत उपजता है, और उन्हीं प्रकारों का जो चीन में होता है, चप्पे भर ज़मीन भी खेती से खाली नहीं है, पहाड़ों पर जहां बैलों का हल नहीं चल सकता आदमी हाथ से ज़मीन खोदते हैं, खेती बारी की उन्नति के लिये वहांवालों ने यह आईन जारी रखा है कि जो धरती बरस दिन तक जोती बोई न जावे वह सरकार की ज़ब्ती में आवे। घोड़े और मवेशी की इस मुल्क में कमी है, और गधा खच्चर ऊंट हाथी वहां बिलकुल नहीं होता, दीमक बहुत हैं। खान से सोना चांदी लोहा और तांबा रांगा सीसा पारा गंधक हीरा अक़ीक़ यशम कोयला निकलता है, समुद्र किनारे मोती और मूंगा बहुत उमदः मिलता है, और अम्बर भी हाथ लगता है। मेह वहां बहुत बरसता है, और तूफ़ान अकसर आया करता है। आदमी वहां के चालाक मिहनती निष्कपटी उदार अत्यन्त संतोषी सच्चे ईमान वाले वफ़ादार मिलनसार मुतहम्मिल मुहब्बती मिहमांपर्वर होश-यार दूरंदेश, चिहरों पर संतोष की खुशी छाई हुई, चुगली को बहुत बड़ा ऐब समझते हैं, परदेसी का कभी एतबार नहीं करते, छोटे आदमी भी अदब क़ायदे और शऊर सलीक़े के साथ रहते हैं, क्या मक़दूर कि कोई शख़्स गाली या सख़्त बात जुबान पर लावे, या बद जुबान अथवा झिड़क कर बोले। मकफ़ालेंन साहिब अपनी किताब में लिखते हैं कि वहां कुली मज़दूर को भी जब तक तुम नर्मी से न पुकारोगे वह तुम्हारी बात का जवाब न देवेगा। बदन

उन लोगों का भरा हुआ, पर मोटे कम, क़द मियाना, रंग ज़रदी मायल, आंखें छोटी चीनियों की तरह, भवें ऊंची, और गरदन तंग, सिर बड़ा, और नाक छोटी और फैली हुई, बाल काले और मोटे तेल से चमकते हुए, डाढ़ी मुंडवाते हैं, हजामत बनवाते हैं, टोपियां सींक की नुकीली जब धूप पानी में बाहर जाते हैं तब पहिनते हैं, घोड़े की लगाम हाथ में लेना बेइज्ज़ती है इसी लिये जब सवार होते हैं लगाम साईसों के हाथ में रहती है। मकान उनके बहुत साफ़ और बड़े क़रीने के साथ, हर चीज़ के वास्ते मुनासिब जगह और हर जगह के वास्ते मुनासिब चीज़, असबाब कम और सफ़ाई अधिक, यह नहीं कि सौदागरी दूकानों की तरह भरे हुए। हम्माम सब मकानों में, बदन साफ़, कपड़ा भी साफ़, वक़्त बटा हुआ, व्यर्थ समय किसी का भी नहीं जाता, पुत्र माता पिता के आज्ञाकारी, जहां लड़के ने होश संभाला और बाप ने उसे अपना घर सौंपा, खुराक उनकी बहुधा चावल, मास का अहार उनके मत से बिरुद्ध है परन्तु खाते हैं, मखन और दूध का मज़ा बिलकुल नहीं जानते, भोजन ये भी चीनियों की तरह सलाइयों से करते हैं, और बरतन उनके बहुत सुन्दर और हलके जप्पानी रोग़न से रंगे रहते हैं। सुबह को जो मुलाक़ाती आता है उसके साम्हने चाय और काग़ज़ के तख्ते पर कुछ मिठाई रखी जाती है, और दस्तूर है कि मिहमान के खाने से जो मिठाई बचे उसे वह उसी काग़ज़ में बांधकर जेब में रख ले जावे। नाम उमर भर में तीन दफ़ा बदलते हैं मुरदों को जलाते और उनके नाम की छतरियां बनाते हैं, जलते समय उनके मित्र और भाई बंधु पुष्प वस्त्र मिठाई इत्यादि चिता में डालते हैं। दर्या की सैर का बड़ा शौक़ रखते हैं, संध्या के समय स्त्री पुरुष सब नाव पर चले जाते हैं शराब पीते हैं

और गाते बजाते हैं, नावें बहुत सुन्दर और और सजीली, रंग बरंग की क़ंदीलों से रौशन, औरतें वहां की अकसर पतिव्रता, मजलिसों में तीन तीन दफ़ा कपड़ा बदलती हैं, और बीस बीस गौन तक एक पर एक पहिनती हैं,। घड़ी के बदल तोड़े सुलगा रखते हैं, एक एक घंटे में जितना तोड़ा जले उतने तोड़े पर निशान रहता है, और उसी से समय का प्रमाण मालूम करते हैं। मजहब वहांवालों का बौध। भाषा वहां की निराली, एक ही शब्द के ग़रीब अमीर स्त्री और पुरुष के बोलने में जुदा जुदा अर्थ हो जाते हैं। अक्षर भी स्त्री पुरुष के वास्ते जुदा जुदा दो प्रकार के हैं, और लिखने में ये भी चीनियों की तरह खड़ी पंक्ति लिखते हैं, आड़ी नहीं लिखते पाठशाला वहां लड़का लड़की दोनों के वास्ते बने हैं, ग़रीब से ग़रीब जमींदार भी लिख पढ़ सकते हैं, स्त्रियें भी ग्रंथ रचती हैं लोगों को पढ़ने लिखने का शौक़ है, वहां गरमियों के मौसिम में अकसर यह बात देखने में आवेगी कि हर जगह नहर के कनारों पर पेड़ों की घनी घनी ठंढी छाया में औरत और मरद दोनों हाथों में किताब लिये हुए बैठे हैं। कपड़े सूती और रेशमी फ़ौलादी चाक़ू और तलवार और बरतन चीनी के यहां भी अच्छे बनते हैं, और रोग़न तो जपान का सा कहीं भी नहीं होता, यह संदूक़ क़लमदान इत्यादि जिनको यहां जप्पानी कहते हैं उसी मुल्क से रंग रोग़न होकर आते हैं, वे लोग इस रोग़न को उरुसी के दरख़्त से जो उसी मुल्क में होता है पछना लगाकर निकालते हैं। डच लोगों से सीख कर दूरबीन थर्मामेटर इत्यादि यंत्र भी अब बनाने लगे हैं। एक हिकमत वहांवालों को ऐसी आती है कि सिवाय चीनियों के और किसी को भी उस से ख़बर नहीं है, अर्थात् तीन इंच लंबी और एक इंच चौड़ी डिबिया के अन्दर चील और बांस का पेड़ और

आलूचे का दरख्त कलियों समेत दिखला देते हैं। परदेसी आदमियों को ये भी चीनियों की तरह अपने मुल्क में नहीं आने देते। बनज ब्योपार इनका चीन के सिवाय केवल थोड़ा सा और लोगों के साथ है सो भी निगास की इत्यादि उन्हीं बंदरों में जो परदेसियों के वास्ते मुक़र्रर हैं। चीनियों से चावल चीनी हाथीदांत फिटकिरी कपड़ा और फ़रंगिस्तान वालों से विलायती असबाव दवा मसाले शोरा इत्यादि लेते हैं, और तांवा सूखी मछली जप्पानी रोग़न और रोग़नी चीज़ें उनको देते हैं, बादशाह वहां दो हैं एक दीन का दूसरा दुनियां का दीनी अर्थात् पारलौकिक बादशाह के लिये जागीर मुक़र्रर है, उसी की आमदनी पर गुज़ारा करता है, सल्तनत के काम में दख़ल नहीं देता, केवल जब कोई भारी मुहिम्म आ पड़ती है तो उस से सलाह पूछी जाती है, अथवा जब दूसरा बादशाह कुचाल चलना चाहताहै तो वह उसे ख़बरदार कर देता है, वह पृथ्वी पर पांव नहीं रखता आदमी के कंधों पर चलता है, उसके बाल नींद में काटे जाते हैं, सारे दिन ताज पहिनकर एक आसन से उसे सिंहासन पर बैठे रहना पड़ता है बारह विवाह करता है, और जो वस्त्र आभूषण बरतन इत्यादि उस के और उसकी स्त्रियों के काम में एक बार आ जाते हैं उन्हें फिर उसी दम तोड़ मरोड़ कर फेंक देते हैं, न वह दूसरी बार उसके काम में आते हैं और न उन को दूसरा आदमी काम में ला सकता है। बाल बच्चे सूबेदारों के राजधानी में रहते हैं, और सूबेदारों को भी बारी बारी से एक साल अपने सूबे में और एक साल राजधानी में रहना पड़ता है। दीवान सूबेदारों का बादशाह के यहांसे मुक़र्रर होता है। पांच सूबेदारोंकी एक कौंसिल है, यद्यपि उनकी बर्तरफ़ी बहाली का बादशाह को इख़्तियार है पर बिना उनकी सलाह के वह कुछ भी काम

नहीं करसकता, और न उनको बिना कसूर मौकूफ़ कर सकता है, नहीं तो मुल्क में तुरंत बलवा होजावे, यदि कौंसल और बादशाह की राय में कभी कुछ फ़र्क़ पड़े, और बादशाह कौंसल के तजवीज़ी काग़ज़ पर दस्तख़त न करे तो उसका अपील बादशाह के भाई बेटों से तीन शाहज़ादों के साम्हने पेश होता है, पर ऐसा काम बहुत कम पड़ता है, क्योंकि इस अपील में कौंसल की राय ठीक ठहरे तो बादशाह तख़्त से ख़ारिज होजाता है, और जो बादशाह की राय ठीक ठहरे तो फिर वज़ीर समेत सारी कौंसल का पेट चाक होता है। वहां का यह आईन है कि जब तक पुराने पड़ौसियों से नेकमआशी का सार्टीफ़िकट और नये पड़ौसियों से रहने की इजाज़त न मिले कोई आदमी अपने रहने का मकान नहीं बदल सकता। चोरी वहां बहुत कम होती है, सौदागर सोने चांदी से बैल भर कर अकेले चलते हैं। सज़ा अकसर क़तल की, क्योंकि वहांवालों की समझ में क़तल के सिवाय और कोई सज़ा ग़रीब अमीर को बराबर नहीं पहुंच सकती, और इसी लिये वहां जुर्माना कभी नहीं लिया जाता। फ़ौज वहांकी एक लाख पैदल और बीस हज़ार सवार अनुमान करते हैं। आमदनी इस बादशाहत की अठाईस करोड़ रुपया साल है। दारुस्सल्तनत जेडो में जो ३६ अंश उत्तर अक्षांस और ४० अंश पूर्व देशांतर में २२ मील लंबा बसा है पंदरह लाख आदमी की बस्ती बतलाते हैं। मकान अकसर लकड़ी और बांस के, नदी और नहरें शहर के बीच से बहती हैं, दुतरफ़ा उनपर सुंदर दरख़्त लगे हुये और जगह जगह पर पुल बने हुये। बादशाह का महल शहर के अंदर आठ मील के घेरे में बना है, दीवानआम ६०० फ़ुट लंबा ३०० फ़ुट चौड़ा बिलकुल देवदारकी लकड़ी का बना,

है, और उसपर निहायत उम्दः जप्पानी रंग रौग़न किया है ॥

——✻——

एशियाईरूस

एशियाई इस वास्ते कहते हैं कि रूस का मुल्क कुछ तो एशिया में पड़ा है और कुछ यूरुप अर्थात् फ़रंगिस्तान में गिना जाता है, इस लिये एशियाई का बयान जो एशिया में पड़ा है एशिया के साथ और यूरूपी अर्थात् फ़रंगिस्तान के रूस का बर्णन जो यूरुप में गिना जाता है फ़रंगिस्तान के साथ किया जावेगा, बरन इस बादशाह का ज़ियादः बयान फ़रंगिस्तान ही के साथ होवेगा, क्योंकि राजधानी इसकी पीटर्सबर्ग फ़रंगिस्तान में बसी है। जानना चाहिये कि एशिया रूस, जो सिवाय ककेसस के कोहिस्तानी ज़िलों के ४८ से ७८ अंश उत्तर अक्षांस तक और ५९ अंश पूर्व देशांतर से १७० अंश पश्चिम देशांतर तक चलागया है, उत्तर तरफ़ उत्तर समुद्र से, और दक्षिण तरफ़ चीन तूरान ईरान और एशियाईरूमसे, पूर्व और पासिफ़िक समुद्र से, और पश्चिम फ़रंगिस्तानीरूस से घिरा हुआ है। वह पश्चिम से पूर्व को ५००० मील लंबा और उत्तर से दक्षिण को १५०० मील चौड़ा होवेगा। विस्तार तीस लाख मील मुरब्बा, और आबादी फ़ी मील एक आदमी अर्थात् कुल तीस लाख आदमी की, और १७ सूबों में बांटा गयाहै, और साईबीरिया इस्तराखान और ककेसस के कोहिस्तानी ज़िले ये तीन उसके बड़े हिस्से हैं। साईबीरिया यूरल पहाड़ से पासिफ़िक समुद्र तक चला गया है, उस के नैर्ऋतकोन डन और वलगा नदी और कास्पियनसी के बीच इस्तराखान, उसके नैर्ऋतकोन कास्पियनसी और ब्लाकसी के बीच ककेसस के कोहिस्तानी ज़िले हैं। जंगल उजाड़ बहुत है। दक्षिण

एशियाई रूस
उत्तर ध्रुव
५०
६०
७०
८०
९०
१००
११०
१२०
१३०
१४०
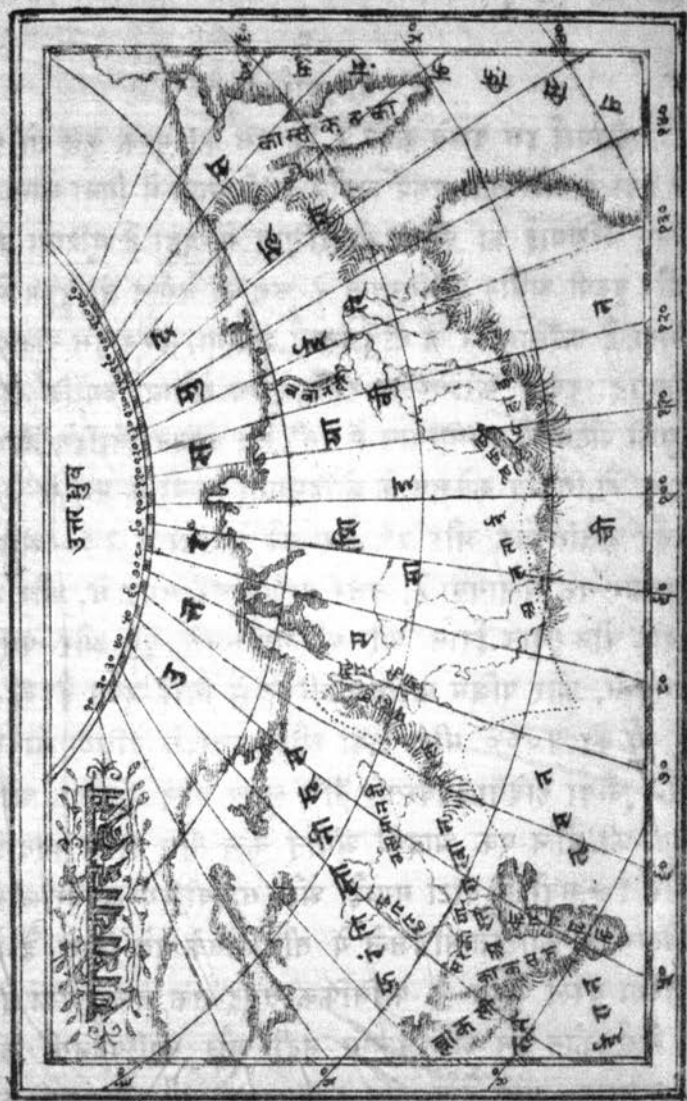
भाग में धरती उपजाऊ है, और घोड़े और मवेशी भी बहुतायत से होते हैं, परन्तु उत्तर भाग में केवल झील और दलदल और बर्फ़िस्तान है। पहाड़ों के दर्मियान इस मुल्क में अलताई और यूरल और ककेसस की श्रेणियां प्रसिद्ध हैं, इसी ककेसस को फ़ारसी में कोहक़ाफ़ कहते हैं, और इसी ककेसस के घाटे को बंद करने के लिये जिस में रूसवाले ईरान पर हमला न कर सकें सिकन्दर ने वह बड़ी दीवार बनाई थी जिसे फ़ारसी किताबों में सद्दे इस्कंदरी लिखा है, उसका अलबुर्ज़ नामी एक शिखर प्राय १८००० फ़ुट समुद्र से ऊंचा है। अलताई इस मुल्क को तातार से और यूरल उसे फ़रंगिस्तान से जुदा करता है। सब में बड़ी नदी इस मुल्क में ओबी है, वह २५५० मील लंबी होवेगी। लेना दो हज़ार मील लंबी है, दोनों अलताई से निकलकर उत्तर समुद्र में गिरती हैं, और वलगा इस मुल्क को फ़रंगिस्तानी रूस से जुदा करती हुई कास्पियनसी में गिरती है। झील बेकल की ३५० मील लंबी और ५० मील तक चौड़ी है, नवम्बर से मई तक सर्दी के सबब जमी रहती है। खान से वहां सोना चांदी प्लाटिनम् तांबा लोहा सीसा सुरमा पारा शोरा गन्धक फिटकरी हीरा लसनिया पुखराज इत्यादि बड़ी बड़ी क़ीमती चीज़ें निकलती हैं, लोहा बहुत है, पहाड़ के पहाड़ लोहे के चुंबक का स्वभाव रखते हैं! साईबीरिया का इलाक़ा रूस के मुल्क का कालापानी है, जो कोई संगीन मुजरिम या राजद्रोही होता है उसको साईबीरिया में ले जाकर वहां उससे खान खोदने का काम लेते हैं। साईबीरिया के अग्निकोन की तरफ़ कम्सकटका का प्रायद्वीप प्राय ६०० मील लंबा है, और उस में कई एक ज्वालामुखी पहाड़ भी हैं, दूसरे तीसरे साल जब वे अपने ज़ोर पर आते हैं तो सैकड़ों हाथ ऊंची ज्वाला

उठती है, गली हुई धातुकी नदियां जारी होजाती हैं, और उनके अन्दर से इतनी राख निकलती है कि तीस तीस मील तक छाजाती है। वहां लकड़ी अच्छी होती है, परन्तु सर्दी की शिद्दत से खेती बारी नहीं होसकती। वहां के आदमी शिकार मारकर अथवा दरख़्तों की छाल जंगली फलों के साथ मिलाकर अपना पेट भरते हैं, और नाव की तरह बिना पहिये की गाड़ी बनाकर और उस में कुत्ते जोतकर बर्फ़िस्तान पर चलते हैं। इन कुत्तों का अजब स्वभाव है, गरमी के मौसिम में तो वहां के आदमी उन को जंगलों में छोड़ देते हैं, वहां वे अपनी खुराक आप तलाश करलेते हैं, और फिर जाड़े के आरंभ में खुद बखुद जंगलों से लौटकर अपने अपने मालिकों के पास चले आते हैं। सितम्बर से मई तक वहां जाड़े का मौसिम रहता है। समूर क़ाक़ुम और संजाब इत्यादि पोस्तीन बहुत उमद: होते हैं, और उन को बेचकर वहां के लोग बड़ा फ़ाइदा उठाते हैं। जंगलों के दर्मियान हिरन की क़िस्म से एक तरह के बारहसिंह के भी बहुत होते हैं, और उत्तर के इलाक़ों में लोग उनको मवेशी के तौर पर पालते हैं। आदमी इस मुल्क में रूसी क़ज़ाक़ और तातारी बहुत क़िस्म के बसते हैं, और वे लोग बड़े वीर और साहसी और पराक्रमवाले होते हैं। घोड़े की सवारी और बाज़ के शिकार से बड़ा शौक़ रखते हैं, बहुतेरे उनमें क्रिस्तान हैं, और बहुतेरे मुसल्मान और बुतपरस्त। सर्केशिया की स्त्रियों का रूप सारी दुनियां में मशहूर है। उत्तर भाग में समुद्र के तटस्थ लोग नाटे, मज़बूत, गर्दन उन की तंग, सिर बड़ा, मुंह चकला, आंखें काली, पेशानी चौड़ी नाक चिपटी, मुंह लंबा, होंठ पतले, रंग गेहुआं, बाल कड़े और काले कंधों पर लटकते हुए, डाढ़ी बहुत कम, और पैर छोटे होते हैं। जल के जीव मार-

कर पेट भरते हैं, और वस्त्र की जगह चमड़े पहनते हैं। जाड़ों के मौसिम में जब वहां महीनों की लंबी रातें होती हैं (१) तो ये लोग बर्फ़ में गढ़ा खोदकर और उसके ऊपर बर्फ़ के ढोकों से कुटी सी बनाकर उसी के अंदर चुप चाप बैठ रहते हैं, और घास फूस और मछली की चरबी जलाकर उसी की आग तापा करते हैं। इस शिद्दत से सर्दी पड़ती है कि आग जलने पर भी वे बर्फ़ के मकान कदापि नहीं गलते, और जो लोग उसके अंदर रहते हैं। उन को बखूबी हवा की सख़्ती से बचाते हैं। सूरत इन बर्फ़ी कुटियों की औंधी हुई नांद की तरह, धूंआं निकलने के लिये ऊपर एक छेद रहता है। साईबीरिया का इलाक़ा पहले तातार के शामिल था, सोलहवें शतक में रूस के शहंशाह ने उसको फ़तह करके अपने मुल्क में मिला लिया, जार्जिया इत्यादि इलाक़े भी उसने थोड़े ही दिनों से अपने क़बज़े में किये हैं। जार्जिया के इलाक़े में कास्पियनसी के पश्चिम कनारे दरख़्त और पानी से ख़ाली एक पटपर में बाकू का शहर बसा है, वहां की सारी धरती नफ्त अर्थात् मट्टियेतेल से तरह है, और जहां कहीं छेद या दरार है उसके अंदर से उसी प्रकार की गैस अर्थात् प्रज्वलित वायु निकलती है जैसी यहां कांगड़े के पास ज्वालामुखी से निकलती है, और जिससे रात्रि के समय कलकत्ते का सारा शहर रोशन रहता है। बाकू के भी लोग इस गैस को नलों की राह अपने मकानों में लेजाकर चराग़ की एवज़ उसी से काम करते हैं, अर्थात् जहां कहीं वह गैस ज़मीन से निकलती है वहां से अपने मकान तक एक नल लगा देते

---

(१) ध्रुव के समीप महीनों की लंबी रात होने का कारण इस ग्रंथ के अंत में बर्णन होगा॥

हैं उसी नलकी राह धूंएं की तरह वह गैस उनके मकान में आ निकलती है, बरन वहां के आदमी अपना खाना भी उसी गैस से पकाते हैं। शहर के पास उस स्थान पर जहां से वह गैस बहुतायत के साथ निकलती है चार नल बहुत बड़े बड़े आतिशदानों के दूदकश की तरह खड़े लगा रखे हैं, उन नलों के अंदर से उस प्रज्वलित वायु की लाटें बड़ी भभक और तेज़ी के साथ दूर तक ऊंची निकलती हैं, उसके चौफेर आध कोस के घेरे में सफ़ेद पत्थरों की ऊंची दीवारें खिची हैं, और उन दीवारों में अन्दर की तरफ़ बहुत सी कोठरियां बनी हैं, और उन कोठरियों के अन्दर कितने ही हिंदू फ़क़ीर जोगी और जटाधारी बैठे रहते हैं, वे अपना खाना अपने हाथ से पकाते हैं दूसरे का छूआ नहीं खाते, जब मरते हैं तो उनको घी से नहलाकर एक कुंड के अंदर जो इसी काम के लिये बना रखा है उसी गैस से जलादेते हैं। जिन दिनों में उस मुल्क के आदमी अग्निहोत्री थे, और गब्र कहलाते थे, उसी समय का यह मंदिर बनाहै। अब भी जो वहां इस मत के आदमी बच रहे हैं उनकी मदद से उसका खर्च चलता है। हिंदू लोग बाकू को महा ज्वालामुखी कहते हैं। नदियों के मुहानों में जो उत्तर हिम समुद्र में गिरती हैं अकसर करारों के टूटने पर अथवा बर्फ़ के गलने पर धरती के अंदर एक प्रकार के हाथियों के दांत बहुतायत से मिलते हैं, बरन सन् १८०३ में बर्फ़ के करारे के नीचे से एक समूची लाश निकली थी, नौ फुट चार इंच ऊंची, १६ फुट ४ इंच लंबी, दांत भैंस की सींगों की तरह घूमे हुए, नौ फुट छ इंच लंबे, और साढ़े चार मन भारी, चमड़ा गहरा ऊदे रंग का जरा जरा लाली झलकती हुई, बदन पर उसके ऊन की तरह काले काले बाल थे। वहांवाले इन दांतों को सौदागरों के हाथ बेचते हैं, और उस जानवर

का नाम मेमाथ पुकारते हैं। निदान वहां इस जानवर के दांत और हाड़ही मिलते हैं, जीता हुआ जानवर अब दुनियां भर में कहीं नहीं है, अर्थात् हाथी तो अवश्य होते हैं, परंतु उस प्रकारका हाथी जिस के वहां दांत मिलते हैं कहीं भी देखने में नहीं आता, और अत्यंत अद्भुत आश्चर्य यह है कि जहां वे दांत मिलते हैं वह तो केवल बर्फ़िस्तान है, जंगल और चारा बिलकुल नहीं, जो एक हाथी भी वहां ले जाकर छोड़ो मारे सर्दी और भूख के जल्द हीं मरजावेगा, यह हज़ारों मेमाथ क्योंकर जीते थे और क्या खाते थे ? अक्सर विद्यावानों का यह निश्चय है कि पुराने समय में वह मुल्क गर्मसेर और जंगलों से परिपूर्ण था, काल पाके हवा की तासीर बदल गई और अब सर्दी पड़ने लगी, इस बात के साबित करने के लिये बड़ी बड़ी युक्तियां लाते हैं, जो हो ईश्वर की महिमा अपार, इसका अंत कोई नहीं पा सकता, देखो हज़ारों बरस के पुराने जानवरों की लाशें अद्यावधि बर्फ़ के तले से निकलती हैं। शराब मेवा क़हवा अन्न कपड़ा दवा मोती इत्यादि वहां दिसावरों से आता है, और नमक चाय रेशम चमड़ा चरबी जवाहिर मुश्क, समूर संजाब क़ाक़ुम इत्यादि वहां से दिसावरों को जाता है ॥

———*———

अफ़ग़ानिस्तान

यह मुल्क हिन्दुस्तान और ईरान के बीच में २५ अंश से ३७ अंश उत्तर अक्षांस तक और ५८ अंश से ७२ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। दक्षिण तरफ़ समुद्र, उत्तर तरफ़ तूरान, पूर्व तरफ़ हिन्दुस्तान, और पश्चिम तरफ़ ईरान उसकी सीमा है। नौ सौ मील पूर्व से पश्चिम को लंबा और प्राय आठ सौ मील उत्तर से दक्षिण

को चौड़ा होवेगा। विस्तार चार लाख चौरानवे हजार मील मुरब्बा है, और आबादी फ़ी मील मुरब्बा २८ आदमी की, अर्थात् एक करोड़ चालीस लाख आदमी उस में बसते हैं। इस मुल्क के तीन बड़े हिस्से हैं, उत्तर असली अफ़ग़ानिस्तान, दक्षिण बलूचिस्तान, और पश्चिम हिरात अथवा खुरासान। यद्यपि यह तमाम मुल्क अफ़ग़ानिस्तान अथवा काबुल की सल्तनत कहलाता है, परंतु इन दिनों में वहां जिले जिले के हाकिम जुदा जुदा बन बैठे हैं सिर्फ़ नाममात्र को काबुल के अमीर के आधीन हैं, तिस में हिरात वाला तो अब जुदाही बादशाह कहलाता है। इस मुल्क में पहाड़ और जंगल बहुत हैं, परन्तु जो धरती पानी से तरहै वह अत्यन्त उपजाऊ और उर्बरा है। हिमालय की श्रेणी जो सिन्धु के दहने कनारे इस मुल्क के उत्तर भाग में पड़ी है उसे वहांवाले हिन्दूकुश कहते हैं, कई चोटियां उसकी समुद्र से बीस बीस हजार फुट तक ऊंची हैं, पेड़ उस पर बहुत कम और छोटे छोटे। बलूचिस्तान में रेगिस्तान का बड़ा जंगल ३०० मील लम्बा और २०० मील चौड़ा होवेगा। नदियां हीरमन्द और फरह दोनों जरह की झील में जो सीस्तान के दर्मियान प्राय १०० मील लम्बी होवेगी गिरती हैं, हीरमन्द ६५० मील से अधिक लम्बी है। मेवे काबुल के मशहूर हैं, तिस में भी सेब नाशपाती खूबानी अनार अंजीर सर्दे और अंगूर तौ बहुत ही उमदः होते हैं। अनाज में जौ गेहूं चावल इत्यादि और दरख्तों में चील केलो देवदार बान सर्व अखरोट जैतून भोज तूत बेदमजनू इत्यादि बहुत होते हैं। बलूचिस्तान और हिरात के पहाड़ों में हींग के पेड़ जंगलों में पैदा होते हैं, और वहां के आदमी उनकी तरकारी बनाते हैं। शहतूत इस मुल्क में बहुत होता है, यहां तक कि कंगाल आदमी

उसी के आटे की रोटियां पकाते हैं। सोना चांदी लसनिया माणक लाजवर्द सीसा लोहा सुर्मा गंधक हरिताल फिटकिरी नमक और शोरा खान से निकलता है। कुत्ते शिकारी इस मुल्क में अच्छे होते हैं, और बिल्ली भी लम्बे बालोंवाली वहां की बहुत खूबसूरत है। दुम्बे की दुम वहां सात सेर तक भारी होती है, और बिलकुल चरबी से भरी हुई। जंगल में शेर भेड़िये लकड़बघे लोमड़ी खर्गोश रीछ हिरन बन्दर सूवर साहीं के सिवा भेड़ी बकरी और कुत्ते भी रहते हैं। ऊंट और बैल वहां बड़ा काम देते हैं। और घोड़े तो उधर के प्रसिद्धही हैं। चिड़ियों में उक़ाब बाज बगला सारस तीतर कबूतर बतक मुर्गाबियां इत्यादि सब होती हैं। सांप और बिच्छू बड़े होते हैं, पर नदियों में मगर और घड़ियाल नहीं हैं, और मछलियां भी थोड़ीही क़िस्म की होती हैं। गर्मी सर्दी उस मुल्क में बलन्दी और पस्ती पर मुनहसर है, अर्थात् कोहिस्तान और ऊंची जगहों में तो बर्फ़ और निहायत सर्दी, और रेगिस्तान और नीची जगहों में शिद्दत से गर्मी रहती है। बरसात वहां नहीं होती। सराब अर्थात् मृगतृष्णा इस मुल्क में अंजान आदमी के लिये बड़े धोखा खाने की जगह है, दूरतक ज़मीन पर पानीही पानी नज़र पड़ता है, वरन जिस तरह सच्चे पानी में तटस्थ चीज़ों की आभा पड़ती है उसी तरह उस में भी आसपास के दरख्त जानवर इत्यादि झलकते हैं, और समूम ऐसी एक प्रकार की गर्म हवा गर्मी केदर्मियान वहां के रेगिस्तानों में चलती है कि जो कदाचित आदमी के बदन में लगे वह एक दम में झुलस करबेदम हो जावे। आदमी इस मुल्क के सुन्नी मुसलमान हैं, हिन्दू भी थोड़े बहुत वहां बसते हैं। अफ़ग़ानी यद्यपि अक्सर दुबले होते हैं, परन्तु मज़बूत और मिहनती और गठीले और नाक उनकी ऊंची

और चिहरे लंबूतरे। ये लोग दिलमें लाग लालच डाह हठ साहस और स्वच्छन्दता बहुत रखते हैं। बलूची जन्म के लुटेरे हैं, अक्सर कम्बल के तंबू तानकर मैदानों में पड़े रहते हैं, और क़ाफ़िलों पर छापा मारते हैं। ज़ुबान अफ़ग़ानिस्तान में कई बोली जाती हैं, दस से कम नहीं हैं, परन्तु पशतो बहुत जारी है। बलूचिस्तान में तिजारत और सौदागरी बहुत कम है, निकास तो कुछ भी नहीं होता। अफ़ग़ानिस्तान से ऊन रेशम हिराती क़ालीन तर व खुश्क मेवा हींग मजीठ तंबाकू घोड़ा खच्चर फिटकरी गंधक सीसा जसता इत्यादि चीज़ों का निकास होता है, और विलायती हथियार कपड़ा शीशे चीनी का बरतन पशमीना नील दवा चमड़ा काग़ज़ हाथीदांत जवाहिर सोना चाय इत्यादि वहां बाहर से आता है। साबिक़ ज़माने में यह मुल्क भारतवर्षीय राजाओं के आधीन था, सिकन्दर के समय में यूनानी सूबेदारों के तहत रहा, फिर धीरे धीरे ईरान के बादशाहों के क़बज़े में आया और ईरान के साथ वह भी ख़लीफ़ाओं की सल्तनत में शामिल हुआ। सन् ८६२ में जब इस्माईलसामानी ख़लीफ़ा के हुक्म से निकलकर बुख़ारे का स्वाधीन बादशाह हुआ, तो उस ने इस मुल्क पर अपना क़बजा रखा, अलपतगीं इस मुल्क का पहला स्वाधीन बादशाह हुआ और उसके बेटे के मरने के बाद सबुकतगीं ने ग़ज़नी को उस मुल्क की दारुस्सल्तनत मुकर्रर किया, उसका बेटा महमूद ऐसा बड़ा और नामी बादशाह हुआ कि न उस मुल्क में पहले कभी हुआ था और न उसके पीछे आज तक हुआ है। सन् ११८९ में यह सल्तनत ग़ोरियों के घराने में आई, और ग़ोरियों का घराना नाश होने पर थोड़े थोड़े दिनों तातार मुग़ल और ईरानियों के हाथ में रही, यहां तक कि ईरान के बादशाह नादिरशाह के मारे जाने पर

अहमदशाह दुर्रानी अफ़ग़ानिस्तान का स्वाधीन बादशाह हो बैठा, और बरन लाहौर मुल्तान इत्यादि हिन्दुस्तान का भी कोना दबाया। सन् १८०९ में दोस्तमहम्मद बारकजई ने उसके पोते शाहशुजा और महमूद को तख्त से ख़ारिज करके ताज बादशाही का अपने सिर पर रखा, और रूसियों से मिलकर हिन्दुस्तान की हद पर फ़साद उठाना चाहा, तब नाचार शाहशुजा उस मुल्क के असली मालिक को जिसने सरकार से मदद चाही थी तख्त पर बिठाने और दोस्तमहम्मद खां को वहां से निकालने के लिये सन् १८३९ में उस मुल्क के दरमियान अंगरेज़ी फ़ौज गई लेकिन १८४१ में मुल्कियोंने दोस्तमहम्मद के बेटे अकबरखां की बहकावट से बड़ा बलवा किया, सरअलकजंडरबर्निस साहिब और सरविलियम मिकनाटन साहिब दोनों मारे गये, और फ़ौज भी सरकारी, चार हज़ार जंगी सिपाही अनुमान बारह हज़ार आदमियों की बहीर के साथ, इस अकबरखां की दग़ाबाज़ी और फ़रेब और बर्फ़ की सख़्ती से बिलकुल ग़ारत हुई, केवल जनरल सेल साहिब उसके मकर के जाल में न आये, और जलालाबाद के क़िले पर क़ाबिज़ बने रहे। यद्यपि सन् १८४२ में सरकारी फ़ौज ने फिर उस मुल्क में जाकर क़ब्ज़ा किया, परन्तु जो कि शाहशुजाउल मुल्क भी उस बलवे में मारा गया था, और उसके बेटे सल्तनत की लियाक़त न रखते थे, और सरकार को वह मुल्क अपने दख़ल में रखना मंज़ूर न था, निदान सरकारी फ़ौज उस मुल्क को छोड़कर लौट आई, और दोस्तमहम्मद को भी जो क़ैद में था छोड़ दिया, अब वह उस मुल्क की बादशाहत करता है। आईन क़ानून वहां मुसल्मानों की शरा अर्थात् उनके धर्मशास्त्र बमूजिब चलता है। आमदनी कुछ न्यूनाधिक सत्तावन लाख रुपया साल है, इस

में चौंतीस लाख तो काबुल कंधार अर्थात् असली अफ़ग़ानिस्तान की, और बीस लाख नक़द और जिस मिलाकर हिरात की बलूचिस्तान कुल तीन लाख का मुल्क है। राजधानी काबुल ३४ अंश १० कला उत्तर अक्षांस और ६९ अंश १५ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से कुछ कम साढ़े छ हज़ार फ़ुट ऊंचा कामा नदी के दोनों तरफ़ सुंदर मेवों के बाग़ और फूलों के जंगल के दरमियान तीन मील के घेरे में अनुमान साठ हज़ार आदमियों की बस्ती है। नैर्ऋतकोन को एक छोटे से पहाड़ पर बालाहिसार का क़िला बना है, और दक्षिण तरफ़ अकबर के दादा बाबरबादशाह की क़बर है। काबुल से ४० मील उत्तर ४०० फ़ुट ऊंचे एक पहाड़ की अलंग में २५० गज़ ऊंचा और १०० गज़ चौड़ा बालू का ढेर पड़ा है, जब कभी उस पर आदमी चढ़ता है अथवा हवा ज़ोर से लगती है, तो उस बालू के अंदर से नक़ारे और नफ़ीरी की आवाज़ निकलती है (१) वहांवाले उसको रेगरवां कहते हैं, और उसके पास एक गुफ़ा है उसे इमाम मिहदी का मकान बतलाते हैं। ग़ज़नी अथवा ज़ाबुल काबुल से ७० मील दक्षिण समुद्र से पोने आठ हज़ार फ़ुट ऊंचा सवा मील के घेरे में ख़ंदक़ और पक्की शहर पनाह के अंदर दस हज़ार आदमियों की बस्ती है, शहर के उत्तर भाग में क़िला है,

---

(१) कारण इसका जो एशियाटिक जर्नल में लिखा है, वह बिना इलमी किताबों के पढ़े लोगों की समझ में न आवेगा, इसलिये तरजुमा न करके जों का तों अंगरेज़ी में लिख देते हैं॥

"Cause–re-duplication of inpulse setting air in vibrat ion in a course of echo,"

पुराना शहर तीन मील के तफ़ावत पर ईशान कोन को बस्ता था, सन् ११५१ में अलाउद्दीनग़ोरी ने उसे ग़ारत किया, जो लोग उस में नामवर और दर्जेवाले थे उन्हें वहां क़तल न करके जीता ग़ोर में जो हिरात से १२० मील अग्निकोन को है पकड़ लेगया, और फिर छुरों से ज़िबह करके उनके लहू से अपने क़िले और मकान का गारा सनवाया। अब इस पुरानी ग़ज़नी में जिसे महमूद ने हिन्दुस्तान उजाड़कर बसाया था महमूदशाह के मक़बरे के सिवाय केवल दो मीनार सौ सौ फ़ुट ऊंचे बाक़ी रह गये हैं। चंदन के किवाड़ों की जोड़ी अठारह फ़ुट ऊंची, जो महमूदशाह सोमनाथ के फाटक से उखाड़ लेगया था, इसी मक़बरे में लगी थी, अंगरेज़ी फ़ौज अपनी बांह का बल जताने के लिये काबुल से लोटते समय उसे फिर हिन्दुस्तान को ले आई, अब वह आगरे के क़िले में रखी है। क़ंधार अथवा गंधार काबुल से प्राय २०० मील नैर्ऋत कोन को समुद्र से साढ़े तीन हज़ार फ़ुट बलंद तीन मील के घेरे में खाई और कच्चा शहर पनाह के अन्दर अनुमान पचास हज़ार आदमियों की बस्ती है। चौक जिसे वहांवाले चारसू कहते हैं पचास गज़ चौड़ा गुम्बज़ से पटा है। हिरात काबुल से कुछ कम ५०० मील पश्चिम खाई और कच्ची शहर पनाह के अंदर ४५००० आदमियों की बस्ती है। निहायत ग़लीज़ गलियां तंग बाज़ार मिहराबी छत से पटा हुआ चौक गुम्बज़ के तले। काबुल से पश्चिम वायुकोन को झुकता अफ़ग़ानिस्तान की उत्तर हद पर तुरकिस्तान की राह में समुद्र से साढ़े आठ हज़ार फ़ुट ऊंचे हिंदूकुश के घाटे पर बामियान के पास बहुत से पुरानी इमारतों के निशान हैं, दो खड़ी मूर्ति कपड़े समेत एक १८० और दूसरी ११७ फ़ुट ऊंची पहाड़ में तराशी हैं। वहां

वाले उनको संगसाल और शाहमम्मा कहते हैं। पास ही उस पहाड़ में बड़ी बड़ी गुफ़ा भी काट कर बनाई हैं। सिवाय इसके उस मुल्क में जो सब देहगोप और पुराने सिक्के मिलते हैं, उन से यह बात प्रत्यक्ष प्रकट है, कि मुसल्मानों का दीन फैलने से पहले वहांवाले भी हिंदुस्तानियों की तरह बुध और बेद को मानते थे, अब भी उन पहाड़ों में एक क़ौम सियाहपोशों की बसती है, मुसल्मान उनको काफ़िर पुकारते हैं, और वे मुसल्मानों के मारने में बड़ा पुण्य समझते हैं, स्त्रियां उन की अति रूपवान होती हैं, परन्तु आचार और व्यवहार उनके कुछ अद्भुत से हैं, न इस समय के हिंदुओं से मिलते न मुसल्मानों से न बौधों से न क्रिस्तानों से। क़िलआत बलूचिस्तान के खां के रहने की जगह काबुल से ४२५ मील नैर्ऋतकोन दक्षिण को झुकता समुद्र से ६००० फ़ुट ऊंचा एक पहाड़ के कनारे पर कच्ची शहरपनाह के अंदर बसा है। पश्चिम तरफ़ क़िला है। आबादी गिर्दनवाह की भी मिलाकर १२००० से अधिक नहीं है। क़िलआत से अनुमान २५० मील के लगभग दक्षिण नैर्ऋतकोन को झुकता और जहां हिंगुल नदी का समुद्र से संगम हुआ है उससे २० मील ऊपर उसी नदी के कनारे दो पहाड़ों के बीच एक गुफा सी है, उसी के ऊपर हिंगलाज देवी का छोटा सा कच्चा मंदिर बना है, मूर्ति नहीं है, केवल पिंडी की पूजा होती है। यह स्थान हिन्दुओं का बहुत प्रसिद्ध तीर्थ है। हमको उसका शुद्ध नाम हिंगला मालूम होता है, क्योंकि हिंगलाज शब्द किसी ग्रंथ में नहीं मिलता, और हिंगुला चूडामणि तंत्र में उस पीठ का नाम लिखा है जहां शक्तिमतवालों के निश्चय बमूजिब देवी का ब्रह्मरंध्र गिरा बतलाते हैं। हिन्दुस्तान के जो यात्री वहां जाते हैं उनको करांची बंदर से दस मंज़िल पड़ता है॥

तूरान
रूस
चीनी तातार
खीवा
बुखारा
समरकंद
बलख
ईरान
हिन्दू कुश पर्वत
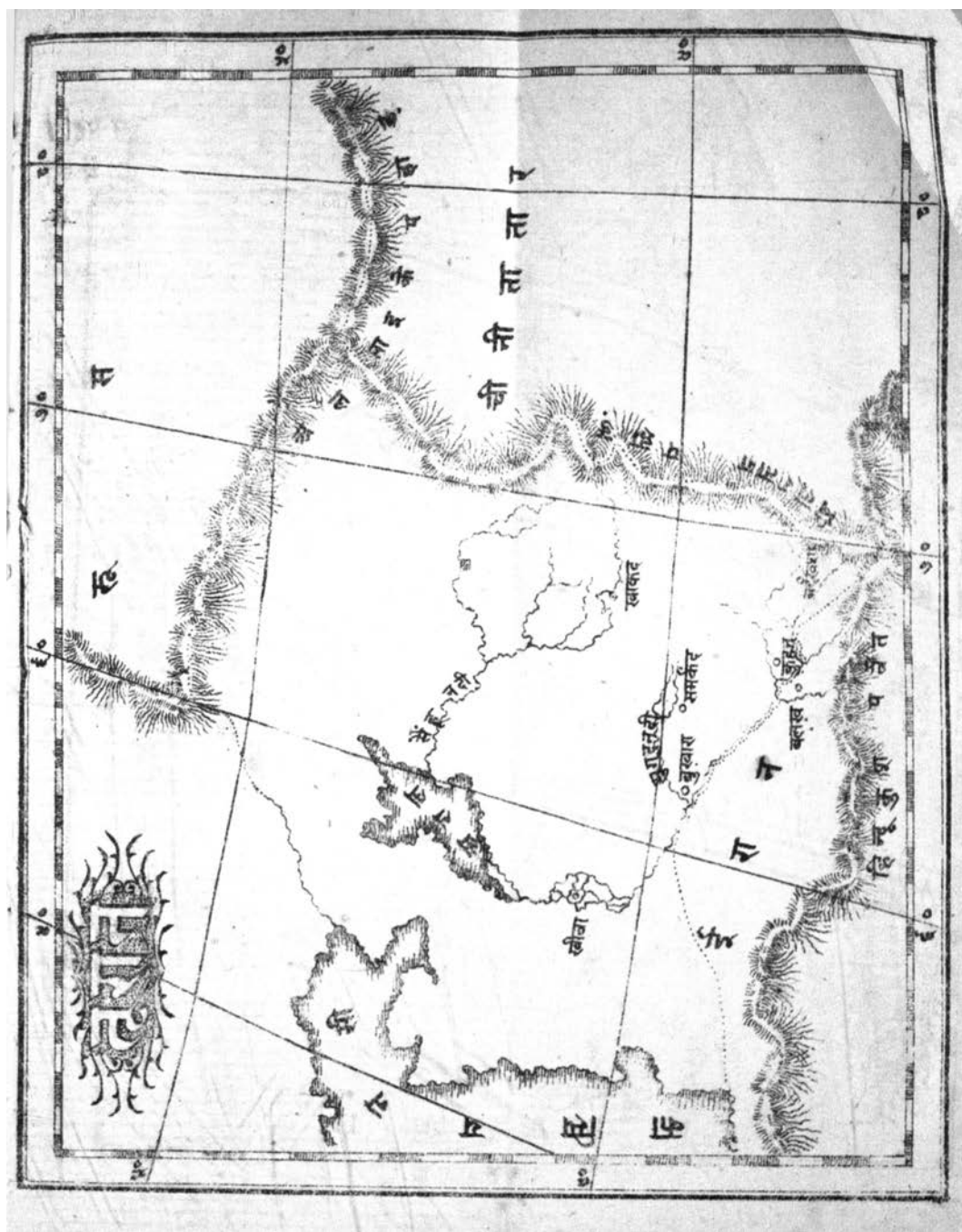
अथवा तुर्किस्तान, जिसे अंगरेज़ लोग इंडिपेंडेंटटाटौरी अथवा स्वाधीन तातार भी कहते हैं, ३८ अंश से ५१ अंश उत्तर अक्षांस तक और ५२ अंश से ७४ अंश पूर्व देशान्तर तक चला गया है। पश्चिम तरफ़ उस के कास्पियनसी अथवा बहरे खिज्र नाम एक झील पड़ी है, अंगरेज़ लोग इस कास्पियन को सी और मुसल्मान बहर अर्थात् समुद्र बहुत बड़ा और खारा होने के कारन कहते हैं, परन्तु बस्तुतः वह झील ही है, क्योंकि उसका जल चारों तरफ थलसे घिर रहा है। निदान कास्पियन दुनियां में सब से बड़ी झील है, अढ़ाई सौ मील चौड़ी और साढ़े छ सौ मील लंबी होवेगी। अलताई के पहाड़ की श्रेणी तूरानको उत्तर तरफ़ रूस के मुल्क से, और बिलूरताग़ के पहाड़ उसको पूर्व तरफ़ चीनी तातार से, और हिंदूकुश के पहाड़ उसको दक्षिण तरफ़ अफ़ग़ानिस्तान से जुदा करते हैं। ये सब पहाड़ एक दूसरे से जुड़े और हिमालय से मिले हुये हैं, मानों उसी की वे सब शाखा हैं। दक्षिण के रुख उसकी सर्हद जैहूंपार बराबर कास्पियन तक ईरान से मिली है। यह मुल्क पूर्व से पश्चिम को १५०० मील लंबा और उत्तर से दक्षिण को ११०० मील चौड़ा है। बिस्तार दश लाख मील मुरब्बा। आबादी पांच आदमी फ़ी मील के हिसाब से ५०००००० । उत्तर तरफ़ इस मुल्क में बड़े बड़े रेगिस्तान पड़े हैं, कि जिन में कहीं एक पत्ता घास का भी नहीं जमता। नदियां जैहूं और सैहूं मख्यात हैं, जैहूं जिसे अंगरेज़ी में आक्सस और संस्कृत में चक्षुस् कहते हैं १३०० मील, और सैहूं ९०० बहती हैं। झील अराल की जिसे बहरेख़ारज़म भी कहते हैं २५० मील लम्बी और ७० मील चौड़ी है, पर पानी उसका खारा है, जैहूं और सैहूं दोनों बिलूरताग़ पहाड़ से निकलकर इसी झील में गिरती हैं। पैदाइशें

वहां की आसपास के मुल्कों से बहुत मिलती हैं। खान से लसनिया सोना चांदी पारा तांबा और लोहा निकलता है। बदख्शां का इलाक़ा इस मुल्क के अग्निकोन में हिन्दूकुश के उत्तर लाल पैदा होने के वास्ते बहुत मशहूर है। जाड़ों में सर्दी शिद्दत से पड़ती है, पर तौभी आबहवा उस मुल्क की अच्छी है। तातारियों में चरवाहों की क़ौम के बहुत हैं, अकसर आदमी केवल मवेशी पालकर अपना गुज़ारा करते हैं, और जहां चराई और पानी का आराम देखते हैं, उसी जगह अपने डेरे जा गाड़ते हैं, जो लोग शहर और गांव में बस्ते हैं वे बनज व्यौपार और खेती बारी भी करते हैं। आदमी वहां के सुन्नी मुसल्मान हैं, और बादशाह वहां का अमीरुल्मोमीनन कहलाता है। मुनशी मोहनलाल, जो सरअलकजंडरबर्निस-साहिब के साथ बुखारा गया था, अपनी किताब में लिखता है कि वहां का बादशाह क़ुरान के हुक्म बमूजिब न तो ज़र जवाहिर पहनता है और न सोने चांदी के बरतन काम में लाता है, एक रोज़ जब वह बाग़ को गया तो मुनशीसाहिब ने उसकी सवारी देखी थी, अच्छे खासे मौलवियों की तरह सादी पोशाक पहने घोड़े पर चला जाता था, दस पंदरह सवार साथ थे और खच्चरों पर तांबे के देग देगचे रकाब लोटे इत्यादि क़ल्ई किये खाने के बरतन लदे थे। ये लोग डाढ़ी रखते हैं, और आंख की पुतलियां और बाल उनके काले होते हैं। फ़ौज यहां के बादशाह की २५००० । आमदनी अड़तालीस लाख रुपये साल की। बुख़ारा उसकी दारुस्सलतनत सुग़द नदी के दोनों किनारों पर बसा है, वह बड़ी तिजारत की जगह है, वहां चीन हिन्दुस्तान रूस फ़रंगिस्तान सब जगह की चीज़ें आती हैं, बस्ती उस में प्राय डेढ़ लाख आदमियों की अनुमान करते हैं।

ईरान
तूरान
खुरासान
मुशहिद
माजन्दरान
असतराबाद
विहरान
इसफ़हान
लुरिस्तान
फ़ारस
शीराज़
कर्मान
लारिस्तान
लार
हुर्मुज़
फ़ारस की खाड़ी
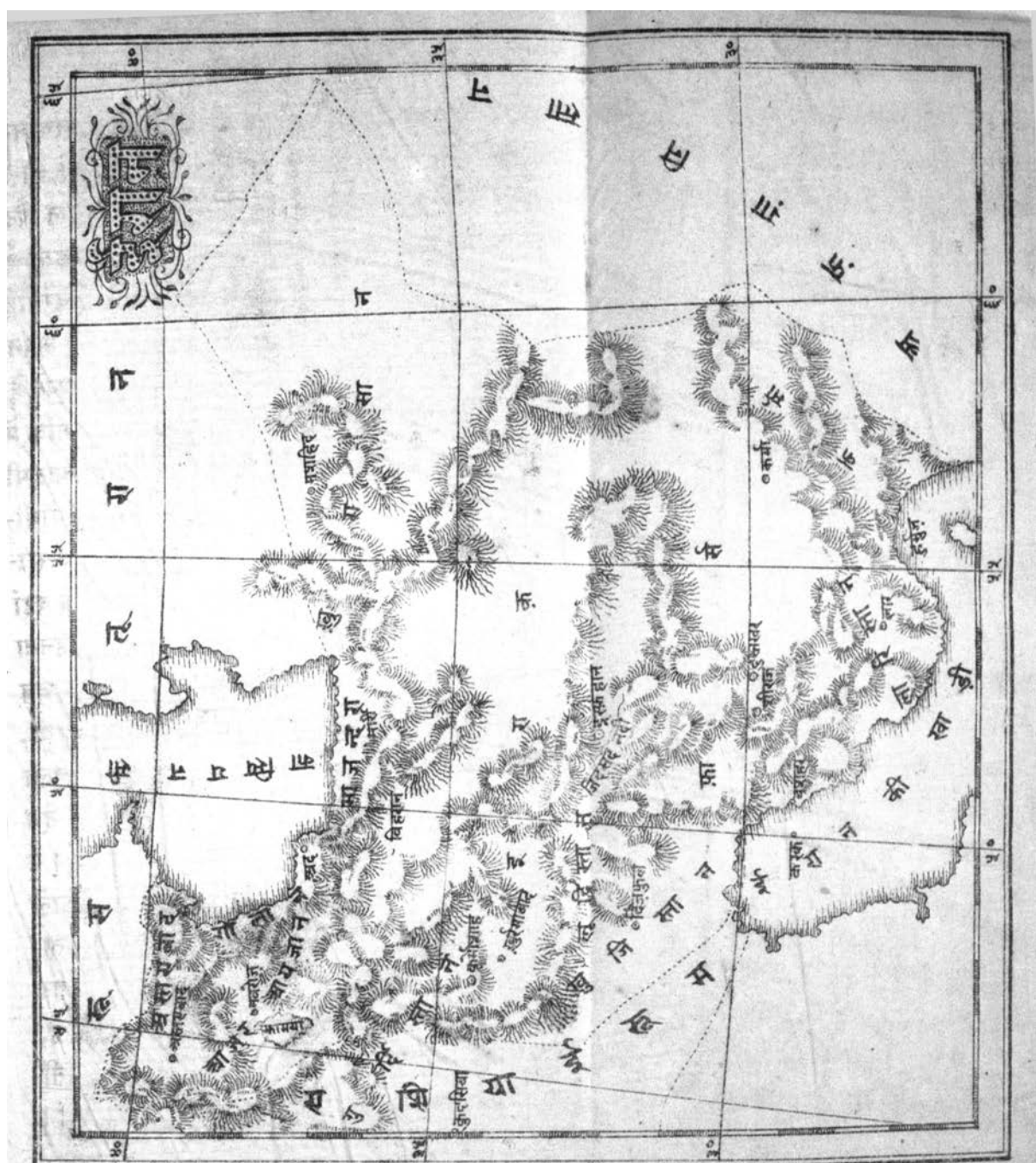
मसजिदें शहर में ३६० से कम नहीं, और मदरसे अर्थात् पाठशाला इस से भी अधिक हैं। वहां के बाजार में बर्फ और चाय की दूकानें बहुत हैं, वहां के आदमी चाय बहुत पीते हैं। हिन्दुओं को हुक्म है कि अपनी टोपियों पर निशान रखें, जिस में मुसल्मान कभी धोखे से सलामअलैक न कहें, वे लोग सिर्फ नाम के हिन्दू हैं, आचार उनके बिलकुल भ्रष्ट। बलख् बुखारा से २५० मील अग्नि कोन दक्षिण को झुकता बहुत पुराना शहर है, जर्दशत जिसने पार्सियों का मत चलाया था इसी शहर के दर्मियान पैदा हुआ था, अब थोड़े दिनों से वह काबुलवालों के दखल में जा रहा है। समर्कंद बुखारा से १५० मील पूर्व सुंदर सजल मेवों के दरख्तों के दर्मियान कच्ची शहरपनाह के अंदर बसा है, वह तैमूरशाह की दारुस्सलतनत था कि जिसकी औलाद अबतक दिल्ली के तख्त पर थी। यद्यपि यह सारा मुल्क बुखारा की सल्तनत में गिना जाता है, लेकिन उसके दर्मियान खीवा अथवा खारज़म वायुकोन को, खोकन्द अथवा कोकन ईशानकोन को, कुन्दुज अग्निकोन को, इन तीनों इलाकों के खा अर्थात् हाकिम केवल नाम मात्र को बुखारा के आधीन हैं॥

ईरान

२५ अंश से ४० अंश उत्तर अक्षांस तक और ४४ अंश से ६५ अंश पूर्व देशांतर तक। उत्तर रूस और तूरान और कास्पियानसी है, दक्षिण ईरान की खाड़ी जिसे वहांवाले दर्याय उम्म पुकारते हैं, पूर्व अफ़ग़ानिस्तान, और पश्चिम तरफ़ एशियाई रूम से जा मिला है। प्राय ९०० मील पूर्व से पश्चिम को लंबा और छ सौ मील उत्तर से दक्षिण को चौड़ा है। विस्तार ५६०००० मील मुरब्बा।

आबादी फ़ी मील मुरब्बा १८ आदमी के हिसाब से एक करोड़ आदमी की अनुमान करते हैं। नीचे इस मुल्क के सूबों के साम्हने उनके बड़े शहरों का नाम लिखते हैं।

नम्बर	नाम सूबों का	नाम शहर का
१	आज़रबायजान वायुकोन की तरफ़ रूम और रूस की हद पर	तबरेज़
२	गुर्दिस्तान आज़रबायजान के दक्षिण	कर्माशाह
३	लूरिस्तान गुर्दिस्तान के दक्षिण	खुर्रमाबाद
४	खुजिस्तान लूरिस्तान के दक्षिण समुद्र की खाड़ी तक	दिज़फ़ुल
५	फ़र्स खुजिस्तान के पूर्व	शीराज़
६	लारिस्तान फ़ार्स के दक्षिण समुद्र की खाड़ी तक	लार
७	कर्मा फ़र्स के पूर्व	कर्मा
८	खुरासान कर्मा के उत्तर	मशहिद
९	इराक़ फ़ार्स के उत्तर	इस्फहान } तिहरान }
१०	माज़न्दरां इराक़ के उत्तर	सारी
११	ग़ीलां माज़न्दरान के वायु कोन	रशद
१२	अस्तराबाद ग़ीलां के उत्तर	अस्तराबाद

हुर्मज़ और करक इत्यादि कई टापू जो ईरान की खाड़ी में हैं इसी बादशाहत में गिने जाते हैं। ईरान की खाड़ी से मोती बहुत उमदः निकलता है। रेगिस्तान और पहाड़ों की इस मुल्क में इफ़रात है, और उन के बीच बीच में सुन्दर रम्य और मनोहर दूनें हैं, कि जिनमें

फूल फल आबादी और हरियाली सब कुछ मौजूद हैं। पहाड़ दक्षिण तरफ़ के तो थोड़े बहुत सवृक्ष हैं, बाक़ी बिलकुल नंगे। वह बड़ा रेगिस्तान जो कर्मा से माज़न्दरां तक चला गया है ४०० मील से कम लम्बा नहीं है। नदी बहुत बड़ी कोई नहीं। झील रूमिया की कास्पियनसी और पश्चिम सीमा के बीच ३०० मील के घेरे में निर्मल परन्तु खारे जल से भरी है, और उसके अन्दर से गंधक की गन्धि आती है। धरती जो पानी से सिंची है खूब उपजाऊ। पैदाइश वहां गल्ले और मेवों की अफ़ग़ानिस्तान सी, पर मेवा ईरान का विहतर सारे जहान से। केसर और सना भी अच्छी होती है। जानवर वहां वेही होते हैं जिनका वर्णन अभी अफ़ग़ानिस्तान में कर आये। घोड़ा ईरान का यद्यपि अरब सा खूबसूरत और तेज़ नहीं है, परन्तु मज़बूती और क़द में उससे बढ़कर होता है. मीयर साहिब लिखते हैं कि एक सवार तिहरान से दस दिन में बूशहर को जो सात सौ मील से अधिक है खत लेकर पहुंच गया था। जंगलों में गोरखर बहुतायत से हैं। खान से ईरान में चांदी सीसा लोहा तांबा संगमर्मर नफ्त गन्धक और फ़ीरोज़ा निकलता है। मोमयाई वहां एक पहाड़ की गुफ़ा में पानी की तरह टपकती है, बरसवें दिन ज़िले का हाकिम उस गुफ़ा को खोलता है, जो कुछ मोमयाई इकट्ठी हुई रहती है बादशाह के पास भेज देता है, इस में घाव बहुतही जल्द चंगा हो जाता है। उत्तर भाग में सर्दी और दक्षिण भाग में गर्मी रहती है, आस्मान सदा साफ़ और निर्मल, हवा में खुशकी मेह केवल ग़ीलां और माज़न्दरां के सूबों में जो कास्पियनसी के कनारे हैं बरसता है, बाक़ी और जगहों में बहुत कम, जो हो आबहवा उस मुल्क की बहुत ही उमदा है। आदमी वहां के सुन्दर हँसमुख मि-

लनसार अय्याश खुशअखलाक खुशखुराक खुशपोशाक बाअदब मिहमांनवाज़ जवांमर्द साहसी कवि खुशामदपसंद और लालची होते हैं, मिज़ाज उनका नर्म पर गुस्से बहुत जल्द हो जाते हैं, काहिल परले सिरे के लेकिन काम के वक्त मिहनत भी बड़ी करते हैं, बाल उनके काले रहते हैं, डाढ़ी बाज़े मुंडवा डालते हैं, और लाल टोपियां पहनते हैं इसी वास्ते क़ज़लबाश कहलाते हैं, क्योंकि तुरकी ज़ुबान में क़ज़लबाश का अर्थ लाल टोपी है, औरतें मुंह पर नक़ाब रखती हैं। गाड़ी वहां नहीं होती, सवारी घोड़े की, औरतें ऊंटों पर पर्दे के अन्दर अमारी में बैठती हैं। मज़हब में वहां के मुसल्मान सब शीआ हैं, और अकसर उन में से जो सूफ़ी कहलाते हैं वेदांतियों से मिलते हैं। आईन क़ानून वहां क़ुरान के हुक्म बमूजिब जारी हैं। ज़ुबान ईरानियों का अर्थात् फ़ारसी दुनियां की सब ज़ुबानों से मीठी और प्यारी है, यदि उसको मिसरी और कंद भी कहें तो यथार्थ है। उस मुल्क में इल्म की क़दर है। क़ालीन रेशमी कपड़े कमखाब शाल बंदूक पिस्तौल और तलवारें वहां बहुत उमदा बनती हैं। मीना भी खूब होता है। क़ालीन शराब रेशम रूई मोती घोड़े और दवाइयों का वहां से निकास है और शक्कर नील मसाले कपड़ा औज़ार सीसे चीनी का बरतन सोना रांगा इत्यादि वहां बाहर से आता है। ईरान में मंदिर मकान इत्यादि के निशान बहुत मिलते हैं, हक़ीक़त में यह सल्तनत बहुत पुरानी है, साबिक़ वहां के आदमी अग्निहोत्री होते थे, अर्थात् अग्नि को मानते थे और उसी की पूजा करते थे, अपने मंदिरों में कुंड के बीच सदा अग्नि को प्रज्वलित रखते थे कभी बुझने न देते, सन् ६३६ में क़ुदसिया की लड़ाई के दर्मियान ईरान के बादशाह यज़्द गुर्द ने अरबों के हाथ

शिकस्त खाई, और तभी से ईरानियों को मुसल्मान होना पड़ा। सन् १२१८ में चंगेजखां ने सात लाख तातारियों के साथ ईरान फ़तह किया था, चंगेजखां मुसल्मान न था वरन मूर्तों की पूजा करता था। नादिरशाह, जो हिन्दुस्तान से सत्तर करोड़ रुपये का माल लूट ले गया, इसी ईरान का बादशाह था। फ़ौज दवामी दस हज़ार सिपाही और तीन हज़ार गुलाम, बाक़ी सब जागीरदारों की भरती, और आमदनी प्राय तीन करोड़ रुपये साल का। तिहरान ईरान की दारुस्सल्तनत ३६ अंश ४० कला उत्तर अक्षांस और ५० अंश ५२ कला पूर्व देशान्तर में एक पहाड़ के नीचे खाई और मजबूत शहरपनाह के अन्दर पांच मील के घेरे में साठ हज़ार आदमियों की बस्ती है, मकान अकसर कच्ची ईंटों के, लेकिन क़िले के अन्दर महल बादशाही उमद: बने हैं। पुरानी राजधानी इस्फ़हान तिहरान से कुछ ऊपर २५० मील दक्षिण जिंदरूद के कनारे दो लाख आदमियों की बस्ती है, बाज़ार पटा हुआ, चौक बहुत बड़ा, दो हज़ार फ़ुट लम्बा, बीच में नहर और हौज़ संगमूसा के बने हुये, और दरख्त सायादार लगे हुये। शहर के दक्षिण आठ बाग़ बादशाही जुदा जुदा मौसिम के लिये हश्त बिहिश्त नाम नहर और हौज़ों समेत बहुत उमदा बने हैं, उन में से एक बाग़ के अन्दर चालीस चालीस फ़ुट ऊंचे, चालीस खम्भों का जो शीशमहल बना है रंगबरंग के फूलों की आभा से मानों सचमुच रत्न जटित भवन सा मालूम पड़ता है, इस चिहल सुतून के खंभों को संगमर्मर के चार चार शेरों की पीठ पर जमाया है। सन् १३८७ में जब तैमूरशाह ने उसे लूटा तो एक लाख सत्तर हज़ार आदमी क़तल किये, और शहरपनाह की फ़सीलों पर उनके सिरों के ढेर लगा दिये। डेढ़ सौ बरस भी नहीं गुज़रे

कि जब चार्डिन साहिब ने उस शहर को २४ मील के घेरे में बस्ता देखा था। उस वक़ उस में दश लाख आदमी ७४५ मस्जिद ४८ मदरसे १८०० कार्वांसरा और २७३ हम्माम थे। शीराज़ तिहरान से ५०० मील दक्षिण सुन्दर दरख़्तों के झुण्ड में दूर से मस्जिदों के मीनार और गुंबज़ चमकते हुए चालीस हज़ार आदमियों की बस्ती है, मकान छोटे गली तंग लेकिन बाहर बाग़ बहुत सुन्दर खुशबूदार फूलों से भरे फ़व्वारे छूटते हुए, हाफ़िज़ और सादी इसी जगह गड़े हैं। शीराज़ से तीस मील वायुकोन को ईरान की अति प्राचीन पहली राजधानी इस्तख़र, जिसे अंगरेज़ पार्सिपोलिस कहते हैं, बसता था, सिकन्दर ने उसे ग़ारत किया, एक खण्डहर, जिसे वहां वाले जमशेद का तख़्त कहते हैं, अब तक भी मौजूद है, उसके संगमर्मर की सफ़ाई जो आइने की तरह चमकते हैं, उसके खम्भों की उंचाई जो इस दम भी कुछ न्यूनाधिक साठ खड़े हैं, उसकी सूरत मूरत और नक़ाशियों की बारीकी जो ज़ीनों के दर्मियान बहुत ख़ूबीके साथ बनाई हैं, देखकर बड़ा अचरज आता है, उस खंडहर पर बहुतसे प्राचीन पारसी अक्षर तीर के फल की सूरत पर खुदे हैं, अब उनको इस काल में कोई भी न पढ़ सकता था, मेजर रालिंसन साहिब ने दस बरस की मिहनत में उस लिपि का मतलब निकाला, और उन अक्षरों की वर्णमाला भी बना ली, अब उसकी सहाय से उस देश में जहां जहां पुराने मकानों पर उस साथ के अक्षर लिखे थे सब पढ़े गये। इस पर्सिपोलिस के खंडहर पर बड़े बादशाह क़ैख़ुसरो जिसे प्राय चौबीस सौ बरस गुज़रते हैं और दारा का नाम लिखा है, और लिखा है कि हिन्दुस्तान से मिसर और यूनान तक सारे देश उनके राज में थे। यह प्राचीन पारसी भाषा जो तीर के फल की सदृश

अक्षरों में लिखी है संस्कृत से विशेष करके वेद की वाणी से इतना मिलती है, और पोशाक हथियार सवारी और आकृति उन सूरतों की जो वहां पत्थरों पर खुदी हुई हैं हिन्दुस्तान के कई प्राचीन मंदिरों की नक़ाशी से ऐसी बराबर होती हैं, कि उस समय हिन्दुस्तान और ईरान के चाल चलन मत जिन लोगों ने ईरान और हिन्दुस्तान के प्राचीन इतिहास अच्छी तरह देखे हैं उनके मन को दृढ़ निश्चय हो जाता है, कि व्यौहार इत्यादि में कुछ बड़ा बीच न था, हिन्दुओं का मूल मंत्र गायत्री सूर्य की बंदना है, ईरानी भी पहले मित्र अर्थात् सूर्य को मानते थे। हिन्दुस्तानियों के क़ौल बमूजिब अंगिराऋषि ने अग्नि प्रकट की, यज्ञ होम इत्यादि की बुनियाद बांधी, ईरानियों के कहने अनुसार ज़र्दश्तने अग्निहोत्रियों का मत चलाया। हिन्दुस्तान में जैनी अथवा बौधोंने हिंसा त्यागकी, ईरानके दर्मियान केवल साल में एकबार बादशाह अपनी सेना लेकर सुष्टु अर्थात् तृणचर पशुओं की रक्षा के निमित्त दुष्ट अर्थात् मांसाहारी जीवों के नाश करने को चढ़ता था वही मानों शिकार की असल हुई, बाक़ी वे भी हिंसा को अत्यन्त बुरा समझते थे। समय पाकर देशों के चाल चलन मत व्यवहार इत्यादि से भेद आ गया॥

अरब

यह प्रायद्वीप एशिया के नैर्ऋतकोन में १२ अंश ३० कला से ३४ अंश ३० कला उत्तर अक्षांश तक और ३२ अंश ३० कला से ६० कला पूर्व देशांतर तक चला गया है। सीमा उसकी उत्तर रूम की सल्तनत, पूर्व ईरान की खाड़ी, पश्चिम रेडसी नाम खाड़ी जिसे बहर अहमर भी कहते हैं और स्वीज़ का डमरूमध्य, और

दक्षिण अरब का समुद्र है। उत्तर से दक्षिण को १७०० मील लंबा और पूर्व से पश्चिम को १२०० मील चौड़ा है। विस्तार दस लाख मील मुरब्बा। बस्ती फ़ी मील मुरब्बा १२ आदमी के हिसाब से एक करोड़ बीस लाख की। हिजाज़ का इलाक़ा तो जिस में मक्का और मदीना है रूम के बादशाह के ताबे है, और बाक़ी सारा मुल्क जुदा जुदा हाहिमों के तहत में बटा हुआ है। वे हामिम शेख़ शरीफ़ ख़लीफ़ा अमीर और इमाम कहलाते हैं, बादशाह उन में कोई नहीं। इस मुल्क को मरुस्थल कहना चाहिये, क्योंकि बिलकुल रेगिस्तान है, केवल कहीं कहीं उर्वरा धरती टापू की तरह दिखलाई देती है। निदान बस्ती थोड़ी और उजाड़, अधिक है। पहाड़ समुद्र के कनारे कनारे यद्यपि बहुत ऊंचे नहीं हैं पर फिर भी पहाड़ों में हवा कुछ मोतदल रहती है और बाक़ी सब जगह अर्थात् रेगिस्तान के पट पर मैदानों में निहायत गर्म है, वही समूम जिसका अभी अफ़ग़ानिस्तान में बयान हुआ अरब में बड़े ज़ोर शोर के साथ बहती है। नदी और झील वहां क़सम खाने को भी नहीं पहाड़ के बरसाती नालों को हम शुमार में नहीं लाते। रेडली के उत्तर कनारे से पासही तूर का पहाड़ है, जहां मूसा पैग़म्बर को उसके मतावलंबियों के निश्चय अनुसार आकाशवाणी हुई थी। जो सब ज़िले समुद्र के कनारे बसे हैं उन में क़हवा बबूल का गोंद धूप मुसब्बर संबुल सना छुहारा कालीमिर्च इत्यादि बहुत प्रकार की चीज़ें पैदा होती हैं। खेतियां भी वहां लोग गेहूं ज्वार बाजरा ऊख तंबाकू कपास इत्यादि की करते हैं, चावल नहीं होता। घोड़ा अरब का तमाम दुनियां में मशहूर है, वहां से बिहतर यह जानवर कहीं नहीं होता, दो दो हज़ार बरस तक की बंसावली वहांवाले अपने घोड़ों की याद रखते हैं, आर ऊंट और

गधा भी वहां बहुत अच्छा होता है, गधे की सवारी में वहां ऐब नहीं समझते, वरन बड़े चाव से चढ़ते हैं, और ऊंट तो मानों ईश्वर ने उसी देश के वास्ते रचा, जो यह जानवर न होता तो अरबवालों को उस देश में रहना कठिन पड़ जाता, इसका पेट अंदर से ऐसा खानेदार बना है, कि वह सात दिन का पानी इकट्ठा पी सकता है, इसके तलुए इस्पंज की तरह ऐसे नर्म और फूले फूले हैं कि वह रेत में नहीं गड़ते, आंख नाक कान इस जानवर के सब रेगिस्तान के गौं के बने हैं सच है ईश्वर ने जहां जिस काम के लिये जिसे पैदा किया वैसा ही उसे सब सामान दिया। शुतुरमुर्ग एक चिड़िया वहां आठ फ़ुट ऊंची होती है, डेढ़ डेढ़ सेर के अंडे देती है, उड़ नहीं सकती, पर भागती बहुत है, आदमी का बोझ बखूबी संभाल लेती है, और कपड़ा लकड़ी लोहे तक भी खा जाती है टिड्डियों का वह घर है, वहांवाले उनको भून कर बड़े मज़े से खाते हैं। खान से सीसा लोहा और चांदी निकलती है पर बहुत कम। बहरैन का टापू ईरान की खाड़ी में अरब के साथ गिना जाता है, उस टापू के आदमी समुद्र से मोती निकालते हैं, और सकूतरा के टापू में जो अरब के दक्षिण कनारे से २४० मील दूर और अफ़रीका के पूर्व तट से अति निकट है मूंगा और अम्बर (१) मिलता है आदमी वहां के मियानः क़द गंदुमरंग जवांमर्द अच्छे घुड़चढ़े हथियार चलाने में उस्ताद मुसाफ़िरपर्वर मिहमान बाज़ दियानतदार और भलेमानस होते हैं, चिहरे पर उनके बोझ भार के साथ एक उदासी सी छाई रहती है, परन्तु इन में बहुत आदमी

---

(१) अम्बर एक जलजंतु का गूह है, समुद्र के जल पर तिरता अथवा कनारे पर पड़ा हुआ मिलता है॥

खानःबदोश अर्थात् पर्याटक हैं, और तातारियों की तरह देरों में रहा करते हैं, और मवेशी पालकर और सौदागरों के क़ाफ़िले लूटकर अपना गुज़ारा करते हैं। टोपियां वहां के आदमी रूई अथवा ऊन की एक पर दूसरी पंदरह पंदरह तक रंग बरंग की पहनते हैं, ऊपर वाली सब में बढ़िया रहती है, ग़रीब से ग़रीब भी दो ज़रूर पहनेगा, और फिर उन पर दुपट्टा बांधते हैं। इस मुल्क के आदमी ऊंट का गोश्त और ऊंटनी का दूध बहुत खाते पीते हैं। मुहम्मद से पहले अरबवाले भी हिन्दुस्तानियों की तरह मूर्तों की पूजा करते थे और नर बलि देते थे, मुहम्मद ने मूर्तों को तोड़कर उन्हें निराकार निरंजन अरूपी सर्वशक्तिमान जगदीश्वर को पूजने का उपदेश किया। इसी मुहम्मद की गद्दी पर जो बादशाह बैठे वह खलीफ़ा कहलाए। अरबी ज़ुबान संस्कृत की तरह कठिन है, और उस भाषा में भी बहुत सी पुस्तकें विद्या की मौजूद हैं। क़हवा सना गोंद धूप मुसब्बर संबुल इत्यादि वहां से बाहर जाता है, और लोहा फ़ौलाद सीसा रांगा तलवार छुरी शीशे चीनी के बरतन इत्यादि बाहर से वहां आते हैं। मक्का २१ अंश २८ कला उत्तर अक्षांस और ४० अंश १५ कला पूर्व देशान्तर में एक छोटी सी रेतल और पथरीलीदून में बसा है, न उस शहर में कोई बाग़ है न किसी तरफ़ दरख़्त और सबज़ा नज़र पड़ता है, बरन पानी भी पीने लाइक़ दस कोस से लाना पड़ता है, शहर क़रीने से बसा है, और बाज़ार भी चौड़ा और पुर रौनक है, बस्ती उसमें प्राय ३०००० आदमियों की होवेगी। क़ाबा अर्थात् मुसल्मानों का मन्दिर मक्के के दर्मियान चौखूंटी चारदिवारी के अंदर जिसके कोनों पर मीनार बने हैं एक छोटा सा चौखूंटा मकान है, छत्तीस फ़ुट ऊंचा और तेंतीस फ़ुट चौड़ा काले कपड़े से ढका हुआ,

उसके अन्दर एक कोने में हजरुल् असवद (१) अर्थात् काला पत्थर चांदी से मढ़ा हुआ रखा है, जो यात्री आते हैं पहले इस पत्थर को चूमते हैं क़ाबा साल भर में तीन दिन खुलता है, एक दिन मर्दों के लिये, दूसरे दिन स्त्रियों के लिये तीसरे दिन धोने और साफ़ करने के लिये। पास ही ज़मूज़म् कूआ है, मुसल्मान उसका सोता स्वर्ग से आया बतलाते हैं, और उसके जल पीने में बड़ा महात्मय समझते हैं। मक्का और मदीना मुसल्मानों का बड़ा तीर्थ है, उनके पैग़म्बर मुहम्मद सन् १५६९ में मक्के के दर्मियान पैदाहुये थे, मदीना मक्के से २०० मील उत्तर वायुकोन को झुकता पुरानी सी शहरप-नाह के अन्दर छ सौ घर की बस्ती है, मसजिद मुहम्मद की बहुत बड़ी बनी है, चार सौ खम्भे संगमूसा के लगे हैं, और तीन सौ च-राग़ हमेशः बलते रहते हैं, बीच में मुहम्मद की क़बर है, उसके दोनों तरफ़ अबूबक्र और उमर गड़े हैं। अदन का क़िला जो रेडसी के मुहाने पर यमन के इलाक़े में है कुछ दिनों से सरकार अंगरेज़ी के क़ब्ज़े में आ गया है॥

एशियाईरूम

इसको एशियाई इस वास्ते कहते हैं कि रूम की सल्तनत एशिया और फ़रंगिस्तान दोनों खंडों में पड़ी है, यहां केवल उसी भाग का बर्णन होता है जो एशिया में है, बिस्तार पूर्बक इस बादशाहत का बयान फ़रंगिस्तान के साथ होवेगा, क्योंकि उसकी दारुस्सलतनत

---

(१) यह पत्थर उसी क़िस्म का है जिसे अंगरेज़ी में वाल्कोनिक बासालू (Volanio Basal.) कहते हैं॥

कुस्तुंतुनीया उसी खंड में बसी है। फ़रंगिस्तान वाले इस मुल्क को एशियाटिक टर्की अर्थात् एशियाई तुर्किस्तान पुकारते हैं, परन्तु इसमें शाम की सारी बिलायत और अरब और ईरान के भी हिस्से हैं। गये तीन हज़ार बरस के अर्से में जैसा उलट फेर बादशाहतों का ज़मीन के इस टुकड़े पर रहा है, कदापि दूसरी जगह सुनने में नहीं आया, कभी यूनानियों ने लिया, कभी रूमियों ने दबाया, कभी ईरानियों के अमल में आया, कभी अरबों के दख़ल में गया, कभी तातारियोंने उसे लूटा, कभी फ़रंगियों ने उस पर चढ़ाव किया, और तमाशा यह कि जब जिसने इस मुल्क को फ़तह किया नये नये नामों से नये नये सूबे और नये नये ज़िलों में बांटा। ईसाइयों की प्राचीन पुस्तकों में लिखा है कि ५८५८ बरस गुज़रते हैं ईश्वर ने पहला मनुष्य इसी मुल्क में पैदा किया, और तूफ़ान के बाद नूह का जहाज़ इसी मुल्क में लगा, इसी मुल्क से मनुष्य सारी दुनियां में फैले, और इसी मुल्क में पहले प्रतापी राजा हुये। धरती खोदने से अद्यावधि मूर्ति इत्यादि ऐसी ऐसी बस्तु अति प्राक्तन निकलती हैं कि जिन से उस देश का किसी समय में महापराक्रमी राजाओं से शासित होना बख़ूबी साबित है। ईसा मसीह इसी देश में पैदा हुये थे, और इसी कारण वहां उस मतावलंबियों के बड़े बड़े तीर्थ स्थान हैं। निदान यह एशियाई रूम ३० से ४२ अंश उत्तर अक्षांश और २६ से ४८ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। सीमा उसकी पूर्व ईरान, दक्षिण अरब, पश्चिम मेडिटरेनियन, और उत्तर डार्डनल्स मार्मोरा बासफ़ोरस और ब्लकसी नामक समुद्र की खाड़ियां। पूर्व से पश्चिम को हज़ार मील लंबा और उत्तर से दक्षिण को नौ सौ मील चौड़ा चार लाख नब्बे हज़ार मील मुरब्बा के बिस्तार में है। आदमी उस में अनुमान

एक करोड़ बीस लाख होवेंगे, और इस हिसाब से आबादी उसकी पचीस आदमियों की भी फ़ी मील मुरब्बा नहीं पड़ती। शाम का मुल्क फ़ुरात नदी और मेडिटरेनियन के बीच में पड़ा है, उसी के दक्षिण भाग में फ़िलिस्तीन है, जहां से ईसाई मत की बुनियाद बँधी, और जिसे ईसाई लोग पवित्र-भूमि कहते हैं। फ़ुरातके पूर्व दियारबक्र है उसका दक्षिण भाग अरबी इराक़ और पूर्व भाग गुर्दिस्तान अथवा कुर्दिस्तान कहलाता है, और उसके उत्तर तरफ़ इर्म का इलाक़ा है, जिसे अंगरेज़ आर्मिनिया कहते हैं। एशियाई रूम में पहाड़ बहुत हैं और मैदान कम। शाम के अग्निकोन में बड़ा भारी उजाड़ रेगिस्तान है। पहाड़ों में टारस और अरारात मशहूर हैं, टारस की श्रेणी मेडिटरेनियन के तट से निकट ही निकट खल दूनिया अंतरीप से फ़ुरात नदी तक चली गई है, और अरारात जिसे जूदीका पहाड़ भी कहते हैं इर्म में रूस और ईरान की सर्हद पर १७००० फ़ुट समुद्र से ऊंचा है, ईसाइयों के मत बमूजिब तूफ़ान के बाद नूह का जहाज इसी अरारात पर आकर लगा था। नदियों में दजला और फ़ुरात जो बसरे से कुछ दूर ऊपर मिलकर शातुलअरब के नाम से ईरान की खाड़ी में गिरती हैं नामी हैं। फ़ुरात १५०० मील लंबी है और दजला ८०० मील। बालबक से अनुमान ४० मील पश्चिम मेडिटरेनियन के तट से निकट जबैल के नीचे इबरिम नदी बहती है, उसका पुराना नाम अडोनिस है, और उसका पानी गेरू इत्यादि के मिलने से जो अवश्य उसके कनारे पर कहीं होगा साल में एक बार लाल हो जाता है, वहां के नादान आदमी खयाल करते हैं कि किसी जमाने में अडोनिस नाम एक आदमी को शिकार खेलते हुए सूवर ने मार डाला था उसी का लहू हर साल उस नदी में आता है। झील डेडसी

की जिसे बहरेलूत भी कहते हैं फ़िलिस्तीन के दक्षिण भाग में प्राय ५० मील लंबी होवेगी, पानी उसका निरा खारा, और आस पास के पहाड़ बिलकुल उजाड़ दरख्त उन में देखने को भी नहीं, क्या ईश्वर की महिमा है कि इस झील के नज़दीक न तो कोई दरख्त जमता है, और न उसमें कोई जीव जन्तु जीता है। आबहवा अच्छी और मोतदल पर सब जगह एकसी नहीं है, ऊंचे पहाड़ों पर यहां तक सर्दी पड़ती है कि वे सदा बर्फ़ से ढके रहते हैं, और रेगिस्तानों के दर्मियान समूम चला करती है। आदमी वहां के काहिल और ग़लीज़ हैं, इस कारण वबा अर्थात् मरी अकसर फैल जाती है। भूंचाल उस मुल्क में बहुत आता है। धरती अकसर जगह उपजाऊ है, पर वहां वाले खेती में मिहनत नहीं करते, जौ गेहूं मक्की रूई तमाकू क़हवा अफ़यून मस्तकी जिसे लोग रूमीमस्तगी कहते हैं जैतून अंगूर सालिब मिसरी इत्यादि बहुत प्रकार के अनाज मेवे और दवाइयां पैदा होतीहैं। बकरियों से वहां एक क़िस्म का पश्मीना हासिल होता है, और रेशम भी वहां की पैदाइशों में गिना जाता है। गधे घोड़े खच्चर ऊंट लकड़बघे रीछ भेड़िये गीदड़ इत्यादि घरेलू और जंगली जानवर इफ़रात से हैं, पर टिड्डियों का दल वहां अरब के रेगिस्तानों से ऐसा बादलसा उमड़ता है कि बहुधा खेती बारियां बिलकुल नाश हो जाती हैं, यदि अग्निकोन की हवा जो वहां अधिक बहती है उन्हें समुद्र में ले जाकर न डुबाया करे तो वे शायद सारे पृथ्वी के तृण वीरुध को भक्षण कर जावें। खान तांबे की उस मुल्कमें एक बहुत बड़ी है। रोड्स और सिपरस के टापू मेडिटरेनियनसीमें इसी बादशाहत के ताबे हैं। यह वही रोड्स है जहां के बंदर पर किसी ज़माने में एक मूर्ति पीतल की सत्तर हाथ ऊंची खड़ी थी और उसकी टांगों तले से जहाज़ पाल उड़ाए निकल जाते थे,

खिपरस को कुपरस भी कहते हैं। आदमी इस मुल्क के तुर्कमान यूनानी अर्मनी गुर्द और अरब मुसल्मान और अकसर ईसाई भी हैं, ज़ुबानें तुर्की यूनानी शामी अर्मनी अरबी ईरानी सब बोली जाती हैं। चीज़ों में वहां रेशमी कपड़े क़ालीन और चमड़े बहुत अच्छे तयार होते हैं, और दिसावरों को जाते हैं। बग़दाद हलब दमिश्क़ अर्ज़ रूम समिर्नी बसरा मूसिल और बैतुलमुक़द्दस इस मुल्क में नामी शहर हैं। बग़दाद ३३ अंश २० कला उत्तर अक्षांश और ४४ अंश २४ कला पूर्व देशांतर में दजला नदी के दोनों कनारों पर शहरपनाह के अन्दर बड़ा मशहूर शहर है, सन् ७६२ में मुहम्मद के चचा अब्बास के पड़पोते ख़लीफ़ा मंसूर ने उसे अपनी दारुस्सलतनत ठहराया था, और फिर उसके जानशीनों के समय में जिनके नाम का ख़ुत्बा (१) गंगा से लेकर नील (२) नदी वरन अटलांटिक समुद्र पर्य्यंत पढ़ा जाता था उसने ऐसी रौनक़ पाई कि जिसका बर्णन अलफ़लैला की महाअद्भुत कहानियों में किया है। अब उसमें अस्सी हज़ार आदमियों से अधिक नहीं बस्ते। सन् १२५७ में जब चंगेज़ख़ां के पोते हलाकू ने वहां के ख़लीफ़ा मुस्तासिमबिल्लाह को मारकर शहर लूटा आठ लाख आदमी उसके अन्दर मारे गये थे। सन् १४०१ में उसे अमीर तैमूर ने लूटा और जलाया, और सन् १६३७ में रूमके बादशाह चौथे मुराद ने, जिसे अंगरेज़ अमूरात कहते हैं, तीन लाख फ़ौज से चढ़ाव करके उसे अपने क़बज़े में कर लिया। हलब बग़दाद से ४७५ मील पश्चिम वायुकोण को झुकता शहरपनाह के अन्दर आठ

---

(१) ख़ुतबा मसजिद में बादशाह के नाम से पढ़ा जाता है।

(२) अफ़रीक़ा में मिसर के नीचे बहती है॥

मील के घेरे में अढ़ाई लाख आदमियों की बस्ती बड़ी तिजारत की जगह है, उसकी मसजिदों के सफेद सफेद मीनार और गुम्बज़ बड़े बड़े लंबे सर्व के दरख्तों में बहुत भले और सुहावने मालूम होते हैं, बाज़ार ऊपर से बिलकुल पटे हुए हैं, इसलिये धूप और मेह का बड़ा बचाव है, रौशनी के लिये दुतरफ़ा खिड़कियां खोल दी हैं, किसी समय में वह शाम की दारुस्सलतनत था। दमिश्क़ बग़दाद से ४७५ मील पश्चिम पहाड़ों से घिरा हुआ एक बड़े मैदान में सुन्दर बाग़ों के दर्मियान पारफ़ार नदी के दोनों कनारों पर दो लाख आदमियों की बस्ती है। वहां से पचास मील उत्तर वायुकोन को झुकता बालबक में बाल देवता अर्थात् सूर्य का एक मन्दिर अति अद्भुत प्राचीन खंडहर पड़ा है, उसके संगमर्मर के खंभों की बलंदी देखकर अक़ल भी हैरान रह जाती है, एक पत्थर उसके खंभे का जो अब तक नीचे पड़ा है ७० फ़ुट लम्बा १४ फ़ुट चौड़ा और चौदही फ़ुट मोटा नापा गया था, बिना कल मालूम नहीं किस बूते और बल से इन पत्थरों को उठाते थे। अर्ज़ रूम बग़दाद से ५२५ मील वायुकोन उत्तर को झुकता इर्म के इलाक़े में, और समिर्ना पश्चिम सीमा पर समुद्र के कनारे है, इन दोनों शहरों में भी लाख लाख आदमी से कम नहीं बसते। बसरा जहां गुलाब का इतर बहुत उमदा बनता है बग़दाद से २८० मील अग्निकोन सात मील के घेरे में शातुलअरब के दहने कनारे शहरपनाह के अन्दर बसा है, और बड़े व्यौपार की जगह है, आदमी उस में अनुमान साठ हज़ार होंगे। मसिल् बग़दाद से २६० मील वायुकोन दजला के दहने कनारे पैंतीस हज़ार आदमियों की बस्ती है। उसी के साम्हने जहां अब नूनिया गांव बस्ता है नैनवा के पुराने शहर का निशान मिलता है, जिसका घेरा किसी समय साठ

मील का बतलाते हैं। बैतुलमुकद्दस, जिसे अंगरेज़ जरूज़लम् अथवा उर्शलीम कहते हैं, फ़िलिस्तीन अर्थात् किनआं के इलाक़े में डेडसी झील और मेडिटरेयिन की खाड़ी के बीच में पहाड़ों से घिरा हुआ एक ऊंचे से मैदान में तीस हज़ार आदमियों की बस्ती है, वह सुलैमान के बाप दाऊद का पाय तख्त था, और उसी जगह सुलैमान ने सर्व शक्तिमान जगदीश्वर का मंदिर रचा था, उसी जगह ईसा मसीह सलीब पर खींचे गये, और उसी जगह ईसा मसीह की क़बर है। वहां से छ मील दक्षिण बैतुल्लहम् ईसा मसीह का जन्म स्थान है। पालमीरा अथवा तदमोर, जो सुलैमान ने बग़दाद से ३५० मील पश्चिम वायुकोन को झुकता शाम के रेगिस्तान में जहां पानी भी कठिन से मिलता है और पेड़ों का तो क्या ज़िकर है दो हज़ार आठ सौ अठावन बरस गुज़रे बसाया था, अब वहां उस नामी शहर के बदल कोसों तक टूटे फूटे मकानों के पत्थर पड़े हैं, और सुन्दर सचिक्कण संगमर्मर के खंभों के ताड़ के दरख्तों की तरह मानों जंगल के जंगल खड़े हैं, इन खंडहरों में सुलैमान का बनाया सूर्य का एक मंदिर अब भी देखने योग्य है। हिल्ला में बग़दाद से ५० मील दक्षिण फुरात के दोनों कनारे बाबिल के पुराने शहर का निशान देते हैं, और मुसलमान और फ़रंगी दोनों कहते हैं कि दुनियां में सब से पहले वही बसा था, और सब से पहले वही निमरूद बादशाह की राजधानी हुआ, जैसे हिन्दू अयोध्या को बतलाते हैं। जिन दिनों यह शहर अपनी औज पर था ६० मील के घेरे में बस्ता था, ८७ फ़ुट मोटी और ३५० फ़ुट ऊंची उसकी शहरपनाह थी, गिर्द खंदक़, दरवाज़े पीतल के लगे हुए, महल बादशाही साढ़े सात मील के घेरे में तीन दीवारों के अन्दर अच्छे खासे बने हुए, बाग़ महल के गिरद

पुश्ता पाटकर इतना ऊंचा बना हुआ कि उस में से सारे शहर की सैर होती रहे। इस शहर को ईरान के बादशाह कैखुसरो ने ग़ारत किया था। कर्बा बग़दाद से पचास मील नैर्ऋतकोण को फ़ुरात पार है, वहां मुसलमानों के पैग़म्बर मुहम्मद के नवासे अर्थात् दौहित्र हसन और हुसैन मारे गए थे। डार्डेन नल्स के तटस्थ ३०४७ बरस गुज़रे ट्राय का वह प्रसिद्ध क़िला था जिसे यूनानियोंने बारह बरस की लड़ाई में तोड़ा था, इस घोर युद्ध का बर्णन होमर नाम एक यूनानी कवि ने बड़ी कविताई के साथ किया है। वहां से १५० मील पूर्व बरसा में एक तप्तकुण्ड है नहाने के लिये उस में सुन्दर हम्माम बने हैं॥

इति

अनुक्रमणिका

तीसरा हिस्सा

ख़

ग

नकशा एशिया की विलायतों के बिस्तार आबादी और आमदनी का बर्णमाला के क्रम से

संख्या	नाम विलायत का	बिस्तार मील मुरब्बा	लंबान मील	चौड़ान मील	आबादी फ़ी मील मुरब्बा	कुल आबादी	आमदनी साल में	राजधानी
१	अफ़ग़ानिस्तान	४६४000	१000	८00	२८	१४000000	५७00000	काबुल
२	अरब	१000000	१७00	१२00	१२	१२000000	....	मक्का
३	ईरान	५६0000	९00	६00	१८	१0000000	३000000	तिहरान
४	एशियाई रूम	४९0000	१000	९00	२५	१२000000	....	....
५	एशियाई रूस	३000000	५000	१५00	....	३000000	....	....
६	कोचीन	१५0000	....	....	९३	१३६५0000	....	हूयू
७	चीन	५000000	४७00	२000	९0	३00000000	६00000000	पेकिन
८	जपान	९0000	....	....	....	....	२८0000000	जेडो
९	तूरान	१000000	१५00	१000	५	५000000	४८00000	बुख़ारा
१०	बर्म्हा	१९४000	१000	६00	७४	१४000000	....	आवा
११	मलाका	....	८00	१२0	....	....	....	मलाका
१२	स्याम	१५५000	३५0	३६0	१९	२९४५000	....	बंकाक
१३	हिन्दुस्तान....	१२00000	१८00	१६00	११३	१४0000000	३00000000	कलकत्ता

National Library,
Calcutta-27